एल्बर्ट रीस विलियम्स

लेनिन और अक्तूबर क्रान्ति के बारे में

АЛЬБЕРТ РИС ВИЛЬЯМС

О ЛЕНИНЕ И ОКТЯБРЬСКОЙ РЕВОЛЮЦИИ

На языке хинди

तीसरा भाग

चौथा भाग

एच० जी० वेल्स ने लिखा है, "इस्लाम के उदय के बाद रूसी क्रान्ति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है।" पश्चिम के इतिहासज्ञों ने कुछ इसी प्रकार की तुलनाओं से इतिहास में रूसी क्रान्ति का स्थान निर्धारित करने की चेष्टा की है। वाशिंगटन के कैथोलिक प्रोफेसर वाल्श के मतानुसार रोमन साम्राज्य के पतन के बाद अक्तूबर क्रान्ति सबसे अधिक उल्लेखनीय घटना है। विख्यात ब्रिटिश वृत्तकार हेरल्ड लास्की की दृष्टि में यह "ईसामसीह के जन्म के बाद की सबसे प्रभावपूर्ण घटना है।"

इस क्रान्ति की महानता के अनुरूप ही इसके सम्बन्ध में न केवल सोवियत संघ की भाषाओं में, बल्कि सैकड़ों अन्य भाषाओं में ढेरों पुस्तकें सुलभ हैं। पश्चिमी दुनिया से निरंतर इस विषय पर पुस्तकें प्रकाशित होती रहती हैं। और चूंकि लोग शिशु के जन्म की भांति सदा शुरूआत में अभिरुचि रखते हैं, इसलिए अधिकांश पुस्तकें अक्तूबर क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनों के बारे में—उन महान वीरता तथा उत्तेजनापूर्ण दिनों एवं सप्ताहों के बारे में हैं, जिनसे दुनिया हिल उठी थी।

इन पुस्तकों में आप क्रान्ति के उद्भव, क्रान्ति-सम्बन्धी विभिन्न दलों, उनके कार्यक्रमों, क्रांति की आर्थिक व्यवस्था, क्रान्ति के मार्ग-दर्शकों और इसी प्रकार क्रान्ति-सम्बन्धी अन्य विषयों पर विस्तृत एवं विद्वत्तापूर्ण विवरण तथा व्याख्या पायेंगे। परन्तु इन सभी पुस्तकों में समान रूप से एक कमी है। वह यह कि क्रान्ति की मुख्य बात उनमें गायब है। उनमें आप स्वयं

क्राति को छोडकर अक्तूबर क्राति के बारे मे बहुत कुछ—प्राय सभी कुछ पा सकते है। ऐसा इसलिए है कि इन पुस्तको मे **जनता के बारे मे** या तो बहुत कम, अथवा कुछ भी नही कहा गया है। और वास्तव मे यह क्राति की थी जनता ने ही—मजदूरो एव किसानो ने ही।

क्रान्ति का स्वरूप प्रस्तुत करने का प्रयास करते हुए जनता का उल्लेख न करना तो ठीक ऐसा ही है—जैसा कि अग्रेज लोग कहा करते है—कि शेक्सपियर का नाटक 'हेमलेट' प्रस्तुत करते समय स्वय हेमलेट को भुला देना है।

१९१७ मे सामान्य जन समुदाय, जो अब निष्क्रिय एव निश्चेष्ट नही था सघर्ष के बीच कूद पडा। अपने शासको एव उनके अनुचरो का सफाया करते हुए *बाल्टिक सागर से प्रशान्त महासागर तक* फैले यूरोप और एशिया के विस्तृत मैदानो मे रहनेवाले लोगो ने दीर्घकाल से ऊघती हुई अपनी योग्यताओ एव शक्तियो का प्रयोग किया।

लेनिन ने उन्ही पर, रूसी जन समुदाय की इस क्षमता पर भरोसा करते हुए कि इतिहास ने जो महान ऐतिहासिक कार्यभार उन्हे सौंपा है, उसे वे पूरा कर लेगे, रूस और क्राति के भविष्य को दाव पर लगा दिया। जन-जीवन की गहरी एव घनिष्ट जानकारी तथा जनता मे अडिग विश्वास ने ही लेनिन मे ऐसी आस्था पैदा की।

मै इसे अपना बडा सौभाग्य मानता हू कि १९१७ के बसत मे रूस आने के फौरन बाद ही मेरे मन म भी जन शक्ति के प्रति यह उच्च सम्मान और विश्वास पैदा हुआ, जिसमे सोवियत सघ की बाद की यात्राओं से और वृद्धि हुई। लोगो से प्रत्यक्ष सम्पर्क के द्वारा—पेत्रोग्राद व निजनी नोवगोरोद* की फैक्टरियो मे मजदूरो एव बैरको म सैनिको से मिलने-जुलने और *व्लादीमिर प्रदेश के गाव मे उस बुद्धिमान और देवतुल्य बोल्शेविक*** यानिशेव के साथ लम्बी अवधि तक रहने से यह सहज बोध मुझे प्राप्त

---

* अब इस नगर का नाम गोर्की है। यह और दूसरी टिप्पणिया सपादक की है। लेखक की टिप्पणियो की ओर विशेष ढग से सकेत किया गया है।

** १९०३ मे रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी की द्वितीय काग्रेस के बाद "बोल्शिस्त्वो" (बहुमत) शब्द से बोल्शेविक नाम का जन्म

हुआ। इससे जनता की सहनशीलता, दृढता, योग्यता, नये विचारो व कौशल को अपनाने की तत्परता और उपायज्ञता के प्रति मेरे मन मे बडे सम्मान की भावना पैदा हुई और मुझे उसकी भावी सफलता के बारे मे कोई सन्देह नही रहा।

इस प्रकार क्रान्ति के प्रारम्भ से ही तथाकथित रूस विज्ञो—पत्रकारो, वृत्तकारो, इतिहासज्ञो की तुलना मे, मैं बेहतर स्थिति मे रहा। यह सभव है कि उन्हे रूस के इतिहास की जानकारी हो, मुमकिन है कि वे अनेक दलो के कार्यक्रमो एव नेताओ को जानते हो, यह भी हो सकता है कि वे दौत्यकर्मियो तथा विदेशी प्रतिनिधियो से परिचित रहे हो, मगर अधिकाशत रूसी जनता को बिल्कुल नही जानते थे। और मै इस बात को पुन कहना चाहता हू कि क्रान्ति की थी जनता ने ही। इसी कारण ये तथाकथित विशेषज्ञ क्रान्ति सम्बन्धी अपने मूल्याकन मे बार-बार गलती करते रहे—वे लगातार इसकी पराजय, इसके सकट और इसके अन्त की भविष्यवाणी करते रहे।

अक्तूबर* मे सोवियतो की सरकार की स्थापना के बाद इन "विशेषज्ञो" ने घोषणा की, "यह एक सप्ताह और अधिक से अधिक एक या दो महीने चलेगी।" परन्तु सोवियत जनता को अच्छी तरह जानने-समझने के कारण मैंने विश्वास के साथ एलान किया कि सोवियते अधिकाधिक लोगो को अपनी सरकार के पक्ष मे जुटा लेगी। उन्होंने सत्ता की बागडोर हासिल की है, वे उसे सम्भाले रहेगी, डटी रहेगी।

जब प्रथम पचवर्षीय योजना तयार की गई, तो "सख्याविदो का स्वप्न", "लम्बे चौडे आकडो का प्रारूप" कहकर विदेशो मे इसका उपहास किया गया। मगर जिन्हे सोवियत जनता की वास्तविक जानकारी थी,

---

हुआ। इस काग्रेस मे पार्टी के केन्द्रीय सगठनो के चुनाव मे लेनिन का समर्थन करनेवाले क्रान्तिकारी मार्क्सवादियो को बहुमत प्राप्त हुआ, अवसरवादी अल्पमत मे आ गये और तब से उन्हे मेशेविक कहा जाता है ("मेशिन्स्त्वो" शब्द से, जिसका अर्थ है अल्पमत, यह नाम पडा)। रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी के छठे सम्मेलन (प्राग, १९१२) मे अवसरवादियो को पार्टी से निकाल दिया गया।

*नये कैलेण्डर के अनुसार नवम्बर।

उन्होंने विश्वास के साथ घोषणा की कि योजनायें चाहे कितनी भी वृहत् क्यों न हों, सोवियत जनता इस महान चुनौती के अनुरूप सिद्ध होगी और वह इस सपने को साकार करेगी।

जब अपनी शक्ति के शिखर पर पहुंचे हुए और पश्चिम में अपनी विजय के नशे में चूर २०० नाज़ी डिवीजनों ने १९४१ में जून के उस निर्णायक दिन सोवियत सीमाएं पार कीं, तो ऐसे ही तथाकथित विशेषज्ञों ने बड़े यकीन से ये घोषणाएं कीं कि जैसे छुरी मक्खन में घुस जाती है, वैसे ही नाज़ी फौजें लाल सेना को चीर डालेंगी और तीन चार सप्ताह में क्रेमलिन के बुर्जों पर स्वस्तिक-झण्डा लहराता दिखाई देगा। परन्तु हममें से जो लोग सोवियत जनता को जानते थे, उन्हें इस बात की बेहतर जानकारी थी कि क्या होनेवाला है। सोवियत संवाद समिति 'तास' के अनुरोध पर २४ जून को मैंने एक लम्बा तार भेजकर अपना यह विश्वास प्रकट किया कि सोवियत जन-समुदाय की शक्ति नाज़ियों को पराजित करेगी और समय आने पर हंसिये व हथौड़े वाला लाल झण्डा बर्लिन में राइखस्ताग (जर्मन संसद भवन) पर लहरा उठेगा।

हर संकट के समय सोवियत लोगों ने अपने चरित्र का बढ़िया उदाहरण पेश किया है और जब जब उनसे जो अपेक्षा की गई, वे उसके उपयुक्त सिद्ध होते रहे हैं।

मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि सोवियत संघ में सभी क्रान्ति के प्रति निष्ठावान थे और इसके लिए प्राण न्योछावर करने को प्रस्तुत थे। उनमें यथांश कामचोर, विरक्त, स्वार्थजीवी यहां तक कि गद्दार भी थे। परन्तु भारी बहुमत एवं निश्चित रूप से प्रायः सभी सबल, ओजयुक्त व जुझारू व्यक्ति पराक्रमी और क्रांति के निष्ठावान निर्माता और रक्षक थे।

यह सम्भव है कि उनमें सभी सामान्य गुण न हों, किन्तु क्रान्ति को सफल बनाने के सभी अनिवार्य गुण—दृढ़ता, कठोरता, सहनशक्ति, लक्ष्य के प्रति निष्ठा एवं उसके लिए बलिदान हो जाने की तत्परता, नये विचारों तथा कौशल को अपनाने की योग्यता—उनमें थे। इनके साथ हमें एक और गुण भी जोड़ देना चाहिए—जिसे सामान्यतः क्रान्तिकारी गुण नहीं समझा जाता अथवा जिसे स्वतन्त्रता-संग्रामियों का लक्षण नहीं माना जाता। यह गुण है—धैर्य।

परन्तु दुर्भाग्य से क्रांति की भावना से ग्रस्त, चमत्कारपूर्ण, तूफानी उत्तेजनापूर्ण घटनाओ से सम्मोहित हम इसके शात, अविलक्षण व साधारण परिश्रातिक पहलुओ को भुला देते हैं। एक ओर बहुत ही उत्प्रेरक दृश्य, स्मोल्नी* की सजीव घटनाए और शिशिर प्रासाद पर धावा, जब कि दूसरी ओर बाहर घोर अधेरे एव अत्यधिक शीत मे चौकसी का उबा देनेवाला नीरस नियत दीर्घ समय, फटे-चुटे कपडे पहने हुए मजदूरो का रात रात भर पेत्रोग्राद की सडको पर पहरा, जुलाई विद्रोह** के बाद घास के ढेर मे लेनिन का छिपना अथवा निष्कासन की अवधि मे फिनलैण्ड

---

* लेनिनग्राद (पहले जिसका नाम पीटर्सबर्ग और पेत्रोग्राद था) मे स्मोल्नी नामक भवन है, जहा १९१७ तक अभिजात वर्ग की लडकियो के लिए एक सस्थान था। १९१७ के अगस्त मे पेत्रोग्राद सोवियत और मजदूरो और सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियतो की अखिल-रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने इसे अपना मुकाम बनाया, अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के बोल्शेविक दल के सदस्यो को भी यही कार्य-स्थान दिया गया। स्मोल्नी मे पेत्रोग्राद सोवियत की क्रान्तिकारी सैनिक समिति का भी सदर-मुकाम था, जिसने लेनिन के निर्देश पर पेत्रोग्राद मे अक्तूबर सशस्त्र विद्रोह का सचालन किया था।

** जुलाई विद्रोह – ३ और ४ जुलाई १९१७ को पेत्रोग्राद मे घटी घटनाओ से रूस मे गहरा राजनीतिक सकट प्रकट हुआ। उक्त तिथियो पर मेहनतकशो ने एक विराट शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करते हुए यह माग की कि देश म सोवियत पूर्ण सत्ता अपने हाथ मे ले ले और न्यायोचित शान्ति सधि की जाय। अस्थाई सरकार के आदेश से इन प्रदर्शनकारियो पर गोली-वर्षा की गई। देश मे प्रतिक्रियावाद का बोलबाला था। प्रतिक्रान्तिवादी अस्थाई सरकार ने पूर्ण सत्ता हथिया ली। निम्न पूजीवादी मेन्शेविक और समाजवादी-क्रान्तिकारी पार्टियो ने अस्थाई सरकार की नीति को मानने की अपनी दासोचित उत्सुकता से क्रान्ति के शान्तिपूर्ण विकास को असभव बना दिया।

बोल्शेविक पार्टी ने अस्थाई सरकार का तख्ता उलटने और सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित करने अर्थात् राज्य के शासन की बागडोर अपने हाथ मे लेने की तैयारिया शुरू कर दी।

मे रहते हुए साथियो के बीच लौटने की प्रतीक्षा और इधर बोल्शेविक नेतागण का जेल मे होना।

अक्तूबर क्रांति के दिना के बाद लोगो के सामने यह स्थिति आई कि इधन और रोटी के राशन मे कमी होने लगी तथा क्रांति की सफलता के बाद उपलब्ध होनेवाली समृद्धि के वादे मास प्रतिमास स्थगित किये जाने लगे। ठण्ढ, भूख, खून, पसीना, आसू – १९१७ के क्रान्तिवादियो के धैर्य की इन्ही के रूप म अग्नि परीक्षा ली गई। परतु उनकी सभी कठिनाइयो के बावजूद हमे उनके लिए दु खी होने की जरूरत नही है। निश्चय ही उन्ह अपनी इस स्थिति पर दु ख नही हुआ था। न जाने कितनो ने वोलोदार्स्की* की भाति क्रांति मे गहरा सतोष, उल्लास और हर्ष अनुभव किया। क्रूप्स्काया** का यह कथन कितना सही है कि "जो क्रान्ति के बीच से गुजर चुका है, केवल वही उसकी महिमा को जानता है।"

रूसी जनता के बारे मे लिखते हुए म सदा लेनिन के बारे मे भी लिखता रहा हू। मन और स्वभाव की दृष्टि से वे प्राय एक ही है, क्योकि लेनिन म *विशेष रूप से उल्लेखनीय रूसी मानवीय गुण एव लक्षण – प्रताडित* के लिए सहानुभूति, उत्पीडक के प्रति घृणा एव क्रोध, सत्य की पुरजोश खोज– मूर्तिमान हुए और उच्चतम सीमा तक विकसित हाकर उभरे, जिससे वे प्रतिभाशाली व्यक्तियो की श्रेणी मे पहुच गये। उनके निकट सम्पर्क मे आनेवाले और उनके व्यक्तित्व के प्रभाव को महसूस करनेवाले प्राय प्रत्येक विदेशी ने उनके सम्बन्ध मे "प्रतिभावान" शब्द का प्रयोग किया है।

---

*व० वोलोदार्स्की (१८९१–१९१८)–१९१७ से कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य, उन्होने महान अक्तूबर क्रांति मे सक्रिय भाग लिया था। एक लोकप्रिय आदोलनकारी। क्रान्ति के बाद पेत्रोग्राद मे प्रेस, प्रचार एव आदोलन के कमिसार। १९१८ के जून मे एक प्रतिक्रांतिवादी ने इनकी हत्या कर दी।

**ना० को० क्रूप्स्काया (१८६९–१९३९)–लेनिन की पत्नी और कामरेड, कम्युनिस्ट पार्टी की एक प्रमुख सदस्या और सोवियत सरकार की कार्यकर्त्री।

इस सदभ मे अमरीकियो मे अग्रगण्य रेमाण्ड रोबिन्स थे, जो विद्वान एव अलास्का मे सोने की खान की खुदाई करने के कारण धनी भी थे।

लेनिन से लम्बी वार्ताए करने एव मिलने जुलने के फलस्वरूप उनमे उनके लिए उच्च सम्मान की ऐसी भावना पैदा हुई कि अमरीका वापस आने के बाद उन्होंने फ्लोरिडा मे अपनी बडी जागीर मे बलूत का वक्ष लगाया और उसका नाम रखा "लेनिन वृक्ष"। जैसे-जैसे यह वृक्ष बढता गया, वैसे वैसे बीतनेवाले वर्षो के दौरान लेनिन के प्रति उनके मन म सम्मान एव प्रशसा की भावना भी बढती गई। वह धामिक प्रकृति के व्यक्ति थे और प्रति रविवार को अपनी जागीर म अपने मित्रा एव काले-गोरे श्रमिको के लिए प्राथना सभा आयोजित किया करते थे। इन उपासना सभाओ का आरम्भ चाहे जैसे भी होता, परन्तु अन्त सदा लेनिन की विवेकशीलता एव प्रतिभा के प्रति बहुत सुदर शब्दावली मे अपित की गई श्रद्धाजलि के साथ ही हुआ करता। यह खुशी की बात है कि इन प्रवचनो अथवा धामिक व्याख्याना को लिपिबद्ध कर लिया गया है।

व्लादीवोस्तोक के निकट ओलोतोय रोग खाडी के एक द्वीप पर मैंने अपनी पुस्तको के प्रथम रूप तैयार कर लिये थे। मुझे इस द्वीप पर ही रुकना पडा था, क्योकि जापानिया ने मुझे अपने देश से होते हुए अमरीका वापस जाने का वीजा देने से इनकार कर दिया। तभी अचानक हस्तक्षेपवादियो ने व्लादीवास्तोक को अपने कब्जे मे कर लिया और प्रतिक्रान्ति-वादी मेरे कमरे मे घुस आए। मैंने अपनी पाण्डुलिपिया खो दी। मगर उस हगामे मे मित्रो की कृपा से, जिन्होंने मुझे शरण दी, मेरे प्राण बच गये।

अमरीकी कोसल ने व्लादीवोस्तोक से निकलने म मेरी सहायता की।

एक वष बाद (अमरीका मे वापस आने पर) हडसन नदी के बहाव के ऊपर की ओर जगलो से घिरी पहाडिया म ऊचाई पर निमित जॉन रीड*

---

*जॉन रीड (१८८७–१९२०)–एक अमरीकी पत्रकार, प्रसिद्ध पुस्तक 'दस दिन जब दुनिया हिल उठी' के रचयिता। वे एक युद्ध-सवाददाता की हैसियत से १९१७ मे रूस आये। उन्होंने महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का स्वागत किया। वे अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी के सस्थापका मे से एक थे।

के छोटे से कुटीर म मैंने फिर से अपनी पुस्तको का लिखना शुरू किया। म उस समय सियाटिक रोग से बहुत ही पीडित था और जॉ रीड एक चिकित्सक की भूमिका अदा करते हुए रीढ की हड्डी एव पैर का ऊपर नीचे गम समतल लोहे से सकते रहते। अपने विनोदप्रिय स्वभाव के अनुकूल वे कह उठते, "काश, लेनिन हमे इस अवस्था मे देखते!"

अमरीका के प्रमुख नगरा म अक्तूबर क्रान्ति पर व्याख्यान देने और बहसा म भाग लेने के बीच खाली समय में मैंने अपनी पुस्तकें लिख डालीं, उनका अनेक भाषाओ म अनुवाद हुआ और सयोगवश कुछ अद्भुत कारणा से जापान मे मेरी पुस्तक सबसे अधिक बिकी। कुछ स्पष्ट भूल सुधारने के अतिरिक्त वे उसी रूप मे पुन प्रकाशित हो रही हैं, जिस रूप म वे उस समय लिखी गई थी, जब क्रांति की घटनाए मेरी स्मृति में ताजी और सजीव थी।

१९२२ मे पुन रूस आने पर मैं इन पुस्तको को भी अपने साथ लेता गया था। व्लादीमिर इल्यीच गोर्की गाव म विश्राम कर रहे थे और उन्हें उस समय इन पुस्तको को भेंट करना आसान था। मगर चूकि वे बीमार थे, इसलिए उन्हे परेशान करने के विचार से मुझे विशेष हिचक हुई। हा, ये पुस्तकें मैं क्रूप्स्काया को दे सकता था, जिन्हे मैं जानता था और इस बात की पूरी सभावना थी कि वे इन्हे पढकर लेनिन को सुनाती तथा इस प्रकार 'रूसी क्रांति म जनता' पर उनकी स्वीकृति की मुहर लग गई होती। इसलिए अक्सर मुझे खेद होता है कि जब लेनिन गोर्की गाव मे विश्राम कर रहे थे, उस समय मैंने अपनी पुस्तकें उन्हे भेंट क्यो नही की।

फिर १९५९ के जुलाई महीने म गोर्की की यात्रा के समय हमारी योग्य पथदर्शिका क० कूरोवा बगले के कमरो को हमे दिखाते हुए ऊपरी कक्ष मे वहा पहुची, जहा लेनिन की मेज रखी है। वहा शीशे के नीचे कागज के आवरणो म बडी सख्या म पुस्तके एव पुस्तिकाए सुरक्षित रखी गई हैं। वहीं कपडे की जिल्दवाली मेरी पुस्तक 'लेनिन व्यक्ति और उनके काय' की एक प्रति भी देखने को मिली। मुझे इससे बडा आश्चय हुआ और साथ ही यह सोचकर बडा सतोष हुआ कि व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने अपनी असामयिक मृत्यु के पूव निश्चय ही इस पर एक दृष्टि डाली होगी।

नीचे की मजिल से होते हुए हम लेनिन के सर्वाधिक प्रिय स्थान की ओर बढे। हम श्वेत स्तम्भो से परिवृत्त उस खुले निकुज म पहुचे, जहा से वृक्षा से आच्छादित घाटी के पार गार्की नामक गाव दिखाई पडता है। जिस बेंच पर लेनिन बैठा करते थे, उस पर बैठते ही लेनिन का वह वाक्य—जो अक्सर मुझे याद आता रहता है—मेरे स्मृति पटल पर उभरा, जो २६ अक्तूबर (८ नवम्बर) १९१७ की रात को उन्होंने स्मोल्नी मे कहा था और जो इस शताब्दी का सर्वाधिक महत्वपूण एव युगान्तरकारी वाक्य था। लेनिन ज्यो ही मच पर आये, लोगो ने जोरो की हर्षध्वनि से उनका अभिवादन किया। अपना हाथ हिलाकर लोगा को शान्त करते हुए उन्होंने कहा, "साथियो! अब हम समाजवादी राज्य की रचना का काम अपने हाथ मे लेना चाहिए।"

यह वाक्य सहज स्वाभाविक ढग से कहा गया था और उस उत्तेजित सभा मे कुछ ही व्यक्तियो ने उस क्षण इन शब्दो के पूरे महत्त्व को समझा था। किन्तु मेरी बगल मे बैठे हुए जॉन रीड ने, जो निर्णायक एव आधारभूत बाता के प्रति बहुत अनुभूतिशील थे, तेजी से अपनी नोटबुक मे लेनिन का उक्त वाक्य लिख लिया और उसे रेखाकित कर दिया। उन्होंने ठीक ही भापा कि उस वाक्य मे विश्व को हिला देने के लिए पर्याप्त विस्फोटक शक्ति है, और हम यह कह सकते हैं कि आज भी यह वाक्य दुनिया को हिला रहा है।

लेनिन ने इस वाक्य द्वारा यह घोपणा की कि जिस समाजवादी व्यवस्था के लिए पीढियो ने परिश्रम और सघप किया तथा रक्त-दान दिया, वही अब पृथ्वी के छठे भाग के लोगो का लक्ष्य है।

किसी भी देश के लिए इस प्रकार के अतिमहान सकल्प को पूरा करना सवदा दुस्तर काय माना जाता है। पिछडे हुए और तबाह रूस के लिए तो यह बहुत ही जीवट का काय था। उस समय रूस मे हर जगह भूख, शीत और सनिपातज्वर का प्रकोप था और तोडफोड का काम जारी था। सेना में विघटन का क्रम दृष्टिगोचर हो रहा था। जमन फौजें आगे बढ रही थीं। यातायात व्यवस्था भग थी। कारखानो मे काम बन्द था। इस प्रकार की समस्याए और सैकडो अन्य विकट प्रश्न तो नव गठित सरकार के सम्मुख प्रस्तुत थे ही, पर साथ ही एक और जटिल एव दारूण

समस्या – पूर्णतया नये आधार पर एक नय समाज की रचना की समस्या – भी उपस्थित थी।

यह कितनी महत्त्वपूर्ण बात है कि ऐसी बदहाली मे लेनिन और सोवियता न शांति, न्याय और सब के लिए प्रचुर समृद्धि के शानदार समाज क निर्माण म अपनी सारी शक्ति और बल-बल लगा दिया।

किन्तु यह भी कम महत्त्वपूर्ण नही है कि बाद के इतने वर्षों म सोवियत बडी दृढता के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा म अनवरत रूप से सलग्न रही ह। अनेक क्रान्तिया एव महान आन्दोलन समय के साथ शिथिल पड जाते हैं, अपना जोश-खरोश खो बठते हैं और जरा ही उनके सिद्धातो के निशान मिट जाते हैं, वैसे ही वे स्वय भी नई पीढ़िया के दिल और दिमाग से मिट जात ह।

परन्तु अक्तूबर क्रांति सभी विघ्न-बाधाओ, अग्नि-परीक्षाओ, बलिदानो, समझौतो के सभी प्रलोभनो, काहिलो, तोडफोड करनेवालो और गद्दारो के बावजूद अपने घोषित लक्ष्य – कम्युनिज्म की रचना – की ओर अभियान म कभी जरा भी विचलित नही हुई।

आज के सोवियत सघ मे उपलब्ध समृद्धि और सुख-सुविधाओ के बावजूद वातावरण अक्तूबर क्रान्ति के वीरतापूर्ण उत्तेजक दिनो की तुलना मे कोई बहुत भिन्न नही है। आज भी जीवन के हर क्षेत्र म अक्तूबर क्रान्ति के दिनो की कमठता और तत्परता व्याप्त है – नये उपायो, नये औजारो और नूतन काय विधियो को अपना लेने के बावजूद १९१७ की क्रान्तिकारी भावना और उत्साह के साथ ही काम हो रहा है। जैसे लेनिन ने क्रांति के प्रारम्भिक दिनो म ही अपने कायक्रम म शान्ति को प्रमुखतम स्थान प्रदान किया था, वसे ही सोवियत जनता इस समय भी विश्व के सभी राष्ट्रो से शान्तिपूर्ण सम्बन्धो की स्थापना को सर्वाधिक महत्त्व दे रही है। जैसे उन दिनो क्रान्ति विरोधियो देनीकिन और कोल्चाक पर विजय की उत्साहप्रद सूचनाए प्राप्त होती थी, वैसे ही आज राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के मोर्चों – इस्पात, विद्युत, कृषि, शिक्षा आदि – से शानदार उपलब्धियो की उत्साहवधक सूचनाए प्राप्त होती ह। शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टी के नेतत्व मे विशाल देश के सारे साधनो को उसी महान लक्ष्य, जिसे अक्तूबर क्रान्ति के प्रारंभिक दिनो मे देश ने अपने सामने रखा था, अर्थात शान्ति,

न्याय और समृद्धि के नये समाज – कम्युनिज़म – की रचना के लक्ष्य की पूर्ति के लिए समर्पित कर दिया गया है।

परन्तु तब और अब में एक अन्तर है – सो भी बहुत बड़ा अन्तर।

तब भावी कम्युनिस्ट समाज का कोई प्रारूप भी नहीं था। उस समय ऐसा समाज दूर भविष्य की मात्र आशा एवं आकांक्षा ही था।

आज कम्युनिज़्म एक वास्तविक और ठोस यथार्थ है। समाजवादी ढांचे में इसकी सुदृढ़ और गहरी नींव पड़ चुकी है। इसकी रूपरेखा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है।

एल्बर्ट रीस विलियम्स

१९५९

व्ला० इ० लेनिन, १९१७

लेनिन : व्यक्ति और उनके कार्य
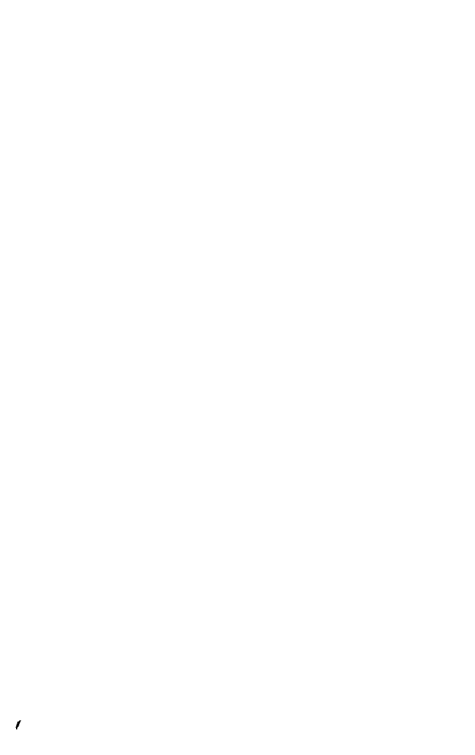
भूमिका

दुनिया उस व्यक्ति के बारे मे बहुत कम जानती है, जो दो साल तक रूस का प्रधान मत्री रहा। लन्दन 'टाइम्स' का कहना है कि इसका कारण अपने बारे म लेनिन की सामाजिक उदासीनता एव खामोशी है। इस पत्र ने लिखा है, "सामान्य अग्रेज को यदि लेनिन लाल रग की कमीज और घुटनो तक का जूता पहने समुद्री डाकुओ के सरदार जैसे प्रतीत होते है, तो इसके लिए वे स्वय मुख्य दोषी है।"

यह सही नही है। लेनिन को दोषी नही ठहराया जा सकता। नाकेबदी और ब्रिटिश सेन्सर व्यवस्था का इसमे बहुत बडा हाथ था। इन कारणो से रूस शेष विश्व से पूर्णतया कट गया था। असोशिएटेड प्रस तक भी इस ब्रिटिश सेन्सर-व्यवस्था को भग नही कर सका। इसे कभी क्रातिकारी रुझान रखनेवाला नही माना गया, फिर भी तार द्वारा प्रेषित इसकी नरम खबरो के अधिकाश को भी ब्रिटिश अधिकारियो ने अमरीकी जनता के लिए खतरनाक समझा। ब्रिटिश अधिकारी किसी भी ऐसे तथ्य पूर्ण सवाद को खतरनाक समझते थे, जो सोवियत सरकार अथवा इसके प्रधान के अनुकूल प्रतीत होता था।

फलत लेनिन के सम्बन्ध मे तथ्यो की जगह पेरिस, लन्दन, स्टाकहोम और कोपेनहेगन से "विशेष सवाददाताओ" द्वारा प्रेषित मनगढत खबरे एव कपोलकल्पित सवाद-कथाए समाचारपत्रो मे प्रकाशित होती थी।

तार ... प्रथित एक सवाद स जहा सुबह ऐसा प्रतीत होता कि सार्वजनिक । क्योंकि गाटो स मूनार सनिक शत्रु के पजे स निकल भाग, तो तीसर पहर क सवाद से ऐसा प्रकट होता कि लेनिन मास्को म जेनरा ... से बाहर भग रहे है, जहा भयाानक लालसी न उन्हें एयरक्रिया-बेड़िया ... बन्द कर दिया था। तीसरे तार म इससे भी बाजी मार लेनवाला ऐसी सनसनीखेज खबर दी जाती, जिससे लगता कि लनिन बगल में पाटफालियो दबाये मार्सीलीज के बन्दरगाह पर रूसी जहाज स उतर रहे है। सवाददाताओ ने व्यक्तिगत रूप से सवाद-प्रेषण म अपनी विलक्षण कल्पना शक्ति का परिचय दिया, परन्तु सामूहिक रूप से पारस्परिक ताल मेल के अभाव के कारण व अपने प्रयास म विफल रहे। उन्होंने असम्भव को सम्भव सिद्ध करने का यत्न किया। कुछ घटो मे ही साइबेरिया से मास्को और वहा से पैरिस म पख लगाकर फौरन उड जाना मानवीय कृत्य न होकर कोई चमत्कार ही हो सकता है। लेनिन के निन्दको ने उन्हें सर्वव्यापी बना दिया।

इसके पूर्व उन्होंने ईश्वर के एक अन्य गुण—सर्वशक्तिमत्ता—स उन्ह विभूषित कर दिया था, क्योंकि उन्होंने कहा था कि लेनिन ने अपनी अतरंग मण्डली द्वारा सोवियतो का सगठन किया है और उनके साथ मिलकर १,५०,००,००० सैनिको के दिल दिमागो म जहर भर दिया है एव सेना म गडबडी पैदा कर दी है। उसके बाद, उन्होंने कहा, उनके छोटे गुट ने अस्थाई सरकार* को उखाड फेंका और १६,००,००,००० लोगो के राष्ट्र को ब्रेस्त लितोव्स्क की सधि पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया। यह मनुष्य के पराक्रम से परे की बात है—यह दैवी पराक्रम है।

उन्ह सर्वज्ञता के गुण से भी विभूषित किया गया। जो गुट प्रिन्किपो**

---

*रूस की अस्थाई सरकार २ मार्च से २५ अक्तूबर १९१७ तक क़ायम रही। इसने प्रतिक्रान्तिवादी साम्राज्यशाही नीति का अनुसरण किया और पेत्रोग्राद के सफल सशस्त्र विद्रोह के फलस्वरूप उलट दी गई।

**१९१९ मे ब्रिटेन और अमरीका के नेताओ ने अपने उद्देश्यो के अनुरूप प्रीसेज द्वीप (मरमारा सागर) म सोवियत सरकार और भूतपूर्व रूसी साम्राज्य के प्रदेश पर गठित सभी सफेद गाड सरकारो के प्रतिनिधियो का सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव किया था। अपनी स्थिति को पहले

जाने के खिलाफ वकालत कर रहा था, उसके हेय वक्तव्य मे इसका स्पष्ट ग्राभास मिलता है। इस ववतव्य मे कहा गया है, "हम लेनिन का सामना नही कर सकते। ये बोलशेविक यहुत धूत ग्रौर चट हैं। वे राजनीति ग्रौर ग्रयशास्त्र वे सम्बध मे सब कुछ जानते हैं, उनके सामने हमारी दाल नही गलेगी।" इतना ही नही, लेनिन को ग्रमरता के गुण से भी विभूषित किया गया। बीसियो बार क्पोल-क्लिपत सवादो मे उन्हे गोली से खत्म कर दिया गया, परन्तु फिर भी वे जीवित रहे। यदि भविष्य मे श्रद्धालुग्रो ने लेनिन को देवता सिद्ध करने का प्रयास किया, तो इसके लिए पिछले दो वर्षों के समाचारपत्रो म उन्हे प्रचुर सामग्री मिल जायेगी। *

हमारी सरकार ने लेनिन के बारे मे भ्रातिया पैदा करने मे सरकारी मूखता की परिचायक उन जाली दस्तावेज़ो को प्रकाशित कर हाथ बटाया, जो "सिस्सन दस्तावेज़ा" ** के रूप मे ज्ञात है। यह सिद्ध करने का प्रयास कि जमन सामता का विश्व मे सबसे शक्तिशाली शत्रु, वह व्यक्ति जिसने साम्राज्यवाद के खिलाफ सघप मे कभी शिथिलता नही ग्राने दी, वह वस्तुत सामता एव साम्राज्यवाद का मुख्य समथक है—कैसर का जरखरीद गुप्तचर है—निरा पागलपन था।

इसके बाद उन सवाद-कथाग्रा का सिलसिला शुरू हुग्रा, जिनमे यह ग्रारोप लगाया गया कि लेनिन मानवजाति के लिए ग्रभिशाप है, वह एक निमम राक्षस है, जो पूजीपतियो के रक्त का प्यासा है ग्रौर मानवीय पीडा के प्रति निमम निदयी है। एक ग्रोर बुभुक्षित रूसियो का यह चित्र

से ही स्पष्ट करने के बाद सोवियत सरकार ने इस सम्मेलन मे भाग लेना स्वीकार कर लिया। साम्राज्यवादी राष्ट्रो ग्रौर सफेद गाड के गलत रुख के कारण सम्मेलन नही हुग्रा।

* १६१७ ग्रौर १६१८ की ग्रोर सकेत है।

** "सिस्सन दस्तावेज़ें"—सोवियत विरोधी जाली दस्तावेज़ो का सग्रह, जिन्हे विदेश विभाग की लोक सूचना की ग्रमरीकी समिति के उपाध्यक्ष एडगार सिस्सन ने प्रकाशित किया था। ग्रक्तूबर क्रान्ति के बाद वह पेत्रोग्राद ग्राया ग्रौर सोवियत सरकार के खिलाफ प्रचार एव गुप्तचरी के काय मे लगा रहा। वह लोक सूचना की रूसी शाखा का प्रधान था।

प्रस्तुत किया गया कि वे सडक पर मरे हुए घोडे अथवा कुत्ते पर चाकू तान टट पडते थे तथा सडा हुआ मास लेकर चम्पत हो जाते थे और दूसरी ओर लेनिन को क्रेमलिन म मगोलियाई सम्राट के रूप म प्रस्तुत किया गया, जो चीनी भाडे के टट्टुओ से घिरे रहते थे और एशियाई शान शौकत का जीवन व्यतीत करते थे। उनके लिए प्रति दिन केवल फलो पर ~000 रूबल व्यय किये जाते थे।

चूकि नाकेबन्दी और सेसर के बावजूद कुछ सच्ची खबर बाहर पहुचने लगी थी, इसलिए विश्वासप्रवण लोगो के लिए भी इस प्रकार की ऊट पटाग खबरो पर यकीन करना कठिन हो गया।

लेनिन क बारे मे इन कपोल-कल्पित सवाद कथाओ की चर्चा छोडकर अब म इस वतमान पुस्तक की कमियो का उल्लेख करना चाहता हू। यह अपूण है। म लेनिन और उनके काय के पूण सर्वेक्षण का दावा नही करता। यह काय तो केवल इतिहास के परिवेश म ही किया जा सकता है और लेनिन तो अभी भी इतिहास मे नये पृष्ठ जोड रहे ह। परन्तु आशा है कि लेनिन और उनके कार्यों की जो झलक यह पुस्तक प्रस्तुत करती है, वह बिना अभिरुचि एव महत्त्व की नही है।

यह सघपरत एव क्राति के अग्रिम मोर्चे पर कठिन परिश्रम मे जुटे हुए लेनिन की झलक प्रस्तुत करती है। यह उनके निकट सम्पक मे आनवाले तीन विदेशियो की धारणाओ को अभिव्यक्त करती है। लेनिन के सम्बध मे अन्य लिखनेवालो की तुलना मे वे विशिष्ट रूप से बेहतर स्थिति म ह। लेखको के जिस वग की ओर ऊपर सकेत किया गया है, उनमे प्राय सभी ने न तो कभी लेनिन से खुद कोई बातचीत की थी, न कभी उनके भाषणो को सुना, न कभी उन्हे देखा और हजारो कोसो के फासले तक उनके करीब नहा आये। उन्होन अफवाहो, विलक्षण कल्पनाओ और मनगढत कथाओ के आधार पर अपनी कहानियो के अधिकाश भाग का ताना बाना बुना है।

रही मेरी बात, तो मैं तो एक समाजवादी की हैसियत से लेनिन के पास अमरीका से आया था। मने एक ही गाडी म उनके साथ यात्रा की, एक ही मच से अपने विचार प्रकट किये और दो महीने तक मास्को के 'नेशनल' होटेल मे उनके साथ रहा। क्राति के समय उनके साथ मेरा जो सम्पक रहा, उसी का मने इस पुस्तक म शृखलाबद्ध विवरण प्रस्तुत किया है।

लेनिन के साथ दस महीने

१ लेनिन के युवा अनुयायी

मने सवप्रथम जीते-जागते लेनिन का नही, बल्कि पाच युवा रूसी मजदूरा के विचारो और भावनाओ म उनके दशन किये। वे १६१७ की गर्मी म बडी सख्या म पेत्रोग्राद लौटनेवाले निर्वासिता म से थे।

उनकी चुस्ती पुर्ती, समझ-बूझ और अग्रेजी भापा के उनके ज्ञान के कारण अमरीकी उनकी ओर आकृष्ट हुए। उन्होने शीघ्र ही हमे सूचित किया कि वे वोल्शेविक हैं। एक अमरीकी ने कहा, "निश्चय ही व ऐसे दिखाइ तो नही पडते।" कुछ समय तक तो उसे इसका विश्वास ही नही हुआ। उसने अखबार मे लम्बी दाढीवाला, अविज्ञ, निठल्ला व शोहदा के रूप म बोल्शेविको का चित्र देखा था। और इन व्यक्तिया की दाढी-मूछ सफाचट थी, वे विनम्र, विनोदप्रिय, मिलनसार और जागरूक थे। व दायित्व से कन्नी नही काटते थे, मौत से डरते नही थे और सबसे अद्भुत बात यह कि वे काम से भी नही घवराते थे। और वे बोल्शेविक थे।

वोस्कोव न्यूयाक से आया था, जहा वह बढई यूनियन न० १००८ का सगठक रह चुका था। यानिशेव मिस्तरी और गाव के पादरी का लडका था। वह ससार के सभी भागो मे खाना और कारखाना मे काम कर चुका था। नबुत दस्तकार था। वह सदा अपने साथ पुस्तका का बण्डल लिये रहता था और उनम से मिलनेवाले किसी नवीनतम विचार पर सदा बहुत उत्साह प्रकट करता था। रात दिन जहाजी दास की भाति काम करनेवाले

वालादास्र्की ने अपनी हत्या के कुछ सप्ताह पूर्व मुझसे कहा था, "ओह! मान लीजिये कि वे मुझे मार ही डालते हैं, तो इससे क्या फर्क पडता है! पाच व्यक्तियों को जीवन भर काम करने से जितनी प्रसन्नता होती, मै उससे अधिक खुशी पिछले ६ महीनो मे अपने काम से हासिल कर चुका हू।' पेटेंस फोरमैन था। उसके सम्बन्ध मे बाद मे अखबारो मे इस आशय की रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी कि वह एक खूनी नृशस व्यक्ति था और तब तक मृत्युदण्ड-सम्बन्धी आदेश पत्रो पर हस्ताक्षर करता रहता था, जब तक उसकी उगलियो मे कलम चलाने की ताकत बाकी रहती थी। वह अक्सर अपने विलायती गुलाबो वाले बगीचे और नेक्रासोव* की कविताओ के लिए उसासे भरता रहता था।

इन व्यक्तियो ने बडे शान्त और अचल भाव से हमे विश्वास दिलाया कि विवेक और चरित्र की दृष्टि से लेनिन न केवल सभी बोल्शेविको से, बल्कि रूस, यूरोप और समस्त विश्व के शेष सभी लोगो से आगे है।

हम लोगो के लिए, जो प्रतिदिन समाचारपत्रो मे यह पढा करते थे कि लेनिन जर्मन गुप्तचर है, जो हर रोज यह सुना करते थे कि पूजीशाही ने उन्हें एक आवारा, देशद्रोही और मूर्ख मानते हुए कानून विरुद्ध आचरण करनेवाला व्यक्ति घोषित कर दिया है, यह सचमुच नयी बात थी। इन व्यक्तियो का मत विलक्षण और बहुत प्रतीत हुआ। परन्तु ये व्यक्ति न तो मूर्ख और न भावुक ही थे। ससार मे जगह जगह काम करते हुए भटकते रहने से उनकी विवेक शक्ति परिपक्व हो गई थी। वे वीर-पूजक भी नही थे। बोल्शेविक आन्दोलन पुरजोश था, पर साथ ही वज्ञानिक और यथार्थवादी भी और उसमे वीर पूजा के लिए कोई स्थान नही था। फिर भी ये पाचो बोल्शेविक यह घोषणा करते थे कि सच्चरित्रता और प्रज्ञा की दृष्टि से महान रूसी का नाम निकोलाई लेनिन है। वे उस समय एक गरकानूनी व्यक्ति घोषित थे तथा अस्थाई सरकार उन्हे गिरफ्तार करने को प्रयत्नशील थी।

---

*नेक्रासोव न० अ० (१८२१–१८७७)—एक महान रूसी कवि और क्रान्तिकारी जनवादी।

जितना ही अधिक हम इन युवा उत्साही अनुयायियों से मिलते-जुलते, उस व्यक्ति से मिलने की आकांक्षा भी उतनी ही अधिक बढ़ती, जिसे उन्होंने अपना नेता स्वीकार कर लिया था। क्या वे हम वहां ले जायेंगे, जहां लेनिन छिपे हुए थे?

वे हंसते हुए जवाब देते, "थोड़ी प्रतीक्षा कर, खुद ही उनसे मुलाक़ात हो जायेगी।"

१९१७ की गर्मी और पतझड़ के दौरान हम आतुरता के साथ प्रतीक्षा करते और केरेन्स्की की सरकार का लगातार कमजोर होते देखते रहे। २५ अक्तूबर (७ नवम्बर) को बाल्शेविकों ने अस्थाई सरकार के अंत की घोषणा की और उसके साथ ही रूस को सोवियतों का जनतन्त्र और लेनिन को प्रधान घोषित कर दिया।

२ लेनिन—पहली नज़र में

जब अपनी क्रांति की विजय से प्रफुल्ल एवं हर्षोन्मत्त गाते हुए मजदूरों और सैनिकों के समूह स्मोल्नी के बड़े हाल में जमा हो रहे थे और क्रूज़र 'अव्रोरा' की तोपों की गर्जना पुरानी व्यवस्था की मौत और नूतन सामाजिक व्यवस्था के आविर्भाव की उद्घोषणा कर रही थी, उसी समय लेनिन सौम्य भाव से मंच की ओर बढ़े तथा अध्यक्ष ने सूचित किया, "अब कामरेड लेनिन कांग्रेस के सामने अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।"

हम यह देखने को उत्सुक थे कि लेनिन के व्यक्तित्व का जो चित्र हमारे मानस-पट पर बना हुआ था, वे उसके अनुरूप हैं या नहीं। किन्तु हम संवाददाता जहां बैठे थे, वहां से वे शुरू में दिखाई नहीं पड़ रहे थे। नारों, जोश की करतल तथा हर्षध्वनियों, सीटियों और पदाघातों के शोर में वे सभा मंच से गुजरे और ज्योंही मंच पर पहुंचे, जो हमसे ३० फुट से अधिक दूरी पर नहीं था, तो लोगों का जोश अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। अब वे हमें साफ साफ दिखाई पड़ रहे थे। उन्हें देखकर हमारे दिल बैठ गये।

३ लेनिन द्वारा राज्य के जीवन मे कठोर अनुशासन का सच

मने २७ अक्तूबर (६ नवम्बर) को लाल गार्डों* के साथ जाने का अनुमति पत्र प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की, जो उस समय कज्जाको और प्रतिक्रान्तिवादियो के साथ लडने के लिए सभी ओर जा रहे थे। मैंने हिलक्विट** एव हाइजमस*** के हस्ताक्षरो वाले अपने परिचय पत्र प्रस्तुत किये। म परिचय पत्रो को बहुत ही प्रभावोत्पादक समझता था। मगर लेनिन का ख्याल ऐसा नही था। उन्होंने सक्षिप्त 'नही" के साथ ये परिचय पत्र मुझे वापस कर दिये, मानो वे यूनियन लीग क्लब स प्राप्त किये गये हो।

यह एक मामूली, मगर सवहारा वग की सोवियता के नये एव सख्त दृष्टिकोण की परिचायक घटना थी। अब तक जन समुदाय अपने को नुकसान पहुचाकर भी अत्यधिक नर्मी एव सहृदयता का व्यवहार करता रहा था। लेनिन ने अनुशासन कायम करने का सकल्प किया। वे इस अच्छी तरह जानते थे कि केवल सुदृढ एव कठोर कारवाई द्वारा ही भूख विदेशी सशस्त्र हस्तक्षेप और प्रतिक्रियावाद से क्रान्ति की रक्षा हो सकती है। इसलिए जब बोल्शेविको के शत्रु उन पर प्रहार करने के लिए गाली गलौज व अपने भण्डार को खाली कर रहे थे, व किसी दया माया और

---

*मजदूरो को सगठित करके बनाई गई लाल गार्डों की टुकडिया पहले पहल १६०५–१६०७ की प्रथम रूसी क्रान्ति के समय प्रकट हुई थी। १६१७ के अत और १६१८ के शुरू म प्रतिक्रान्तिवादियो के खिलाफ सघष मे बोल्शेविको के नेतृत्व मे इन टुकडियो ने बहुत बडा योगदान किया। १६१८ के अप्रैल के अत म लाल गार्डों की टुकडिया लाल फौज म शामिल कर ली गई।

**हिलक्विट – अमरीका की समाजवादी पार्टी का एक नेता, सुधारवादी, द्वितीय इटरनेशनल का कायकर्ता।

***हाइजमस – बेल्जियम का एक समाजवादी, द्वितीय इटरनेशनल का कायकर्ता।

सकल्प विकल्प के बिना अपने निणयो को कार्यान्वित करने मे सलग्न थे। पूजीशाही क प्रति लेनिन दृढ और निमम थे। उस समय पूजीपति उन्हे प्रधान मत्री लेनिन नही, बल्कि "क्रूर लेनिन", "तानाशाह लेनिन" कहा करते थे। और दक्षिणपथी समाजवादियो के कथनानुसार तो पुराने जार रोमानाव निकोलाई द्वितीय का स्थान नये जार निकोलाई लेनिन ने ग्रहण कर लिया था। उन्होने मजाक उडाते हुए नारा लगाया, "हमारे नये जार निकोलाई तृतीय जिन्दाबाद!"

एक किसान के सम्बन्ध मे हास्यपूण प्रसग से वे बड़े प्रसन्न हुए। यह घटना उस रात घटी, जब किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियत ने नई सोवियत सरकार को अपना समथन प्रदान करते हुए स्मोल्नी के हाल म दावत के साथ इस समारोह को उल्लासपूवक मनाया। बुद्धिजीवियो न गावो के सम्बन्ध मे भाषण किये। फिर यह माग हुई कि कोई ग्रामीण स्वय गाव के बारे मे कुछ कहे। किसान की पोशाक पहन एक वृद्ध ग्रामीण मच पर आया। उसकी दाढी सफेद और चेहरा गुलाबी था, उसकी आखें चमक रही थी और उसने ग्रामीण बोली मे भाषण दिया।

"तोवारिश्चौ (साथियो), जब हम पताका फहराते और बाजे बजाते हुए आज रात यहा पहुचे, तो हम बहुत ही खुश थे। म जमीन पर चलकर नही, खुशी से हवा मे उडता हुआ यहा आया हू। म अज्ञान के अधेरे म डूबे गाव का एक मूढ व्यक्ति हू। आपने हम प्रकाश दिया है। मगर हम लोग यह सब कुछ नही समझ पा रहे हैं, इसलिए गाववालो न जानने-समझने के लिए मुझे यहा भेजा है। परन्तु, साथियो, इस आश्चयजनक परिवतन से हम बहुत प्रसन्न है। पुराने समय मे चिनोव्निकी (नौकरशाहो) का व्यवहार हमारे प्रति बहुत कठोर था और वे हम पीटा करते थे, मगर अब वे बहुत विनम्र हो गये हैं। पहले हम केवल बाहर से ही महलो को देख सकते थे, अब हम सीधे उनके भीतर जा सकते हैं। पुराने समय म हम जार की केवल चर्चा ही किया करते थे, मगर अब हमे बताया जाता है कि कल मैं स्वय जार लेनिन से हाथ मिला सकता हू। ईश्वर उन्हें दीर्घायु बनावे!"

उक्त कथन पर हाल म उपस्थित लोगो की हसी का फौव्वारा फूट पडा। अट्टहास और तालियो की गडगडाहट से आश्चयचकित हो किसान

बैठ गया। परन्तु दूसरे दिन उसने लेनिन से मुलाकात की और बाद मे वह किसाना के प्रतिनिधि के रूप मे ब्रेस्त-लितोव्स्क गया।

अव्यवस्था के उन दिना म केवल दढ सकल्प ग्रार प्रबल धय अपेक्षित था। सभी विभागा मे बडी व्यवस्था और अनुशासन कायम किया गया। कोई भी इसे देख सकता था कि मजदूरा की नैतिक शक्ति दढ होती जा रही है और सोवियत शासन-व्यवस्था के ढीले पेचो को कसा जा रहा है। सोवियत सरकार अब जो भी कारवाई शुरू करती, जसे बैंक-व्यवस्था को अपने अधिकार मे लेने की कारवाई, तो वह सख्ती से प्रभावोत्पादक कदम उठाती। लेनिन जानते थे कि कहा तेज़ी से कारवाई होनी चाहिये और साथ ही यह भी कि कहा धीमी गति से कदम उठाने चाहिये। मजदूरा के एक प्रतिनिधिमण्डल ने लेनिन के पास जाकर यह प्रश्न किया कि क्या वे उनकी फक्टरी के राष्ट्रीयकरण का आदेश जारी नही कर सकते।

लेनिन ने एक कोरा फाम हाथ म उठाते हुए कहा, "हा, जहा तक मेरा सम्बध है, तो यह बहुत आसान काम है। मुझे तो बस इतना ही करना है कि यहा, इस फाम म, आपके कारखाने का नाम लिख दू, यहा अपने हस्ताक्षर कर और सम्बधित कमिसार का नाम यहा भर दू।"

मजदूरा के प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य बहुत सतुष्ट और प्रसन्न हुए और उन्होने कहा, "बहुत खूब।"

लेनिन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "परन्तु फाम को भरने से पहले मैं आप लोगा से निश्चय ही कुछ प्रश्न पूछना चाहता हू। पहला सवाल यह है कि क्या आप जानते है कि आपको फैक्टरी के लिए कच्चा माल कहा मिलेगा?"

उन्होने झिझकते हुए स्वीकार किया कि उन्हे इसकी जानकारी नही है।

लेनिन ने दूसरा प्रश्न किया, "क्या आप लोग हिसाब किताब रखना जानते है और क्या आप लोगो ने उत्पादन-स्तर को बनाये रखने की प्रणाली निर्धारित कर ली है?"

मजदूरो ने खेद के साथ माना कि उन्हे इन छोटी-मोटी बातो की बहुत कम जानकारी है।

लेनिन आगे बढे, "साथियो, अन्त मे आपसे यह पूछना चाहता हू कि क्या आप लोगो ने अपने माल की बिक्री के लिए बाजार की तलाश कर ली है?"

उन्होंने पुन उत्तर दिया, "नही।"

प्रधान मंत्री ने कहा, "साथियो, तो क्या आप यह नही समझते कि अभी आपने कारखाने को अपने हाथ मे लेने की तयारी नही की है? आप वापस जाकर इन प्रश्नो का हल कर। आपको कठिनाई का सामना करना होगा, आपसे बहुत-सी भूले भी होगी, पर ऐसे ही आपको जानकारी प्राप्त होगी। उसके कुछ महीनो बाद आप मुझसे मिलने आइए और तब आपके कारखाने के राष्ट्रीयकरण की बात हम फिर से करेगे।"

४ लेनिन के व्यक्तिगत जीवन मे कठोर अनुशासन

लेनिन सामाजिक जीवन मे जिस कठोर अनुशासन की भावना का सचार कर रहे थे, उसी प्रकार वे अपने व्यक्तिगत जीवन म भी कठोर अनुशासन का पालन करते थे। श्ची और बोश्च (दो प्रकारो के शोरबे जो चुकन्दर और आलू से तैयार होते है), काली रोटी के टुकडे, चाय और दलिया—यही स्मोल्नी मे आनेवालो का आहार था। लेनिन, उनकी पत्नी और बहन का भी यही भोजन होता था। क्रान्तिकारी प्रतिदिन १२ से १५ घटे तक अपने काम पर डटे रहते थे। लेनिन प्रतिदिन १८ से २० घटे तक काम करते थे। वे अपने हाथ से सैकडो पत्र लिखते थे। काम म सलग्न वे अन्य किसी बात की, यहा तक कि अपने खाने पीने की भी कोई चिन्ता नही करते थे। लेनिन जब बातचीत म व्यस्त होते, तो इस अवसर का लाभ उठाकर उनकी पत्नी चाय का गिलास हाथ म लिये वहा आकर कहती, "कामरेड, यह चाय रखी है, इसे पीना न भूल जाइएगा।" चाय म अक्सर चीनी न होती, क्योकि लेनिन भी शेष लोगो की भांति राशन म जितनी चीनी पाते थे, उसी पर गुजर करते थे। मत्रिक और सन्देशवाहक बडे-बडे, खाली और बैरक सदृश्य कमरो म लोहे की चारपाइयो पर सोते थे। लेनिन और उनकी पत्नी भी इसी प्रकार की चारपाइयो पर सोते। वे थकेमादे कडे पलग पर सो रहते और किसी भी आकस्मिक घटना या सकट के समय तत्काल उठ बैठने के ख्याल स अक्सर कपडे भी नही उतारते थे। लेनिन न किसी तपस्वी की भावना म इन कष्टो को झेलने का व्रत

ग्रहण नही किया था। वे तो केवल कम्युनिज्म के प्रथम सिद्धाता को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान कर रहे थे।

इनम एक सिद्धात यह था कि किसी भी कम्युनिस्ट अधिकारी का वेतन एक सामान्य मजदूर के वेतन से अधिक नही होना चाहिए। शुरू मे अधिकतम वेतन ६०० रूबल निर्धारित किया गया था। बाद म इसमे कुछ वद्धि हुई। इस समय सोवियत रूस के प्रधान मत्री को प्रतिमास २०० डालर से कम वतन मिलता है।

लेनिन न जब नेशनल होटल की दूसरी मजिल म अपने लिए कमरा लिया, तो उस समय मैं भी वही ठहरा हुआ था। सावियत शासन का प्रथम कदम लम्बी और बहुत खर्चीली व्यजन सूची को खत्म करना था। भोजन म कई प्रकार के व्यजना की जगह केवल दो प्रकार के व्यजन की सूची निश्चित हुई। कोई भी व्यक्ति भोजन म शोरबा और गोश्त अथवा शोरबा और काशा (दलिया) ले सकता था। और कोई भी व्यक्ति चाह वह जन कमिसार हो, अथवा रसोईघर म काम करनवाला हो, उस यही भाजन मिल सकता था, क्यावि कम्युनिस्टो के सिद्धात म यह बात अकित है कि "जब तक प्रत्येक व्यक्ति को रोटी न मिल जाय, तब तक किसी को भी केक सुलभ न होगा।" ऐसे दिन भी आते जब लोगा के लिए रोटी की भी कमी पड जाती। तब भी लेनिन को उतनी ही रोटी मिलती थी, जितनी प्रत्येक व्यक्ति को। कभी कभी तो बिल्कुल रोटी न हाती। उन दिना लेनिन को भी रोटी नही मिलती थी।

लेनिन की हत्या करने के प्रयास के बाद जब मत्यु उनके सिर पर मडराती प्रतीत होती, तो डाक्टरा ने उनके लिए खाने पीन की कुछ ऐसी चीजें निर्दिष्ट की, जो नियमित भोजन-काड के अनुसार सुलभ नही थी और जो बाजार म किसी मुनाफाखोर से ही खरीदी जा सकती थी। अपने दोस्ता के तमाम अनुनय विनय के बावजूद उन्हाने किसी ऐसे खाद्य पदाथ का स्पश करन स भी इनकार कर दिया, जो वध राशन काड का अग न हो।

बाद मे जब लेनिन स्वास्थ्यलाभ कर रहे थे, ता उनकी पत्नी और बहन न उनके भोजन की मात्रा बढान की एक तरकीब निकाली। यह देखकर कि वे अपनी रोटी मेज की दराज म रखते है, व उनकी अनुपस्थिति म चुपके से उनके कमरे म जाती और जब तब राटी का अतिरिक्त टुकडा

उसी ड्राज म डाल देती। अपने काम म लीन लेनिन यह जान लिया हो कि रोटी का वह टुकड़ा नियमित राशन से अधिक है, उसे मेज की दराज से निकालकर खा लेते।

लेनिन ने यूरोप और अमरीका के मजदूरों के नाम अपने एक पत्र में लिखा, रूस की जनता ने कभी भी इतने कष्ट, भूख की इतनी पीड़ा सहन नहीं की थी जैसा कि इस समय मित्रराष्ट्रों के फौजी हस्तक्षेप के कारण भोग रही है।' इन सारी कठिनाइयों को लेनिन भी जनता के साथ झेल रहे थे।

लेनिन के विरुद्ध एक महान राष्ट्र के जीवन के साथ जुआ खेलने और व्याधिग्रस्त रूस पर एक प्रयोगवादी की भाति प्रमादपूर्ण ढग से अपने कम्युनिस्ट सूत्रों को लागू करने का आरोप लगाया गया है। परन्तु इन सूत्रों म विश्वास के अभाव का आरोप उनके विरुद्ध नहीं लगाया जा सकता। उन्होंने केवल रूस पर नहीं, बल्कि अपने ऊपर भी इन सूत्रों का प्रयोग किया। उन्होंने दूसरों को जो औषधि दी, वह स्वय भी पी। दूर से कम्युनिज्म के सिद्धान्तों के प्रति आस्था प्रकट करना एक बात है, परन्तु लेनिन की भाति कम्युनिस्ट सिद्धान्तों को कार्यान्वित करने म कष्टों और दारुण स्थितियों का सामना करना बिल्कुल दूसरी ही बात है।

फिर भी, कम्युनिस्ट राज्य की स्थापना के प्रारम्भिक दिनों को पूर्णतया धुधले रगों म चित्रित नहीं करना चाहिए। रूस म उन घोर अधकारपूर्ण दिनों म भी कला फल फूल रही थी और सगीत नाटय प्रस्तुति हो रही था। उस परीक्षा की घडी म भी रामास ने जीवन म अपनी भूमिका अदा की। क्रातिकारी मच के मुख्य नायक भी इससे अछूते न रहे। एक रोज सुबह यह जानकर हम अभिचकित रह गये कि बहुमुखी प्रतिभावान कोल्लोताई ने नाविक दिवेंको से शादी कर ली है। बाद म नार्वा म जर्मनों से मोर्चा लेने की जगह पीछे हटने का आदेश देने के कारण उसकी भर्त्सना की गई। वह कलकित होकर पद और पार्टी से हटा दिया गया। लेनिन ने इसका अनुमोदन किया। कोल्लोताई का रोष म होना तो स्वाभाविक था।

इस अवसर पर कोल्लोन्ताई से बातचीत करते हुए मैंने यह मत प्रकट किया कि सभी मनुष्यों की तरह लेनिन भी शक्ति के नशे म चूर मदान्ध हो गये हैं और उनकी असहनशीलता बढ़ गई है। उन्होंने उत्तर दिया "स्त

समय गुस्से मे होते हुए भी मै यह कदापि नही सोच सकती कि किसी व्यक्तिगत उद्देश्य से वे कोई काय कर सकते हैं। कोई भी साथी, जिसने कामरेड लेनिन के साथ १० वर्षो तक काम किया है, यह विश्वास नही कर सकता कि स्वाथ उन्हे छू भी गया है।"

५ कम्युनिस्टो के व्यावहारिक कामो से सोवियतो के गिद जनता का जमाव

पूजीवादी समाचारपत्रो म लेनिन का चित्र सवथा इसके प्रतिकूल प्रस्तुत किया जा रहा था। इन पत्रो म यह लिखा जा रहा था कि व मूर्तिमान अत्याचारी, स्वार्थी और लोलुप दानव है। परन्तु लेनिन का वास्तविक रूप झूठ के इस आवरण को क्रमश चीरकर सब के सम्मुख प्रकट हुआ। और जसे ही रूस भर म यह खबर फली कि लेनिन और उनके सहयोगी लोगो के दुख सुख के पूरी तरह साझीदार हैं, जनता उनके ग्द गिद जमा होने लगी।

स्वल्प राशन के प्रश्न पर शिकायत करने की ओर प्रवत्त उराल के खनिक यह न भूल पाता कि अय सभी के लिए भी उसके समान ही भोजन और वस्त्र तथा रहाइश स्थान की व्यवस्था है, तो ऐसी दशा म काली रोटी के छोटे टुकडे पर उस शिकवा शिकायत क्या हो? रोटी का यह टुकडा हर हालत म उतना ही बडा था, जितना लेनिन का सुलभ था। भूख की पीडा के साथ कम से कम अयाय की ममभेदी पीडा तो नही थी।

वोल्गा के तट से चलनेवाली बर्फीली आधी म कापती हुई किसान की पत्नी को जार का स्थान ग्रहण करनेवाले व्यक्ति के बारे मे बहुत कम जानकारी थी। मगर उसने दूसरो से सुना कि अक्सर उसका कमरा भी गम नही रहता। अब ठड से ठिठुरते रहने पर भी विषमता की पीडा उसे नही सताती।

नीजनी नोवगोरोद का इजीनियर ६ सौ रूबल वतन पाता था, जो उसके परिवार की जरूरतो की पूर्ति के लिए अत्यन्त अपर्याप्त था। इससे उसमे कटुता की भावना पैदा होती थी। किन्तु तभी उसे इस बात का स्मरण हो आता कि क्रेमलिन मे प्रधान मत्री के पद पर आसीन व्यक्ति

को भी उससे अधिक वेतन नहीं मिलता। इससे विद्वेष की भावना दूर हो जाती।

हस्तक्षेपकारियों की तोपों की भीषण गोलाबारी का सामना करनेवाले सोवियत सैनिक को यह ज्ञात था कि लेनिन, पिछाई में रहते हुए भी मोर्चे पर डटे हुए हैं, क्योंकि उस समय रूस में सभी के ऊपर समान रूप से खतरा मंडरा रहा था। कोई भी इससे मुक्त नहीं था। मोर्चे के पिछाई में हताहत सोवियत नेताओं का प्रतिशत मोर्चों पर हताहत सोवियत सैनिकों के प्रतिशत से अधिक था। उरीत्स्की*, वोलोदार्स्की और वीसियों अन्य बोल्शेविकों की हत्याएं कर दी गई थीं। लेनिन दो बार घायल हो चुके थे। इसलिए लाल सैनिकों के लिए लेनिन युद्ध-क्षेत्र से दूर कोई व्यक्ति नहीं, बल्कि ऐसे साथी थे, जो उन्हीं की भांति संघर्ष के खतरों और कठिनाइयों को झेल रहे थे।

रूस में आए अमरीकी प्रतिनिधिमण्डल के नेता बुलिट ने अपनी रिपोर्ट में लिखा, 'इस समय लेनिन को प्रायः पैगम्बर माना जाता है। सामान्यतया इनका चित्र सब जगह कार्ल मार्क्स के चित्र के साथ टांगा गया है। जब मैं लेनिन से मिलने क्रेमलिन गया, तो किसानों के प्रतिनिधिमण्डल के उनसे भेंट करके वापस आने तक मुझे कुछ मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी। उन्होंने अपने गांव में सुना था कि लेनिन भूखे हैं। वे सैकड़ों मील की दूरी से गांववालों के उपहार के रूप में लेनिन के लिए करीब ३२० मन अनाज लेकर आये थे। इसके पूर्व यह सुनकर कि लेनिन ठण्डे कमरे में काम करते हैं, किसानों का एक और प्रतिनिधिमण्डल अपने साथ एक स्टोव और तीन महीने के लिए पर्याप्त ईंधन लेनिन को उपहार स्वरूप देने आया था। लेनिन ही एक ऐसे नेता हैं, जिन्हें इस प्रकार के उपहार भेंट किये जाते हैं। बाद में वे इन्हें सामान्य भण्डार में दे देते हैं।"

प्रचुरता और अभाव में समान रूप से हिस्सेदार होने के फलस्वरूप

---

*उरीत्स्की, म० स० (१८७३–१९१८) – अक्तूबर क्रांति में सक्रिय भाग लिया। पेत्रोग्राद चेका (असाधारण समिति) के अध्यक्ष की हैसियत से प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ सुदृढ़ संघर्ष का संचालन किया। ३० अगस्त १९१८ को प्रतिक्रान्तिवादियों ने इनकी हत्या कर दी।

प्रधान मत्री से लेकर बहुत ही गरीब किसान को एक ही सूत्र म बाधनेवाली सहानुभूति पैदा हुई और इस प्रकार सोवियत ननाम्रो को जन-समुदाय का अधिकाधिक समथन प्राप्त हुआ।

६ व्यावहारिक कामो से ही लेनिन ने जनता की नब्ज़ पहचानी

जनता के बहुत निकट रहन से कम्युनिस्ट नताम्रा को लोक भावना के चढाव उतार की जानकारी थी।

लेनिन को लागा की भावनाम्रा और मनाभावा को जानने के लिए किसी आयोग के जाच-काय की ज़रूरत नही थी। उस व्यक्ति को जा स्वय भूखा रहता हो, एक अय भूखे की मनोभावना के बारे म अदाज़ लगान की ज़रूरत नही होती। उसे ता यह स्पष्ट ही हाना है। लागा के साथ भूखे रहकर तथा जाडे मे उनके साथ ठिठुरते हुए दिन गुज़ारकर लेनिन उनकी भावनाम्रो को महसूस कर रहे थे, उन्ही की भाति साच रहे थे और उन्ही की इच्छाम्रा आकाक्षाम्रा का अभिव्यक्त कर रहे थे।

कम्युनिस्ट पार्टी निश्चय ही इसी रूप म काय करन का प्रयत्न करती है—वह जनता के ख्यालो को व्यक्त करती है, उसी की भावनाम्रा का वाणी देती है।

कम्युनिस्टा का कहना था, "हमने सोवियतो की रचना नही की। वे जन जीवन मे उत्पन्न हुई। हमन अपने दिमाग से किसी याजना को गढकर उसे जनता पर नही थोपा। इसके विपरीत जनता ने ही हमारा कायक्रम निर्धारित किया। वह माग कर रही थी, 'ज़मीन किसाना को, कारखाने मज़दूरा का' दा और 'सारी दुनिया म शान्ति कायम हो। हमन अपन फरहरा पर इन नारो को अकित कर लिया और उनके साथ सत्तारूढ हुए। जनता की भावनाम्रो और मनोभावा का समथन म ही हमारी शक्ति निहित है। वस्तुत हमे जनता का समथन की ज़रूरत नहीं है। हम ता स्वय जनता ह।" निश्चय ही यह बात सामान्यतया कम्युनिस्ट नताम्रा पर लागू होती थी, जा उन पाच युवा कम्युनिस्टा की भाति, जिनमे पहली बार हमारी भेंट पत्राग्राद म हुई थी लोगा के ही अभिन्न अग थ।

परन्तु लेनिन जैसे बुद्धिजीवियों पर यह बात कैसे लागू होती है—वे कैसे जनता की ओर से बोल सकते हैं? वे कैसे जनता के दिल और दिमाग को समझ सकते हैं? सामान्यतया इसका उत्तर यही होगा कि उनके लिए कभी ऐसा सम्भव नहीं हो सकता। यह सही है। परन्तु जैसा कि ताल्स्ताय ने चरितार्थ किया है, इसके साथ समान रूप से यह भी सही है कि जो जनता की तरह जीवन व्यतीत करता है, वह जनता से अलग-थलग रहनेवाले व्यक्ति की तुलना में जन समुदाय के बहुत निकट आ जाता है। इस दृष्टि से लेनिन अपने विरोधियों की तुलना में बेहतर स्थिति में थे। उन्हें उराल के खनिक, वोल्गा के किसान अथवा सोवियत सैनिक की भावनाओं के बारे में अनुमान लगाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे उनकी भावनाओं को यदि पूरी तरह नहीं, तो काफी हद तक तो जरूर जानते थे क्योंकि उनके अनुभव स्वयं लेनिन के अनुभव थे। इसीलिए जब उनके विरोधी अंधकार में भटक रहे थे, तो लेनिन उस व्यक्ति की भांति विश्वास के साथ लक्ष्य की ओर अग्रसर थे, जो अपने रास्ते को अच्छी तरह जानता है।

सोवियत नेताओं द्वारा कम्युनिज्म के सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप देना उन महत्त्वपूर्ण कारकों में से एक है, जिन्होंने सोवियत सरकार को शक्तिशाली बनाया। रूस के बाहर इस तथ्य पर या तो ध्यान नहीं दिया गया अथवा इसके महत्त्व को कम आंका गया। परन्तु लेनिन ने इसके महत्त्व को नहीं घटाया। उन्होंने सोवियत प्रणाली में इसे अनिवार्य समझा। महत्त्वपूर्ण घटनाओं में फंसे रहने के बावजूद उन्होंने समय निकालकर अपनी पुस्तक 'राज्यसत्ता और क्रांति' में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि कम्युनिज्म के सिद्धान्तों को व्यवहार में लाना ही सर्वहारा वर्गीय राज्यदर्शियों के लिए एकमात्र सही मार्ग है। यह कठिन मार्ग है। कुछ ही इसका अनुसरण करते हैं।

७ जनता के सम्मुख लेनिन

इन कठिनाइयों और गतिरोध की अग्निपरीक्षा की घड़ियों के बावजूद लेनिन लगातार सार्वजनिक सभाओं में भाषण करते हुए परिस्थितियों का संक्षिप्त सजग विश्लेषण करते, कठिनाइयों को दूर करने के उपाय

सुझाते और अपने श्रोताओं से उन्हें अमल में लाने के लिए क्रियाशील होने का आग्रह करते। लेनिन के भाषणों में अशिक्षित लोगों में उत्साह और उमंग की जो लहर दौड़ जाती, पर्यवेक्षकों को इससे बड़ा आश्चर्य होता। उनके भाषणों में तेज़ी, प्रवाहशीलता और तथ्यों की भरमार रहती थी, मगर जिस प्रकार मंच पर उनकी वेषभूषा अनाकर्षक होती थी उसी प्रकार उनके भाषण साधारणतः अलंकारिक भाषा, भावुकता तथा विलक्षणता से शून्य होते थे। उनमें चिंतन के लिए भरपूर सामग्री रहती थी और उनकी भाषण शैली केरेन्स्की की भाषण शैली के सर्वथा प्रतिकूल थी। केरेन्स्की आकर्षक व्यक्ति और भाषण देने की कला में दक्ष था। स्वभावतः कोई भी यह सोच सकता था कि वह अपनी वक्तृत्व शक्ति और लोगों की भावनाओं को उभारने की कला से "अनभिज्ञ और अशिक्षित रूसियों" को अपनी ओर मोड़ सकता है। मगर वे उसकी ओर नहीं झुके। यह एक अत्यंत रूसी असंगति है। लोग इस प्रख्यात सार्वजनिक सुवक्ता की लच्छेदार और चटपटी बातें सुनते और उसके बाद लेनिन को, उस विद्वान और तर्कशील व्यक्ति को, उनके संतुलित विचारों एवं विद्वत्तापूर्ण उद्‌गारों को अपनी निष्ठा अर्पित करते।

लेनिन द्वंद्वात्मक पद्धति और वाद विवाद के आचार्य और बहस में अत्यधिक अव्यग्र रहनेवाले व्यक्ति थे। बहस में उनका सर्वोत्कृष्ट रूप प्रकट होता था। ओलिगन* ने लिखा है, 'लेनिन विरोधी को उत्तर नहीं देते, बल्कि उसकी बखिया उधेड़कर रख देते हैं—उसका सही रूप प्रकट कर देते हैं। उनकी प्रज्ञा उस्तुरे की धार की तरह तेज़ है। उनका मस्तिष्क विलक्षण कुशाग्रता के साथ काम करता है। विपक्षी के प्रत्येक दोष की ओर उनका ध्यान जाता है। जो प्रमेय उन्हें मान्य नहीं होते उनके प्रति अपनी असहमति प्रकट करते हैं और ऐसे प्रमेयों के उपहासास्पद नतीजों को निकालकर उनके बेतुकेपन को प्रकट कर देते हैं। इसके साथ ही वे व्यंग्यपूर्ण चोटें भी करते हैं, अपने विरोधी की हँसी भी उड़ाते हैं, उस पटकारने

---

*म० न० नोवामेइस्की का उपनाम ओलिगन था—वे एक पत्रकार थे जो १९१४ में रूस से अमरीका चले गये थे और सोवियत संघ के बारे में उन्होंने कई लेख तथा पुस्तकें लिखीं।

भी है। व आपको यह अनुभव कराते हैं कि उनके तर्कों से पराजित उनके विरोधी अज्ञानी, मूर्ख, प्रगल्भ एवं तुच्छ व्यक्ति हैं। आप उनकी तर्कशक्ति से प्रभावित हो उनकी ओर झुक जाते हैं। आप उनके बौद्धिक भावावेग से अभिभूत हो जाते हैं।'

लेनिन कभी कभी तर्क पर तर्क प्रस्तुत करते समय बीच बीच में हास्य की फुलझड़ी छोड़कर अथवा चुभनेवाले मुहतोड़ उत्तर देकर गंभीरता को भंग कर विश्राम के क्षण प्रस्तुत करते जैसे "कामरेड कामकोव की पृच्छता से मुझे उस उक्ति की याद आती है—एक मूर्ख व्यक्ति इतने अधिक प्रश्न पूछ सकता है जिनके उत्तर दस बुद्धिमान भी नहीं दे सकते।" दूसरा उदाहरण लीजिए। बाल्शेविक पत्रकार रादेक ने जब लेनिन पर बरसते हुए कहा 'यदि पेत्रोग्राद में पांच सौ बहादुर व्यक्ति होते, तो हम आपको जेल में डाल देते," लेनिन ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया, "कुछ साथी सचमुच जेल भेजे जा सकते हैं, परन्तु यदि तुम संभावनाओं पर गौर करो, तो तुम्हें यही अधिक सम्भव प्रतीत होगा कि तुम नहीं, बल्कि मैं तुम्हें जेल में भेज सकूंगा। कभी कभी वे सुविदित घरेलू कथनों द्वारा नई व्यवस्था पर प्रकाश डालते जमींदार के जंगल में बुढ़िया किसान महिला जलावन की लकड़ी जमा कर रही है और नये शासन का सैनिक उत्पीड़क की जगह अब उसका रक्षक बना हुआ है।

ऐसा प्रतीत होता कि दुख मुसीबतों और घटनाओं के दबाव ने लेनिन के अन्तस्तल की ज्वाला और जोशीले आत्मसंयम की सामान्य सीमा को भस्म कर डाला था। एक नये पर्यवेक्षक ने कहा कि एक घंटी में लेनिन ने अपना भाषण कुछ रुक रुककर वाचिल वाक्यों से शुरू किया परन्तु जब प्रवाह में आ गये, तो अधिक स्पष्टता के साथ उन्होंने अपनी बात कही। बिना अधिक बाहरी प्रयास के वे धाराप्रवाह एवं ओजपूर्ण ढंग से मगर अधिकाधिक आंतरिक उद्वेलन से भाषण करने लगे, जो बहुत प्रभावकारी था। "एक प्रकार की नियंत्रित संवेदना उनकी आत्मा को दग्ध कर रही थी। वे भाषण के दौरान अनेक प्रकार के अंगविक्षेप व भावभंगि का प्रयोग करते और कुछ कदम आगे पीछे होते रहते थे। उनके ललाट पर बहुत गहरे और बेतरतीब बल पड़ जाते जो प्रगाढ़ चिन्तन और प्रा यातनाप्रद बौद्धिक श्रम के परिचायक होते।' लेनिन का उद्देश्य लोगों

भावनाग्रा की जगह विवेक को जगाना था। मगर दशका की प्रतिक्रिया स लेनिन की शुद्ध बाद्धिकता की भावात्मक शक्ति का परिचय भी प्राप्त हाता था।

मैंने केवल एक बार लेनिन के भाषण म उस जोश का ग्रभाव पाया। यह जनवरी म, मिखाइलोव्स्की ग्राश्वारोहण पाठशाला के विशाल भवन म हुग्रा, जब नई लाल सेना की प्रथम टुकडी मार्चे की ग्रार कच कर रही थी। जलती हुइ मशाला से विशाल भवन मे रोशनी फैली हुई थी ग्रार बख्तरबन्द गाडियो की पक्तिया विचित्र ग्रादिकालिक दानवा के भीमाकार समूह की भाति दिखाई पड रही थी। विशाल मैदान म बख्तरबन्द गाडिया के ग्रासपास कुछ ही समय पहले भर्ती हुए नये सनिका की भीड जमा थी। व बहुत ही कम शस्त्रो से लस थे, परन्तु सुदृढ क्रातिकारी जोश स भरे हुए थे। ग्रपने को गम रखने के लिए वे नाच रहे थे पैरो को पटक रहे थे ग्रौर प्रसन्नता का वातावरण बनाये रखने के लिए क्रातिकारी ग्रौर लोकगीत गा रहे थे।

ऊची ग्रावाज मे लेनिन के ग्रागमन की सूचना दी गई। वे एक बडी बख्तरबन्द गाडी पर सवार होकर भाषण करने लगे। घिरते हुए ग्रधेरे में भीड ने बडे ध्यान से उनका भाषण सुना। मगर उनके शब्दो ने उनम जोश की ज्वाला नही प्रज्वलित की। भाषण की समाप्ति पर तालिया बजाइ गई किन्तु उनम परस्परागत प्रशसा की गमजोशी नही थी। उस दिन उनका भाषण मार्चे पर प्राण न्योछावर करने के लिए जानेवाले सनिका की मनोभावना को ध्यान मे रखते हुए बहुत ढीला था। वही सुने-सुनाये विचार ग्रौर मामूली ग्रभिव्यक्तिया थी। कारण स्पष्ट था—थका देनेवाले ग्रत्यधिक काय एव बहुत सी बातो मे उलझा हुग्रा दिल दिमाग। मगर तथ्य यही है कि उनका व्याख्यान ग्रवसर के उपयुक्त नही था। लेनिन ने एक महत्त्वपूर्ण ग्रवसर पर महत्त्वशून्य भाषण दिया। ग्रौर श्रमिका ने इसे महसूस किया। रूसी सवहारा वर्ग के लोग ग्रन्ध वीरपूजक नही है। कोई भी ग्रपने पुराने कारनामो ग्रौर प्रतिष्ठा के ग्राधार पर बहुत दिनो तक ग्रपना काम नही चला सकता था, जैसा कि क्राति के ग्रनुभवी बडे नेताग्रो को इस तथ्य का ज्ञान हो गया था। यदि इस समय कोई सेनानी के समान ग्राचरण नही करता था, तो नेता की भाति उसके सम्मान म जय जयकार भी नही होता था।

ज लेनिन भाषण देकर बख्तरबन्द गाडी से नीचे उतरे, तो पान्यास्का ने सूचित किया, 'अब एक अमरीकी कामरेड आपके सम्मुख कुछ कहेगा।' लोगो ने इधर कान लगाया और मैं उस बडी गाडी पर चढ़ गया।

लेनिन ने कहा, "ओह! बहुत अच्छी बात है। आप अंग्रेजी में भाषण देगे। मुझे दुभाषिए का काम करने का मौका दीजिये।" कुछ अन्त प्रेरणा की झोंक में मैंने उत्तर दिया, "नही, मैं रूसी भाषा में ही बोलूगा।

लेनिन की आख चमक उठी, मानो उन्हे मनोरंजन की प्रत्याशा हुई। ऐसा होने में बहुत देर भी नही लगी। पहले से रटे रटाए वाक्यो को समाप्त कर लेने के बाद जिनका इस्तेमाल मैं सदा किया करता था, मैं झिझका और फिर चुप हो गया। मैंने रूसी भाषा मे अपना भाषण आगे जारी रखने मे कठिनाई महसूस की। रूसी भाषा के प्रयोग मे विदेशी चाहे कितनी भी भूले क्यो न करे रूसी लोग बहुत शालीनता और उदारता से पेश आते है। यदि वे नौसिखिये के बोलने की क्षमता को नही तो उसके प्रयास को जरूर पसन्द करते है। इसलिए मेरे भाषण मे बार बार देर तक तालियां बजती रही और इससे हर बार मुझे अधिक शब्दो को सोच विचार कर जोड़ने का अवसर मिल जाता जिससे मैं कुछ देर और भाषण जारी रखता। मैं उनसे कहना चाहता था कि यदि कोई गभीर सकट पैदा हो गया, तो लाल सेना मे भर्ती होने मे मुझे भी प्रसन्नता होगी। इसी सिलसिले मे एक शब्द को सोचने के लिए मैं रुका। लेनिन ने मेरी ओर देखते हुए पूछा, 'आप कौन सा शब्द चाहते है?' मैंने 'भर्ती' के लिए रूसी भाषा का शब्द पूछा और उन्होने तत्काल मुझे वह शब्द बता दिया।

उसके बाद जैसे ही मेरे भाषण की गाडी अटकती लेनिन झटपट मुझे शब्द बता देते और मैं इन शब्दो का अमरीकी उच्चारण के साथ तोड मरोडकर श्रोताओ तक पहुचा देता। इससे और इस तथ्य से भी कि अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे के मूर्त्त प्रतीक के रूप मे मैं वहा खडा था, जिसके बारे मे उन्होने बहुत कुछ सुन रखा था जोरो के ठहाके लगते और तालियां गूंज उठती। इसमे लेनिन भी दिल से हिस्सा लेते।

उन्होंने कहा, "खैर, रूसी भाषा में आपकी यह शुरुआत ही है। मगर आपको इसे सीखने के लिए डटे रहना चाहिए।" इसके बाद बेस्सी बिट्टी* की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, "मगर आपको भी रूसी भाषा सीखनी चाहिए। अखबार में पत्राचार द्वारा रूसी भाषा सीखने का विज्ञापन प्रकाशित कराइये। तब केवल रूसी भाषा पढ़िये लिखिये और रूसी में ही बातचीत कीजिये।" फिर मजाक में उन्होंने यह भी कहा, "अमरीकियों से बातचीत न कीजिये – इसमें तो बस भी आपको कोई लाभ नहीं होगा। अगली बार जब मेरी आपसे भेंट होगी तो मैं आपकी परीक्षा लूंगा।"

८ लेनिन सदा खतरे के मुंह में

शीघ्र ही ऐसी घटना घटी, जिससे यह प्रतीत हुआ कि अब अगली भेंट का अवसर नहीं आयेगा। ज्योंही लेनिन को लिये हुए मोटरगाड़ी अश्वारोहण पाठशाला के भवन से बाहर निकली, त्योंही तीन गोलियां उसकी कार के आर पार हो गईं और एक गोली से लेनिन के साथ बैठे स्विटजरलैण्ड के प्रतिनिधि प्लैटन** घायल हो गये। किसी हत्यारे ने बगल की गली के कोने से गोली चलाकर लेनिन की हत्या करने की कोशिश की मगर वह विफल रहा।

---

*बेस्सी बिट्टी – एक अमरीकी महिला पत्रकार, जो १९१७ की क्रान्ति के समय रूस में थी, 'रूस का लाल हृदय' और अक्तूबर क्रान्ति सम्बन्धी अनेक लेखों की लेखिका।

**एफ० प्लैटन – स्विटजरलैण्ड के एक वामपंथी समाजवादी, जो बाद में कम्युनिस्ट हो गये थे। १९०५ में उन्होंने रीगा में क्रान्तिकारी कार्यों का संचालन किया था, रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था। वे १९१२ से १९१८ तक स्विटजरलैण्ड की समाजवादी पार्टी के मंत्री रहे। १९१७ में उन्होंने स्विटजरलैण्ड से रूस जाने के लिए लेनिन की यात्रा की व्यवस्था की थी। वे स्विटजरलैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से थे।

प्रतिशविक नताओं के जीवन के लिए सदा ही खतरा बना रहता था। जाहिर है कि पूंजीवादी षड्यन्त्रकारियों का मुख्य लक्ष्य लेनिन का खात्म करना था। उनका कहना था कि उनके विनाश की योजना लेनिन के तेज दिमाग की उपज थी। काश कि गोली उस दिमाग का भेदकर निष्क्रिय बना दे! प्रतिक्रान्तिवादियों के घरों म प्रतिदिन बड़ी उत्सुकता के साथ यही प्रार्थना की जाती थी।

मास्को के एक ऐसे धनी परिवार म हम लोगों का बहुत स्वागत सत्कार हुआ करता था। मेज पर गर्म चाय के साथ तरह-तरह के फल बादाम अनेक प्रकार के जकूसका (कलेवा) और बहुत-सी अन्य चीजें जिन्हें आर्थर रैन्सम* मिठाइयाँ कहा करते थे और जिन पर वे टूट पड़ते थे, परोसी जाती थीं। युद्ध स यह परिवार मालामाल हो गया था। व्यवसाय की सभी शाखाओं म सट्टेबाजी करना गुप्त रूप से सामान जर्मनी भेजना तथा मुनाफाखोरी म छोटी बड़ी रकमे कमाना, यही इस परिवार का पेशा था। अब अचानक, न जाने कहा से बाल्शेविक नमूदार हो गय थ जो यह बना बनाया सारा सिलसिला ही बिगाड़ देना चाहते थे। व युद्ध समाप्त करना चाहते थे। उन्ह समझाय भी तो कौन! वे वहशी और उन्मादी थे! वे सट्टेबाजी, मुनाफाखोरी और इसी प्रकार के प्रत्येक काम को समाप्त कर देना चाहते थे! बस, एक ही रास्ता था—उनका सफाया। उन्ह फासी के तख्ते पर लटका दिया जाये, उन्हें गोली मार दी जाये! और यह काम शीर्षस्थ नेता लेनिन के साथ ही शुरू होना चाहिए!

मास्को के इसी उदीयमान युवा सट्टेबाज न गंभीरता से मुझे सूचित किया कि लेनिन का काम तमाम करनेवाले व्यक्ति को म इसी क्षण दस लाख रूबल द सकता हू और ऐसे १६ व्यक्ति और हैं जो इस नेक काम के लिए कल ही दस-दस लाख रूबल और दे देंगे।"

हमने अपने पाच परिचित बाल्शेविकों स पूछा कि क्या लेनिन को उस खतरे की जानकारी है, जिससे वे गुजर रहे है। उन्होंने कहा, 'हा,

---

*आर्थर रैन्सम—एक उदारपंथी ब्रिटिश समाचारपत्र के संवाददाता और सोवियत रूस म छ सप्ताह' नामक पुस्तक के लेखक।

उन्हें इसकी बिल्कुल जानकारी है। किन्तु उन्हें इसकी कोई चिंता नहीं है। बात यह है कि वे अपनी चिन्ता तो करना जानते ही नहीं। वास्तव में ऐसा ही था भी।

खतरों और मुसीबतों से भरे मार्ग पर वे धैर्यवान धरती पुत्र की भांति स्थिर भाव से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहे। ऐसे संकटों में भी जब मनुष्यों के साहस एवं आत्मविश्वास शिथिल हो जाते हैं और भय से चेहरा पर हवाइयां उड़ने लगती हैं, वे शांत एवं अव्यग्र रहते थे। प्रतिक्रान्तिवादियों और साम्राज्यवादियों द्वारा लेनिन की हत्या के एक के बाद एक कई कुचक्र विफल रहे। किन्तु १९१८ में अगस्त की अंतिम तिथि को षडयंत्रकारियों को प्राय सफलता मिल गई।

प्रधान मंत्री ने मिखेलसोन कारखाने के १५,००० मजदूरों की सभा में अपना भाषण समाप्त किया। ज्योंही वे अपनी कार में बैठने जा रहे थे, त्योंही एक लड़की अपने हाथ में एक कागज लिए हुए उनकी ओर दौड़ी मानो वह प्रधान मंत्री को कोई अर्जी देना चाहती हो। वे इस कागज को लेने के लिए उसकी ओर मुड़े और उसी समय एक दूसरी स्त्री—फेनी कप्लान—ने उन पर तीन गोलियां चलाई, जिनमें से दो गोलियां उन्हें लगी और वे सड़क की पटरी पर गिर पड़े। उन्हें तत्काल कार में लिटाकर क्रेमलिन पहुंचाया गया। गोलियों के घाव से बहुत खून बह रहा था, फिर भी वे स्वयं सीढ़ियां चढ़े। उनके अनुमान के प्रतिकूल वे बहुत ही गंभीर रूप से घायल हुए थे। कई सप्ताह तक मृत्यु उनके सिरहाने खड़ी रही। सख्त बीमारी का सामना करने के बाद जो शक्ति बच गई थी, वह उन्होंने देश भर में व्याप्त प्रतिशोध के ज्वर को शांत करने में लगा दी।

जन समुदाय में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी थी, लोगों को इस बात पर बेहद गुस्सा था कि जो व्यक्ति उनकी स्वतंत्रता और आकांक्षाओं का प्रतीक है, उस पर प्रतिक्रियावाद की काली शक्तियों ने प्रहार किया था। उन्होंने क्रोधोन्मत्त होकर पूंजीपतियों एवं जारशाही के पापकों पर कड़ी जवाबी चोट की।

कमिसारों की हत्याओं और लेनिन को मौत के घाट उतार देने का प्रयास करने के कारण अनेक पूंजीपतियों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। लोगों में इतना प्रचंड क्रोध था कि यदि लेनिन ने लोगों से अपना

गुस्सा शान्त करने की मार्मिक अपील न की होती, तो सबड़ा और मत्य क घाट उतार दिये गये होते। यह कहना उपयुक्त होगा कि उन्माद के उस पूरे वातावरण में लेनिन ही सबसे अधिक शान्त और सुस्थिर बने रहे।

६ लेनिन का असाधारण आत्मनियन्त्रण

लेनिन सभी अवसरों पर पूर्ण आत्मनियन्त्रण कायम रखते थे। जिन घटनाओं से अन्य लोग बहुत आवेश में आ जाते, उस परिस्थिति में भी वे शान्त रहते और धैर्य का परिचय देते।

संविधान सभा* के एक ऐतिहासिक अधिवेशन में उसके दो गुट एक दूसरे का गला काटने को तैयार थे और इससे कोलाहलपूर्ण वातावरण पैदा हो गया था। प्रतिनिधि चीख चिल्ला रहे थे और अपनी मेजों को पीट रहे थे, वक्ता उच्चतम स्वरों में धमकियां और चुनौतियां दे रहे थे और दो हजार प्रतिनिधि जोश और आवेश में अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्रान्तिकारी अभियान-सम्बन्धी गान गा रहे थे। वातावरण बहुत ही उत्तेजनापूर्ण हो गया था। ज्यों ज्यों रात गुजरती गई, त्यों त्यों उत्तेजना और बढ़ती गई। दर्शक दीर्घाओं में हम लोग रेलिंग को कसकर पकड़े हुए थे, तनाव से होंठ भिंचे हुए थे। हमारा धैर्य जवाब देनेवाला था। पहली पंक्ति के बाक्स में बैठे हुए लेनिन ऊबे से दिखाई पड़ रहे थे।

अन्त में वे अपनी जगह से उठे और मंच के पीछे जाकर लाल गलीचे से आच्छादित सीढ़ियों पर बैठ गये। जब-तब वे प्रतिनिधियों के समूह पर दृष्टि डाल लेते। उस समय ऐसा प्रतीत होता जैसे वे कह रहे हों, "यहां इतने व्यक्ति अपनी स्नायविक शक्ति यूं ही नष्ट कर रहे हैं। पर खैर, यहां एक व्यक्ति है जो उसका संचय करने जा रहा है।" अपनी हथेलियों पर सिर रखकर वे सो गये। वक्ताओं का वक्तव्य कौशल और श्रोताओं की चिल्लाहट उनके सर पर गूंजती रही, परन्तु वे शान्तिपूर्वक ऊंघते रहे। एक या दो बार उन्होंने अपनी आंखें खोलीं, पल भर को इधर उधर देखा और फिर सो गये।

---

*संविधान सभा के बारे में देखिये पृष्ठ २३४–२३७।

अन्तत वे उठे, अगटाइ ली और धीरे धीरे पहली पवित म अपन स्थान पर जाकर बठ गय। उचित अवसर देखकर रीन और मैं सविधान सभा की कार्यवाही के बारे में प्रश्न पूछने के लिए उनक पास चले गये। उन्हान अन्यमनस्क भाव से उत्तर दिये। उन्होन प्रचार कार्यालय* के कार्यकलाप के बारे म पूछा। जब हमने उन्हें बताया कि काफी सामग्री मुद्रित हो रही है और जमन फौजा की खाइयों म पहुच रही है, तो प्रसन्नता स उनका चेहरा चमक उठा। मगर जमन भाषा म सामग्री तैयार करने म हम काफी कठिनाई का सामना करना पड रहा था।

बख्तरबन्द गाडी पर मेरे कारनामे को स्मरण कर उन्हाने अचानक प्रफुल्ल मुद्रा म कहा, "कहिये, रूसी भाषा की पढाई का क्या हालचाल है? अब तो इन सभी भाषणो को समझ लेते ह न?'

मने बात टालते हुए उत्तर दिया, "रूसी भाषा म इतने अधिक शब्द है।" उन्होंने तुरन्त प्रत्युत्तर देते हुए कहा, 'यही तो बात है, आपको रूसी भाषा का विधिवत अध्ययन करना चाहिए। शुरू म ही उसकी कमर तोड डालनी चाहिए। इस बारे म म आपको अपना तरीका बताता हू।"

यथार्थ मे लेनिन की प्रणाली इस प्रकार की थी सबसे पहले सभी सज्ञाओ, क्रियाओ, क्रिया विशेषणो और विशेषणो को याद कर जाओ, शेष सभी शब्दो को याद कर लो, व्याकरण को कठ कर लो, वाक्य रचना का ज्ञान प्राप्त कर लो और इसके बाद हर जगह और हर किसी स बात चीत करते हुए इसका अभ्यास करो। स्पष्ट है कि लेनिन की प्रणाली सूक्ष्म न होकर पक्की और गहन थी। सक्षेप मे पूजीवाद पर विजय प्राप्त करने के लिए उन्होंने जिस प्रणाली को अपनाया था, भाषा पर विजय प्राप्त

---

*१९१८ के शुरू म रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के अतगत गठित विदेशी दलो के सघ से प्रचार कार्यालय सम्बद्ध कर दिया गया था। इस कार्यालय म विदेशी लेखक और प्रचारक थे। इसने विविध प्रकार की प्रचार सामग्री प्रकाशित की और उसका वितरण किया तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रो की फौजो के बीच प्रचार काय सगठित किया।

करने ता ारी प्रणाली भी वसी ही थी अथात् जी-जान से अपने कायम जट जाओ। परन्तु इस प्रणाली म वे काफी हाथ मार चुके थे।

लेनिन बाम पर गुरु हुए थे, उनकी आखें चमक रही था और सरता से अपने शब्दों के अभिप्राय स्पष्ट कर रहे थे। हमारे सहयोगी-अन्य संवाददाता-बडी ईर्ष्या से साथ देख रहे थे। वे समझ रहे थे कि लेनिन खूब जोर शोर से विरोधी पक्ष के अपराधों का पर्दाफाश कर रहे हैं, अथवा सोवियतों की गुप्त योजनाये प्रकट कर रहे हैं या उसमे क्रातिकारी भावनाये भर रहे हैं। इस प्रकार के सकट म निश्चय ही महान रूसी राज्य के प्रधान से ऐसे ही विषय पर सशक्त अभिव्यक्ति की आशा की जा सकती थी। परन्तु सवाददाताओं का अनुमान गलत था। उस समय रूस के प्रधान मंत्री केवल यह कह रहे थे कि किसी विदेशी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और उस संक्षिप्त मैत्रीपूर्ण वार्तालाप द्वारा थोड़ा देर के लिए वहा के वातावरण से मुक्त होकर अपना मनोरंजन कर रहे थे।

बडी बडी बहसो के तनावपूर्ण वातावरण म, जब उनके विरोधी बहुत ही निर्ममता के साथ उनकी आलोचना किया करते थे, उस समय भी लेनिन अनुद्विग्न बैठे रहते और यहा तक कि उस स्थिति म भी हास परिहास द्वारा अपना मनोरंजन कर लेते। सोवियतो की चौथी कांग्रेस म अपना भाषण समाप्त करने के बाद अपने पाच विरोधियों की आलोचनाओं को सुनने के लिए वे मच पर ही बैठ गये। जब भी उन्हे यह आभास होता कि विरोधी ने कोई उचित बात कही है, तो लेनिन खुलकर मुस्कुराते और हर्षध्वनि म शामिल होते। जब भी वे समझते कि हास्यास्पद और बेसिर पैर की बात कही गई है, तो लेनिन व्यग्यात्मक ढग से मुस्कुराते, खिल्ली उड़ाने की भावना से अगूठा को सटाये हुए ताली बजाते।

१० लेनिन व्यक्तिगत बातचीत मे

मैंने केवल एक बार ही लेनिन को थका हारा देखा। जन कमिसार परिषद की आधी रात तक चलनेवाली बैठक के बाद वे 'नेशनल' होटल म अपनी पत्नी और बहन के साथ लिफ्ट मे कदम रख रहे थे। परिश्रान्त स्वर म उन्होंने अंग्रेजी म कहा, 'गुड ईवनिंग।" फिर अपनी भूल सुधारते

हुए बोले, "इट इज गुड मानिंग। मैं सारा दिन और रात को भी बातचीत करता रहा हूं और थक गया हूं। यद्यपि एक ही मंजिल ऊपर चढना है, फिर भी मैं लिफ्ट से जा रहा हूं।"

मैंने केवल एक ही बार उन्हें जल्दी जल्दी अथवा झपटते हुए आते देखा। यह फरवरी की बात है, जब तात्रीचेस्की प्रासाद फिर से तीखी नोक-झोंक—जर्मनी के साथ युद्ध या शान्ति के प्रश्न की बहस—का केन्द्र बना हुआ था।

वे तेजी से लम्बे डग भरते और प्रवेश कक्ष को लांघते हुए सभा मंच द्वार की ओर बढे जा रहे थे। प्रोफेसर चार्ल्स कून्स तथा मैं वहां खडे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमने उनका अभिवादन करते हुए कहा, "कामरेड लेनिन, जरा रुकिये तो एक मिनट।"

उन्होंने तेजी से बढते हुए अपने कदमों को रोक लिया और लगभग एक फौजी की भांति सावधान खडे होते हुए गंभीरतापूर्वक सिर झुकाया और कहा, "साथियो, कृपया इस समय मुझे मत रोकिये! मेरे पास एक सेकेण्ड का भी समय नहीं है। वे हाल में मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। कृपया, इस समय मुझे क्षमा करें, मैं रुक नहीं सकता।' उन्होंने फिर से सिर झुकाया, हम दोनों से हाथ मिलाया और पुनः तेजी से आगे बढ गये।

बोल्शेविक विरोधी विलकाक्स ने लोगों के साथ लेनिन के मधुर व्यवहार पर अपना मत प्रकट करते हुए लिखा है कि एक अंग्रेज सौदागर एक नाजुक स्थिति में अपने परिवार की रक्षा के उद्देश्य से लेनिन की निजी सहायता प्राप्त करने के लिए उनके पास गया। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि "रक्त का प्यासा क्रूर शासक" मृदुस्वभाव का, शालीन व्यक्ति है, उसका बर्ताव सहानुभूतिपूर्ण है और वह अपनी शक्ति भर सभी सहायता प्रदान करने को प्रायः उत्सुक है।

सचमुच कभी-कभी वे हद से अधिक अतिरंजित रूप में शालीनता और विनम्रता प्रकट करते थे। हो सकता है कि अंग्रेजी भाषा के प्रयोग के कारण ऐसा होता रहा हो—वे पुस्तकों से प्राप्त शिष्ट बातचीत के परिष्कृत रूपों का पूर्णतया प्रयोग करते रहे हों। लेकिन इस बात की अपेक्षाकृत अधिक संभावना है कि यह उनके सामाजिक आचार-व्यवहार के ढंग का अभिन्न अंग हो, क्योंकि अन्य क्षेत्रों की भांति लेनिन सामाजिक शिष्टाचार

म भी बहुत ही दक्ष थे। वे गैरमहत्त्वपूर्ण व्यक्तियो से बातचीत मे अपना समय नष्ट नही करते थे। आसानी से उनसे भेंट नहीं हो सकती थी। उनके भेंट कक्ष म यह सूचना पत्र लगा हुआ था

"मुलाकातियो से यह ध्यान मे रखने को कहा जाता है कि उन्हें ऐसे व्यक्ति से बातचीत करनी है, जो काम की अधिकता के कारण बहुत ही व्यस्त रहता है। अनुरोध है कि भेंट करनेवाले अपनी बात सक्षेप मे साफ साफ कहे।"

लेनिन से मिलना कठिन था, पर ऐसा हो जाने पर वे मुलाकाती की हर बात पर कान देते। उनका सारा ध्यान मुलाकाती पर ऐसे सकेंद्रित हो जाता कि उसे घबराहट तक अनुभव होने लगती। विनम्र एव प्राय भावात्मक अभिवादन के पश्चात वे भेंट करनेवाले के इतने निकट आ जाते कि उनका चेहरा एक फुट से भी कम दूरी पर रह जाता। बातचीत के दौरान वे और भी सटते चले जाते और भेंटकर्त्ता की आखो म ऐसे टकटकी लगाकर देखते मानो उसके मस्तिष्क के अतस्तल की थाह ले रहे हो, उसकी आत्मा म झाक रहे हो। केवल मलिनोव्स्की जैसा निलज्ज झूठा व्यक्ति ही ऐसी पैनी निगाह के दृढ प्रभाव का प्रतिरोध कर सकता था।

एक ऐसे समाजवादी स हम लोग अक्सर मिला करते थे, जिसने १६०५ मे मास्को की क्राति मे भाग लिया था और जो मोर्चेबदी पर भी जमकर लड चुका था। सुख और आराम का जीवन व्यतीत करने तथा व्यक्तिगत सफलता एव उन्नति की भावना से वह अपनी प्रथम ज्वलत निष्ठा स विचलित हो चुका था। वह अब अनेक पत्र पत्रिकाओ को प्रकाशित करनेवाली एक अग्रेजी सस्था के पत्रो एव प्लेखानोव* के पत्र 'येदीस्त्वो' का सवाददाता था और खूब बना-ठना रहता था। पूजीवादी लेखको से भेंट

---

*प्लेखानोव, गे० वा० (१८५६-१६१८)—रूस मे मार्क्सवाद के प्रथम प्रचारक, भौतिकवादी विश्व-दृष्टिकोण के सुदृढ पोषक, रूसी एव अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आदोलन के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता। पर, साथ ही अपने दार्शनिक और राजनीतिक विचारो और व्यावहारिक कार्य-कलाप मे उन्होंने गभीर भूले की। वे मेन्शेविको के एक नेता थे। प्रथम विश्व-युद्ध के समय उन्होंने सामाजिक अधराष्ट्रवाद का दृष्टिकोण अपनाया।

करने को लेनिन अपना समय बर्बाद करना मानते थे परन्तु इस व्यक्ति न अपने पुरान क्रान्तिकारी कारनामा का उल्लेख कर लेनिन स मुलाकात का समय प्राप्त कर लिया था। जब वह उनसे भेंट करन जा रहा था, तो बहुत ही उत्साहपूण मुद्रा मे था। मैंन कुछ घटे वाद उसे बहुत ही बेचन देखा। उसने बताया

"जब मैं उनके कमरे मे पहुचा, तो मैंने १९०५ की क्रान्ति मे अपने काय का उल्लेख किया। लेनिन मेरे पास आकर बोले, 'हा कामरेड, मगर इस क्राति के लिए अब आप क्या कर रहे है?' उनका चेहरा मुझसे ६ इच से अधिक दूरी पर नही था और उनकी आखें एकटक मेरी आखा की ओर देख रही थी। मैंने मास्का म मोर्चेबन्दी के दिनो के अपन कार्यो की चचा की और एक कदम पीछे हट गया। परन्तु लेनिन एक कदम आगे बढ आये और मेरी आखो म आखे डाले हुए ही उन्होंने पुन कहा, 'हा कामरेड, मगर इस क्रान्ति के लिए अब आप क्या कर रहे ह?' ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे मेरी आत्मा का एक्सरे कर रहे थे—मानो पिछले १० वर्षों के मेरे सारे कारनामा को साफ साफ देख रहे थे। मैं उनकी इस नजर की ताब न ला सका। एक दोषी बालक की भाति मेरी नज़र झुक गई। मने बातचीत करने की कोशिश की, मगर असफल रहा। मैं उनके सामने ठहर न सका और चला आया।" कुछ दिना बाद इस व्यक्ति ने इस क्रान्ति मे अपने को झाक दिया और सावियता का कायकर्ता बन गया।

११ लेनिन की निष्कपटता और स्पष्टवादिता

लेनिन की शक्ति का एक रहस्य उनकी उत्कट ईमानदारी थी। व अपन मित्रा के प्रति सत्यनिष्ठ थ। क्रान्ति के प्रत्येक नये पक्षपाती की वद्धि से उन्ह खुशी होती, परन्तु काम की स्थिति अथवा भावी सभावनाओ के सब्ज बाग दिखाकर वे कभी एक व्यक्ति को भी अपने पक्ष म शामिल न करते। इसके प्रतिकूल जैसी वास्तविक स्थिति थी, वे उसे और भी बुरे रूप मे प्रस्तुत करने की ओर प्रवृत्त रहते थे। लेनिन के अनक भाषणा की प्रमुख विषय-वस्तु इस प्रकार की थी "बोल्शेविक जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील ह, वह निकट नही है—कुछ बोल्शेविक जैसा सोचत हैं,

उससे दूर है। हमने उत्तष्ठ खाग्रड मार्ग से रूस को आगे बढ़ाया है, परन्तु हम जिस पथ का अनुसरण कर रहे हैं, उसमें हम और अधिक शत्रुओं एवं अकाल का सामना करना होगा। भूतकाल जितना कठिन था, भविष्य में हम उसकी अपेक्षा और आपके अनुमान से भी अधिक दुष्कर परिस्थितियों का सामना करना होगा।' यह कोई प्रलोभनकारी आश्वासन नहीं है। यह संघर्ष-क्षेत्र में कूदने के लिए प्रेरित करने का परम्परागत आह्वान नहीं है। फिर भी जिस प्रकार इटली की जनता गारीबाल्डी के गिर्द जमा हो गई थी, जिन्होंने यह कहा था कि इस पथ पर आनेवाला का यन्त्रणा, कारावास-दण्ड और मौत ही स्वागत करेगी, उसी प्रकार रूसी जनता लेनिन के साथ हो गई। उन लोगों को इस बात से कुछ निराशा हुई, जो यह उम्मीद लगाये थे कि उनका नेता अपने ध्येय की बडी सराहना करते हुए संभावित व्यक्तियों को इस कार्य में शामिल होने के लिए प्रेरित करेगा। मगर लेनिन ने इस बात को उनके मन की प्रेरणा पर ही छोड दिया।

लेनिन अपने कट्टर शत्रुओं के प्रति भी निष्कपट थे। उनकी स्पष्टवादिता पर टिप्पणी करते हुए एक अंग्रेज का कहना है कि उनका दृष्टिकोण इस प्रकार का था 'व्यक्तिगत रूप से आपके विरुद्ध मेरे मन में कुछ नहीं है। किन्तु राजनीतिक दृष्टि से आप मेरे शत्रु हैं और आपके विनाश के लिए मुझे हर सम्भव उपाय का इस्तेमाल करना चाहिए। आपकी सरकार भी मेरे विरुद्ध ऐसा ही कर रही है। अब हमें यह देखना है कि किस सीमा तक हम साथ साथ चल सकते हैं।"

उनके सभी सार्वजनिक भाषणों पर इस निश्छलता की छाप है। झांसा देना, शब्द जाल फैलाने और गलत सही किसी भी तरीके से कामयाबी हासिल करने का व्यवहार-कुशल राजनीतिज्ञों का जो रूप है, लेनिन उससे सर्वथा भिन्न थे। कोई भी इसे महसूस करता था कि यदि वे चाहें, तो भी दूसरों को धोखा नहीं दे सकते। सो भी इसी कारण कि वे स्वयं अपने को भी धोखा नहीं दे सकते थे उनका मानसिक दृष्टिकोण वैज्ञानिक था और तथ्यों में अटूट विश्वास था।

वे अनेक स्रोतों से सूचनाएं प्राप्त करते और इस प्रकार उनके पास ढेरों तथ्य जमा हो जाते। वे इनको आंकते, छानबीन और मूल्यांकन करते। तब दांव-पेच में कुशल नेता की भांति, निपुण समाजशास्त्री और गणितज्ञ

की भाति, वे इन तथ्या का उपयोग करते। वे समस्या की ओर इस प्रकार बढते

"इस समय हमारे पक्ष म य तथ्य ह एक, दो, तीन, चार " वे सक्षेप म उनकी गणना करते। "और हमारे विरुद्ध जो तथ्य हैं, वे ये ह।" उसी प्रकार वे इनकी भी गणना करते, "एक, दो, तीन, चार क्या इनके अतिरिक्त भी हमारे खिलाफ कुछ तथ्य है?" वे यह प्रश्न पूछते। हम दिमाग पर जोर डालकर कोई अन्य तथ्य खोजने की कोशिश करते, मगर आम तौर पर नाकाम रहते। पक्ष विपक्ष पर विस्तारपूवक विचार करके वे अपनी गणना अनुमान के साथ उसी प्रकार आगे बढते जैसे गणित के प्रश्न को हल करने के लिए आगे बढा जाता है।

वे तथ्या के महत्त्व का वणन करने मे विलसन* के सवथा प्रतिकूल हैं। विलसन शब्दो के जादूगर की भाति सभी विपया पर लच्छेदार एव मुहावरेदार उक्तिया मे अपने विचार व्यक्त करते थे, लोगो को चकाचौध कर उन्ह अपने वश मे करते थे और घणास्पद वास्तविक स्थितियो एव भाडे आर्थिक तथ्यो से अनभिज्ञ रखते थे। लनिन एक शल्यचिकित्सक के तेज चाकू की भाति खरी भाषा म वस्तु स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करत। वे साम्राज्यवादिया की आडम्बरपूण भाषा के पीछे जो सहज आर्थिक स्वाथ छिपे होते, उनकी कलई खोलत। रूसी जनता के नाम उनकी उदघोपणाओ को स्पष्ट व नग्न रूप मे प्रस्तुत कर देते हैं और उनके सुखद मधुर वादा के पीछे शोपका के कुत्सित तथा लालुप हाथा का भण्डाफोड करते।

वे जिस प्रकार दक्षिणपथी लफ्फाजो के प्रति निमम थे, उसी प्रकार वामपथी लफ्फाजो के प्रति भी कठोर थे, जो यथाथ से मुह माडकर क्रान्तिकारी नारो का सहारा लिया करते हैं। वे "क्रातिकारी जनवादी वाग्मिता के मीठे जल म सिरका और पित्तरस मिला देना' अपना कत्तव्य मानते थे और भावुकतावादिया एव रूढिवादिया का ममबेधी उपहास उडाया करते थे।

जब जमन फौजें लाल राजधानी की ओर बढ रही थी, ता स्मान्नी म रूस के कोने कोने से प्राप्त आश्चय, आतक और घणा की भावनाए

---

*डब्लयू० विलमन – १६१३–१६२१ तक म० रा० अमरीका के राष्ट्रपति।

व्यक्त करनेवाले तारो का अम्बार लग गया। इन तारो के अन्त म इस प्रकार के नारे लिखे होते, "अजेय रूसी सवहारा वग जिन्दाबाद!", "साम्राज्यवादी लुटेरे मुर्दाबाद!", 'हम अपने रक्त की अन्तिम बूद बहाकर क्रातिकारी रूस की राजधानी की रक्षा करेगे!"

लेनिन इन तारो को पढते और उसके बाद उन्होने सभी सावियता को एक ही आशय का तार भिजवाया, जिसमे कहा गया था कि तार द्वारा पेत्रोग्राद क्रातिकारी नारे भेजन की जगह फौजें भेजे, स्वेच्छा से सेना मे भर्ती होनेवाला की सही सख्या, हथियारो, गोला बारूद एव खाद्य सामग्री की वास्तविक स्थिति की सूचना दें।

१२ सकट के समय काय मे सलग्न लेनिन

जमन फौजो के बढाव के साथ विदेशी भागने लगे। रूसियो का कुछ हैरानी हुई, क्याकि जो लोग बडे जोर-शोर से जमना को मार डालो!" का नारा लगा रहे थे, वे ही जब जमन गोली की मार के भीतर आ गये, तो सिर पर पाव रखकर भाग खडे हुए। उस समय वहा से भाग जानेवाला मे शामिल होना ही अच्छा होता, मगर म तो बख्तरबद गाडी पर प्रतिज्ञा कर चुका था। इसलिए मैं लाल फौज मे भर्ती होने चला गया। वामपथी बोल्शेविक बुखारिन न इस बात पर जोर दिया कि मैं लेनिन से मिलू।

लेनिन न कहा "बधाई! म आपके निणय स बहुत खुश हू। इस समय हमारी स्थिति बहुत खराब प्रतीत होती है। पुरानी फौज लडेगी नही, नयी फौज अभी मुख्यत कागज पर ही है। बिना प्रतिरोध के अभी अभी प्स्कोव शत्रु के हाथ मे चला गया है। यह अपराध है। सोवियत क अध्यक्ष को गोली मार देनी चाहिए। हमारे मजदूरा म बलिदान की भावना और वीरता तो बहुत है। परन्तु न तो उन्हे फौजी प्रशिक्षण दिया गया और न उनम अनुशासन है।"

इस प्रकार करीब बीस सक्षिप्त वाक्या म उन्हान परिस्थिति का सिहावलोकन प्रस्तुत करत हुए अत म कहा, 'मरी समझ म यही बात आती है कि शाति-सधि हो जानी चाहिए। फिर भी सभवत सोवियत युद्ध जारी

रखने के पक्ष म हो। पर खर, क्रातिकारी फौज म शामिल होने के लिए म आपको बधाई देता हू। रूसी भाषा सीखने के लिए आपने जो सघष किया, उससे आपको जमनो से लडने का अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त हो गया होगा।" एक क्षण गभीर विचार करने के बाद उन्होने पुन कहा

"केवल एक विदेशी तो लडाई मे बहुत कुछ नही कर सकता। शायद आप दूसरो को भी लडने के लिए तैयार करेंगे।"

मैंने कहा कि मैं एक टुकडी गठित करन का प्रयास करूगा।

लेनिन प्रत्यक्ष कमण्यतावादी थे। किसी अच्छी योजना के दिमाग मे आ जाने पर वे उसे तत्काल कार्यान्वित करने की दिशा मे अग्रसर हो जाते। उन्होंने सोवियत सेनापति क्रिलेंको को टेलीफोन किया। फोन पर उसे न पाकर उन्होंने कलम उठाई और उसके नाम एक परचा लिखा।

हम लोगो ने रात तक अन्तर्राष्ट्रीय स्वयसवक दल का गठन कर लिया और सभी विदशियो से इस सैन्य दल म शामिल होने की अपील जारी की। परन्तु लेनिन ने इस बात को यही खत्म नही होने दिया। वे इस सन्य दल का शानदार शुभारम्भ कर देने मात्र से ही सतुष्ट नही हो गये। वे बडी दढता से इस काय को आगे बढाते और इस प्रश्न पर विस्तारपूवक विचार करते रहे। उन्होंने 'प्राव्दा' कार्यालय को दो बार फोन किया और इस अपील को रूसी और अग्रेजी भाषाओ म प्रकाशित करने की हिदायत दी। उसके बाद उन्होने तार द्वारा दश भर मे इसकी सूचना पहुचा दी। इस प्रकार युद्ध का और विशेष रूप से उन लोगो का विरोध करत हुए जो क्रान्तिकारी नारो के मद से युद्धोन्मादी हो रहे थे, लेनिन इसकी तैयारी मे सारी शक्तियो को जुटा रहे थे।

उन्होने पीटर पाल किले म बन्द कुछ क्राति विरोधी जनरलो को लाने के लिए मोटर-गाडी भेजी।

जब जनरल उनके कार्यालय मे आ गये, तो लेनिन ने उन्ह सम्बोधित करते हुए कहा, "सज्जनो, मैंने दश सलाह के लिए आपको यहा बुलवाया है। पेत्रोग्राद खतरे मे है। क्या आप इसकी रक्षा के लिए फौजी कारवाई निर्धारित करने की कृपा करेंगे?'

वे तैयार हो गये।

लनिन ने अपनी बात जारी रखते हुए नक्शे पर उस स्थान की ओर सकत किया, जहा लाल फौज, सैय शस्त्रास्त्र एव लडाई के समान और रिज़व सेना थी। "और यह रही शत्रुओ की फौजो की सख्या एव स्थिति के सम्बध मे ताजी सूचनाए। यदि जनरलो को कुछ और सूचनाओ की जरूरत होगी, तो उन्हे प्राप्त हो जायेगी।"

जनरलो ने रण-नीति के निर्धारण का काम शुरू किया और शाम तक अपन विचार विमश का निष्कष लेनिन के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया।

जनरलो ने उनका कृपापात्र बनते हुए कहा, "क्या प्रधान मत्री मेहरबानी करके अब हमारे लिए अधिक आरामदेह क्वाटरो की व्यवस्था कर देंगे?"

"मुझे बहुत खेद है," लेनिन ने उत्तर दिया, "किसी और समय ऐसी व्यवस्था हो सकती है, परन्तु इस समय नही। सज्जनो, हो सकता है कि आपके क्वाटर आरामदेह न हो, परतु वे बहुत सुरक्षित ता ह ही।"

जनरलो को पुन पीटर-पाल किले मे भेज दिया गया।

१३ भविष्यद्रष्टा और राज्यदशी लेनिन

यह स्पष्ट है कि एक राज्यदर्शी एव भविष्यद्रष्टा के रूप मे लेनिन की शक्ति का स्रोत कोई रहस्यमूलक अन्तर्ज्ञान अथवा भविष्यवाणी की क्षमता नही, बल्कि किसी मामले मे सभी तथ्यो को जमा कर लेने और उन्हें उपयोग म लाने की योग्यता थी। उन्होने अपनी कृति 'रूस मे पूजीवाद का विकास' मे इसी योग्यता का परिचय दिया। लेनिन ने यह दावा करके कि रूसी किसानो का आधा भाग सवहारा हो गया है और कुछ भूमि के स्वामी होने के बावजूद वस्तुत वे उजरती मजदूर है, अपने युग के आर्थिक चितन को चुनौती दी। यह दावा बहुत साहसपूण था, किन्तु बाद के वर्षों की छानबीन न इसकी सत्यता प्रमाणित कर दी। लेनिन ने केवल इसका अनुमान नही लगाया था। उन्होने ज़ेम्सत्वो (स्थानीय परिषदो) और अन्य क्षेत्रो म जमा किये गये व्यापक आकडो के आधार पर यह सुनिश्चित मत प्रवट किया था।

एक दिन पटेस के साथ बातचीत करते हुए लेनिन की प्रतिष्ठा की बुनियाद की चर्चा चल पडी। तब उन्होने कहा, "पार्टी की बद बैठको

मे लेनिन अवसर स्थिति के अपने विश्लेपण के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत करते। हम उन्हे नामजूर कर देते। बाद मे लेनिन सही और हम गलत सिद्ध होते।" कार्यनीति के प्रश्न पर लेनिन और पार्टी के अन्य सदस्यो के बीच वैचारिक धरातल पर जोरो की बहसे हुइ और बाद की घटनाओ ने सामान्य रूप से यह चरितार्थ कर दिया कि उनके निर्णय सही थे।

कामेनेव और जिनोव्येव जैसे प्रमुख बोल्शेविक नेताओ का मत था कि प्रस्तुत अक्तूबर क्रान्ति मे सफल होना असभव है। लेनिन ने कहा कि विफल होना असभव है। लेनिन सही थे। बोल्शेविको ने जरा-सी चेष्टा की और सत्ता उन्हे प्राप्त हो गई। जिस आसानी से यह उद्देश्य पूरा हुआ, उससे बोल्शेविको को ही सबसे अधिक आश्चर्य हुआ।

अन्य बोल्शेविक नेताओ ने यह विचार प्रकट किया कि हो सकता है कि वे सत्ता प्राप्त कर ले, मगर अधिक दिनो तक व उसे सम्भाले नही रख सकेगे। लेनिन ने कहा कि प्रति दिन बोल्शेविको को नई शक्ति प्राप्त होती जायेगी। लेनिन का विचार सही था। सोवियत रूस को सभी ओर से घेरनेवाले शत्रुओ से दो साल तक लडते हुए सोवियत फौजें अब हर मार्चे पर आगे बढ रही थी।

त्रात्स्की जमनी के साथ अपनी टाल-मटोल की नीति का अनुसरण कर रहा था, उन्हे जाल मे फसाना चाहता था, मगर शान्ति-सधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर रहा था। लेनिन ने कहा उनके साथ दाव पेंच का यह खेल मत खेलो। सधिपत्र के पहले ही मसौदे पर, वह चाहे जितना बुरा हो, हस्ताक्षर कर देना चाहिए अन्यथा हमे इससे भी बुरे सधिपत्र पर हस्ताक्षर करने पडेंगे।" लेनिन पुन सही थे। रूसियो को ब्रेस्त लितोव्स्क म विवश होकर "लुटेरो की', 'दस्युओ की" शान्ति-सधि पर हस्ताक्षर करने पडे।

१९१८ के वसत म जबकि सारा विश्व जमन क्रान्ति के विचार का मजाक उडा रहा था और कैसर की सना फ्रास मे मित्रराष्ट्रो की रणशक्ति को ध्वस्त कर रही थी, लेनिन ने मुझसे बातचीत करते हुए कहा, 'साल के भीतर ही कैसर का पतन हो जायगा। यह बिल्कुल निश्चित है।" ६ महीने बाद अपनी ही जनता से भागकर कैसर शरणार्थी बन गया था।

लेनिन न १९१८ के अप्रल म मुझसे कहा, 'यदि आप अमरीका वापस जाने का इरादा रखते ह, तो शीघ्र रवाना हो जाइए अन्यथा अमरीकी फौजों से साइबेरिया म आपकी भेंट होगी।" यह हरत म डालनवाली बात थी, क्योंकि उस समय मास्को मे हम यह विश्वास करते थे कि अमरीका नय रूस के प्रति अधिकतम सदभावना रखता है। मन लेनिन की बात का विरोध करते हुए कहा, 'यह असभव है। यदि यह बात होती, तो रेमाण्ड रोबिन्स यह क्या सोचते कि सोवियत रूस को मान्यता प्रदान करने की भी सभावना है।"

लेनिन न कहा "हा, लेकिन रोबिन्स अमरीका क उदारतावादी पूजीपति वग का प्रतिनिधित्व करते है। वह अमरीका की नीति का निर्धारण नही करते। महाजनी पूजी वहा की नीति निर्धारित करती ह। और वह साइबेरिया पर अपना नियत्रण स्थापित करना चाहती है। वह ऐसा नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए अमरीकी सनिकों को यहा भेजेगी। यह दृष्टिकोण मुझे बडा अटपटा लगा। परन्तु बाद मे २६ जून १९१८ को मैंने अपनी आखो से अमरीकी नौसैनिकों को ब्लादीवोस्ताक म उतरते देखा। इसी समय जारशाही की पोषक फौजों के साथ ही चेक, ब्रिटिश, जापानी और मित्रराष्ट्रों की अन्य फौजो ने सोवियत जनतन्त्र के झडे को उतारकर वहा पुराने जारशाही शासन के झडे को फहरा दिया था।

लेनिन की भविष्यवाणी अक्सर भावी घटनाओं से इतनी सही सिद्ध होती रही कि भविष्य के बारे म उनके विचार बहुत ही दिलचस्पी पैदा करते थे। १९१९ के अप्रल मे पेरिस के 'टेम्पस' म नादो का जो प्रसिद्ध इटरव्यू प्रकाशित हुआ था, मैं यहा उसका साराश दे रहा हू।

"आप जानना चाहते हैं विश्व का भविष्य क्या होगा?' लेनिन ने भेटकर्ता का प्रश्न दोहराते हुए कहा। "म कोई पगम्बर नही हू कि विश्व का भविष्य बताऊ। किन्तु यह बात निश्चित है कि पूजीवादी राज्य, इगलैण्ड जिसका नमूना है, खत्म हो रहा है। पुरानी सामाजिक व्यवस्था नष्ट होनेवाली है। युद्ध के फलस्वरूप पदा होनेवाली आर्थिक परिस्थितिया नूतन सामाजिक व्यवस्था की ओर उन्मुख हैं। मानवजाति का विकासक्रम अनिवायत समाजवाद की ओर बढ रहा है।

"कुछ वर्ष पूर्व किसे यह विश्वास हो सकता था कि अमरीका में रेलवे का राष्ट्रीयकरण संभव है? फिर हमने अमरीकी सरकार को पूरे राज्य के हित में इस्तेमाल करने के लिए सारा खाद्यान्न भी खरीदते देखा है। राज्य के खिलाफ जो कुछ कहा जा रहा है, उससे यह विकासक्रम अवरुद्ध नहीं हुआ है। यह बात ठीक है कि त्रुटियों को दूर करने के ख्याल से नियंत्रण के नये उपाय सोचना और ढूंढना आवश्यक है। परन्तु राज्य को सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न होने से रोकने का कोई भी प्रयास व्यर्थ सिद्ध होगा। जो अनिवार्य है, वह होकर रहेगा और अपनी शक्ति से ही होगा। अंग्रेजों की कहावत है, 'पकवान कैसा है, खाने पर ही इसका पता चलता है'। आप समाजवादी पकवान के सम्बन्ध में बेशक कुछ भी क्यों न कहें, लेकिन सभी राष्ट्र इसे खा रहे हैं और अधिकाधिक खायेंगे।

"कुल मिलाकर, अनुभव से यह सिद्ध होता प्रतीत हो रहा है कि प्रत्येक मानव-समूह अपने अपने विशिष्ट मार्ग से समाजवाद की ओर अग्रसर है। उसके अनेक संक्रमणकालीन स्वरूप और प्रकार होंगे, परन्तु वे सभी उस क्रान्ति के विभिन्न दौर हैं, जो एक ही लक्ष्य की ओर ले जाती है। यदि फ्रांस अथवा जर्मनी में समाजवादी शासन कायम हो जाय, तो रूस की अपेक्षा वहां उसे कायम रखना अधिक आसान होगा। इसका कारण यह है कि पश्चिम में समाजवाद को कायम रखने के लिए ढांचा, संगठन और सभी प्रकार की बौद्धिक सहायक शक्तियां एवं सामग्रियां सुलभ हैं जो रूस में नहीं हैं।"

१४ बुद्धिजीवियों के प्रति लेनिन का दृष्टिकोण

"प्रत्येक ईमानदार बोल्शेविक के पीछे उन्तालीस पाजी और साठ मूर्ख हैं।" व्यापक रूप से उद्धृत यह वाक्य किसी अन्य व्यक्ति का है, मगर इसे लेनिन का वाक्य कहकर इस उद्देश्य से इसे प्रचारित किया गया कि उन्हें एक कुलीन के नाते जन-समुदाय के प्रति विरक्त व अविश्वासी सिद्ध किया जाय। इस विचित्र आरोप के समर्थन में १५ वर्ष पुराने एक वक्तव्य को ढूंढकर निकाला गया। इस वक्तव्य में कहा गया था कि मजदूर वर्ग ने स्वयं तो केवल ट्रेड-यूनियनों की, अर्थात संगठित होने, मालिक के

खिलाफ हडताल करन, प्रति आठ घटे के काय दिवस की माग करने आदि की चेतना विकसित की। परतु मजदूरा को समाजवाद के विचार वाहर से मुख्यत बुद्धिजीविया स प्राप्त हुए ह।

यह सच है कि लेनिन और सोवियत सरकार न अपन सभी कामा और फरमाना द्वारा यह चरिताथ किया है कि वे विद्वाना और विशेषज्ञा को बहुत महत्त्व देते है। लेनिन हर क्षेत्र म विशेषन की राय का सम्मान करते थ। व फौजी मामला म प्रामाणिक अधिकारिया के रूप म जनरला, यहा तक कि जार के जनरलो, की राय लेते थे। यदि क्रान्तिकारी कायनीति के बारे मे जमन नागरिक – माक्स – लेनिन के लिए मा य पण्डित थे, तो वे उत्पादन-कुशलता के लिए अमरीकी नागरिक – टेलर – को अधिकारी मानते थे। वे सदैव निपुण लेखाकार, सुयोग्य इजीनियर और प्रत्येक काय-क्षेत्र म विशेषज्ञ की उपयोगिता पर जोर देते थे। उनका विश्वास था कि सोवियते ऐसा आकपण-के द्र हागी, जिसकी आर विश्व भर से विशेषन आकृष्ट होगे। उनका यकीन था कि अ य किसी व्यवस्था की तुलना म वे सोवियत प्रणाली मे अपनी सृजनात्मक योग्यता के प्रयोग और विकास का अधिक विस्तृत क्षेत्र एव अवसर पायेंगे।

यह कहा जाता है कि हैरिमन विस्तीण रेलवे क परिचालन की चि ता से उतना नही, जितना इसकी वित्तीय व्यवस्था की परेशानी से परिक्ला त हो गये थ। सोवियत प्रणाली के अ तगत उ हे प्रशासकीय कामा से अपना ध्यान हटाकर वित्तीय व्यवस्था की ओर अपनी शक्ति न लगानी पडती, क्योकि जिस प्रकार हम काग्रेस म अपने प्रतिनिधि को राजनीतिक अधिकार सौंप देते है, उसी प्रकार सोवियत प्रणाली के अ तगत आथिक अधिकार प्रधान प्रशासक को सौप दिया जाता है। आथिक नियोजन के लिए रूस के विशाल साधन उसे सौंप दिये जाते है। इसके अतिरिक्त सोवियत प्रणाली के अन्तगत रूस अपा इजीनियरा और प्रशासका को न केवल अपनी प्रचुर सम्पदा के उपयोग पर विचार करन का अवसर प्रदान करता है बल्कि इस उद्देश्य की पूति के लिए उत्साही एव सजग श्रमिक शक्ति की भी व्यवस्था करता है।

पूजीवादी प्रणाली के अ तगत ऐसी स्थिति नही है, जहा मजदूरा की सबसे अधिक अभिरुचि अपने काम की अपेक्षा अपनी मजदूरी मे होती है

तथा जहा प्रबधको और मजदूरो के बीच लगातार सघर्ष की स्थिति बनी रहती है। सोवियत प्रणाली मे अन्तर्गत मनुष्यो की शक्ति उत्पादन के वितरण के प्रश्न पर झगडे मे नष्ट होने के बजाय अधिक उत्पादन के काम के लिए सुलभ होती है। लेकिन सोवियत व्यवस्था के महान परिणामो म यकीन करते थ, क्योकि यह लोगो म पहलकदमी और नयी रचनात्मक शक्तिया जागृत करती है और इसके साथ ही विद्वानो और प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियो को मुक्त रूप म काम करने की स्वतत्रता प्रदान करती है।

लेनिन ने सामाजिक शक्तियो का सर्वेक्षण करते हुए विभिन्न प्रकार के सभी तत्वो के महत्त्व का उचित मूल्याकन किया था। क्रान्ति के पूर्व और बाद म बुद्धिजीवियो का अपना स्थान था। प्रचार और आन्दोलन करनेवालो के रूप मे वे क्रान्ति को सफल बनान म सहायता द सकते हैं। और हुनर तथा प्रविधि म विशेषज्ञ होने के नाते वे क्रान्ति को स्थाई और टिकाऊ बनाने म भी सहायक हो सकते हैं।

१५ अमरीकियो, पूजीपतियो और कन्सेशनो के प्रति लेनिन का रुख

अमरीकी प्रविधिज्ञो, इजीनियरो और प्रशासको की लेनिन बडी इज्जत करते थे। वे पाच हजार ऐसे विशेषज्ञो को तत्काल अपने यहा बुलाना चाहते थे और उन्ह अधिकतम वेतन देने को तयार थे। अमरीका के प्रति विशेष स्थान होने के कारण लगातार उनकी आलोचना होती रही। उनके शत्रु वस्तुत द्वेष की भावना से उन्ह "वालस्ट्रीट के बकरो का दलाल" कहा करते थे और बहस की उत्तेजना म चरम वामपथियो ने उनके मुह ही पर यह आरोप लगा दिया था।

वास्तव मे उनकी दृष्टि मे अमरीकी पूजीवाद किसी अन्य राष्ट्र के पूजीवाद के समान ही बुरा था। परन्तु रूस से अमरीका बहुत दूर है। इससे सोवियत रूस के अस्तित्व के लिए कोई प्रत्यक्ष खतरा नही था। और वहा से वे सामग्रिया और विशेषज्ञ मिल सकते थे, जिनकी सोवियत रूस को आवश्यकता थी। लेनिन ने पूछा, क्या इस दशा म विशेष करार करना दोनो देशो के पारस्परिक हित म न होगा?

पर क्या किसी कम्युनिस्ट राज्य के लिए किसी पूजीवादी राज्य के साथ इस प्रकार का सम्बन्ध कायम करना सभव है? क्या दोनो सामाजिक प्रणालिया साथ-साथ रह सकती ह? फ्रासीसी पत्रकार नादो ने ये प्रश्न लेनिन से पूछे।

"क्या नही," लेनिन ने उत्तर दिया। "हम प्रविधिज्ञो, वनानिको और विविध प्रकार के औद्योगिक उत्पादनो की आवश्यकता है और यह स्पष्ट है कि हम स्वय इस देश के विराट साधनो को विकसित करने म अक्षम है। इन परिस्थितियो म, चाहे यह हम जितना भी अप्रीतिकर लगे, यह स्वीकार करना होगा कि रूस म हम जिन सिद्धान्तो का अनुकरण करते है, हमारी सीमाओ के बाहर उनका स्थान निश्चय ही राजनीतिक समझौते लेगे। हम बडी ईमानदारी के साथ विदेशी ऋणो पर सूद देने का सुझाव प्रस्तुत करते ह और यदि हम नकद सूद न अदा कर सके, तो गल्ला, तेल और दूसरे सभी प्रकार के कच्चे मालो से, जो हमारे यहा प्रचुर मात्रा म उपलब्ध ह, इसका भुगतान करगे।

"हमने मित्रराष्ट्रो के नागरिको को इस शर्त पर जगलो और खानो के सम्बन्ध मे रियायते देने का निर्णय किया है कि सोवियत रूस के कानूनो का सम्मान किया जायगा। इतना ही नही हम रूस के पुराने साम्राज्य के कुछ प्रदेश कुछ मित्रराष्ट्रो के हवाले कर देना भी स्वीकार कर लेगे, यद्यपि यह सच है हम प्रसन्नतापूर्वक नही, बल्कि चुपचाप कडवा घूट पीकर ऐसा करेगे। हम जानते हैं कि अग्रेज, जापानी और अमरीकी पूजीपति इस प्रकार की रियायत प्राप्त करने को बहुत इच्छुक ह।

"हम किसी अतर्राष्ट्रीय सगठन को महान उत्तरी रेल पथ के निर्माण का काम सौपने को भी तैयार ह। क्या आपने इसके बारे मे सुना है? यह ३००० वास्ट* लम्बी रेल-लाइन होगी, जो ओनेगा झील के निकट सारोका से शुरू होकर कोत्लास से होते हुए उराल पवतमाला के पार ओब नदी तक चली जायेगी। इस रेल पथ का निर्माण करनेवाली कम्पनी के कार्य क्षेत्र के अतर्गत ८०,००,००० हेक्टर भूमि पर फले अछूते जगल और सभी प्रकार के खनिजो के स्रोत ह।

---

*एक वास्ट लगभग २/३ मील के बराबर।

"यह राजकीय सम्पत्ति कुछ समय के लिए, सभवत अस्सी वर्षो के लिए, पुन प्राप्त करने के अधिकार के साथ दी जायेगी। हम इस अन्तर्राष्ट्रीय सगठन पर कोई किसी तरह की कठिन शर्तें लागू नही करेंगे। हमने तो केवल सोवियतो द्वारा स्वीकृत कानूनो, जैसे—आठ घटे का काय दिवस एव मजदूरो के सगठनो का नियत्रण—के पालन की शर्तें रखी है। यह सच है कि यह कम्युनिज्म से भिन्न बात है। यह बात हमारे आदश से बिल्कुल मेल नही खाती और हमे इसका भी उल्लेख कर देना चाहिए कि सोवियत पत्र-पत्रिकाओ म इस प्रश्न को लेकर बहुत गर्मागम वाद विवाद हुआ है। परतु सक्रमणकाल म जो कुछ आवश्यक है हमने उसे स्वीकार कर लेने का निणय कर लिया है।"

नादो ने कहा, 'तो क्या आप यह यकीन करते हैं कि यहा विदशी पूजीपतियो के लिए जो खतरे हैं—खतरे जो ऐसे प्रतीत होते ह कि दूर नही हुए और यह भय है कि किसी भी समय वे बढ सकते हैं—उन खतरो के होते हुए भी क्या आपको भरोसा है कि पूजीपति पर्याप्त साहस बटोरकर रूस म अपनी पूजी लगायेंगे और उसे फिर से रूस का हडप जाने देंगे? वे इस प्रकार का काय अपने देश की सशस्त्र फौजो के सरक्षण के बिना शुरू नही करेंगे। क्या आप इस प्रकार के कब्जे को मजूर करेंगे?"

लेनिन न उत्तर दिया, "यह अनावश्यक होगा क्योकि सोवियत सरकार करार की हर शत का ईमानदारी से पालन करेगी। परतु सभी दष्टिकोणो पर विचार किया जा सकता है।'

जून १६१६ मे हुए महान मास्को आथिक सम्मेलन की रिपोर्टों से प्रकट होता है कि चिचेरिन और लेनिन अमरीका से आथिक समझौते की नीति के प्रश्न पर इजीनियर क्रासिन के विचारो के खिलाफ, जो जमनी के साथ आथिक समझौता करने के पक्षधरो का अगुआ था, अपने तक प्रस्तुत करते रहे।

१६ सवहारा वग मे लेनिन का जबरदस्त विश्वास

लेनिन तो निश्चय ही सवहारा वग को क्राति की सचालक शक्ति, इसका अ तस्तल और इसका स्रोत मानते थे। नये समाज की एकमात्र आशा जनता थी। सभी इस दष्टिकोण से सहमत नही थे। रूसी जन-समुदाय के

लिए सामान्य रूप से प्रचलित धारणा यह थी कि वे लापरवाह और फक्कड़, अनिपुण, आलसी अपढ़, केवल वोद्का पीने के लिए लालायित दूषित विचारोंवाले, आदर्शशून्य और जमकर श्रम करने के लिए अक्षम हैं।

"*अविज्ञ*" जन-समुदाय के बारे में लेनिन का मूल्यांकन उक्त दृष्टिकोण के सर्वथा प्रतिकूल था। वर्षों के लम्बे अर्से में लेनिन सदा ही जनता की दृढ़ता, अडिगता, अभाव सहने और बलिदान करने की उसकी क्षमता, बड़े राजनीतिक विचारों को समझने की उसकी योग्यता और उसकी अन्तर्निहित महान सृजनात्मक तथा रचनात्मक शक्तियों पर बल देते रहे। एक प्रकार से जनता में उनका यह घोर विश्वास था। किस सीमा तक घटनाओं से रूस के मजदूरों में लेनिन का दृढ़ विश्वास सही सिद्ध हुआ है!

जिन पर्यवेक्षकों ने गहराई में जाकर रूस की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की है, उन्हें महत्वपूर्ण राजनीतिक विचारों को समझ पाने की रूसी जनता की योग्यता से बड़ा आश्चर्य हुआ। रूट शिष्ट मण्डल* के एक सदस्य ने हैरत में आकर पूछा, "जब सभी विज्ञजन रूसी जन समुदाय को अज्ञानी और मूर्ख समझते हैं, तो यह कैसे सम्भव हुआ कि जो सामाजिक दर्शन शेष दुनिया के लिए इतना नया है, उसे उन्होंने सबसे पहले ग्रहण कर लिया? ईसाई युवक संघ** और अन्य संगठनों की ओर से भेजे गये सैकड़ों युवकों से रूसी मजदूरों को बड़ी निराशा हुई थी। ये 'ज्ञान प्रदाता' *अमरीकी विश्वविद्यालयों के स्नातक थे। फिर भी उन्हें* समाजवाद, संघाधिपत्यवाद और अराजकतावाद का अन्तर मालूम नहीं था, जिसका ज्ञान लाखों रूसी मजदूरों ने अपनी राजनीतिक शिक्षा के प्रारम्भ *में ही प्राप्त कर लिया था।*

---

*रूट शिष्टमण्डल—एक विशेष अमरीकी शिष्टमण्डल, जो १९१७ में रूस भेजा गया था और जिसका नेतृत्व ई० रूट (१८४५–१९३७) ने किया था। इसका उद्देश्य रूस को युद्ध से अलग होने से रोकना और अस्थाई सरकार का क्रान्तिकारी आन्दोलन से लड़ने में सहायता प्रदान करना था।

**ईसाई युवक संघ (Young Men's Christian Association)—एक पूंजीवादी युवक संगठन। रूस में इसके प्रतिनिधियों ने धार्मिक और सोवियत विरोधी प्रचार किया।

अमरीकी प्रचारको न राष्ट्रपति विलसन के १४ सूत्री भाषण की लाखो प्रतिया रूस मे वितरित की।

मजदूरा अथवा किसानो के हाथा म इस दते हुए वे पूछते, "इसके बार म तुम्हारा क्या ख्याल है?'

सामान्यतया वे उत्तर देते यह भाषण पढने म बहुत अच्छा लगता है, परन्तु इसका कोई आधार-स्तम्भ नही है। राष्ट्रपति विलसन के दिमाग म ऐसे आदश हो सकते है, मगर जब तक सरकार पर मजदूरा का नियत्रण न हो, तब तक शान्ति सधि मे इनम से कोई भी आदश शामिल नही किया जायेगा।"

एक विख्यात अमरीकी प्रोफेसर न रूसिया को ऐसे कहते सुनकर उनके अविश्वास का उपहास उडाया था। मगर बाद म उन्ह स्वय अपने भोलेपन पर लज्जा आई और उन्ह इस बात से बडा आश्चय हुआ कि कैसे पिछडे हुए रूस के सुदूरवर्ती भागा की छोटी सोवियता के वे "गवार लोग" अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की उनसे बेहतर जानकारी रखते है।

अग्रेजा ने यह समझा कि लोगो के तात्कालिक आत्म हिता की तुष्टि करन से ही उनका उल्लू सीधा हो जायेगा। वे लोगो को अपने जाल म फसाने के लिए मुरब्बा, व्हिस्की और बढिया आटा लिये हुए अर्खागेल्स्क पहुचे। बुभुक्षित लोग यह उपहार पाकर प्रसन्न हुए, परन्तु जब यह बात उनकी समझ मे आ गई कि उनकी आखो मे धूल झोकन के लिए उन्ह घूस दी गई है और इन वस्तुआ की कीमत अपनी ईमानदारी की बलि एव रूस की स्वतत्रता के रूप मे चुकानी होगी, तो वे आक्रमणकारिया पर टूट पडे और उन्ह अपने देश से मार भगाया।

समय ने भी रूसी जनता की दढता एव अडिगता म लनिन के विश्वास को सही सिद्ध कर दिया है। १९१७ की क्रूर भविष्यवाणिया से आज के तथ्या की तुलना कीजिए। उस समय सोवियता के शत्रुआ न यह भीषण भविष्यवाणी की थी, "तीन दिन के बाद सत्ता उनके हाथ से निकल जायगी।" तीन दिन की जगह कई दिन गुजर गए और तब वे चिल्लाये, "सोवियता का अस्तित्व अधिक से अधिक तीन सप्ताह तक कायम रहगा। उन्ह फिर से मुह की खानी पडी और तब उन्हान 'तीन महीन का

राग अलापा। बाद म आठ बार "तीन महीने" की रट लगाने के बाद सोवियता के शत्रुओ ने अपने समर्थको को यही सात्वना दी कि अधिक से अधिक तीन वर्षों तक सोवियता का अस्तित्व कायम रह सकेगा।

१७ मजदूरो और किसाना की उपलब्धिया लेनिन की आशाओ से भी अधिक

जसा कि कुछ लोगो का अनुमान है, सोवियत सरकार की शक्ति एव स्थिरता सभी कानूना के उल्लघन तथा अज्ञात दैवी शक्ति के करिश्मो म निहित नही है। यह ठीक उसी तथ्य पर जिसकी ओर लेनिन ने सकेत किया था—मजदूरो और किसाना की ठोस उपलब्धिया पर आधारित है।

उन्होंने आर्थिक क्षेत्र मे लिनन का कपड़ा और दियासलाइया बनाने की नई प्रक्रियाए शुरू की और वे रूस के विस्तीर्ण दलदल के कोयले का उपयोग भी नये तरीके से करने लगे। उन्होंने विद्युत शक्ति सयन्त्रों से लेकर बिजलीघरो के निर्माण तथा बाल्टिक सागर और वोल्गा नदी के बीच लम्बी नहर की खोदाई एव सैकडा मील लम्बे रेल पथ के निर्माण तक कई प्रकार के विशाल इजीनियरिंग उद्योगो को पूरा किया।

मजदूरो और किसानो ने फौजी क्षेत्र म सख्त फौजी अनुशासन की भावना अपना ली, जिसके फलस्वरूप लाल सेना विश्व म एक बहुत ही शक्तिशाली फौज बन गई। सर्वहारा वग के इन सनिको का विशिष्ट नतिक स्तर एव उनकी अपनी आत्मदढता है। अब तक उन्होने सदा उच्च वर्गों के हितो की रक्षा के लिए लडाइया लडी थी। अब प्रथम बार वे सजग होकर अपने हितो एव विश्व के श्रम बलात और शोषित लोगो के हितो के लिए लडाइया लड रहे हैं।

परन्तु सास्कृतिक क्षेत्र मे इन "गवार लोगो" की उपलब्धिया सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रही ह। व्यक्ति को स्वतत्र कर दो और वह सजन करने लगता है। नयी भावना के तीव्र स्पश से दसिया नये विश्वविद्यालयो बीसिया थियेटरो, हजारो पुस्तकालयो और लाखो सामान्य स्कूलो की स्थापना हो चुकी है और उनका विकास हो रहा है।

इन्ही यथार्थताओ से प्रभावित होकर मक्सिम गोर्की सोवियता के पक्षधर हो गए। उन्होंने लिखा है, "रूसी मजदूर सरकार के सास्कृतिक सर्जनात्मक काम का क्षेत्र और स्वरूप ऐसा होनेवाला है, जिसकी मानवजाति के इतिहास म मिसाल नही है। भावी इतिहासकार सस्कृति क क्षेत्र म रूसी मजदूरा के इस विगत वष की शानदार उपलब्धि की सराहना किये बिना नही रह सकता।"

यदि यह बात भी ध्यान म रखी जाय कि जन समुदाय का किन कठिनाइया के बीच परिश्रम करना पडा, तो य उपलब्धिया और अधिक स्तम्भित करनेवाली एव महत्त्वपूण प्रतीत होगी। जब सत्ता मजदूरा के हाथ म आई, तो विरासत के रूप म उन्ह दरिद्र पिछडा हुआ और सदिया से प्रताडित राष्ट्र मिला। महायुद्ध म २० लाख हृष्ट पुष्ट रूसी मारे गये ३० लाख रूसी घायल एव पगु हुए, लाखा बच्चे अनाथ और लाखा अधे बहरे और गूगे हो गये। रेल लाइनें जगह जगह टूटी पडी थी, खाना म पानी भरा हुआ था, भोजन और इधन का सुरक्षित भण्डार प्राय खत्म हो चुका था। युद्ध से अव्यवस्थित अथतत्र के सामने, जो क्रान्ति से और अधिक छिन भिन्न हो गया था, १,००,००,००० सैनिका को फौज से अलग करने की समस्या भी अचानक ही आई। देश म गल्ले की बहुत अच्छी फसल उगाई गई, मगर जापानिया, फ्रासीसिया, अग्रेजा और अमरीकिया क समथन से चेकास्लावाकिया के सनिका* न सोवियत रूस को साइबेरिया की ओर अन्य प्रतिक्रान्तिवादिया न उक्रइना की गल्ले की फसला से काट लिया। उन्होंने कहा, "अब भूख के हड्डीले हाथ लोगा के गले पकड लेंगे और तब उन्ह होश आयेगा।" चच को राज्य से अलग करने के अपराध म सोवियतो को धम से बहिष्कृत कर दिया गया। पुराने अधिकारिया ने उनके विरुद्ध तोडफोड की कारवाइया की, बुद्धिजीवियो न उनकी ओर से मुह फेर लिया और साम्राज्यवादी मित्रराष्ट्रा की फौजा ने नाकेबदी कर दी। मित्रराष्ट्रा

---

*प्रथम विश्व-युद्ध के समय रूस म चेक एव स्लोवाक युद्धबदिया का शामिल कर चेकोस्लोवाक फौजी टुकडिया गठित की गई थी। १६१८ म मई क महीने म समाजवादी क्रातिकारियो और मशेविको के सक्रिय समथन से फ्रासीसी ब्रिटिश और अमरीकी साम्राज्यवादियो न वोल्गा क्षेत्र तथा साइबेरिया म चेकोस्लोवाक टुकडिया मे प्रतिक्रान्तिवादी विद्रोह सगठित किया।

न सभी प्रकार की धमकियो, घूसखोरी एव हत्याओं द्वारा उनकी सरकार का उलट दने की कोशिशें की। अंग्रेजो के भाडे के टट्टुओ ने रेलो के पुल उडा दिये, ताकि बडे नगरो मे भोजन तथा अन्य आवश्यक सामग्रिया न पहुच सके और फ्रासीसी गुप्तचरो ने अपने कोसल कार्यालयो के सरक्षण म रेल इजनो के बियरिगो मे रेत डालकर यातायात को नुकसान पहुचाया।

लेनिन ने इन तथ्यो को दृष्टि मे रखते हुए कहा, "हा, हमारे शत्रु शक्तिशाली हैं परतु उनके विरुद्ध हमारे पास सवहारा वग की इस्पाती ताकत है। अभी विशाल जनता का अधिकाश वास्तविक रूप म सजग और क्रियाशील नही है। इसका कारण भी स्पष्ट है। वे युद्ध से परिक्लान्त, भूखे और थके हुए है। क्राति का प्रभाव अभी उतना गभीर नही है, मगर विश्रान्ति के साथ बहुत बडा मानसिक परिवतन होगा। यदि समय रहते यह परिवतन हो गया, तो सोवियत जनतन्त्र बच जायेगा।"

लेनिन की दृष्टि से १९१७ के अक्तूबर की घटना—जन समुदाय का अदभुत ढग से सत्तारूढ होना—क्रान्ति नही थी। परन्तु जब यह जन-समुदाय अपने लक्ष्य के प्रति सजग होकर अनुशासित होने लगेगा, व्यवस्थित रूप से काम म जुट जायेगा और अपनी महान सजनात्मक एव रचनात्मक शक्तियो का कमक्षेत्र मे उपयोग करने लगेगा—तब वास्तविक क्रान्ति होगी।

क्राति के उन प्रारम्भिक दिनो मे लेनिन को इस बात का कभी पक्का विश्वास नही था कि सोवियत जनतन्त्र की रक्षा हो गई। उन्होने जोर देकर कहा, "दस दिन और[1] तब हमारा जनतन्त्र कम से कम पेरिस कम्यून जितने दिनो तक तो कायम रहेगा ही।" पेत्रोग्राद म सोवियतो की तीसरी अखिल रूसी काग्रेस मे अपना भाषण शुरू करते हुए उन्होने कहा, 'साथियो, इस बात पर गौर कीजिये कि परिस कम्यून ७० दिना तक टिका रहा। हमारा सोवियत जनतन्त्र उससे दो दिन अधिक का हो गया है।'

महान रूसी कम्यून न सत्तर दिनो के दस गुने से भी लम्बी अवधि तक अपने सभी शत्रुओं के खिलाफ प्रतिरोधात्मक मार्चा लिया। लेनिन को सवहारा वग की दढता धैय, अडिगता वीरता और आर्थिक, सैनिक एव सास्कृतिक क्षमताओ म पूण विश्वास था। उसकी उपलब्धिया केवल उसके उत्साहपूण विश्वास की परिचायक नही थी। वे लेनिन के लिए भी विस्मयकारी थी।

ज्योही रूस म लेनिन का उन्नयन विश्व मच के अग्रणी नेता बनने के रूप मे हुआ, उनके सम्बन्ध म तरह तरह के मतो का तूफान उठ खडा हुआ है।

भयग्रस्त पूजीपतियो न उन्हे दैवी आपत्ति, प्रकृति का भयानक अपशकुन, प्रलयकारी आपदा बताया।

रहस्यात्मक प्रवत्ति रखनेवाले व्यक्तियो ने उन्हे "मगोलियाई स्लाव मानत हुए युद्धपूव की उस अनोखी भविष्यवाणी की पूर्ति बतायी, जिसे ताल्स्ताय के नाम के साथ जोडा गया था। महायुद्ध के शुरू होन, इसके कारणो और स्थान के बारे म भविष्यवाणी करने के बाद उसम कहा गया था, "मै सारे यूरोप को आग की लपटो म झुलसते और रक्तरजित होते देख रहा हू। मै विशाल युद्ध क्षेत्रो की आह-कराह सुन रहा हू। परन्तु करीब १६१५ म उत्तर से एक विलक्षण व्यक्ति – एक नया नपोलियन – इस खूनी नाटक के रगमच पर आता है। वह बहुत कम फौजी प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति है, एक लेखक या पत्रकार है, परतु अधिकाश यूरोप १६२५ तक उसकी मुट्ठी मे रहेगा।"

प्रतिक्रियावादी चच के लिए लेनिन ईसा विरोधी थे। पादरियो ने धार्मिक झण्डो एव देव मूर्तियो के साये म किसानो को जमा करन और उन्हे लाल सेना के विरुद्ध उभाडने की कोशिश की। मगर किसानो ने उनस कहा, "हो सकता है कि वे ईसा विरोधी हो, परन्तु उन्होंने हम जमीन और स्वतन्त्रता दी है। तब हम उनसे लडाई मोल क्यो ले?"

साधारण व्यक्तियो के लिए लेनिन अलौकिक महत्त्व रखते थे। व रूसी क्रान्ति के जनक, सावियतो के सस्थापक, नये रूस के स्रोत थे। वे मानते थे कि "लेनिन और त्रोत्स्की को मार डालो और तुम क्रांति तथा सोवियतो को खत्म कर दोगे।"

इतिहास के प्रति यह वह दष्टिकोण है, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि मानो महान पुरुष ही उसका निर्माण करते ह, मानो महान नेता ही महान घटनाओ और महान युगो का निर्धारण करते ह। यह सम्भव है कि एक ही व्यक्तित्व द्वारा सम्पूण युग अभिव्यक्त हो जाये और एक

ही व्यक्ति महान जन आन्दोलन का केन्द्र बिंदु हो। कार्लाइल के दृष्टिकोण से अधिक से अधिक इसी सीमा तक सहमत होना संभव है।

रूसी क्रान्ति को एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह पर निर्भर माननेवाली इतिहास की कोई भी व्याख्या निश्चित रूप से भ्रामक होगी। स्वयं लेनिन ही सबसे पहले इस विचार का मज़ाक उड़ाते कि वे अथवा उनके सहकर्मी रूसी क्रान्ति के भाग्य विधाता थे।

रूसी क्रांति की भवितव्यता उस मूल स्रोत—जन समुदाय के अन्तस्तल और कर्मशक्ति में निहित थी, जहां से वह उदित हुई थी। यह उन आर्थिक शक्तियों में निहित थी जिनके दबाव से रूसी जन समुदाय संघर्ष के लिए उद्यत हो गया था। सदियों तक रूसी जनता सुप्त, सहनशील और बहुत कष्ट भोगती रही। रूस के विशाल आयाम के आर पार, रूसी मैदानों और उक्रइनी स्तेपी में और साइबेरिया की बड़ी बड़ी नदियों के किनारे किनारे गरीबी की असहनीय पीड़ा सहन करते हुए और अन्धविश्वासों में जकड़े हुए जन साधारण घोर परिश्रम करते रहे। जानवरों से उनकी किस्मत कुछ ही बेहतर थी। परन्तु सभी बातों की यहां तक कि गरीब के धैर्य की भी सीमा होती है।

१९१७ के फरवरी में रूसी नगरों की जनता ने जोरदार झटके से अपनी बेड़ियां तोड़ डाली, जिसकी आवाज़ सारी दुनिया में गूंज गई। सैनिकों के एक के बाद एक दस्ते ने उनके आदेश का अनुसरण किया और विद्रोह कर दिया। उसके बाद क्रान्ति गांवों में फैली, इसकी जड़ और गहरी होती गई और जब तक फ्रांसीसी क्रांति की तुलना में सात गुना अधिक लोगों वाला—१६ ००,००,००० व्यक्तियों का—राष्ट्र पूर्णतया आलोड़ित न हो गया तब तक सर्वाधिक पिछड़े हुए जन समुदाय में क्रान्ति की भावना उभरती रही।

महान लक्ष्य अपनाकर सारा राष्ट्र संघर्ष के मैदान में उतर पड़ा और नयी व्यवस्था की रचना की ओर अग्रसर हो गया। सदियों में मानवीय भावना का यह सबसे ज़बरदस्त स्पन्दन था। जन समुदाय के आर्थिक हितों के मूल सिद्धांत पर आधारित यह इतिहास में न्याय के लिए सर्वाधिक निर्भीक संघर्ष था। एक महान राष्ट्र न्याय के लिए योद्धा के रूप में सामने आया और नये विश्व के आदर्श के प्रति निष्ठावान रहकर भूख, युद्ध,

नाकेवंदी ग्रौर मौन का सामना करते हुए लक्ष्य की ग्रोर अग्रसर होता जा रहा था। जो नेता साथ नही दे पाते वह उन्हे एक ग्रोर हटाकर उन नताग्रा का ग्रनुसरण कर रहा था, जो लोगो की ग्रावश्यकताग्रो एव ग्राकाक्षाग्रो के ग्रनुरूप काय कर रहे थे।

रुसी क्राति की नियति स्वय जन समुदाय म – उनकी ग्रनुशासन की भावना ग्रौर निष्ठा मे निहित थी। सचमुच भाग्य की उन पर बडी कृपा रही थी। सयाग से उन्ह अपने पथ प्रदशन ग्रौर ग्रपनी भावनाग्रा एव विचारा की ग्रभिव्यक्ति के लिए ऐसा व्यक्ति मिला, जो महान प्रतिभासम्पन्न, दृढ-सकल्पी, प्रकाण्ड विद्वान, निर्भीक कत्तव्यपरायण तथा उच्चतम ग्रादशवादी, नितान्त ग्रनुशासनप्रिय ग्रौर ग्रत्यधिक व्यावहारिक समझ-बूझ रखनेवाला था।

ससार का सबसे बडा स्वागत-कक्ष

१४ वष पूव अमरीका रवाना होने के एक दिन पहले मैं लेनिन के क्रेमलिन स्थित कार्यालय म उनसे मिलने गया। वहा मैं पहले भी कई बार जा चुका था। मुझे उनस अनेक बार भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और मेरे ऊपर उनकी बडी अनुकम्पा थी। यहा तक कि क्राति के सर्वाधिक कठिन तूफानी दिना म भी वे मामूली और छोटी छोटी बातो की ओर ध्यान देते थे।

उन्होन मुझे यह सलाह दी थी कि मैं रूसी भाषा कैसे सीखू। मने पत्रोग्राद मे बख्तरबन्द गाडी के ऊपर चढकर जो भाषण किया था, उसे श्रोताओ का समझाने के लिए उन्होने दुभाषिये का काम किया था। उन्होने पेटी भर पुस्तिकाओ एव पुस्तको को जमा करने मे मेरी मदद की। उन्होन अपने हाथ से साइबेरियाई रेल कमचारियो के नाम इस आशय का पत्र लिखा था कि वे पूरी सावधानी बरते ताकि यह टक खोने न पाये। उन्होंने बहुत प्रसन्न होकर मुझे लाल फौज म शामिल होने पर बधाई दी थी और अन्तर्राष्ट्रीय सैन्य दल गठित करने का सुझाव दिया था।

तो इस तरह मुझे अनक बार लेनिन के स्वागत-कक्ष म जाने का अवसर मिला। यहा, सचमुच ही विभिन्न प्रकार के विशिष्ट व्यक्ति—राजनयिकगण, अधिकारी, पुराने पूजीपति, सवाददाता उनसे मिलने के लिये प्रतीक्षा करते रहते थे इन सबसे यहा तक कि कम्युनिज्म के कट्टर शत्रुओ से भी लेनिन मुक्त हृदय स—शिष्ट एव सीधे सरल ढग से—मिलते और बात करते।

लेनिन को ऐसी मुलाकातो से कोई व्यक्तिगत खुशी हासिल नहीं हो सकती थी। परन्तु यह उनका सरकारी कर्तव्य था और इसका व पालन

और कठिन जीवन और कडे परिश्रम से प्राप्त अनुभवो द्वारा इस गरीब किसान को बहुत-सी बातो की ठास व्यावहारिक जानकारी थी और वह जो कुछ जानता था, उस जानने को लेनिन उत्सुक थे। सभी सच्चे महान पुरुषो की भांति वे यह समझते थे कि नितात अपढ व्यक्ति से भी कुछ जानकारी हासिल हो सकती है। ऐसे उन्हे विविध स्थानो एव व्यक्तियो से सूचनाए प्राप्त होती रहती थी। इस प्रकार जो हजारो तथ्य जमा हो जाते थे, वे उनका मूल्यांकन, छानबीन और विश्लेषण करते थे। इससे वे शत्रुओ की तुलना मे परिस्थिति को अधिक अच्छी तरह समझ पाते थे और बहुत बार अपने बुद्धिकौशल एव दाव पेंच से शत्रुओ को पराजित कर देते थे। उन्हे साइबेरियाई किसान, लाल सैनिक अथवा दोन के कज्जाक के दृष्टिकोण और विचारो के बारे मे अनुमान लगाने की आवश्यकता नही होती थी। उनके लिए यह कोई रहस्य की बात नही थी कि लेनिनग्राद का ढलिया, वोल्गा अचल का मांझी अथवा मास्को की मजदूरिन क्या सोचती अथवा अनुभव करती है। वे स्वय उनसे अथवा हाल मे बातचीत कर चुकनेवाले किसी विश्वासपात्र साथी से उनके बारे मे बाते किया करते थे।

लेनिन को उनसे कुछ न कुछ जानकारी अवश्य प्राप्त होती। इस कारण भी वे सदा उनसे भेट करने को प्रस्तुत रहते थे। इसके अतिरिक्त वे भी उन्हें सामाजिक शक्तियो और क्रान्ति के दाव पेंच, समाजवाद के निर्माण की अपनी योजनाओ एव प्रकल्पो के सम्बन्ध मे कुछ बताना चाहते थे। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि वे उन्हे पसन्द करते थे—हृदय से उन्हे चाहते थे और उनके प्रति वफादार थे। लेनिन को जिस प्रकार पूजीवादी के चाटुकारो एव पिछलग्गुओ—दलालो और हेरा फेरी करके सम्पदा हथियानेवालो से विशेष घृणा थी, उसी प्रकार दूसरी ओर उन्हे सम्पदा पैदा करनेवालो, कोयला, पत्थर और धातुओ की खानो मे काम करनेवाले मजदूरो तथा खेतो एव जगलो मे कठोर परिश्रम करनेवालो के प्रति विशेष स्नेह था।

१४ वर्ष पूर्व वे केवल ताम्बोव के उस एक किसान से नही, बल्कि अपने देश के लाखो किसानो से सहर्ष भेंट करते। अगर सभव होता तो वे समस्त विश्व के मजदूरो और किसानो को खुशी से अपने कार्यालय मे आमंत्रित कर उनका स्वागत करते।

[illegible] लेनिन की [illegible] कैसे

कतार देखकर [illegible]

म [illegible] हैं। वे [illegible]

स [illegible] १४ [illegible]

थी। यह सच है कि [illegible]

लिए [illegible] ने लेनिन [illegible]

एव [illegible] है। यह भी सच है कि [illegible]

का दर्शन के लिए अपनी अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं [illegible]

पर [illegible] जिनके [illegible] लेनिन [illegible]

दावा, [illegible] और [illegible]

के वीरों की कद्र है।

यह समाधि का विशालतम स्वागतकक्ष है। अन्दर जाकर [illegible] का दर्शन करने की अपनी बारी की प्रतीक्षा म खड़े लोगों की सख्या अब सौगुनी हजारगुनी बढ़ गई है। आज और १४ वर्ष पूर्व की स्थिति मे यही अन्तर है।

परन्तु एक दृष्टि म—बहुत ही महत्त्वपूर्ण एव बुनियादी दृष्टि से—तब और अब की स्थिति समान है। अधिकतर साधारण लोग ही समाधि के अन्दर जाकर उन्हें देखने के लिए बाहर खड़े हैं। दोपहर के ठीक बाद म ही दर्शनार्थियों की जो लम्बी लाइन लग जाती है उसमे मुख्यत मजदूर एव किसान होते हैं। लेनिन इसी प्रकार के लोगों को पसन्द करते थे, वे समाजवाद के निर्माण के लिए इन्हीं लोगों की शक्ति, परिश्रम और निष्ठा पर भरोसा करते थे। लम्बी-लम्बी दुहरी पक्तियो मे लगभग ऐसे ही लोग खड़े हैं और बहुत ही तीव्र गति से ये पक्तिया और लम्बी होती जा रही हैं। समाधि के खुलने के समय—दो बजे—से पूर्व ही समाधि-स्थान से एक मील या इससे भी अधिक लम्बी लाइन लग जाती है और मार्ग भी चादर से ढके चौकोर मैदान म आगे-पीछे मुड़ती हुई पक्तियो मे लोग आते जाते हैं।

यह सच है कि कुछ लोग शेखी बघारने के लिए भी यहाँ आते हैं। वे अपने साथियों के बीच यह डींग मारना चाहते हैं कि उन्होंने वास्तव म लेनिन के दर्शन किये हैं। यह भी सही है कि कई कौतूहलवश आते हैं। वे पूँजीपति वर्ग के हैं, उनमें अनेक विदेशी हैं, वे इस व्यक्ति को [illegible] रूप म देखना चाहते हैं जिसका नाम [illegible]

हुआ ह तथा जिसका नाम विश्व के साम्राज्यवादियो और प्रतिक्रियावादियो को चन नही लेने देता। परन्तु इस लम्बी लाइन म वे आटे मे नमक के समान है। कुछ को छोडकर शेष सभी अपने नेता के प्रति सम्मान, श्रद्धा एव अनुराग की भावना से यहा आये ह। सच्ची और प्रेमपूण भावनाओ के कारण ही वे इतनी लम्बी लाइन म खडे होकर कडाके की ठड को वर्दाश्त करते रहते हैं।

मैं आगे बढता हुआ कभी यहा, कभी वहा प्रश्न पूछने के लिए खडा हो जाता, 'आप कहा से आये है?' "आप क्या करते है?" "आप क्यो आये है?' "पहली बार कब आपने लेनिन के बारे म कुछ सुना था?"

रूसी भाषा के विचित्र उच्चारणवाले एक अजनबी के लिए उनसे ऐसे व्यक्तिगत प्रश्न करना एक प्रकार से धष्टता थी। वे बुरा मान सकते थे। परन्तु मैं इस भूमिका के साथ अपने प्रश्न पूछता मैं लेनिन को जानता था। मैंने उनसे बात की थी। मैंने उनसे हाथ मिलाया था।" इससे सब कुछ ठीक हो जाता। इससे उनके मन मे मेरे लिए भी प्रतिष्ठा की भावना पैदा हो जाती और वे खुलकर बात करते। सबसे पहले मोर्दोविया के मजदूर सघ के पाच सदस्यो से, जो छाल के जूते पहने हुए थे, मेरी बातचीत हुई। उन्होंने इस बात पर गव प्रकट किया कि उनका अपना जनतन्त्र ह तथा उनके मुखिया (**स्तारोस्ता**) ने १६०५ मे लेनिन के सम्बन्ध म सुना था।

बुरियात जनतन्त्र से आनेवाले एक को यह स्वीकार करत हुए कुछ परेशानी हुई कि उसने १६२० तक लेनिन के बारे मे कुछ नही सुना था। मगर अब बुरियात जनतन्त्र के प्रत्येक घर मे लेनिन की तस्वीर टगी हुई है और गत वप के जाडे म उन्होंने वफ से लेनिन की विशाल मूर्ति तैयार की थी। उसके सुदूर उत्तरी क्षेत्र मे जाडे का मौसम इतना लम्बा होता है और सर्दी ऐसी कडाके की पडती है कि मास्को की जलवायु उसे उष्ण प्रतीत होती थी।

हरे रग का धारीदार रेशमी अगरखा (**खलात**) से पहन उज्बेकिस्तान के निवासी के सम्बन्ध म उक्त बात सही नही थी। वह अपने अगरखे को तन के साथ चिपकाता जा रहा था। वफ से श्वेत हुए लाल चौक म उसकी

पोशाक के रगो की भडकदार छटा बहुत आकषक प्रतीत हो रही थी। उसने ख्वाहिश जाहिर की कि काश, आज लेनिन जीवित होते और अपनी आखो से यह देखते कि कैसे उनके समृद्ध सामूहिक फाम ने पुराने बुग्राग की परती रेतीली भूमि को खेती योग्य बना दिया है और उस पर उद्यान एव फलो के बाग लहलहा रहे हैं।

ब्लादीमिर के एक दल नायक ने इसके प्रतिकूल यह बताया कि उसके गाव का सामूहिक फाम विकासशील नहीं है। बिना खुदे हुए आलू खेतो मे नष्ट हो रहे हैं, अनगाही जई की कटी हुई फसल के दाने पुन अकुरित हो रहे है। फिर भी उसे आशा थी कि लेनिन के दशन करने के बाद वह फिर से कमर कसकर स्थिति सुधारने के काम मे जुट जायेगा।

सामूहिक फाम का एक अन्य किसान आर्लोव मिखाईल इवानोविच भी पक्ति म खडा है। वह स्मोलेंस्क का रहनेवाला है। लाल सेना के सनिक के रूप म वह अनक बार क्रेमलिन म लेनिन की झलक पा चुका था। यह १४ वष पुरानी बात थी और उसके बाद आज से पहले उसे कभी पुन मास्को आन का अवसर प्राप्त नही हुआ। वह युद्ध के सभी मुख्य मोर्चो पर लड चुका था। उसने कच्चे आलू खा-खाकर कई दिन गुजारे थे और एक बार तो वह गोला गिरने से मिट्टी और बफ के ढेर मे प्राय पूणतया समाधिस्थ हो गया था। खाइयो से बाहर आने पर वह सोवियत मे शामिल हो गया। परन्तु उसके बाद भी वह स्थानीय लुटेरो, नौकरशाहो और चोरी से शराब बनानेवालो के विरुद्ध मोर्चा लेता रहा। फिर उसने 'जीवनोपाय का नया माग' (**नोवी बीत**) सामूहिक फाम सगठित किया। वहा क्राति पूव के खेतिहर मजदूरो के ३५ परिवार प्रथम कोटि का पटसन और चारा पैदा करनेवाली ३४० देस्सियातीना भूमि पर बस चुके थे और उनके पास १२ घोडे तथा ५७ मवेशी थे। उसने उत्साह और बडे जोश के साथ व्यापक अनुभव भी बटोर लिया था। उसे इस बात की भी अच्छी जानकारी थी कि सामूहिक खेती की क्या स्थिति है। कुछ सामूहिक फार्मो का सगठन बुरा था और इस कारण उनकी दशा खराब थी। किन्तु उसका सामूहिक फाम बहुत अच्छा था—शीर्षस्थ-स्तर का। यदि ब्लादीमिर इल्यीच जीवित होते और स्वय इसका निरीक्षण करने आते, तो भी उसे कोई डर न होता।

सोवियत संघ के सुदूरवर्ती भागों से, पृथ्वी के अन्तिम छोर से वे लेनिन के दर्शनार्थ यहा इस समाधि स्थल पर आते है। यहा इस लम्बी पंक्ति में एक अमरीकी नाविक भी है। वह दुनिया भर के बन्दरगाहों की जलयात्रा कर चुका है और बाद में गोदी मजदूर के नाते सान फ्रासिस्को के बन्दरगाह पर अपनी यूनियन के लिए लम्बी लडाइया लड चुका है। बर्लिन का एक कम्युनिस्ट छात्र भी यहा खडा है, जो जर्मन भाषा में अनूदित लेनिन की सारी पुस्तके पढ चुका है। यहा एक चीनी छापेमार भी है, जो साइबेरिया के घने जगलो में लाल छापेमारो के साथ शत्रुओं के खिलाफ लड चुका है।

इस लम्बी पंक्ति में बीसियो, सैकडो और न जाने कितने ऐसे लोग खडे है जो कठोर परिश्रम एव संघर्ष तथा बडे साहसपूर्ण कार्यों की कथाए सुना सकते है, हालाकि जाडे की पोशाक में वे सभी सामान्य और निष्प्रभ प्रतीत होते है। मगर उनकी कहानिया इतनी मनोरजक एव दिलचस्प है कि पंक्ति के किनारे किनारे तेजी से आगे बढना कठिन है।

वह वोल्गा अचल का रहनेवाला जहाजी कुली है, जो पुराने सिम्बीर्स्क में उल्यानोव परिवार के निवास-स्थान से केवल २० मील की दूरी पर रहता था। अपने पडोसियो से वह सदा उल्यानोव परिवार की चर्चाए सुनता रहा है, किन्तु उस परिवार के सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति के दर्शन का उसे आज सुअवसर प्राप्त होनेवाला है। युवा कम्युनिस्ट संघ का एक बहुत ही उत्साही युवक सामूहिक कृषि एव इससे सम्बद्ध विषयो पर लेनिन की उक्तियो का उल्लेख करते हुए प्रतीक्षा के समय को सुखद बना रहा है। इसी पंक्ति में छाल के जूते और भेड की खाल का कोट पहने लम्बे रूखे बालो वाला किसान भी खडा है, जो १४ वर्ष पूर्व लेनिन के कार्यालय में आनेवाले ताम्बोव के किसान से बिल्कुल मिलता जुलता है। बडे बडे उन्नत उरोजो वाली अपनी पत्नी को साथ लेकर वह रियाजान से दूसरी बार लेनिन के दर्शन करने आया है। नीजनी नोवगोरोद की एक तूफानी कामगार टोली के दो मजदूर पहली बार उनका दर्शन करेंगे। इसी प्रकार तुर्किस्तान से आये कृनिया का दल भी पहली बार अपने नेता को देखेगा। वास्तव में अधिकाश व्यक्ति पहली बार उन्हे अपनी श्रद्धाजली अर्पित करेंगे। पृथ्वी के चार छोर से लोग यहा उनके दर्शनार्थ आते है, इससे भी अधिक उल्लेखनीय

बात यह है कि अधिकाश व्यक्ति मास्को आने ही सबप्रथम लेनिन की समाधि पर पहुचते हैं। फिर भी उन्हें समाधि के भीतर जाने का सबसे पहले मौका नहीं मिलता। प्रथम अवसर तो बच्चों को ही प्राप्त होता है।

इन दिनो स्कूल म छुट्टिया है और हजारो बच्चे यहा उपस्थित हैं। सर्दी के कारण उनके गाल उन झडियो के समान ही लाल हो गये हैं, जिन्हें वे अपने हाथो मे लिये हुए हैं। एक झण्डी पर ये शब्द अकित हैं, "पचवर्षीय योजना के लिए सब कुछ अर्पित है।" "हम बडकर हृष्ट पुष्ट और योग्य होगे और बडे होने पर हम भी अपने बडो के साथ मशीनो का निर्माण करेंगे।" तीन वर्षीय बच्चो का एक समूह सफेद पखुडियोवाला एक वृहदाकार कागजी सूयमुखी का फूल ऊपर उठाये हुए है जिसके बीच म बाल-लेनिन का एक विख्यात चित्र बना हुआ है।

मैंने उनके शिक्षको से पूछा, "लेनिन के बारे में वे क्या जानते हैं?" गव मिश्रित विश्वास के साथ उन्होंने उत्तर दिया "स्वय बच्चो से ही पूछ ले।" और यह उत्तर बिल्कुल उचित और ठीक था। उन्हें कई हफ्तो से लेनिन के बारे में जानकारी दी जा रही थी। और लेनिन के सम्बध में जानकारी पाने के इस क्रम के चरम बिन्दु के रूप म वे आज उनका दशन करेंगे। समाधि भवन के खुलने के नियत समय से बहुत पहले ही कास्य द्वार खुल गये और एक घटा तक हम बच्चो का अन्दर जाते हुए देखते रहे।

अब हमारी बारी आई। नियमित रूप से दो-दो दशनार्थी साथ साथ समाधि स्थल की सीढियो से होते हुए आगे बढते जाते हैं। सर से हैट या टोपिया उतारे हुए हम मौनावस्था म चौबीस सीढिया नीचे उतरकर मन्द प्रकाशनवाले विशाल ग्रेनाइट हाल म दाखिल होते हैं। यह हाल उस व्यक्ति की भाति अनलकृत एव सज्जारहित है, जो यहा विश्राम कर रहा है। दशनार्थी रुके बिना आगे बढते जाते हैं। वे केवल ताबूत के निकट से ही नहीं गुजरते। पाच सीढिया चढकर वे ऊचे चबूतरे पर पहुच जाते हैं और वहा से प्रत्येक दशनार्थी देर तक बेरोक सीधे अपने नेता का मुख निहारता है। तब दशनार्थी दाइ ओर मुडकर सीढिया से होते हुए उत्तर पश्चिमी बहिर्गमन द्वार से पुन लाल चौक म पहुच जाते हैं।

मैं बाहर निकलकर रुक गया एव लोगो को निकलते हुए देखने लगा। मुझे लगा कि वे समाधि स्थल से शोक मनानेवालो की भाति दुखी और

शाकग्रस्त मुद्रा म बाहर नही ग्रा रहे हैं। इसके विपरीत ऐसा लगा जैसे उनका बोझ हल्का हो गया है, चिंताए दूर हो गई है और नये, दृढ निश्चय के साथ बाहर ग्रा रहे हैं। उनके चेहरा म चैन एव स्फूर्ति की भावना व्यक्त हो रही है। व ऐसी ही भावना ग्रभिव्यक्त भी करते है।

"न जाने क्या, उनके दशन करके मन कुछ हल्का हो गया है," रियाजान की नारी न कहा।

स्मोलेन्स्क के सामूहिक किसान न कहा, १० वष पूव मने उन्ह जिस रूप मे देखा था, वे अब भी लगभग वैसे ही दिखाई पड रहे ह। ऐसा प्रतीत होता है मानो वे कुछ देर के लिए सो रहे है और किसी भी समय उठकर हमसे बातचीत कर सकत है।'

युवा कम्युनिस्ट लीग के युवक सदस्य ने जोर देकर कहा, "म लेनिन की सारी पुस्तके खरीदकर इसी जाडे से उन्ह पढना शुरू कर दूगा।"

हा, कभी कभी कुछ दशनार्थिया के मुह से शोक और वेदना के कुछ शब्द भी निकल पडते हैं, जैसा कि नीजनी नोवगोरोद की तूफानी कामगार टोली के दो सदस्या ने सखेद कहा, "ग्राज हम जो कुछ कर रहे ह, काश वे उसे देख सकते! हम निमाण, और निर्माण, और ग्रधिक निर्माण कर रहे हैं।" दो वद्ध जनो की ग्राखो म ग्रासू हैं। उनम से एक ने लेनिन के सिद्धान्तो के लिए गहयुद्ध मे लडते हुए ग्रपनी एक टाग और दूसरे ने बाह की बलि दी थी। फिर भी इन दशनार्थियो मे बहुत कम पगु, पके बालोवाले एव वयोवद्ध ह। ग्रधिकतर हृष्टपुष्ट, जवान और लेनिनवाद के पक्के समथक हैं तथा इस समय लेनिन के सिद्धान्ता के लिए सघपरत ह।

कुछ लोग एक बार दशन कर लेने से ही सतुष्ट नही है और झटपट फिर से पक्ति म खडे हो जाते ह। ऐसा प्रतीत होता है कि दशनार्थिया की यह पक्ति ग्रसीम है, ग्रन्तहीन है। मास्को के कार्यालया, कारखानो और मिला पहाडी भागो और खानो सोवियत प्रदेशा की सुदूरवर्ती स्तेपिया एव गावो और भूमण्डल के हर भाग के नये ग्रागन्तुका से निरन्तर नई पक्ति बनती रहती है। वे ग्रपने दिवगत नता के प्रति निष्ठा की नयी शपथ ग्रहण करने और उनसे नूतन एव बेहतर प्रयास करने की प्रेरणा पाने के लिए यहा ग्रात रहते हैं।

अपने जीवन मे यह व्यक्ति महान् एव शक्तिशाली था और देहावसान के पश्चात आज वह और भी अधिक शक्तिशाली है। यदि आप उनका कीतिस्तम्भ देखना चाहते हैं, तो अपने इर्दगिर्द नजर दौडाइये। पचवर्षीय योजना और उसकी परियोजनाएं – दनेपर नदी पर विशाल पन बिजलीघर, ट्रैक्टर तैयार करनेवाला विशाल कारखाना, राजकीय फार्म 'गिगान्त' यह सब मानवजाति की कल्पना शक्ति को आश्चर्य मे डाल देनेवाले उद्यम है।

यह सभी और कुछ नही, लेनिन के चिन्तन तथा ज्ञान का मूर्त और ठोस स्वरूप है। सभी देशो मे लेनिन सम्थान और पुस्तकालय कायम हो चुके है, अनेक भाषाओ मे लेनिन की पुस्तको के अनुवाद की लाखो प्रतियां प्रकाशित हो चुकी है। ये सब लेनिन के सिद्धान्तो के विचार बीज ही तो प्रस्फुटित हो रहे हैं और बहुत ही फलदायक सिद्ध हो रहे हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी और ६० देशो की कम्युनिस्ट पार्टियो के झडो के नीचे खडे लाखो लोग किस बात के परिचायक है? ये सब और कुछ नही हैं, लेनिन की गतिशील शक्तियां ही है, जो सारे विश्व मे पूंजीवादी व्यवस्था को बदलने की दिशा मे अग्रसर है।

१४ वर्षों के दौरान जिस प्रकार लेनिन के क्रेमलिन वाले स्वागत कक्ष ने समाधि भवन के विराट स्वागत कक्ष का रूप ले लिया है, इसी प्रकार लेनिन की शक्ति, तेज एव प्रभाव मे वृद्धि हुई है। और सोवियत सघ तथा सारे विश्व मे समाजवाद की विजय होने तक इसमे इसी प्रकार वृद्धि होती जायगी।

१९३२

अंतर्राष्ट्रीय सैन्य दल के अन्य सदस्यों के साथ एल्वर्ट रीर
(बायें से दूसरे)

रूसी क्रान्ति के दौरान

क्रान्ति की रक्षा मे शहीद हुए रूस के मजदूरो और
किसानो को समर्पित

"आप लोगो ने
कुछ व्यक्तियो के हाथो मे केन्द्रित विपुल सम्पदा, शक्ति और ज्ञान के
विरुद्ध
एक युद्ध शुरू किया था और
आपने गौरव के साथ समर भूमि मे
अपने प्राण इसलिए न्योछावर कर दिये
कि विपुल सम्पदा, शक्ति एव ज्ञान सार्वजनीन हो जाये।"*

---

*लेनिनग्राद के मास मैदान म शहीद हुए क्रान्तिकारियो के स्मारक के ग्रेनाइट शिलापट्ट पर शिलालेख। प्रथम सोवियत शिक्षा जन-कमिसार अ० व० लुनाचार्स्की (१८७५-१९३३) ने इस पाठ को तयार किया था।

भूमिका

मैंने मास्को म दो किसान सैनिको का किताबा के एक स्टाल पर नगाय जा रहे एक पोस्टर की ओर दष्टि जमाये देखा। वे आखा म रोपाकुल आसू लिये चीख पडे, "हम इसका एक शब्द भी नहीं पढ सकते! ज़ार केवल यही चाहता था कि हम हल चलाते रहे, उसके लिए लडत रहें और कर चुकाते रह। वह नही चाहता था कि हम पढें लिखें। उसने हमारी आखा पर पट्टी बाध दी थी।"

जन समुदाय की "आखा पर पट्टी बाध दना,' उनके मनोभावा और चेतना को कुठित कर देना रूसी स्वेच्छाचारी शासन की सुचिंतित नीति थी। सदियो तक लोग अज्ञानता के अधकार मे भटकत रहे, धम उनकी अक्ल पर पर्दा डाले रहा, यमदूतसभाई* उन्ह आतकित और कज्ज़ाक प्रताडित करते रहे। विरोध करनेवाला को बदी बनाकर तहखाना म डाल दिया जाता था, उन्ह साइबेरिया की खानो मे कठोर परिश्रम के लिए निष्कासित कर दिया जाता था और फासी के तख्त पर लटका दिया जाता था।

---

*१६०५–१६०७ की क्राति के समय से रूस म प्रतिक्रान्तिवादी सरकारी लुटेरा और हत्यारो के गिरोहा का यमदूत सभा या काले सैंकडा के नाम से पुकारा जाता था।

१६१७ म देश का आर्थिक और सामाजिक ढाचा बिलकुल अस्त-व्यस्त हो गया था।

एक करोड किसानों को खेती के काम से हटाकर जबरन फौज में भर्ती कर लिया गया था और वे खाइयों में मर रहे थे। जिस समय नगरों में शीत एव भूख से लाखों व्यक्तियों के प्राण पखेरू उड रहे थे, उसी समय भ्रष्टाचारी मंत्री जमना के साथ साजिश मे सलग्न थे और दरबार मे कुख्यात साधु रासपूतिन* के साथ शराब के नशे में उन्मत्त हो रेलिया होती थीं। यहा तक कि कडेट** मिल्युकोव भी यह कहने पर विवश हुए कि इतिहास में इस प्रकार की विवेकशून्य, घोर बेईमान, नितान्त डरपोक और इतनी विश्वासघाती सरकार की मिसाल नहीं है।

सभी सरकारें गरीबों के धैर्य पर टिकी रहती हैं। यह धैर्य अन्तहीन प्रतीत होता है, किन्तु उसका भी प्याला छलक जाता है। रूस में १९१७ की फरवरी ऐसा ही हुआ।

जन समुदाय ने महसूस किया कि पत्रोग्राद मे सिंहासनारूढ उनका अपना जार बर्लिन के कैसर से भी अधिक बुरा है। उनकी कटुता का प्याला लबरेज हो चुका था। उन्होंने अत्याचारों का अन्त करने के लिए महलों के विरुद्ध अपना अभियान शुरू कर दिया। सर्वप्रथम विबोर्ग बस्ती की श्रमिक महिलाएं रोटी का नारा लगाती हुई मैदान में निकल पडी। उनके बाद मजदूरों के लम्बे-लम्बे जुलूस अपनी मांगों को लेकर बढ चले। पुलिस ने नगर के केन्द्र में उनका प्रवेश रोकने के लिए पुलों को मोड दिया, मगर जमी हुई बर्फ पर से होते हुए उन्होंने नदी को पार कर लिया। अपनी खिडकी से लाल झडे लिये हुए जन-समुदाय को देखकर मिल्युकोव चीख उठा 'वह रही रूसी क्रांति—और १५ मिनट मे इसे कुचल दिया जायेगा!'

---

*ग्रिगोरी रासपूतिन—एक प्रपची, जार निकोलाई द्वितीय और उसकी पत्नी का मुंह लगा व्यक्ति।

**कडेट का अर्थ वैधानिक जनवादी दल का सदस्य है, यह मुख्य रूसी साम्राज्यशाही पूंजीवादी दल था।

किन्तु नव्स्की राजमार्ग पर पहरा देनेवाले कज्जाक सिपाहियों के बावजूद मजदूर आगे बढ़ते ही गये। मशीनगनें गोलियां बरसाती रहीं और उनका सामना करते हुए वे आगे बढ़ते गये। सड़क उनकी लाशों से पट गई, लेकिन वे आते गये और बढ़ते गये गीत गाते हुए और सैनिकों तथा कज्जाकों को अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हुए। अन्त में उन्होंने उनका पक्ष लिया। २७ फरवरी (१२ मार्च) को रोमानोव राजवंश का नाश हो गया, जिसने ३०० वर्षों तक रूस पर अपना कुशासन कायम कर रखा था। रूस खुशी से झूम उठा और सारी दुनिया ने ज़ार के पतन का अभिनन्दन किया।

मुख्यतः मजदूरों और सैनिकों ने क्रान्ति की। उन्होंने इसके लिए अपना खून बहाया था। अब यह मान लिया गया कि वे परम्परागत ढंग से सम्पत्तिवान वर्गों के हाथों में शासन की सौगात के क्षेत्र में लौट जायेंगे। लोगों ने ज़ार के समर्थकों के हाथों से सत्ता छीन ली थी। अब बड़े-बड़े स्वामी, वकील, प्रोफेसर और राजनीतिज्ञ जनता के हाथ से सत्ता छीन लेने के लिए दृश्य-पट पर उपस्थित हुए। उन्होंने कहा

'लोगो, तुमने शानदार विजय हासिल की है। अब अगला कार्य है—एक नये राज्य का गठन। यह बहुत ही मुश्किल काम है, मगर सौभाग्य से हम शिक्षित लोग शासन करने के इस कार्य को समझते हैं। हम एक अस्थाई सरकार का निर्माण करेंगे। हमारा दायित्व बड़ा है, परन्तु सच्चे देशभक्त होने के नाते हम इसे पूरा करेंगे। भद्र सैनिको, तुम लोग पुनः लड़ने के लिए खाइयों में चले जाओ। बहादुर मजदूरो, तुम लोग कारखानों में लौट जाओ। और किसानो, तुम लोग अपने गांवों में जाओ।'

अब रूसी जन-समुदाय विनीत एवं दब्बू हो गया था। इसलिए उन्होंने इन पूंजीवादी सज्जनों को अपनी 'अस्थाई सरकार" बनाने दी। मगर रूसी जन-समुदाय शिक्षाहीन होते हुए भी बुद्धिमान था। उनमें से अधिकांश लिख-पढ़ नहीं सकते थे। परन्तु वे सोच सकते थे। इसलिए खाइयों, कारखानों और गांवों में जाने से पहले उन्होंने अपने छोटे छोटे संगठन बनाये। मजदूरों ने मास्को रूस के प्रत्येक कारखाने में अपने

बीच म एक विश्वासपात्र प्रतिनिधि चुना। जूते और कपडे की फक्टरियो म भी मजदूरो न इसी पथ का अनुसरण किया। इट के भट्टा, काच के कारखानो और अन्य उद्योगो म भी मजदूरो न इसी प्रकार अपने प्रतिनिधि चुने। अपने अपने कारखाना म निर्वाचित इन प्रतिनिधियो के सगठन का नाम **मजदूरो के प्रतिनिधियों की सोवियत** (परिषद) रखा गया।

इसी प्रकार सेना म सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियत और गावो म किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियत गठित हुई।

इन प्रतिनिधियो का चुनाव जिलो के आधार पर नही, बल्कि धधो और पेशो के आधार पर होता था। फलत इन सोवियतो मे कानूनी राजनीतिज्ञ नही बल्कि ऐसे प्रतिनिधि आते थे, जो अपना काम जानते थे—खनिक खनन को मशीन चलानेवाले मशीनो को, किसान जमीन को सनिक युद्ध को और अध्यापक बच्चो को समझते थे।

सारे रूस के प्रत्येक नगर, कस्बे, छोटे छोटे गाव और रजीमेन्ट म सोवियतो का गठन हो गया। जारशाही के पुराने राजकीय ढाचे के ध्वस्त होने के कुछ सप्ताहो के भीतर ही पृथ्वी के छठे भाग म इन सामाजिक सगठनो का जन्म हो गया—यह इतिहास की सबसे अधिक उल्लेखनीय घटना थी।

रूसी युद्धपोत 'पेरेस्वेत' के कमाडर न अपनी कहानी मुझे बतायी, 'जब जारशाही के खत्म होने की सूचना मिली, तो मेरा जहाज इटली के समुद्र-तट के नजदीक था। ज्योही मने जार के पतन की सूचना दी, कुछ नाविको न 'सोवियत जिन्दाबाद!' का नारा लगाया। उसी दिन जहाज पर सभी पहलुओ स पत्रोग्राद सोवियत जसी एक सोवियत का गठन हुआ। म सोवियत को रूसी जनता का स्वाभाविक सगठन मानता हू, जिसकी जड गाव के मीर (कम्यून) और नगर के आर्तेल (सहकारी सिण्डीकेट) म है।'

कुछ अन्य लोग न्यू इग्लैण्ड की पुरानी नगर सभाओ अथवा प्राचीन यूनान की नगर व्यवस्थापिकाओ को सोवियत के विचार का आधार मानते ह। परन्तु सोवियत से रूसी मजदूर का सम्पर्क उनकी तुलना म बहुत अधिक प्रत्यक्ष था। वह १९०५ के विफल विद्रोह के समय सोवियत को आजमा

चुका था। उसने उस समय इसे अच्छा साधन पाया था। उसने अब उसका इस्तेमाल किया।

जार के खात्मे के बाद सभी वर्गों मे कुछ समय तक सदभावना बनी रही, जिसे "क्रान्ति का प्रमोदकाल" कहते हैं। उसके बाद बडी लडाई शुरू हुई—रूस मे सत्ता प्राप्त करने के लिए पूजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच कडा सघर्ष छिड गया। एक ओर पूजीपति, जमींदार और बुद्धिजीवी—अस्थाई सरकार के पोषक और दूसरी ओर सोवियतो के समर्थक—मजदूर, सैनिक एव किसान थे।

मैने इस प्रचण्ड सघर्ष मे डटकर हिस्सा लिया। चौदह महीनो तक मै किसानो के साथ गावो मे, सैनिको के साथ खाइयो और मजदूरो के साथ कारखानो मे रहा। मैने उनकी आखो से क्रान्ति को देखा और बहुत-सी महत्त्वपूर्ण घटनाओ मे भाग लिया।

यद्यपि पार्टी ने १९१८ तक विधिवत अपना नाम कम्युनिस्ट पार्टी नही रखा था, परन्तु मैने कभी कम्युनिस्ट और कभी बोल्शेविक, दोनो नामो का प्रयोग किया है।

फ्रासीसी क्रान्ति के समय महान शब्द 'नागरिक' था। रूसी क्रान्ति का महान शब्द है "साथी"—तोवारिश्च। मैने रूसी उच्चारण को छोड-कर सरल रूप मे इसे तवारिश लिखा है।

अपने कुछ लेखो को यहा उद्धृत करते हुए मै 'एशिया' 'द येल रिव्यू', 'द डायल', 'द नेशन', 'द न्यू रिपब्लिक' और 'द न्यूयार्क इवनिग पोस्ट' नामक पत्रो के सम्पादको के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हू।

सोवियत सघ की यात्रा करनेवाला यहा कारखानो, बैरको दीवालो, रेल-गाडियो टेलीफोन के खम्भो और सर्वत्र बडी सख्या मे पोस्टर देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है। सोवियत जो कुछ भी करती है, वह लोगो को उसका कारण समझाने का प्रयास करती है। यदि हथियारो के लिए आह्वान करना है, यदि राशन की मात्रा कम करनी ही है, यदि नये स्कूलो की स्थापना अथवा नया पाठ्यक्रम शुरू करना है, तो तत्काल पोस्टर लग जाते है जिनके द्वारा यह बताया जाता है कि लोगो को क्यो

और नमे सहयाग वरना चाहिए। इनम मे कुछ पाम्टर भद्दे और जल्दी म तयार किय गय प्रतीत हाते ह, परन्तु कुछ बला के नमूने सदृश्य लगते ह। इस पुस्तक म उनम से ?। प्राय मूल रगा म प्रस्तुत किय जा रहे ह। रूस क मित्रा न इसका व्यय भार वहन किया है और इसके लिए पाठक विशेष रूप मे श्रीमती जेस्सी द० किम्वाल्ल एव श्री ग्रोरान बकमैन के आभारी हागे।

पहला भाग

क्रान्ति के स्रष्टा

किसानो, मजदूरो और सैनिको के साथ

पहला अध्याय

बोल्शेविक और नगर

मैं १९१७ के जून के शुरू म एक दूधिया रात को पहली बार पेत्रोग्राद नगर आया। यह नगर प्राय उत्तर ध्रुव वत्त म पडता है। यद्यपि म आधी रात के समय पहुचा, तथापि चौडे चौक एव चौडी सडके इम उत्तरी दूधिया रात के स्निग्ध वणनातीत प्रकाश मे निमज्जित थी आर यह सब कुछ वहुत ही लुभावना था।

नीले रग के गुम्बजा वाले आर्थोडाक्स गिरजाघरो और रुपहली लहरा वाली यकातेरीना नहर को लाघकर हमारी कार नवा नदी के किनारे किनार जा रही थी। नदी के पार पीटर-पाल किले का नोकदार पतला शिखर स्वर्णिम सुई की भाति उठा हुआ दिखाई पड रहा था। इसके पश्चात शिशिर प्रासाद, सट इसाक के गिरजे का चमकदार गुम्वज और दिवगत जारा की स्मति म निमित अनगिनत स्तम्भ-समूह और मूतिया की झलक पाते हुए हम गतव्य स्थान की आर वढ गये।

परन्तु यह सब भूतकाल के शासको के स्मारक थे। मेरे मन मे इनके लिए कोई विशेष आकषण नही था, क्योकि मेरी अभिरुचि वतमान काल क शासका म थी। म महान केरेन्स्की* को सुनना चाहता था, जो उस समय

---

*अ० फ० केरेन्स्की—१९१७ मे गठित विभिन्न प्रतिक्रान्तिवादी अस्थाई सरकारो के प्रधान।

श्रोताग्रा को मत्रमुग्ध करनेवाला बहुत ही प्रभावशाली राजनीतिक वक्ता माना जाता था। मैं ग्रस्थाई सरकार के मत्रियो से मिलना चाहता था। म उनम से कइयो से मिला उनकी बात सुनी और मैने उनसे बातचीत की। वे योग्य, मिलनसार और वाक्पटु थे। परन्तु मैंने महसूस किया कि व जनता के सच्चे प्रतिनिधि नही ह, बल्कि "ृवक्ती खलीफा" ह।

सहज ज्ञान से मैंने भविष्य के शासको को ढूढ निकाला—व खाइयो मे पडे सनिको, कारखानो के मजदूरो और गावो के किसानो द्वारा सीधे सोवियतो मे चुन गय थे। पथ्वी के छठे भाग मे फले रूस की प्राय प्रत्येक पलटन, नगर और गाव म इन सोवियतो का गठन हो गया था। इन स्थानीय सोवियतो की ओर से पेत्रोग्राद म आयोजित सोवियतो की प्रथम अखिल रूसी काग्रेस* म शामिल होने के लिए प्रतिनिधिगण आ रहे थे।

सोवियतो की प्रथम अखिल रूसी काग्रेस

मैंने फौजी अकादमी मे सोवियतो की काग्रेस का अधिवेशन दखा। इसकी दीवाल पर ग्रभी भी चमकते अतीत का एक चिह्न—एक तख्ती लटक रही थी, जिसपर ये शब्द अकित थे, "महामहिम सम्राट निकोलाई द्वितीय ने २८ जनवरी १६१६ को अपनी उपस्थिति से इस स्थान को आनदप्रद बनाया।

सुनहरे रिबन से सुशोभित फौजी अफसरो, मुस्कराते हुए दरबारियो और पिछलग्गुओ का वहा हाल मे नामोनिशान नही था। महामहिम सम्राट, जार, मिट चुके थे। अब यहा काली पोशाक और खाकी वर्दिया पहने प्रतिनिधियो के जय-जयकार के बीच महामहिम क्रान्ति का शासन कायम था।

यहा पथ्वी के छोर से आये हुए प्रतिनिधि उपस्थित थे। वे आये थे तुषार मडित उत्तरी ध्रुव और धूप से जलते तुर्किस्तान से। यहा उपस्थित

---

*१६१७ मे ३ जून से २४ जून तक (१६ जून से ७ जुलाई तक) इस प्रथम काग्रेस का अधिवेशन चला।

थ तिरछी आखोवाले तातार, भूरे बालोवाले कज्जाक, रूसी, उक्रइनी, पोलण्डी, लाटविया और लिथुआनिया के रहनेवाले – सभी जातिया, बोलियो और विविध पोशाको वाले प्रतिनिधि। यहा खानो, कारखानो और खेतो म काम करनेवाले श्रम-क्लान्त प्रतिनिधि मौजूद थे, खाइयो से युद्ध क्लान्त सनिको के प्रतिनिधि और रूस के पाच नौसैनिक बेडो के सवलाय हुए नाविको के प्रतिनिधि मौजूद थे। यहा "फरवरी के क्रान्तिकारी" भी थे, जो फरवरी के तूफान द्वारा जार की गद्दी उलटी जाने के पूर्व हाथ पर हाथ धरे हुए आराम से बैठे रहे थे, किन्तु अब लाल क्रान्ति के रंगे सियार बनकर अपने को समाजवादी कहने लगे थे। यहा क्रान्ति के सच्चे कार्यकर्ता भी थे जो वर्षों तक भूख, निष्कासन और साइबेरिया के कठिन जीवन के बावजूद भी अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठावान रहे और जो यन्त्रणाओ की कसौटी पर खरे उतर चुके थे।

सोवियतो की कांग्रेस के अध्यक्ष छेईदजे ने मुझसे रूस आने का कारण पूछा। मने उन्हे बताया, "प्रत्यक्षत मैं एक पत्रकार के रूप म यहा आया हू। परन्तु मुख्य कारण क्रान्ति है। म इसका मोह नही छोड सकता था। चुम्बक की भाति यह मुझे यहा खीच लाई। मैं यहा हू, क्योकि म इससे अलग नही रह सकता था।"

उन्होने मुझे कांग्रेस को सम्बोधित करने को कहा। सोवियत सरकार ('इज्वेस्तिया' नामक समाचारपत्र) ने २५ जून (८ जुलाई) के अंक म मेरे भाषण की निम्नांकित रिपोर्ट प्रकाशित की थी

> साथियो, मैं अमरीका के समाजवादियो की ओर से आपका अभिनन्दन करता हू। हम यहा आपको यह बताने का साहस नहीं करेंगे कि अब आपको आगे क्या करना चाहिए। इसके विपरीत हम आपकी क्रान्ति से शिक्षा ग्रहण करने और आपकी महान उपलब्धियो की सराहना करने के उद्देश्य से यहा आये हैं।
>
> मानवजाति के ऊपर निराशा और हिंसा के घन बादल छाये हुए थे और वे सभ्यता की मशाल को रक्त की धारा म बुझा देने का खतरा पैदा करते थे। परन्तु साथियो, आप उठ खडे हुए और

यह मशाल नयी ज्योति से साथ जल उठी। आपने सबत्र सभी व दिया म स्वतन्त्रता के नये विश्वास की भावना जागृत कर दी है।

समानता, भ्रातृत्व और जनतन्त्र श्रेष्ठ एवं मनोरम शब्द है। मगर लाखों बेकार लोगों के लिए व बेमानी है। न्यूयार्क के १,६०,००० भूखे बच्चों के लिए व खोखले शब्द हैं। भारत और इंगलैण्ड के शोषित वर्गों के लिए व उपहासजनक शब्द है। आपका कर्तव्य इन शब्दों को वास्तविकता म बदल देना है।

आपने राजनीतिक क्रान्ति की है। जमन सैन्यवाद के खतरे से मुक्त होने के बाद आपका दूसरा काय सामाजिक क्रान्ति करना है। उसके बाद विश्व के मजदूर पश्चिम की ओर नहीं, बल्कि पूर्व की ओर— महान रूस की ओर, पेत्रोग्राद के इस माम मैदान की ओर देखेंगे जहां आपके पहले योद्धा शहीद हुए।

स्वतन्त्र रूस जिन्दाबाद! क्रान्ति जिन्दाबाद! विश्व शान्ति जिन्दाबाद!

छेईदजे ने मेरे बाद अपने भाषण म सभी राष्ट्रों के मजदूरों से इस बात का समथन करने का आग्रह किया कि वे अपनी सरकारों पर 'वीभत्स हत्याकाण्ड का, जो मानवता को कलंकित कर रहा है और रूसी स्वतन्त्रता के उदय के महान दिनों को मेघाच्छन्न किये हुए है, समाप्त करने के लिए दबाव डाल।

जोरों की हर्षध्वनि हुई और कांग्रेस ने काय सूची पर विचार करना शुरू किया—उऋदता, जन शिक्षा, युद्ध म मारे गये सैनिकों की विधवाएं और अनाथ बच्चे, मोर्चे के लिए फौजी साज सामान एवं रसद पहुंचाने की व्यवस्था और रेलवे की मरम्मत आदि। इन विषयों पर अस्थाई सरकार को निणय करना था। मगर वह सरकार कमजोर और अयोग्य थी। उसके मन्त्री जोरों से भाषण देते, आपस म तू तू, म मैं करते, एक दूसरे के खिलाफ षड्यन्त्र रचते और कूटनीतिज्ञों का आदर सत्कार करते। मगर किसी को तो कठोर परिश्रम भी करना चाहिए था। सोवियतें लोगों की चिन्ता करने लगी थीं।

सोवियता की प्रथम काग्रेस पर बुद्धिजीवी – डाक्टर इजीनियर, पत्रकार – छाये रहे। वे मेशेविक और समाजवादी क्रान्तिकारी* दलो के नाम स विदित राजनीतिक पार्टियो से सम्बधित थे। बायी ओर के कोने म ऐसे १०५ प्रतिनिधि बैठे हुए थे, जो निश्चित रूप से सर्वहारा वग क थे – सीधे-सादे सैनिक और मजदूर। वे लडाकू एव एकता के सूत्र म आबद्ध थे और अपने भाषणो म बडी निष्ठा व्यक्त करते। अक्सर उनके भाषणो का मजाक उडाया जाता और परिहास मे तालिया पीटकर तथा शोरगुल मचाकर उनके भाषणो मे बाधाए डाली जाती। उनके प्रस्तावो का मत्र अस्वीकृत कर दिया जाता। मेरे पूजीवादी गाइड ने विद्वेषपूर्ण ढग स मुझे सूचित किया, "वे बोल्शेविक है। उनमे अधिकाश मूर्ख, हठधर्मी एव जमनी के गुप्तचर है।' इनके बारे म उसने केवल यही बताया। होटल के गाल्पी कक्ष, अतिथि-कक्ष और राजनयिक क्षेत्रो मे भी इनके बारे म इसस अधिक कोई जानकारी प्राप्त न होती थी।

सौभाग्यवश म सूचना प्राप्त करने अयत्र गया। म उस क्षेत्र म गया जहा कारखाने थे। नीजनी नोवगोरोद मे मेरी मुलाकात सार्तोव नामक एक मिस्त्री स हुई, जिसने मुझे अपने घर चलने के लिए आमत्रित किया। मुख्य कमरे के कोने मे एक लम्बी राइफल रखी हुई थी।

सार्तोव ने कहा, "अब प्रत्येक मजदूर के पास बदूक है। कभी हम जार क हित म लडने के लिए इसका इस्तमाल करते थे, अब अपने हितो की रक्षा के लिए लडते ह।'

एक दूसरे कोने म सट निकोलाई की प्रतिमा लगी हुई था और उसके सामन छोटा-सा दीपक जल रहा था।

---

* समाजवादी क्रान्तिकारी – निम्न पूजीवादी पार्टी के सदस्य जिसका गठन १९०१–१९०२ म हुआ था। उन्होने किसानो के भीतर वर्गीय असमानिया एव सवहारा वग के अधिनायकत्व के विचार का स्वीकार नही किया। जब क्रान्ति की गति तज होती गई, तो समाजवादी क्रान्तिकारी प्रतिक्रान्तिवादी पार्टी का घटिया रूप ग्रहण कर गय।

सार्तोव ने माना गपाइ पश रग्त हुए कहा, "मेरी पत्नी अभी भी धार्मिक विचार रखती है। उस सट निकोलाई म विश्वास है—उसका ख्याल है कि क्रांति के दौरान वह मेरी रक्षा करेगा। जैसे कि कोई सट राजनीति की मदद कर सकता ह,' उसने हसते हुए कहा। 'पर खैर भगवान इसका भला करे। इसम कोई खास नुकसान भी तो नहीं है। बडे विलक्षण लोग होते हैं ये सट भी। जाने क्या कर बैठें।"

सार्तोव परिवार फश पर बिस्तर जमाया और मुझे पलग पर सोने के लिए बाध्य किया क्योकि म अमरीकी था। इसी कमरे म मने एक दूसरे अमरीकी का भी देखा। प्रतिमा-दीपक की हल्की रोशनी म दीवाल पर लगे चित्र म मुझे चिर परिचित चेहरा दिखाई दिया— महान अब्राहम लिंकन का सहज स्वाभाविक चेहरा। इलिनाइस के जगलो के खोजी के कुटीर से यह यहा वोल्गा के अचल म इस मजदूर के कुटीर म पहुच गया था। आधी सदी और आधी दुनिया के पार लिंकन के हृदय की जागत भावनाओं ने प्रकाश के लिए अधेरे म भटकते एक रूसी मजदूर के हृदय को छू लिया था।

जिस प्रकार सार्तोव की पत्नी सट निकोलाई म आस्था रखती थी, उसी प्रकार इस बहुत ही विलक्षण मजदूर की महान मुक्तिदाता लिंकन म आस्था थी। उसने अपने घर म लिंकन के चित्र को सम्मानपूर्ण स्थान पर लगाया था। उसने एक और भी अदभुत काम किया था—लिंकन के कोट के मोडे हुए अग्र भाग पर एक बडा लाल रिबन लगा दिया था, जिसपर यह शब्द अकित था—बोल्शेविक।

सार्तोव को लिंकन के जीवन के सम्बन्ध म बहुत कम जानकारी थी। उसे केवल यह मालूम था कि उन्होने अन्याय के विरुद्ध सघर्ष किया, गुलामो को मुक्त किया और यह कि उनका तिरस्कार किया गया और उन्हे सताया गया। सार्तोव की दृष्टि मे बोल्शेविको के साथ लिंकन की समानता इन्ही बातो मे निहित थी। उन्हे सर्वोत्कृष्ट श्रद्धाजलि अर्पित करने के ख्याल से ही उसने लाल निशान से लिंकन को अलकृत किया था।

मने कारखानो और प्रमुख बडी सडको को एक दूसरे से सर्वथा भिन्न पाया। वहा जिस अर्थ म 'बोल्शेविक' शब्द का प्रयोग होता था, वह भी सर्वथा भिन्न था। राजपथ पर तिरस्कारपूर्ण एव भर्त्सनापूर्ण ढग से इस शब्द

का कहा जाता था, मगर मजदूरा के होठो पर यही प्रशसा एव सम्मान का शब्द बन जाता था।

बाल्शेविका ने पूजीपति वग की ग्रोर कोई ध्यान नही दिया। वे मजदूरा को अपना कायक्रम समझाने म व्यस्त थे। सोवियता की काग्रेस म शामिल हान के लिए ग्राये फ्रास मे तनात रूसी फोज के प्रतिनिधिया से मुझे प्रथम बार इस कायक्रम की जानकारी प्राप्त हुई।

इन बोल्शेविको ने दढतापूवक यह कहा 'युद्ध नही बल्कि क्राति को जारी रखना हमारी माग है।"

"ग्राप लोग ग्रब भी क्राति की ही चचा क्या करत हैं? मने माना शतान की वकालत करते हुए पूछा, ग्राप तो क्राति कर चुके है। ठीक है न? ज़ार ग्रौर उसके दुमछल्ले समाप्त हो गये। विगत सौ वष म ग्राप यही ता करना चाहते थे न?"

उन्हान उत्तर दिया, "हा, ज़ार खत्म हो गया, मगर क्राति ग्रभी शुरु हुई है। ज़ार का ग्रत केवल एक घटना है। मजदूरा ने एक शासक वग–राजतत्रवादिया–के हाथ से सत्ता छीनकर उसे दूसरे शासक वग–पूजीपतिया–के हाथ म साप देन के लिए ही इसपर अपना ग्रधिकार स्थापित नही किया था। ग्राप चाह इसे किसी भी नाम स पुकार, गुलामी, गुलामी है।'

मन कहा कि सारी दुनिया म ग्राम तौर पर ग्रब यही माना जाता है कि रूस का ग्रगला कदम फ्रास ग्रथवा ग्रमरीका की भाति एक गणतत्र की रचना ग्रार पश्चिम की राजकीय सस्थाग्रा की स्थापना करना है।

उन्हान इसके उत्तर मे कहा, 'किन्तु हम यही ता करना नहा चाहत। हम ग्रापकी राजकीय सस्थाग्रो ग्रथवा सरकारा के प्रशसक नहीं है। हम जानत ह कि पश्चिम म गरीबी ग्रौर बेकारी तथा उत्पीडन विद्यमान है। एक ग्रोर चापडे तथा दूसरी ग्रार ग्रट्टालिकाए है। एक ग्रार पूजीपति तालवन्दिया, काली सूचिया, समाचारपत्रा के झूठे प्रचारा ग्रार गूडो दस्तवन्द के द्वारा मजदूरा के विरुद्ध जूझ रहे हैं ग्रौर दूसरी ग्रार मजदूर हडतालो, बहिष्कारो ग्रौर बमा द्वारा जवाब दे रहे है। हम वर्गों के इस युद्ध का समाप्त करना चाहत है। हम गरीबी का मिटाना चाहते है। केवल मजदूर ही ऐसा कर सकते है, केवल कम्युनिस्ट प्रणाली के जरिए ही ऐसा करना सभव है। हम रूस म इसी प्रणाली का ग्रपनाने जा रहे है।

मने कहा "दूसरे शब्दों में आप लोग श्रम विकास के नियमों से बचना चाहते हैं। कोई जादू की छड़ी घुमाकर आप रूस को अचानक अविकसित कृषि प्रधान राज्य से उच्च रूप से सुसंगठित सामूहीकृत अर्थ व्यवस्था वाले देश में बदल देना चाहते हैं। आप छलांग मारकर अठारहवीं सदी से बाइसवीं शताब्दी में पहुंच जाना चाहते हैं।"

उन्होंने उत्तर दिया, 'हम नयी सामाजिक व्यवस्था कायम करने जा रहे हैं, किन्तु हम छलांग मारने अथवा जादू की छड़ी घुमाने में विश्वास नहीं रखते। हम मजदूरों और किसानों की सामूहिक शक्ति पर भरोसा करते हैं।

मने टोकते हुए पूछा, 'मगर इसे सम्पन्न करने के लिए दिमाग कहां है? आप जन समुदाय की व्यापक अज्ञानता की ओर तो ध्यान दें?"

दिमाग! ' उन्होंने उत्तेजित होते हुए कहा, "क्या आप समझते हैं कि हम 'बड़े लोगों' के दिमागों के सम्मुख अपने सिर झुकाते हैं? इस युद्ध से बढ़कर विवेकशून्य, मूर्खतापूर्ण और अपराधमूलक कार्य और क्या हो सकता है? और कौन इसके लिए दोषी है? मजदूर वर्ग नहीं, बल्कि प्रत्येक देश का शासक वर्ग। निश्चय ही मजदूरों और किसानों की अज्ञानता तथा अनुभवशून्यता से इतनी गड़बड़ी नहीं पैदा हो सकती थी जितनी जनरलों और राजनीतिज्ञों ने अपने दिमागों तथा संस्कृति के बावजूद पैदा कर रखी है। हम जन समुदाय में, उनकी सृजनात्मक शक्ति में यकीन करते हैं। हम सामाजिक क्रान्ति करके ही रहेंगे।'

"और क्यों?" मैंने पूछा।

'क्योंकि विकास प्रणाली का यह अगला कदम है। कभी हमारे यहां दास प्रथा थी। उसका स्थान सामंतवाद ने लिया। पूंजीवाद ने उसका स्थान ग्रहण किया। अब पूंजीवाद को निश्चय ही अपना स्थान छोड़ देना चाहिए। इसका कार्य पूरा हो चुका है। इससे बड़े पैमाने पर उत्पादन, विश्वव्यापी उद्योगवाद संभव हुआ है। किन्तु अब इसे मंच से हटना चाहिए। यह साम्राज्यवाद एवं युद्ध का जनक, मजदूरों का गला घोटनेवाला और सभ्यता का विनाशक है। अब विकास क्रम में इसे अपना स्थान निश्चय ही अगली कड़ी यानी कम्युनिस्ट प्रणाली को देना चाहिए। इस नयी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की अगुवाई करना मजदूर वर्ग का ऐतिहासिक कार्यभार

है। यद्यपि रूस एक पिछड़ा हुआ देश है, तथापि हम ही सामाजिक क्रांति करते हैं। दूसरे देशों के मजदूर वर्ग को इस आग बढ़ाना है।"

एक नये विश्व का निर्माण—बहुत साहसपूर्ण कार्यक्रम है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि रूट प्रतिनिधिमंडल के जेम्स डंकन के विचार नगण्य प्रतीत हुए, जब उन्होंने अपनी ऊबा देनेवाली बात चीत में शिल्पी यूनियनों, यूनियनों की प्रतिष्ठा और आठ घंटे के दिन की चर्चा की। उनके श्रोताओं को या मनोरंजन की सामग्री मिली अथवा वे ऊब। दूसरे दिन एक समाचारपत्र ने उनके दो घंटे के भाषण की रिपोर्ट इस प्रकार प्रकाशित की, "अमरीकी श्रमिक संघ के उपाध्यक्ष ने कल रात सोवियतों को सम्बोधित किया। प्रशांत महासागर से होकर आते समय उन्होंने स्पष्टतः दो भाषण तैयार किये—एक रूसी जनता के लिए और दूसरा नादान एस्कीमो के लिए। प्रत्यक्षतः कल रात उन्होंने यही सोचा कि वे एस्कीमो के सम्मुख भाषण कर रहे हैं।"

बोल्शेविकों के लिए महान क्रांतिकारी कार्यक्रम प्रस्तुत करना एक बात थी और १६ करोड़ व्यक्तियों के राष्ट्र द्वारा इसे स्वीकृत कराना सर्वथा भिन्न बात थी, विशेष रूप से इसलिए कि उस समय बोल्शेविक पार्टी के सदस्यों की संख्या १,५०,०००* से अधिक नहीं थी।

अमरीका से लौटनेवाले बोल्शेविक

फिर भी अनेक कारणों से बोल्शेविकों के विचारों के लिए लोगों के मन में प्रतिष्ठा की भावना पैदा हो रही थी। पहली बात यह थी कि बोल्शेविक जनता को समझते थे। अपेक्षाकृत अधिक साक्षर स्तरों जैसे नाविकों में उनका प्रभाव अधिक था और मुख्यतः नगरों के दस्तकार और मजदूर उनके साथ थे। प्रत्यक्षतः जनता की संतान होने के कारण वे जनता

---

*लेखक ने यह उल्लेख नहीं किया है कि बोल्शेविक पार्टी की यह सदस्य-संख्या किस समय की है। वास्तव में छठी कांग्रेस (जुलाई १९१७) तक रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य-संख्या २,४०,००० तक पहुंच गई थी।

की भाषा बोलते थे, उसके दुख दर्द के साथी थे और उसी के ढग से सोचते थे।

यह कहना सही नही होगा कि बाल्शेविक जनता का समर्थन थे। वे तो स्वय ही जनता थे। इसलिए उन पर विश्वास किया जाता था। अब तक रूस का मजदूर अपने से उच्च वर्गो द्वारा धोखा खाता रहा था, इसलिए अब वह अपने ही वर्ग मे यकीन करता था।

मेरे एक दोस्त का विलक्षण ढग से इसका अनुभव प्राप्त हुआ। उनका नाम क्रास्नोश्चाकोव है और अब वे सुदूर पूर्व के जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष हैं। शिकागो के मजदूर सस्थान मे शिक्षित होकर वे मजदूरो के समर्थक बन गये। वे योग्य, बोलने मे निपुण होने के कारण निकोलस्काये उसूरीस्क नगर सोवियत के अध्यक्ष चुन लिये गये। पूजीवादी पत्र ने तत्काल उन्हें "बिना घर घाट का प्रवासी" कहकर उन पर चोट की।

इसी पत्र ने लिखा, 'महान रूस के नागरिको, क्या आपको एक कुली शिकागो के खिडकी साफ करनेवाले के शासन मे रहने पर शर्म नही आती ?"

क्रास्नोश्चाकोव ने सख्त उत्तर लिखते हुए इस ओर सकेत किया कि अमरीका मे वे वकील और शिक्षक के रूप मे काय कर चुके है। अपना लेख लिये हुए समाचारपत्र के कार्यालय जाते समय वे यह जानकारी प्राप्त करने के लिए सोवियत मे चले गये कि मजदूरो की निगाह मे इस चोट से उनकी प्रतिष्ठा कितनी गिरी है।

ज्यो ही उन्होने दरवाजा खोला, त्यो ही किसी ने पुकारा, "तोवारिश्च क्रास्नोश्चोकोव!" जय ध्वनि के साथ वे उनके सम्मान मे उठ खडे हुए। उनका हाथ पकडे हुए वे चिल्ला पडे "नाश! नाश!" (हमारे है! हमारे है!) उन्होने कहा, "कामरेड, अभी अभी हमने पत्र पढा है। इससे हम बडी प्रसन्नता हुई। यद्यपि हम सोचते थे कि आप पूजीवादी हैं फिर भी हमने सदा आपको पसन्द किया। अब हम इस बात की जानकारी हो गई कि आप हमम से एक है, सच्चे मजदूर है और हम आपका प्यार करते हैं। हम आपके लिए कुछ भी कर सकते है।'

बोल्शेविक पार्टी के ६६ प्रतिशत सदस्य मजदूर थे। निस्सन्देह पार्टी मे बुद्धिजीवी भी थे, जो धरती पुत्र नही थे। परन्तु लेनिन और त्रात्स्की का

प्राय भूखा का सा जीवन बिताना पडा और इसलिए वे गरीबो की भावनाए समझते थे।

अधिकाश बोल्शेविक युवा लोग थे, वे दायित्वा स नही घबराते थ मौत से नही डरते थे और उच्च वर्गो से सवथा भिन्न काम से जी नही चुरात थे। उनम से कई, विशेषत उन निष्कामिता म स, जा अमरीका से बडी सख्या म अब स्वदेश वापस आ रह थे, मरे मित्र हो गये थे।

उनम से एक यानिशेव भी था, जो या कहना चाहिए कि विश्व-मजदूर बन गया था। दस वष पूव जार के खिलाफ अपने साथी किसाना को भडकाने के आराप मे उसे रूस से निष्कासित कर दिया गया था। हैम्बुग की गोदियो मे वह जल-चूहे की भाति जीवन व्यतीत कर चुका था आस्ट्रिया की कोयला खानो से कोयला खोद चुका था और फ्रास के लोहा ढलाईघरा म लोहा ढाल चुका था। अमरीका मे चमडा कमाने के कारखाने म काम करते उसकी अपनी त्वचा काली हो गयी थी कपडा मिला मे काम करत करते वह विरजित हुआ था और हडतालियो के साथ पुलिस की लाठिया खा चुका था। विभिन्न देशो मे रहने से उसे चार भाषाओ का ज्ञान प्राप्त हो गया था और बोल्शेविज्म म उसे अटूट विश्वास था। यह भूतपूव किसान अब एक औद्योगिक सवहारा बन गया था।

किसी व्यग्य लेखक ने सवहारा को "बातूनी मजदूर' की सज्ञा दी थी। यानिशेव स्वभाव स बातूनी नही था। मगर अब उसे बातचीत करनी ही पडती थी। उसके लाखो साथी-मजदूरा की प्रकाश पान की तीव्र इच्छा ने उस अभिव्यजना-शक्ति दी और मिलो एव खाना के मजदूरा के सम्मुख वह किसी बुद्धिजीवी से भी अधिक प्रभावशाली भाषण देता। वह रात-दिन कठिन परिश्रम करता रहा और गर्मी के मध्य म मुझे साथ लेकर अपन गाव चला गया। मेरे लिए यह यात्रा अविस्मरणीय रहेगी।

दूसर साथी का नाम वोस्कोव था, जा न्यूयाक की बढई यूनियन न० १००८ का भूतपूव प्रतिनिधि था और अब उस मजदूर समिति म था जा सेस्त्रारेत्स्क मे राइफल फैक्टरी का प्रबन्ध करती थी। तीसरे साथी का नाम वोलोदास्की था जा रात दिन सोवियत सत्ता की सेवा म सलग्न रहता था और इस काय स एक दीवाने की सी खुशी अनुभव करता था। एक अन्य साथी नबुत था, जा सदा अपने साथ पुस्तका का बण्डल लिय रहता

था ग्रार ग्रलसफाड की पुस्तक 'इस्पात ग्रौर स्वण का युद्ध' का पढते समय जाश म ग्रा जाता था। इन प्रवासिया ने बाल्शेविक प्रचार म पश्चिमी गति ग्रार तरीको की वद्धि की। ये ग्रत्युत्साही युवक काय-कुशलता ग्रौर शक्ति क प्रतीक थे।

बोल्शेविक कारवाई का केन्द्र पत्रोग्राद था। इसम इतिहास का सूक्ष्म व्यग्य भी निहित है। यह नगर महान जार पीटर के गौरव एव गरिमा का भी प्रतीक था। उस यह दलदल मिला ग्रौर उसने इसे शानदार राजधानी के रूप म छोडा। यहा राजधानी की ग्राधारशिला रखने के लिए उसन इस दलदली भूमि को वक्षा ग्रौर पत्थरा से पटवा दिया। यह पीटर की दृढ इच्छा शक्ति का बृहत स्मारक है। इसके साथ ही यह भयकर निममता का भी स्मारक है, क्याकि यह केवल लकडी के लाखो लट्ठा पर ही नही बल्कि लाखा मानवीय हड्डियो पर भी निर्मित है।

पशु समूहो की भाति श्रमिका को इस दलदली भूमि मे काम के लिए ठेल दिया गया ग्रौर वे यहा शीत, भूख एव रोगो के शिकार हो गए। जितनी तेजी से वे मरते थे, उतनी ही शीघ्रता के साथ ग्रधिकाधिक दासो को यहा काम मे झाक दिया जाता था। वे खाली हाथो ग्रौर डडा से जमीन खोदते थे, दलदली मिट्टी को ग्रपनी टोपियो एव पल्ला म भरकर बाहर फेंक ग्राते थे। हथौडो की चोटा कोडो की मार एव दम तोडनेवाला की ग्राहा-कराहो के बीच पेत्रोग्राद का बसे ही निर्माण हुग्रा, जसे गुलामा के ग्रासुग्रो ग्रौर मुसीबता के बीच पिरामिडा का।

ग्रब इन्ही दासा के वशज विद्रोह कर रहे थ। पेत्रोग्राद क्रान्ति का सदर मुकाम बन गया था। प्रतिदिन यहा से प्रचारक मण्डलिया बोल्शेविक विचारो के प्रचार के निमित्त लम्बी यात्राग्रो पर प्रस्थान करती थी। प्रतिदिन यहा से बोल्शेविक साहित्य प्रचुर मात्रा म मुद्रित होकर बाहर जाता था। जून म पत्रोग्राद से प्राव्दा' (सत्य), 'सोल्दात' (सैनिक), देरेवेन्स्काया बेदनोता (गाव के गरीब) की लाखो प्रतिया प्रकाशित हा रही थी। मित्रराष्ट्रा के पयवेक्षका ने कहा, "जमनी से मिलनेवाली रकम से ही यह सब कुछ हो रहा है ग्रौर वे शुतुरमुग की भाति राजपथा के कहवाघरो म ग्रपन सिरो को छिपाए उन्ही बाता पर विश्वास करते रह, जिन पर यकीन करना उन्हे पसन्द था। यदि वे घूमकर दूसरी दिशा म जान

की तक्लाफ करत, ता देखते कि एक मेज के पास लोगा की एक लम्बी लाइन लगी हुई है और प्रत्येक वहा अपनी सामथ्य के अनुसार १० कोपेक, १० रूबल, हा सकता है १०० रूबल चदा द रहा है। उनम मजदूर, सनिक और यहा तक कि किसान भी थे और वे बोल्शेविक प्रेस के लिए अपना याग दे रहे थे।

बोल्शेविका का जितनी अधिक सफलता मिलती जाती थी, उनके खिलाफ उतना ही अधिक शारगुल मचाया जाता था। पूजीवादी समाचारपत्रा ने जहा अन्य दला की विवेकशीलता एव सयम की सराहना की, वही उन्होंने बाल्शेविको के खिलाफ कठोर कारवाई करने की माग की। जहा करेस्की और दूसरा का शिशिर प्रासाद मे भव्य क्वाटर दिये गये, वहा बाल्शविको को जेला मे झाका गया।

पहले ता सभी दला ने अपने सिद्धाता के लिए तक्लीफे बदाश्त की था, पर अब मुख्यत बोल्शेविक ही कष्ट झेल रहे थे। वे वतमान युग के बलिदानी थे। इससे उन्ह प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। उन पर हानेवाले अत्याचारा स उन्हें ख्याति मिली। जनसमुदाय अब बोल्शेविक सिद्धात की ओर आकृष्ट हान लगा और उसने आश्चयजनक रूप मे उसे अपनी आकाक्षाओ के अनुरूप पाया।

परन्तु बोल्शेविको के बलिदाना और उत्साह के कारण ही जनता अतत उनके झण्डे के नीचे आकर खडी नही हा गई। और अधिक शक्तिशाली सहयोगी शक्तिया उनका साथ दे रही था। उनकी मुख्य सहायिका थी—भूख, तहरी भूख रोटी, शाति और जमीन के लिए सामूहिक भूख।

ग्राम सोवियता मे किसाना का पुराना नारा पुन गूज उठा 'सारी भूमि ईश्वर और जनता की है।' शहरो के मजदूरा ने ईश्वर का एक तरफ हटाकर यह नारा लगाया, "कारखाने मजदूरा के है।' सैनिका ने मार्च पर उदघापणा की, 'युद्ध शैतान का काम है। हम युद्ध नही चाहते। हम शान्ति चाहते ह।'

जन-समुदाय मे बडे जारा की हलचल पैदा हा गई थी। उन्होंने भूमि समितिया, कारखाना समितिया और सैनिका की समितिया सघटित

करनी शुरू कर दी। इस तरह वाणी मिल गई और इस प्रकार रूस गाखा करोडो वक्ताओ का राष्ट्र बन गया। अब सडको पर ज़ोरदार सामहिक प्रदशन होने लगे।

दूसरा अध्याय

पेत्रोग्राद मे प्रदर्शन

१९१७ के वसत और गर्मी म प्रदशनो का ताता लगा रहा। इस काय म रूस सदा अग्रगण्य रहा है। अब पहले की तुलना म और अधिक लम्बे जुलूस निकलने लगे जिनका सगठन पादरी नही, बल्कि स्वय जनता देव प्रतिमाओ की जगह लाल झण्डे लेकर और धार्मिक भजनो के बदले क्रान्ति के गीत गाती हुई करने लगी।

१८ जून (१ जुलाई) को पेत्रोग्राद म हुए प्रदशन को कौन भुला सकता है! सनिक भूरी और खाकी, घुडसवार नीली और सुनहरी तथा नौसैनिक श्वेत वर्दिया, कारखानो के मजदूर काली जाकेटे तथा लडकिया रग बिरगी कुर्तिया पहने हुए नगर की मुख्य सडको पर लहरो की भाति उमडती हुई चली आ रही थी। जुलूस म शामिल प्रत्येक प्रदशनकारी के हाथ मे लाल फरहरा, फूल या फीता था, महिलाओ के सिर पर सिंदूरी रूमाल बधे हुए थे और पुरुष लाल कमीजें पहने हुए थे। अरुणिम फेन की भाति ऊपर हजारो लाल फरहरे चमक और लहरा रहे थ।

यह जन सागर गाता हुआ बढ रहा था।

मने तीन वष पूव सशस्त्र जमन फौजो को म्योज़ घाटी को रौन्दते हुए पेरिस की ओर बढते देखा था। जब दस हजार जमन बूटो स एक साथ सडक की पटरी रौंदी जा रही थी, उसी समय टीलो से दस हज़ार जमन सनिको द्वारा गाये जानवाले जमन फौजी गीत 'जमनी ससार म श्रेष्ठ है' का समवेत स्वर प्रतिध्वनित हो रहा था। यह प्रभावकारी होते हुए भी यत्रवत था और इन भूरी सैन्य टुकडियो के प्रत्येक कृत्य की भाति यह भी ऊपर से निर्देशित था।

मगर इन लाल टुकडियो का गाना लोगो के अ तस्तल का स्वत प्रेरित भावोद्गार था। कोई क्रान्तिकारी गीत गा उठता, सनिको के भारी भरकम

स्वर म टेक वे शब्द ऊचे गूज उठते ग्रार फिर मजदूर महिलाए गानवना म शामिल होकर ग्रपन सकरुण स्वरा स वह गीत गान लगती। गीत क गान व स्वर ग्रारोहित ग्रवरोहित होकर शान्त हा जाते फिर जुलूस म पाठ म यह गीत पुन गूज उठता ग्रौर एक स्वर स सभी प्रदशनकारी इस गान लगत।

सर इसाक व मन्दिर के स्वर्णिम गुम्बज मस्जिद की मीनारा का पाछ छोडते हुए ग्रान्ति व नवग म चालीस मता ग्रौर जातिया के लोग एकता व सूत्र म ग्राबद्ध हाकर ग्राग्रसर हा रह थे। इस समय वे खाना, कारखाना चापडा ग्रौर खाइया को भूल चुके थे। यह जन दिवस था। जनता प्रसन थी ग्रौर उत्साहपूवक इसे मना रही थी।

किन्तु ग्रपनी खुशी म भी उहान उनको विस्मत नही किया था, जा इस दिवस को लाने के लिए हाथा म हथकडिया ग्रौर पैरा मे बेडिया पहन, कठिन यत्रणाए बदाश्त करते हुए निष्कासन के स्थान की ग्रार गये थे ग्रौर जिन्हाने साइबेरिया के ग्रसीम मदाना म क्रान्ति के लिए ग्रपने प्राण न्योछावर किये थे। पास ही म मास मदान म फरवरी (माच) की क्रान्ति म शहीद हुए हजार योद्धा ग्रपने लाल ताबूतो म कब्रा म ग्रनत विश्राम कर रहे थे। यहा **'मर्सेइयेज'** की फौजी धुन की जगह शापेन के **'ग्रन्तिम प्रयाण राग'** के शोकपूण स्वर गूजने लगे। नगाडे पर ग्रावरण डाले, ध्वजा को झुकाए, मौन श्रद्धाजलि म सिर नीचे किय वे कब्रा की लम्बी पात से गुजरते समय ग्रासू बहाते ग्रथवा मौन रहे।

एक घटना से, जा ग्रपने ग्राप म मामूली होते हुए भी महत्त्वपूण थी उस दिन की शान्ति भग हो गई। म सदोवाया सडक पर ग्रलबस गाम्बेग के साथ खडा था, जो क्रान्ति के दिनो मे ग्रनेक ग्रमरीकिया का मित्र एव मागदर्शी रहा था। नाविको ग्रौर मजदूरो का क्रोध उस लाल झण्डे को देखकर भडक उठा, जिस पर यह ग्रकित था, **"ग्रस्थाई सरकार जिदाबाद!"** उहाने इसे फाडना शुरू किया ग्रौर इस शोर शराबे म कोई चिल्ला उठा, "कज्जाक ग्रा रहे है!"

लोगा ने इन पुराने शत्रुग्रा के नाम से ही भीड म ग्रातक फल गया। भय से उनके चेहरे पीले पड गये पशुग्रा के झुण्ड की भाति उनम खलबली मच गई ग्रौर भगदड मे जो गिर गये थे, उन्ह रौंदत, ग्रौर पागला की

तरह चीखते चिल्लाते हुए व इधर उधर भागने लगे। सौभाग्य से यह आतंक निराधार निकला। जुलूस पुन गठित हो गया और गीत एव जयजयकार के साथ फिर अभियान शुरू हुआ।

मगर यह जुलूस भावोद्वेग की अभिव्यक्ति से कुछ अधिक था। यह मानो भविष्यवाणी कर रहा था, इसके फरहरे मानो यह उद्घोषणा कर रहे थे **"कारखाने–मजदूरो को दो! जमीन–किसानों को दो! सारे विश्व मे शांति कायम हो! युद्ध का अन्त हो! गुप्त सधियां खत्म हो! पूजीवादी मत्री मुर्दाबाद!"**

बोल्शेविको का यही कार्यक्रम था, जो जन-समुदाय के लिए उक्त नारो म व्यक्त कर दिया गया था। जुलूस म हजारो फरहरे थे और इतने ध्वज देखकर खुद बाल्शेविक भी आश्चर्यचकित रह गये थे। वे फरहरे इस बात के सकेत थे कि बडा तूफान आनेवाला है। यह बात प्रत्येक व्यक्ति उनको छोडकर, जिन्हे विशेष रूप से इसे ही देखने के लिए रूस भेजा गया था जसे रूट शिष्टमण्डल के सदस्य समझ सकता था। इन महानुभावो ने क्रांतिकारी रूस म रहते हुए भी अपने को क्रान्ति से सर्वथा पथक रखा। उन पर यह रूसी कहावत लागू होती है, "वे सर्कस देखने गये, किन्तु उन्होने हाथी नही देखा।

१८ जून (१ जुलाई) को अमरीकियो को विशेष प्रार्थना म शामिल होने के लिए कजान गिरजाघर मे निमंत्रित किया गया। जिस समय वे गिरजाघर म झुककर पादरियो का चुम्बन एव आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे, उसी समय बाहर सडको पर जोश भरे जन-समुदाय के विशाल जुलूस के गीतो और जयजयकार से वातावरण गूज रहा था। उनकी आखो पर पट्टी बधी हुई थी! उन्होने यह तब भी अनुभव नही किया कि उस दिन उन पुरानी दीवारो के भीतर होनेवाले प्रार्थना समारोह म नहीं, बल्कि दीवालो से बाहर, सडको पर स्वतत्रतापूवक प्रदशन करनेवालो की वाणी मे सच्ची आस्था अभिव्यक्त हो रही थी।

फिर भी वे उन शेष राजनयिको की तुलना म कोई अधिक अधे नही थे, जिन्होने केरेस्की के आदेश से पूर्वी मोर्चे पर रूसी फौजो की वद्धि सम्बधी रिपोर्टों का बडी खुशी के साथ स्वागत किया था। मगर स्वय केरेस्की की भाति यह क्षणिक बढाव–आखो को चकाचौंध

करनेवाली यह सफलता—दुखान्त विफलता में परिवर्तित हो गया। उस दबाव के फलस्वरूप ३०,००० रूसी मारे गये, सेना का नैतिक बल समाप्त हो गया, लोग भड़क उठे, मन्त्रिमण्डलीय संकट उपस्थित हो गया और पेत्रोग्राद में इसकी विनाशकारी प्रतिक्रिया हुई—३ (१६) जुलाई को सशस्त्र उथल-पुथल की स्थिति पैदा हो गई।

सशस्त्र प्रदर्शन

१८ जून (१ जुलाई) को आनेवाले तूफान की चेतावनी मिल गई थी। ३(१६) जुलाई को वह जोर शोर से फट पड़ा। सर्वप्रथम वृद्ध किसानों की पंक्तियां दिखाई पड़ीं, जो अपने हाथों में पोस्टर लिये हुए थे और उन पर ये शब्द अंकित थे, "४० वर्षीय व्यक्तियों को अब खेती करने के लिये घर जाने दिया जाये।" इसके बाद वैरकों, झोंपड़ों और कारखानों से सशस्त्र व्यक्तियों के झुण्ड के झुण्ड बाहर आकर ताव्रीचेस्की प्रासाद के सम्मुख जमा होने लगे और दो रात एवं एक दिन तक उसके फाटकों के पास उनका सिंहनाद गूंजता रहा। बख्तरबन्द गाड़ियां अपने भोंपू बजाती और अपने अगले भाग में लगे हुए लाल झण्डे फहराती हुई सड़कों के इधर उधर चक्कर लगा रही थीं। सैनिकों से खचाखच भरी हुई ट्रकें दौड़ रही थीं, बाहर निकली संगीनें हर दिशा की ओर तनी हुई थीं और ऐसा लगता था मानो आवेश में हिंसात्मक कृत्यों के लिए विशाल दांतेदार मशीनें अपना मुंह बाये हुए हैं। पक्के निशानेबाज बत्तियों के खम्भों के पार राइफलों के निशान साधे और उत्तेजना पैदा करनेवालों पर निगाह जमाये कारों के पहियों पर निश्चल लेटे हुए थे।

१८ जून (१ जुलाई) को इन सड़कों पर जो जन-सागर उमड़ा था, उसकी तुलना में यह उफान बहुत बड़ा और अधिक भयानक भी था, क्योंकि प्रदर्शनकारी हथियारों से लैस थे, उनकी बन्दूकें की संगीनें चमक रही थीं और वे गुस्से में लाल-पीले हो रहे थे—ऐसा लग रहा था जैसे क्रोध की एक लम्बी धूमर पंक्ति चल रही हो। यह अशान्त, कुपित, उद्दण्ड एवं आतुर भागना के विरुद्ध जनता का आक्रोश भावावेग था।

याचक नामक दर्जी की अगुआई म अराजकतावादियो का एक समूह कान्न चण्ड व साथ आगे बढ रहा था। उसके चेहरे पर निरतर गून पमाना एक रगनवाल व्यक्ति की छाप अकित थी। जीवन भर सिलाई करन के लिए झुक रहन क कारण वह ठिगना ही रह गया था। अब सुई की जगह उसके हाथ म बन्दूक थी—सुई की गुलामी स मुक्ति पान का प्रतीक।

गाम्बेग न पूछा, 'आपकी राजनीतिक मागे क्या ह?"

हमारी राजनीतिक मागें? याचक सोचन लगा।

एक लम्बतडग नाविक न बातचीत म दिलचस्पी लेते हुए कहा, 'पूजी पतियो का सत्यानाश! और हमारी अन्य राजनीतिक मागे ह—भाड म जाये युद्ध और रसातल का जाय घृणास्पद मत्रिमण्डल!"

गली म एक टैक्सी खडी थी, दो मशीनगनो के नाल खिडकियो स बाहर झाक रहे थे। हमारे प्रश्न के उत्तर म ड्राइवर ने एक निशान की ओर सकेत किया, जिस पर यह लिखा हुआ था, "पूजीवादी मत्री मुर्दाबाद!"।

उसन कहा, 'हम उनसे अनुनय विनय करते-करते थक गये कि लोगो को भूखा मत मारो उन्ह युद्ध की आग म मत झाको। जब हम उनस आग्रह करते ह, तो वे हमारी बात नही सुनते। मगर इन दो टोटियो के दहाडने की देर है, उसन मशीनगनो पर हाथ फेरते हुए कहा, "और तब वे अच्छी तरह हमारी बात सुनेगे।

बहुत ही क्षोभ और सब्र की आखिरी हद तक पहुचे, दिलो म गुस्से की धधकती आग और हाथो म हथियार लिये हुए जन समुदाय को अधिक उकसावे की आवश्यकता नही थी। और उकसानेवाले हर जगह थे। यमदूत सभा के दलाल भीड म फूट डालन और प्रदशनकारियो का हिंसा व कत्ल के लिए उभाडन के अपन काम मे लगे हुए थे। उन्होने दो सौ अपराधियो को लूटमार एव दगा फसाद करान के लिए जेल स छोड दिया। उन्ह आशा थी कि इस तरह के हगामे से क्राति समाप्त हो जायगी और ज़ार पुन सिंहासनारूढ हो जायेगा। कुछ स्थानो पर उन्होन भयावह हत्या काण्ड करवाये।

एक तनावपूर्ण क्षण म ताव्रीचेस्की प्रासाद के सामन जमा भारी भीड म उत्तेजना पैदा करन के ख्याल स गोली दग दी गई। उसके बाद सकडो

गालिया दग गइ। हर भाग से गइफला स गालिया छूटन लगी और साथिया पर माथा ही सीधे धडाधड गालिया चलान लगे। भीड म चाख पुकार मच गइ, लोग खम्भा म लग गय, फिर पीछे मुडे और जमीन पर लट गय। जब गालिया का चलना बन्द हुआ, ता १६ प्रदशनकारी फिर उठ न हा सके—गालिया के शिकार हो गये। इस हत्याकाण्ड के समय दा खण्ड दूर एक फौजी बण्ड 'मर्सेइयेस' की धुन बजा रहा था।

सडका पर गालिया चलन से आतक पैदा होता है। रात के अधेरे म जब गुप्त धराखा, छता और तहखाना के चोर दरवाजा स गालिया चल रही था, शत्रु अदृश्य था, दोस्ता पर दोस्त ही गोलिया दाग रहे थे भाड आगे पीछे लुढकती रही और गोलिया से बचन के लिए एक सडक स भागकर दूसरी सडक पर पहुचती, जहा और भी जारा से गाली वर्षा का सामना करना पडता।

उस रात तीन बार हमारे पैर पटरी पर गिरे खून म पड गय। नेव्स्की के निचले भाग म ध्वस्त खिडकिया और लूटी हुई दुकानें दिखाई पडा। उत्तेजना फलानवाला के साथ छोटी मोटी मुठभेडा तक ही सीमित न रहकर यह सघष लितेइनी पर बडी मुठभेड म परिवर्तित हो गया और कज्जाका के १२ घोडे खडजा पर मरे पडे थे।

[इन मत घोडा के पास आखो मे आसू भरे एक वयस्क कोचवान खडा था। क्राति के समय एक कोचवान ५६ व्यक्तिया की हत्या और ६५० व्यक्तिया का घायल हाना तो सभवत सहन कर सकता था, मगर १२ अच्छे घाडा की क्षति उसके लिए असह्य थी।]

बोल्शेविको ने स्थिति सम्भाली

मार्चोनिदिया और सडको की झडपा-सम्बन्धी पेत्राग्राद के लम्बे अनुभव और जनता के सहज सद्विवेक की बदौलत यह हत्याकाण्ड और अधिक वाभत्स एव लामहषक हान स बचा। हजारा मजदूरो न, जा बाल्शेविक पार्टी के विवेक स निर्देशित हाते थे, अव्यवस्थित विद्रोही जन समुदाय पर अपना प्रभाव डालकर उन्हे स्थिरचित्त किया। बोल्शेविका न स्पष्टत यह अनुभव कर लिया कि यह विद्रोह अन्त प्रेरित भावात्मक उथल पुथल है। उन्होंने यह

भी न्य निया कि जनता बडी शक्ति के साथ अपने शत्रुओं पर प्रहार कर रहा है मगर बिना सोचे समझे। बाल्शेविकों ही ने यह निश्चय किया कि जाता का साद्देश्य प्रहार करना चाहिए। उन्होंने निर्णय किया कि सोवियतों की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के सामने पूरी शक्ति के साथ प्रदर्शन किया जाय। इस समिति में २८६ सदस्य थे, जिनका निर्वाचन सोवियतों की प्रथम अखिल रूसी काग्रेस द्वारा किया गया था। ताव्रीचेस्की प्रासाद में इसका अधिवेशन चल रहा था और प्रासाद के बाहर लोगों की अपार भीड जमा हो रही थी।

ये लोग केवल बाल्शेविकों का प्रभाव मानते थे। सभी दलों ने उनसे इस प्रभाव का इस्तेमाल करने का आग्रह किया। बाल्शेविकों ने मुख्य फाटक के पास खडे होकर प्रदर्शनकारियों के सामने सक्षिप्त भाषण करते हुए प्रत्येक फौजी टुकडी और प्रतिनिधिमण्डल से भेंट की।

हम एक अनुकूल स्थान पर खडे थे और वहा से इस अपार भीड को देख सकते थे। कहीं-कहीं कोई तोपची घोडे पर सवार दिखाई देता और भारी भीड के ऊपर फहरनेवाले अनेक झण्डों की लाल लाल लहर उमडती दिखाई देती थी।

हमारे नीचे, ऊपर की ओर उठे हुए चेहरों का सागर दिखाई पड रहा था, जिन पर भय आशा एव क्रोध की भावनाए अकित थी, मगर झुटपुटे में वे पूरी तरह दिखाई नही दे रही थी। सडक के निचले भाग से बख्तरबन्द गाडियों का स्वागत करती हुई आनेवाली भीड का शोर सुनाई पड रहा था। मोटर गाडी की रोशनी वक्ता पर पडने से प्रासाद की दीवाल पर उसकी छाया उभर आती थी—काले रग की विशाल आकृति के रूप में दसगुनी आवर्धित प्रत्येक भाव भगिमा प्रासाद के श्वेत अग्रभाग पर प्रतिबिम्बित होती थी।

इस लम्बे-तडगे बोल्शेविक ने कहा, "साथियो आप क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहते है। यह बात केवल क्रान्तिकारी सरकार के द्वारा ही हो सकती है। केरेन्स्की सरकार केवल नाम के ही क्रान्तिकारी है। वह किसानों को जमीन देने का वादा करती है, मगर अब भी जमीन जमीदारों के कब्जे में है। वह रोटी देने का वादा करती है, मगर अब भी सट्टेबाजों का उस पर अधिकार है। वह युद्ध के उद्देश्यों के सम्बन्ध में मित्रराष्ट्रों से

घोषणापत्र जारी करवाने का वादा करती है, मगर मित्रराष्ट्र हमसे केवल लडने जाने की बात कहते हैं।

मन्त्रिमण्डल म समाजवादी और पूजीवादी मन्त्रियो के बीच बुनियादी सघप चल रहा है। इसके फलस्वरूप गतिरोध पदा हो गया है और मन्त्रिमण्डल कुछ नहीं कर पा रहा ह।

'पेत्रोग्राद के रहनवाले आप लोग सोवियतो की कायकारिणी समिति के पास आकर कहते ह, 'सत्ता अपने हाथ म ले लो। ये सगीन आपकी सहायता करेगी।' आप चाहते ह कि सोवियत सरकार हो जाय। हम वास्तविक भी यही चाहते ह। मगर हम यह भी नहीं भूलते कि पत्रोग्राद ही सारा रूस नहीं है। इसलिए हम यह माग कर रहे हैं कि केन्द्रीय कायकारिणी समिति सारे रूस मे प्रतिनिधियो को आमन्त्रित करे। यह काय इस नई काग्रेस का होगा कि वह सोवियतो को रूस की सरकार घोषित करे।"

भीड के हर भाग ने इस घोषणा का जोरो की इस हषध्वनि एव जयघोष के साथ समथन किया "**केरेन्स्की मुर्दाबाद!**", "**पूजीवादी सरकार मुर्दाबाद!**", "**सारी सत्ता सोवियतो को दो!**"

विदा होते समय हर टुकडी से यह कहा गया "सभी प्रकार के हिंसात्मक कामो और रक्तपात से बचो। उकसानेवालो की बाते न सुनो। एक दूसरे को मारकर शत्रु को खुश होने का मौका न दो। तुम लोगो ने अपनी शक्ति का प्रदशन कर दिया है। अब शान्ति के साथ वापस घर जाओ। जब शक्ति प्रदशन का पुन समय आयगा, तो हम तुम्हे पुकार लेगे।'

उस विशाल जन समुदाय म विभिन्न प्रकार के लोग थे जसे अराजकतावादी, यमदूतसभाई जमन गुप्तचर, उपद्रवी बदमाश और वे ढुलमुल लोग भी, जो सदा सबसे अधिक शक्तिशाली पक्ष के साथ हो जाया करते ह। बोल्शेविको के सम्मुख अब एक बात बिलकुल स्पष्ट हो गई पत्रोग्राद के अधिकाश मजदूर और सनिक अस्थाई सरकार के खिलाफ और सोवियतो के पक्ष म हैं। वे चाहते थे कि सोवियत सरकार बन जाये। मगर बोल्शेविको को शका थी कि यह जल्दबाजी का कदम होगा। उनका कहना भी तो यही था, "पत्रोग्राद ही रूस नहीं है। हो सकता है कि दूसरे नगरो के लोग और मोर्चे पर तनात फौज इस निणयात्मक कारवाई के लिए अभी

तैयार न हो। रूस के सभी भागो की सोवियतो के प्रतिनिधि ही इस सम्बध म निर्णय कर सकते हैं।"

ताव्रीचेस्की प्रासाद क अन्दर बाल्शेविक सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी काग्रेस आयोजित करने के उद्देश्य स सोवियतो की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यो का बहुमत करने के लिए हर तर्क का प्रयोग कर रहे थे। ताव्रीचेस्की प्रासाद के बाहर वे क्रुद्ध जन समुदाय को शान्त करने के लिए एडी चोटी का जोर लगा रहे थे। वे इस कार्य म अपनी सारी समझ बूझ और साधना को लगाय हुए थे।

नाविको ने माग की "सारी सत्ता सोवियतो को दो!"

प्रदर्शनकारियो के कुछ दल तो आग की तरह भडकते हुए ताव्रीचेस्की प्रासाद के सामन आये। क्रोश्नादत के नाविको की तो विशेष रूप से ऐसी ही हालत थी। बडे बजरो म उन्होने नदी पार की और उनकी सख्या आठ हजार थी। रास्ते म दो नाविक मार डाले गये थे। यह न तो छुट्टी के दिन का सैर सपाटा था और न वे प्रासाद देखने अथवा प्रागण म जमा होकर व्यर्थ का शोरगुल मचाने और फिर चुपचाप घर लौट जाने के लिए ही यहा आये थे। उन्होने माग की कि केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति उनके सम्मुख समाजवादी मत्री को तत्काल प्रस्तुत करे।

कृषि मत्री चेर्नोव उनके सामने आया। उसने गाडी की छत को अपना मच बनाया और बोला

म आपको यह बताने आया हू कि तीन पूजीवादी मत्रियो ने त्याग पत्र द दिये ह। अब हम बडी आशा के साथ भविष्य की ओर देख रहे हैं। यह रहे व कानून जिनके अन्तर्गत किसानो को जमीन प्राप्त होगी।

श्रोताओ न चिल्लाकर कहा 'यह तो अच्छी बात है, परन्तु क्या इन कानूनो को फौरन अमली शक्ल दी जायगी?"

चेर्नोव ने उत्तर दिया, यथासभव शीघ्र ही ।

"यथासभव शीघ्र ही!' उन्होने कृषि मत्री का मजाक उडाते हुए यह वाक्य दोहराया। 'नहीं नहीं! हम चाहते ह कि इन कानूनो को

अभी, अभी असली शक्ल दी जाये। अभी सारी जमीन किसानो को द दी जाय! इन पिछले हफ्ता म आप करते क्या रहे ह?'

चर्नाव न आवेश म आकर उत्तर दिया, म अपन कार्यो के लिए तुम लागा के सामने जवाबदेह नही हू! तुमने मुझे मन्त्री का पद नही दिया ह। किसानो की सावियत न मुझे यह स्थान दिया है। मैं केवल उसके सम्मुख उत्तरदायी हू।"

ऐस उत्तर से नाविक आप से बाहर हो गय। वे चिल्ला उठे 'चेर्नोव को गिरफ्तार कर लो! उसे बन्दी बना ला!' कोई एक दजन हाथ मन्त्री को पकडकर खीचने के लिए आगे बढे। दूसरा न उसे पीछे घसीटन का प्रयास किया। दोस्ता और दुश्मना की खीचातानी म उसके कपडे फट गये और उसे नाविक एक ओर घसीट ले गये। परन्तु त्रोत्स्की ने वहा पहुचकर लोगा का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कुछ कहन का प्रयास किया।

इसी बीच साक्यान गाडी के ऊपर चढ गया। उसने कडा और आदशात्मक रुख अपनाया। उसन उच्च स्वर म कहा

"मेरी बात सुनिये! अभी अभी जिस व्यक्ति ने आपसे कुछ कहना चाहा, आप जानते हैं कि वह कौन है?"

एक आवाज सुनाई पडी, नही, और हम जानना भी नही चाहते।'

साक्यान ने अपना भाषण जारी रखत हुए कहा, "जिस व्यक्ति न अभी अभी कुछ शब्द कहे, वह सैनिका और मजदूरा के प्रतिनिधिया की सावियता की प्रथम अखिल रूसी काग्रेस की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का उपाध्यक्ष है।"

इस लम्बी चौडी उपाधि का भीड पर कोई प्रभाव न पडा और इसस शान्त होने की जगह वह साक्यान का मजाक उडाते हुए चिल्ला पडी, "तुम भाड म जाओ!" (दोलोई, दोलोई)। मगर साक्यान तो इस भीड को शान्त करन का पक्का इरादा किय हुए था और उसन बडे आज के साथ छोटे छोटे असम्बद्ध वाक्या की झडी लगा दी।

"मेरा नाम—साक्यान!" (भीड—"तुम भाड म जाओ!)

"मेरी पार्टी—समाजवादी क्रान्तिकारी! ("तुम भाड म जाओ!")

पागपाट व अनुगार मगर धम अर्मेनिया" ग्रेगारियाउ पथ!" (तुम भाड म जाओ!)

मग गास्तविक धम–मगाजराद!" (तुम भाड म जाओ!')

युद्ध स मरा सम्बध–दा भाइ खेत रह। एक आवाज 'तामर का भी यही हाल हाना चाहिए था।'

आप लागा का म यही सलाह दता हू–हमम, अपन नताओ और मित्रा म विश्वास करें। इस मूखतापूण प्रदशन का बन्द कीजिए। आप अपन का और क्राति का कलकित कर रह ह और रूस क लिए विनाशकारी स्थिति पैदा कर रहे ह।'

नाविक ता पहल स ही आवश म थ। इसलिए उनक मुह पर ऐस तमाचा मारना बेवकूफी का काम था। शारगुल मच गया। पुन त्रात्स्की न स्थिति सभालन का प्रयत्न किया। उहाने अपना भाषण इस प्रकार शुरू किया

'क्रातिकारी नाविका, रूस की क्रान्तिकारी शक्तिया के गौरव और शान वाला! सामाजिक क्राति की इस लडाई म हम साथ साथ सघषरत ह। जिन आदर्शो के लिए हमन अपना खून बहाया है, वे जब तक इस देश के सविधान म सच्चे अर्थो म अपना नही लिय जाते, तब तक इस अस्थायी सरकार के विरुद्ध हमारा सघष जारी रहगा। बीरतापूण सघष कठोर और लम्बा रहा है! मगर इसके गभ से महान स्वतत्र दश के मुक्त हुए लोगा को स्वतत्र जीवन व्यतीत करन का अवसर सुलभ हागा। क्या मेरा कथन सही नही है?

भीड जारा से चिल्ला पडी, 'त्रोत्स्की, आपका कथन ठीक ह!

त्रोत्स्की हट गये।

लाग चिल्ला पडे, 'परन्तु आपने हम बताया ता कुछ भी नहा। मत्रिमण्डल के सम्बध मे आप क्या करने जा रहे ह?

भीड के नाते चिकनी चुपडी बात उह प्रीतिकर हो सकती ह, मगर व इतने विवेकशून्य नही थे कि खाखले शब्दा स चुप हो जाते।

त्रात्स्की ने सफाइ देत हुए कहा, "मेरा गला बठ गया है, इसलिए अब अधिक नही बाल सकता। रियाजानाव आपका सभी बात बतायगे।

'नही आप ही बताये!' त्रात्स्की पुन गाडी पर चढे।

'केवल अखिल रूसी काग्रेस ही सारी सत्ता ग्रहण कर सकती है। श्रमिको ने इस काग्रेस के आयोजन पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। सैनिक भी निस्सन्देह इसी पथ का अनुसरण करेगे। दो सप्ताह मे प्रतिनिधि यहा एकत्र हो जायेगे।"

'दो सप्ताह!" वे हैरान होते हुए चिल्लाये। 'दो सप्ताह की अवधि तो बहुत लम्बी है। हम तो अभी चाहते है!"

परन्तु अन्तत ब्रात्स्की की बात मान ली गई। नाविको ने सतुष्ट होकर सोवियतो एव आनेवालो क्रान्ति का जयजयकार किया। वे इस बात से आश्वस्त होकर कि दूसरी अखिल रूसी काग्रेस का अधिवेशन होगा, वहा से शातिपूर्वक चले गये।

प्रदर्शन और इसके बाद बाल्शेविको को कुचलने के लिए नृशस कदम

सोवियतो की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के नेता निश्चित रूप से यही नही चाहते थे कि दूसरी अखिल रूसी काग्रेस बुलायी जाये। वे इसके बिल्कुल खिलाफ थे कि सोवियत सरकार हो जाय। वे इसके कई कारण बताते थे। मगर वास्तविक कारण उसी जन समुदाय का भय था, जिसकी कृपा से वे इस समय इन उच्च पदो पर आसीन थे। बुद्धिजीवी अपने से निम्न जन समुदाय मे अविश्वास करते है। इसके साथ ही वे अपने से ऊपर के उच्च पूजीपति वर्ग की योग्यता और अच्छे नेक इरादो का नमक मिर्च मिलाकर बखान करते है।

वे नही चाहते थे कि सोवियत सत्तारूढ हो जाय। दो सप्ताह दो महीने मे अथवा कभी भी सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी काग्रेस का अधिवेशन बुलाने का उनका इरादा नही था। परन्तु वे उस आकुल एव विक्षुब्ध भीड से आतकित थे, जो प्रागण मे घूमकर महल के दरवाजो पर अपनी शक्ति प्रदर्शित करती थी। उनकी चाल यह थी कि भीड को शान्त किया जाय और इस कार्य मे वे बोल्शेविको की सहायता चाहते थे। इसके साथ ही ये बुद्धिजीवी एक और चाल चल रहे थे। वे "विद्रोह का कुचलने और नगर मे पुन अमन-कानून कायम करने के लिए" मोर्चे से फौजी टुकडिया को बुलाये जाने मे अस्थाई सरकार का भी साथ दे रहे थे।
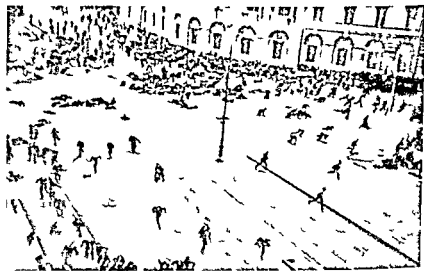
जुलाई के प्रदशनकारियो पर गोली वर्षा

तीसरे दिन फौज आ पहुची। बाइसिकिल बटालियन, रिजव रेजीमेंट और उनके बाद अश्वारोही सैनिको की लम्बी आतककारी पाते जिनके नेजो की नोके धूप म चमक रही थी। वे क्रातिकारियो के पुराने शत्रु कज्जाक थे। उनके आ जाने से मजदूरो म त्रास फल गया और पूजीपति प्रसन्न हो उठे।

अच्छी पोशाकवाले बडी सख्या मे सडको पर निकल आये और व कज्जाक सैनिको का जयघोष करते हुए यह चिल्ला रहे थे, **"इन नीचो को गोलिया से भून दो!", "बोल्शेविको को मार डालो!"**

नगर मे प्रतिक्रिया की लहर दौड गयी। विद्रोही फौजी टुकडियो का निरस्त्र कर दिया गया। मौत की सजा बहाल कर दी गई। बोल्शेविक समाचारपत्रो पर पाबन्दी लगा दी गयी। बोल्शेविको को जमन गुप्तचर बतानेवाली जाली दस्तावेज समाचारपत्रो म छपवाई गद। जार के अभियोजक अलेक्सान्द्रोव ने उन्ह अदालत के कटघरे म लाने का हुक्म दिया और दण्डविधान की १०८ वी धारा के अतगत उन पर देशद्रोह का अभियोग लगाया। त्रोत्स्की और कोल्लोन्ताई जसे नताओ को जेल म झोक दिया

गया। लेनिन और जिनोव्येव को छिपना पड़ा। सभी क्षेत्रों में मजदूरों की अचानक धरपकड़, उन पर प्रहार एवं उनकी हत्याएं शुरू हो गई।

४(१८) जुलाई को तड़के ही नेव्स्की मार्ग से आनेवाली चीखें सुनकर अचानक मेरी नींद टूट गई। घोड़ों की टापों के बीच, चीख चिल्लाहट, दया के लिए अनुनय विनय, गाली गलौज और दिल दहला देनेवाली भयानक चीख सुनाई पड़ी। इसके बाद किसी के जमीन पर धड़ाम से गिरने और मरते हुए व्यक्ति की कराह सुनाई पड़ी और फिर सन्नाटा छा गया। एक अधिकारी ने आकर बताया कि नेव्स्की पर बोल्शेविकों के पोस्टर लगाते हुए कुछ मजदूर पकड़ लिये गये हैं। कज्जाकों के दस्ते ने कोड़ों से पीटते और तलवार से प्रहार करते हुए उन्हें खदेड़ा। तलवार के प्रहार से उनमें से एक व्यक्ति के दो टुकड़े हो गये और पटरी पर उसकी लाश पड़ी हुई है।

घटनाओं के इस नये मोड़ से पूंजीपति वर्ग बहुत खुश था। परन्तु यह प्रसन्नता निराधार थी। उन्हें यह नहीं मालूम कि जिस मजदूर की हत्या कर दी गई है, उसकी चीख की प्रतिध्वनि रूस के सुदूरवर्ती भागों में भी गूंज जायेगी, उसके साथियों में रोष की भावना फैल जायेगी और वे हथियार उठा लेंगे। जुलाई के उस दिन जब सोवियतों को सत्तारूढ़ करने के उद्देश्य से संगठित इस प्रदर्शन को कुचलने के लिए वालीस्क रेजीमेंट बैंड बजाती हुई नगर में दाखिल हुई, तो पूंजीपति वर्ग ने उसका जोरदार स्वागत किया। मगर उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि आनेवाले अक्तूबर (नवम्बर) महीने की एक रात को यही रेजीमेंट क्रान्ति के अग्रिम मोर्चे पर डटेगी और उस क्रान्ति के फलस्वरूप सारी सत्ता सोवियतों को प्राप्त हो जायेगी।

पेत्रोग्राद पर विजय प्राप्त करने के लिए फौजें बुलायी गईं, मगर अन्त में पेत्रोग्राद ने ही उन पर विजय प्राप्त कर ली। इस लाल शैविक गढ़ का प्रभाव दुर्निवार है। यह क्रांति की विशाल धमन भट्ठी के सादृश्य है, जो सभी कूड़े-करकट को जलाकर खाक कर देती है और उदासीनता को भस्मीभूत बना देती है। वे चाहे जितने ही उदासीन एवं निश्चेष्ट भाव से नगर में प्रविष्ट होते, किन्तु यहां से क्रान्ति की भावना से उल्लसित होकर ही वापस जाते।

आसू एव रक्त, भूख एव शीत और भूखे एव प्रताडित बेशुमार व्यक्तियो के जबरन श्रम से यह नगर खडा हुआ। दलदल के नीचे अनगिनत व्यक्तियो के अस्थिपजर दफन है। मगर पेत्रोग्राद के इस समय के मजदूरो म उनकी विक्षुब्ध भावनाए—शक्तिशाली एव प्रतिशोधपूर्ण भावनाए—पुन जागृत हो गई थी। पीटर के भू दासो ने इस नगर का निर्माण किया, इस समय उनके वशज अपना स्वतत्र प्राप्त करने जा रहे थे।

१९१७ की गरमी के मध्य म स्थिति ऐसी प्रतीत नही हो रही थी। प्रतिक्रियावाद की काली छाया नगर पर मडरा रही थी। परन्तु बाल्शेविक अच्छे अवसर की प्रतीक्षा म थे। वे अनुभव करते थे कि इतिहास उनके पक्ष म है। गावो, नौसैनिक बेडो और मोर्चो पर उनके विचार फलते जा रहे थे।

म अब इन्ही स्थानो को देखने चल पडा।

तीसरा अध्याय

गाव मे

"जगलो और जनता के बीच जाओ," बाकूनिन ने कहा।

> 'राजधानियो मे सुवक्ता गरजते
> और आवेश प्रकट करते हैं,
> मगर गावो म सदियो की निस्तब्धता
> आज भी कायम है।'

हम इस निस्तब्धता के लिए बेचैन थे। तीन महीने तक हम क्राति की गर्जना सुनते रहे थे। म इससे थक गया था, यानिशेव परिक्लात था। लगातार भाषण करते करते उसकी आवाज फट गई थी और बोल्शेविक पार्टी ने उसे दस दिन तक विश्राम करने का आदेश दिया था। इसलिए हम वोल्गा तटवर्ती स्पास्स्कोये नामक छोटे गाव की ओर रवाना हो गये जहा से १९०७ म यानिशेव को निष्कासित कर दिया गया था।

अगस्त के महीने की एक दोपहर का समय हम मास्कोवाली गाडी से उतरे और खेतो के बीच से गुजरनेवाली राह पर चल दिये। खेतो मे ग्रीष्म ऋतु के इन अतिम हफ्तो म धूप म पकी हुई गल्ले की सुनहरी फसलो का सागर-सा लहलहा रहा था और इधर-उधर कही हरित द्वीप दिखाई पड रहे थे। ये व्लादीमिर प्रदेश के वृक्षो की छायावाले गाव थे। सडक के एक चढाव से हमने सोलह गाव गिने। प्रत्येक गाव म चमकते गुम्बजोवाला ऊचा-ऊचा सफेद गिरजा था। यह छुट्टी का दिन था और जहा सूर्य खेतो म सोना बरसा रहा था, वहा सुदूर गिरजाघरो के घण्टो से सगीत बरस रहा था।

नगरो के बाद यह भाग मुझे शात एव नीरव प्रतीत हुआ। परतु यानिशेव के लिए यह उत्तेजनापूर्ण स्मृतियो का प्रदेश था। दस वर्षो तक इधर-उधर भटकते रहने के बाद निष्कासित यानिशेव अपने घर लौट रहा था।

पश्चिम की ओर सकेत करते हुए उसने कहा, "वहा, उस गाव म मेरे पिता अध्यापक थे। लोग उनकी शिक्षण विधि से खुश थे, मगर एक दिन सशस्त्र सिपाही वहा आये, उन्होंने स्कूल को बन्द कर दिया और उन्हे पकड ले गये। उस अगले गाव म वेरा रहती थी। वह बहुत खूबसूरत एव सहृदय थी और म उससे प्यार करता था। मै उस समय इतना शर्मीला था कि उससे कुछ न कह सका और अब वक्त हाथ से निकल चुका। वह साइबेरिया म है। उस जगल म क्राति के बारे मे बातचीत करने के लिए हम कुछ लोग मिला करते थे। एक रात कज्जाक घुडसवारो ने हमे अचानक आ दबोचा। उस पुल के पास उन्होंने हमारे सबसे बहादुर साथी येगोर को मार डाला था।"

निष्कासित यानिशेव के लिए यह घर आना आनन्ददायक नही था। सडक के हर मोड पर कोई न कोई स्मृति उसके अतस्तल को कुरेद देती। वह हाथ मे रुमाल लिये चल रहा था, जब-तब अपनी गीली आखो को पोछ लेता था, मगर बहाना यह बना रहा था कि अपने चेहरे से केवल पसीना पोछ रहा है।

जब हम वृक्षो की साया म बसे स्पास्कोये गाव म पहुचे, तो हमने एक वृद्ध किसान को चमकदार नीले रग का लिबास पहने अपनी चौपडी

के गामन एक बेंच पर बैठे हुए देखा। हथेली की ग्राट करके अपनी ग्राखा को मूरज की रोशनी स बचात हुए उसन ध्यार से हम धून धूसरित ग्रजनबिया को देखा। तब यानिशेव को पहचानकर बडी प्रसन्नता के माथ वह बाल उठा, 'मिखाईन पन्नाविच !' ग्रौर यानिशेव का बाहा म भरकर उसन उनके दाना गाला को बडे स्नह स चूमा। तब वह मेरी ग्रार मुडा। मैंन उस बताया कि मरा नाम एल्बट है।

ग्रौर ग्रापके पिता का नाम क्या है ?" उसन गभीरता स पूछा।

मन उत्तर मे कहा, "डेविड"।

एल्बट डेविडाविच (डेविड के पुत्र एल्बट), इवान इवानाव के घर म ग्रापका स्वागत है। हम गरीब ह, पर खैर, दनेवाला ता भगवान ही है।"

इवान इवानाव एक लट्ठ की भाति सीधा खडा था, उसकी दाढी लम्बी, ग्राखें सतेज थी ग्रौर शरीर हृष्ट पुष्ट था। परन्तु उसके हृष्ट-पुष्ट शरीर, उसकी सहृदयता ग्रौर उसके बोलने की ग्रनूठी ग्रौपचारिकता स म प्रभावित नही हुग्रा। वास्तव मे मै उसकी सौम्य गरिमा से बहुत ही प्रभावित हुग्रा। यह तो मानो एक प्रतिक वस्तु, एक ऐसे वग की गरिमा थी, जिसकी जड़ें धरती म गहरी चली गई ह। ग्रौर सचमुच **मीर** (गाव पचायत) की इस धरती से इवान इवानोव ने पिछले साठ वर्षों तक लगातार ग्रपना स्वत्त्व प्राप्त किया था जसे उसके पूवजा न इसी धरती से ग्रन जल पाया था। उसका छोटा **इज्बा** (घर) लकडी के लट्ठा से बना था, मोटे पयाल से बन छप्पर पर काई जम गयी थी ग्रौर बगीचे म फूल मुस्करा रहे थे।

इवान की पत्नी *तात्याना* ग्रौर उसकी पुत्री *ग्रव्दात्या* ने हम नमस्कार करने के बाद भीतर से एक मज लाकर बाहर रखी। इस पर उन्होंने सामोवार लाकर रख दिया ग्रौर उसका ढक्कन उठाकर उसम ग्रडे रख दिये। इवान ग्रार उसके परिवार के सदस्यो ने क्रास का चिह्न बनाया ग्रौर हम मेज के इद गिद बठे गये।

इवान ने कहा, "जा कुछ हमारे पास है, वह ग्रापकी सेवा म हाजिर है' (**चेम बोगाति तेम इ रादि**)।

स्त्रिया ने एक बडे पात्र मे करमकल्ले का शोरबा (**श्ची**) ग्रौर प्रत्येक व्यक्ति के लिए लकडी का चम्मच लाकर रख दिया। सभी को एक

ही पात्र से शोरवा खाना था। यह देखकर मैंने तत्काल अपना चम्मच शारजा की ओर बढ़ा दिया। जब शोरवा खत्म हो गया, तो वे दलिये (काशा) से भरा हुआ दूसरा पात्र ले आई। इसके बाद उबला हुआ मुनक्का लाया गया। इवान मुख्य स्थान पर, सामोवार के निकट बैठा हुआ था, उसने अपने हाथ से सब को चाय, काली रोटी और खीरे दिये। यह विशेष प्रीतिभोज था, क्योंकि स्पास्स्कोये में उस दिन विशेष ग्राम पर्व था।

ऐसा प्रतीत होता था कि कौओं को भी इसकी जानकारी थी। उनके झुण्ड के झुण्ड तेजी से सर के ऊपर उड़ते हुए बादलों जैसी छाया ज़मीन पर डालते अथवा गिरजे की छत पर बैठकर उसे पूर्णतया ढक देते। हरे अथवा सुनहरे गुम्बज क्षण मात्र में ही बिलकुल काले हो जाते।

मैंने इवान को बताया कि अमरीका में फार्मर कौओं को मार देते हैं, क्योंकि वे अनाज खा जाते हैं।

'हां,' इवान ने कहा, 'हमारे कौए अनाज खाते हैं, मगर साथ ही वे खेत में चूहों को भी खा जाते हैं। और वे चाहे कौए ही क्यों न हों, वे भी हमारे समान हैं और जीवित रहना चाहते हैं।'

मेज़ पर भिनभिनानेवाली मक्खियों के प्रति तात्याना का दृष्टिकोण भी ऐसा ही था। चीनी के एक टुकड़े पर जमा होकर वे उसे उसी प्रकार काला बना देतीं, जैसे कौए गिरजाघर के गुम्बज को।

'मक्खियों की कोई परवाह न कीजिये," तात्याना ने कहा। "ये बेचारियां तो एक-दो महीने में हर सूरत मर ही जायेंगी।'

गांव का पर्व

यह ईसा के रूप-परिवर्तन का महोत्सव था और आसपास के गांवों के गरीब, पंगु और वृद्ध यहां आ रहे थे। बारबार हम दरवाज़े की छड़ी में खटखटाने और रादि खिस्ता (ईसा के नाम पर) भीख मांगनेवालों के सकरुण स्वर सुनाई पड़ते। वे हमारे सम्मुख खाली थैले प्रसार यानिशेर तथा में उसमें कुछ पैसे (कोपेयेक) डाल देते। हमारे दादा अलेक्सेई बड़ी काली रोटियों के टुकड़े उन्हें भीख में देता, जबकि इवान प्रत्येक की झोली में हरा खीरा डाल देता। उस वर्ष खीरा बहुत कम पैदा हुआ था, इसलिए यह

सचमुच प्रमापहार था। मगर हम चाहे खीर, रोटी के टुकड़े या पैसे देते, हर बार कारुणिक स्वरों में हम भिखारियों की आशीष सुनाई पड़ती।

मानवीय दैन्य के हृदयविदारक दृश्य को देखकर निष्ठुर और बहुत ही गरीब रूसी किसान का हृदय भी द्रवित हो उठता है। उसे स्वयं अपने जीवन से व्यथा एवं वीरानी का मर्म ज्ञान हो जाता है। परन्तु इससे उसकी सहानुभूति में कोई कमी नहीं आती, बल्कि इससे वह दूसरों की तकलीफों को और अधिक सहानुभूति के साथ महसूस करता है।

इवान की दृष्टि में गर्म धूलिधूसरित सड़कों के किनारे अपने घरौंदों में बन्द मज़दूर "बेचारे दीन हीन" और जेलों में बन्द अपराधी "बदकिस्मत" थे किन्तु अस्ट्रियाई बंदियों में युद्धबंदियों के एक समूह के प्रति उसके मन में सबसे अधिक सहानुभूति पैदा हुई। वे हमारे पास से हंसी मज़ाक करते हुए गुज़रे और खास खुश प्रतीत हुए और मन इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

मगर वे घर से बहुत दूर हैं। वे कैसे खुश हो सकते हैं?" इवान ने कहा।

उस पर मैंने कहा, 'यह बात कैसे मान ली जाये मैं तो उनकी तुलना में अपने देश से कहीं अधिक दूर हूं, परंतु मैं प्रसन्न हूं।"

दूसरों ने मेरे साथ सहमति प्रकट करते हुए कहा, 'हां, यह बात ठीक है।'

इवान इवानोव ने कहा नहीं यह गलत है। एल्बर्ट डेविडोविच यहां है, क्योंकि वे यहां आना चाहते थे। ये युद्धबंदी इस कारण यहां हैं कि हमने उन्हें यहां आने को विवश किया।"

इवान इवानोव की मेज़ के गिर्द बैठे दो विदेशियों की उपस्थिति से स्पास्स्कोये के निवासियों में स्वाभाविक रूप से सनसनी पैदा हो गई। मगर बड़ों ने अपनी जिज्ञासा की भावना को औचित्य की सीमा नहीं लांघने दी। केवल कुछ बच्चे वहां आकर हमारी ओर घूरने लगे। मैं बच्चों की ओर देखकर मुस्करा उठा और वे भौंचक्के से दिखाई पड़े। मैं पुनः मुस्कराया और उनमें से तीन प्रायः पीछे की ओर भागे। मेरी मैत्रीपूर्ण मुस्कान के प्रति यह विचित्र प्रतिक्रिया प्रतीत हुई। तीसरी बार मेरे मुस्कराने पर वे चिल्ला पड़े 'सोने के दांत!' और तालियां पीटते हुए भाग खड़े हुए।

इसके पूर्व कि मैं इस व्यवहार का अर्थ समझ पाता वे अपने प्राय बीस नये साथियो को लेकर पुन दौडते हुए यहा आ गये। वे उस मेज के पास अधवृत्ताकार रूप मे खडे हो गये और उनकी उत्सुक आख मेरे चेहरे पर गडी हुई थी। ऐसी स्थिति मे पुन मुस्कराने के सिवा मैं और क्या कर सकता था। वे चिल्ला उठे, हा, हा, ठीक है! यह सोने के दातवाला आदमी है! इसी कारण वे मेरी मुस्कान पर हक्का बक्का हो गये थे। एक ऐसे विदेशी के आगमन से अधिक विलक्षण बात और क्या हो सकती थी, जिसके मुह मे सोने के दात फूटे हो? यदि मैं सुनहला ताज अपने सिर पर पहनकर स्पास्कोये आया होता, तो बाल समुदाय को इस पर उतना आश्चर्य न हुआ होता जितना दाता पर पहने इस 'सुनहले ताज' से हुआ था। मगर मुझे इसकी जानकारी दूसरे दिन हुई।

गाव के सुदूर कोने से अब सगीत की ध्वनि सुनाई पडने लगी। युवा युवतियो के सामूहिक गीत की यह ध्वनि थी और इस सगीत के साथ बालालाइका की झन झन, थालियो की टन टन एव डफ की धप धप भी सुनाई पडी। इस सगीत की ध्वनि स्पष्टतर एव निकटतर होती गई और तभी गिरजाघर के कोने से वादको और गायको का यह जुलूस सामने आता हुआ दिखाई पडा। लडकिया भडकीली एव अलकृत किसान पोशाके पहने थी और लडके हरे एव नारगी रग की बहुत ही चटकीली कमीजें और झालरदार सिरोवाले कमरबन्द धारण किये हुए थे। लडके बाजे बजा रहे थे और लडकिया एक साथ भूरी आखो तथा अस्तव्यस्त बालोवाले १७ वर्षीय गायक, जिसे अभी तक मोर्चे पर नही भेजा गया था, की धुन मे गा रही थी।

उन्होने तीन चार हरेभरे गाव का चक्कर लगाया। उसके बाद गिरजाघर के सामने घास वाले मैदान मे वे सुबह तक गाते नाचते रहे। नृत्य करनेवाले लडके लडकियो की द्रुत एव उल्लासपूर्ण भाव-तरग, मशालो की रोशनी मे उनकी पोशाको के रग, हास परिहास एव रात मे गीत के कुछ टुकडो की गूजती हुई ध्वनिया, युवा प्रेमियो के उन्मुक्त एव नि सकोच चुम्बन आलिगन, कुछ अन्तर पर मन्दिर के बडे घटे की भाति गिरजाघर की घटी की जोरदार टनटन और उससे आश्चर्यचकित होकर पक्षियो का ऊपर मडराना—इन सभी दृश्यो के एकाकार हो जाने से अनूठा और मानिक

मौन्दय पन्ना हो गया था। इसे देखकर मुझे ऐसा लगा, जसे म सदिया पीछे पन्च गया हू और उन दिना का दृश्य मेरे सम्मुख उपस्थित है, जब मानवजाति अभी अल्हड थी और मनुष्य सीधे धरती स रस एव प्रेरणा प्राप्त करते थे।

यानिशेव ने अमरीका की चर्चा की

यह एक स्वप्न लोक, एक सुखद समुदाय था, जिसम लोग परिश्रम, आमाद प्रमाद और तीज त्योहारा के मैत्रीपूर्ण भाव से सूत्रबद्ध थे। इसके जादू टोने म बधा सा म एक घर म गया और दरवाजा खोलते ही पुन अचानक बीसवी सदी म पहुच गया। बीसवी सदी का यह स्वरूप यानिशेव – शिल्पकार समाजवादी एव अन्तर्राष्ट्रीयतावादी – के शब्दा और व्यक्तित्व स परिलक्षित हुआ। अपने इद गिद जमा किसाना को वह आज के अमरीका क बार मे बता रहा था। यह अमरीका मे एक रूसी के कटु अनुभवो घरौदा हडताला और गरीबी की सामान्य कहानी नही थी, जो अमरीका से वापस आये हजारा निष्कासितो ने रूस भर म फला रखी थी। यानिशेव अमरीका के चमत्कारा का वणन कर रहा था। उसकी आवाज बेशक बठी हुई थी चहरा दमक रहा था। जिन किसानो के एक मजिल घर थे, उनके सामने उसन न्यूयाक की चालीस, पचास और साठ मजिली ऊची इमारता का चित्र प्रस्तुत किया। जिन लागा न कभी लाहारखान से बडा कुछ नही देखा था, उन्ह उसन बडे बडे कारखाना के बारे म बताया, जहा सक्डा यन्त्रीकृत हथौडे दिन रात काम करते रहते हैं। वह उनके शान्त रूसी मदानो मे उन्ह उन बडे नगरा म ले गया, जहा रात की स्तब्धता को धडधडाती टेनें भग करती ह, ग्रेट व्हाइट वज सलानियो से भरे रहते ह और भयानक शार पदा करनवाले कारखान ह, जहा लाखो मजदूर काम करन अन्दर जाते ह और काम क बाद बाहर निकलते ह।

किसाना न बडे ध्यान स उसकी बात सुनी। लकिन व यह वणन सुनकर न तो सकते म आये और न आश्चयचकित ही हुए। फिर भी हम यह नहा कह सकत कि उन्हान इसम काइ दिलचस्पी नहीं ली।

हमसे हाथ मिलाते हुए एक किसान न कहा, 'अमरीकी विलक्षण काम करते ह।'

उसके साथी ने समर्थन किया, "हा, वे अरण्य प्रेतो से भी अधिक चमत्कारपूर्ण काम करते ह।"

परतु उनकी सद्भावनापूर्ण टिप्पणियो म हमने आत्म निग्रह का भाव भी अनुभव किया, जैसे वे आगन्तुको के प्रति विनयशील होने का प्रयास कर रहे हो। दूसरे दिन सुबह सयोग से उनकी जो बातचीत सुनाई पड गई, उससे उनकी सही राय मालूम हुई।

इवान कह रहा था, "इसम आश्चर्य की बात ही क्या है कि एल्वट और मिखाईल के चेहरे पीले ह और वे परिक्लात ह। ऐसे देश म जिनका पालन पोषण हुआ, वहा और आशा ही क्या की जा सकती है। और तात्याना ने कहा, "हमारा जीवन कठिन, किन्तु कसम भगवान की, वहा वह कठिनतर है।"

इस तरह मने पहली बार इस सत्य को सुना, जिसका अर्थ और महत्त्व समय गुजरने पर ही मैं अधिक स्पष्ट रूप से समझ पाया। किसान का अपना विवेक होता है, अपने निर्णय पर पहुचने के लिए वह उसका प्रयोग करता है। एक विदेशी के लिए यह आश्चर्यचकित करनेवाली बात थी, क्योकि उसकी दृष्टि म रूसी किसान पृथ्वी का एक भद्दा प्राणी, मध्यकालीन अज्ञानता के अधकार मे लीन, अधविश्वासो म जकडा और गरीबी के पक म फसा व्यक्ति है। इस बात से ताज्जुब हुए बिना नही रह सकता था कि पढने अथवा लिखने म अक्षम यह किसान सोचने मे सक्षम है।

उसका विचार मौलिक एव तात्त्विक है और इस पर धरती के ठास गुण की छाप ह। यह व्यापक रूसी आकाश के तले दूर दूर तक फले मैदानो और स्तेपियो म दीर्घकालिक शीतऋतु गुजारनेवाली सदियो की जिदगी के अनुभवो का अभिव्यक्त करता है। वह सभी प्रश्नो पर बहुत पैने और कभी कभी व्यग्यकारी ढग से अभिनव और मौलिक विचार व्यक्त करता है। वह दीर्घकाल स अपनाये गये विश्वासो को चुनौती देता है। वह पश्चिमी सभ्यता के बारे म हमारे मूल्याकनो का पुनरीक्षण करता है। उसे इस बात का पूर्ण विश्वास नही ह कि इस सभ्यता के लिए हम जो कीमत चुकाते हैं, वह इसके योग्य है। वह मशीनो, कार्यकुशलता और उत्पादन से विमोहित नही है। वह पूछता है, 'इसका उद्देश्य क्या ह? क्या इसने मनुष्य का अधिक सुखी बनाया है? क्या इससे उनम अधिक मत्रीपूर्ण सम्बध कायम हुए ह?"

ेमन निष्पप मना गूद नहीं हान। कभी-कभी व केवन भाने भाल श्रार विचित्र हान ह्। गामवार का जव मुवह ग्राम पचायत की सभा हुइ, ना गाव व मुखिया (स्तारोस्ता) न वडी शानीनता के माथ गाव की श्रार से मेरा श्रभिनन्दन किया। उन्होंने क्षमायाचनापूण ढग से कहा कि बच्चा न श्रापके सुनहरे दाता के सम्बध म सूचना दी है मगर यह युक्तिसगत नही प्रतीत हुई श्रौर हम भी नहा कह सकत कि इसम विश्वास करना चाहिए श्रथवा नहीं। इस सम्बध म सिवा मुह खालकर दान दिखाने के श्रौर कोई उपाय नही था। मन श्रपना मुह खाल दिया श्रार मुखिया न वडी तत्परता के साथ एकटक मर मुह म दर तक दखन के बाद गभीरता के साथ बच्चा की रिपाट की पुष्टि की। इसके बाद ग्राम सभा के सत्तर दाढी वाले वयावद्ध सदस्यगण एक पक्ति म खडे हा गय श्रौर म उनके सम्मुख श्रपना मुह खाले खडा रहा। प्रत्येक मेरे मुह म पूण रूप स घूरता श्रौर इसके बाद दूसरे का घूरकर देखन का मौका दन के लिए वहा से हट जाता। जब तक ग्राम सभा के सभी सदस्या ने मेरे मुख म सुनहले दातो का देख नही लिया तब तक यह क्रम चलता रहा।

मुझे यह स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना पडा कि श्रमरीकिया मे यह रिवाज है कि उनके जा दात गिरनेवाले हो जाते हैं, वे उन्ह सीमेण्ट, सोने श्रथवा चादी से भरवा देते है। श्रस्सी वर्षीय एक वद्ध न, जिनके श्रच्छे साफ दाता ने यह चरिताथ कर दिया कि उन्हे दन्त चिकित्सा की जरा भी श्रावश्यकता नही है, यह राय प्रकट की कि श्रमरीकी जरूर कुछ विचित्र श्रौर कडी चीज खाते होंगे, जिससे दाता के लिए यह नष्टकारी स्थिति पैदा हो जाती है। श्रनक सदस्या न कहा कि सुनहले दात लगवाना श्रमरीकिया के लिए भले ही ठीक हो, मगर रूसिया के लिए यह कभी भी उपयुक्त न हागा, क्योंकि वे सदा इतनी श्रधिक श्रौर इतनी गम चाय पीते ह कि निश्चय ही इसमे सोना गल जायगा। यह बात सुनकर इवान इवानोव जिसे श्रसामान्य श्रागन्तुका का श्राश्रय दने की प्रतिष्ठा प्राप्त थी चुप न रह सका। उसन जार देकर कहा कि गाव म किसी भी घर म जितनी गम चाय तयार होती हागी, वसी ही गम चाय उसके घर म तैयार हाती है श्रौर उसने इस बात की पुष्टि की कि उसने कम से कम दस गिलास चाय मुझे पिलाई, परन्तु मेरे सुनहले दात नही गले।

विदेश में 'अमरीकी' शब्द 'धनी व्यक्ति' का प्रायः पर्यायवाची हो गया है। मेरे चश्मे के सुनहरे फ्रेम और सुनहरी फाउण्टेनपेन को देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि मैं बहुत ही सम्पत्तिशाली व्यक्ति हूँ। फिर भी वे जिस प्रकार मेरे सोने को देखकर चकित थे, उसी प्रकार मैं सोने के उनके अपार प्रदर्शन से विस्मित हुए बिना न रह सका। इस गाँव में बहुत सोना था, परन्तु ग्रामीणों के शरीर पर वह नहीं दिखाई पड़ता था। वह उनके गिरजाघर में था। गिरजाघर में प्रवेश करते ही वेदी के पीछे दीवाल पर बीस या तीस फुट ऊँची देव प्रतिमा पट दिखाई पड़ती थी जो सोने की चमकती कान्ति से मण्डित थी। एक समय गाँव वालों ने इस गिरजाघर को सजाने के लिए दस हजार स्वर्ण चक्र के रूप में जमा किये थे।

यद्यपि यह छोटा गाँव यूरोप एवं अमरीका के वर्तमान सांस्कृतिक प्रवाह से बहुत दूर था फिर भी वहाँ पश्चिम की संस्कृति एवं सभ्यता के चिह्न दिखाई पड़ रहे थे। वहाँ सिगरेटें और सीनेवाली सिंगर मशीनें थीं, लुंज पुंज सैनिक थे, कारखाने वाले नगरों से आये दो लड़के दूकान से खरीदे हुए सॉलूलायड कालर वाला परिधान धारण किये हुए थे—गाँव की कमीजों और झालदार कुरतों से इसकी तुलना कितनी अप्रीतिकर थी।

एक रात जब हम एक पड़ोसी की झोपड़ी के सामने खड़े थे तो पर्दे के पीछे से मृदु एवं मधुर वाणी में यह प्रश्न सुनकर «Parlez vous Français?» हम चौंके। यह एक खूबसूरत किसान लड़की थी, जिसका पालन पोषण गाँव में हुआ था, किन्तु उसका अन्दाज़ और नाज़-नखरा दरबार में पाली पोसी गई लड़की के समान था। उसने पेत्रोग्राद में एक फ्रांसीसी परिवार में काम किया था और यहाँ अपने घर बच्चा जनने के लिए आई थी।

इस प्रकार विविध रूपों में बाहरी दुनिया के विचार छन छनकर गाँव में पहुँच रहे थे और सदियों की तन्द्रा से इसे जगा रहे थे। युद्धबंदियों और सैनिकों, व्यवसाइयों और स्थानीय संस्था के सदस्यों द्वारा बड़े नगरों एवं सागर पार के देशों की कहानियाँ ग्रामीणों के कानों तक पहुँच रही थीं। विदेशों के बारे में तथ्यों एवं कोरी कल्पनाओं के विचित्र मिश्रण का नतीजा था विचारों का अजीब पचमेल संकलन। एक बार अमरीका के बारे में एक बात खास तौर पर मेरी ओर संकेत करते हुए बताई गई, जिससे मुझे बड़ी झेंप महसूस हुई।

9–952

हम लोग शाम को भोजन करते समय बातचीत कर रहे थे। मैं यह सोचता रहा था कि मेरी दृष्टि में इगिया के जो रीति रिवाज और व्यवहार अजीब और अनोखे लगते हैं, उन्हें मैं अपनी नोट-बुक में लिखता जाता हूँ।

मैंने कहा "उदाहरणार्थ, आप लोग अलग अलग तश्तरियों में खाना खाने की जगह एक ही बड़े डोंगे से खाते हैं। यह विचित्र रिवाज है।" इस पर इवान ने कहा, "हाँ, सम्भवतः हम विचित्र लोग हैं।"

"और वह बड़ा अलाव घर! इसने कमरे का एक तिहाई स्थान ले रखा है। आप इसमें रोटी पकाते हैं। आप इस पर सोते हैं। आप इसके अंदर घुसकर वाष्प-स्नान करते हैं। आप इससे सब प्रकार का काम लेते हैं और बहुत ही विचित्र ढंग से।' इवान ने पुनः सिर हिलाते हुए कहा 'हाँ, सम्भवतः हम विचित्र लोग हैं।"

इसी समय मुझे लगा कि किसी ने मेरे पैर पर अपना पैर रख दिया है। मैंने सोचा कि यह कुत्ता होगा, परन्तु जब मेज के नीचे झाँका, तो वहाँ सूअर का बच्चा दिखाई दिया। मैंने कहा, "यह देखिये! सबसे अधिक विलक्षण रिवाज तो यह है! आप खाना खाने के कमरे तक में सूअर के बच्चों और चूजों को आने देते हैं।"

इसी क्षण अव्दोत्या की गोद का बच्चा मेज पर अपने पैर ऊपर-नीचे पटकने लगा। उसने बच्चे को सम्बोधित करते हुए कहा, 'बच्चा, तुम अपना पैर मेज से हटा लो। तुम अमरीका में तो नहीं हो, न।' और मेरी ओर देखते हुए उसने शिष्टतापूर्वक कहा, 'आपके अमरीका में बड़े विचित्र रीति रिवाज हैं।'

हमने फसल काटी

यह त्योहार की छुट्टी के बाद का दिन था और पास पड़ोस के कस्बों के आगन्तुक अभी यहीं टिके हुए थे। गाँव के मैदान में खेलकूद और नृत्य के कार्यक्रम हो रहे थे, हारमोनियम बाजा बच्चों के एक समूह के हाथ लग गया था और वे अपने बड़े भाइयों एवं बहनों के लघु स्थानापन्न अभिनेता के अनूठे रूप में कल के गीतों को बड़ी शान से गाते हुए गाँव में चक्कर लगा रहे थे। त्योहार के बाद अधिकांश गाँववाले थके हारे और उनींदे

थ। परन्तु इवान इवानाव के परिवार मे थकान-सुस्ती का नाम निशान नही था। यहा सभी काय म व्यस्त थे। श्रव्दोत्या पुश्राल पूलिया बाधने के लिए फूस को बट रही थी। तात्याना छाल के टुकडो का गूथकर पादुका तैयार कर रही थी। श्रव्दोत्या की बडी बच्ची श्रोल्गा बिल्ली को जबरन चाय पीना सिखा रही थी। इवान ने हसिया की धार तेज की श्रौर हम सभी खेता की श्रोर चल पडे।

जब हम फसल काटने खेता की श्रोर चले, तो युवा वग घरा से बाहर निकलकर हमारे पीछे पड गया श्रौर श्रनुनय विनय करन लगा, कृपया खेत पर काम करने न जायें। घर ही पर रहिए।' जब हम श्रागे बढे, तो वे बहुत गभीर हो गए। मन पूछा कि श्राखिर हम काम करन क्या न जाये।

उन्होने कहा, "यदि एक परिवार खेत पर जायेगा, तो दूसरे भी इसका श्रनुसरण करेंगे। उस दशा मे त्योहार का मजा किरकिरा हो जायेगा। कृपया न जाइये!"

मगर पकी हुई फसल हमे पुकार रही थी। सूय चमक रहा था श्रौर यह नही कहा जा सकता था कि कब वर्षा होने लगेगी। इसलिए इवान श्रागे बढा श्रौर पन्द्रह मिनट बाद टील के पास पहुचकर जब हमने मुडकर देखा, तो श्रन्य लोग खेतो की श्रोर श्राते हुए दिखाई पडे। जिस प्रकार झुण्ड की झुण्ड मधुमक्खिया छत्ते से पुष्प से शहद जमा करने के लिए बाहर निकलती उटती ह, उसी प्रकार गाव वालो के झुण्ड के झुण्ड श्रागामी शीत ऋतु के लिए खाद्य भण्डार जुटाने को खेतो की श्रोर निकल पडे। जब हम रई के खेत के पास पहुच गये, तो यानिशेव ने नेक्रासोव के राष्ट्रीय महाकाव्य 'किसका जीवन सुखी रूस म' से निम्नाकित पक्तिया सुनाई

> पकी हुई फसलो से भरे गल्लो के खेत!
> इस समय तुम्हें देखकर
> कोई कल्पना भी नही कर सकता
> कि मनुष्यो ने कितना दारुण कष्ट झेलते हुए
> तुम्हे यह रूप प्रदान करने को कठोर श्रम किया है।
> गम गम श्रोस कणो से
> तुम्हे श्राद्रता नही मिली है,

किसान के श्रम बिन्दुओं से
तुम लहलहा उठे हो।
पकी जई
और रई एव जौ की फसल देखकर
कृषकों का मन-मयूर नाच उठा है,
मगर गेहूं की फसल निहारकर
उनका मन खिला नही,
क्योंकि कुछ भाग्यवानो को ही
यह खाने को सुलभ है।
'गेहूं! हम तुम्हें नही चाहते!
रई और जौ से हमारा अनुराग है,
हम उन्हे इस कारण चाहते हैं—
कि वे समान रूप से सब को सुलभ ह।

सभी के साथ साथ मैं भी काम मे जुट गया। म पानी लाता, गटठे बनाता, हसिए से फसल काटता और दूसरा द्वारा काटे गये बादामी रग के डण्ठलो को नीचे गिरते देखता। हसिए से फसल काटने के लिए होशियारी एव अभ्यास अपेक्षित है। इसी कारण मैंने जितनी फसल काटी और गट्ठो को बाधकर जितनी पूलिया तैयार की, उससे न तो मेरा कोई कमाल ही प्रकट हुआ और न मने श्रमरीवी फसल कटैयो की प्रतिष्ठा म कोई चार चाद लगाए। इवान ने शालीनतावश फसल काटने के मेरे तरीके की कोई आलोचना नही की, किन्तु मने यह अनुभव कर लिया कि इससे दबी हसी और चुहल का मसाला मिल रहा है। अव्दोत्या से मेरे काय की चर्चा करत हुए इवान ने ऊट के लिए जिस रूसी शब्द का प्रयोग किया, उसे मैं समय गया। सचमुच झुककर कटाई करते समय ऊट की भाति मेरा कूबड निकल आया था, जबकि इवान इवानोव तनकर कुशल कटया की भाति हसिये का प्रयोग कर रहा था। मैंने इवान की ओर मुडकर यह शिकायत की कि आप ऊट से मेरी तुलना कर रहे ह। वे कुछ झेंप गये। मगर जब उन्होने देखा कि म इस तुलना का मजा ले रहा हू और मने उस कूबड वाले जानवर की सादृश्यता स्वीकार कर ली है, तो वे खूब हसे। उन्होने ठट्ठा मार हसते हुए कहा

"तात्याना ! मिखाईल ! एल्वट डेविडोविच का कहना है कि वे फसल काटते समय ऊट के समान दीख पडते हैं।" उसके बाद वे दो या तीन बार अचानक खिलखिलाकर हस पडे। इस घटना की याद ने दीर्घकालीन शरद् ऋतु के लम्बे दिनो को छोटे करने म अवश्य ही उनकी सहायता की होगी।

लेखको ने रूसी किसान के आलस्य के बारे मे बहुत कुछ लिखा है। बाजारो और शराबखाना म उन्हें देखने से ऐसी ही धारणा पैदा होती है। मगर रूसी किसान को खेत म काम करते हुए देखने पर यह धारणा दूर हो जाती है। उनके सिर पर सूय की धूप तेजी से पडती रहती है और पैरा तले से हवा के साथ धूल उडती रहती है। परन्तु जब तक खेत मे फसल का अन्तिम डण्ठल कट नही जाता, तब तक वे हसिये का पिण्ड नही छोडते, कटे डण्ठला को बटोरते रहते हैं और चौकोर ढेर म उन्ह जमा करने के लिए गट्ठो म बाधकर पूलिया तैयार करते रहत हैं। उसके बाद वे गाव लौटते ह।

बोल्शेविज्म के प्रति किसानों की सजगता

हमारे आने के बाद से ही गाव वाले यानिशेव से भाषण देने के लिए कह रहे थे। एक दिन तीसरे पहर पूरा प्रतिनिधिमण्डल उससे भाषण देने के लिए प्राथना करने आया। यानिशेव ने मुझसे कहा

"इस बात पर जरा गौर कीजिये। दस वष पहले यदि इन किसानो को यह सन्देह हो जाता कि म समाजवादी हू, तो वे मुझे मार डालने के लिए यहा आते। अब यह जानते हुए भी कि मै बोल्शेविक हू, वे मेरे पास आकर भाषण देने के लिए अनुनय विनय कर रहे हैं। इस अर्से म परिस्थिति बहुत बदल गई है।"

यानिशेव मेधावी व्यक्ति नही था सिवाय इसके कि विश्व की पीडा एव वेदना के प्रति बहुत ही सवेदनशील होने के कारण उसे सद्विवेक प्राप्त हो गया था। दूसरो के कष्टो से व्यथित होकर उसने अपने लिए कष्टप्रद माग चुन लिया था। दस्तकार की हैसियत से उसे अमरीका मे प्रति दिन ६ डालर मिलते थे। इनम से वह सस्ते कमरे और सस्ते खाने पर कुछ खच कर देता। जो कुछ बच जाता, उससे किताब खरीद लेता था और उन्ह

घर घर बाटता फिरता। बोस्टन, डेट्रायट, मास्को और मार्साई की गरीब बस्तियो के लोग यानिशेव को अभी भी अपने साथी के रूप मे याद करते हुए कहते हैं कि उसने साझे ध्येय के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया।

टोकियो म एक निष्कासित साथी ने देखा कि एक उत्तेजित कुली यानिशेव को अपने रिक्शे मे जबदस्ती बिठाने का प्रयास कर रहा है। यानिशेव न बात साफ करते हुए कहा, "म उसके रिक्शे मे बैठ गया और वह पसीने से तरबतर घोडे की भाति रिक्शे को खीचने लगा। लोग चाहे मुझे मूख ही कहे, परन्तु मै यह सहन नही कर सकता था कि एक मनुष्य पशु की भाति काम करे। इसलिए मै उसे किराया देकर रिक्शे से नीचे उतर गया। मै फिर कभी भी रिक्शे मे नही बैठूगा।"

रूस वापस आने के बाद से वह रात दिन यात्रा करते हुए विशाल सावजनिक सभाओ मे तब तक भाषण करता रहता था, जब तक कि उसकी आवाज पूरी तरह बैठ नही जाती थी तथा वह केवल फुसफुसाने एव सकेत से कुछ बता सकने की स्थिति को नही पहुच जाता था। वह कुछ सुस्ता लेने के विचार से अपने गाव आया था। परन्तु यहा भी क्राति ने उसे विश्राम नही करने दिया। किसानो ने अनुनय विनय के स्वर मे कहा

' क्या मिखाईल पेत्रोविच, हमारे बीच छोटा-सा भाषण देने की कृपा करेगे ? बहुत छोटा-सा भाषण।"

यानिशेव उनका अनुरोध अस्वीकार नही कर सकता था।

गाव के मैदान मे एक छकडा लाकर खडा कर दिया गया और जब इसके इद गिद काफी भीड जमा हो गई, तो यानिशेव ने उस मच पर चढकर क्राति, युद्ध और जमीन के बारे मे अपने श्रोताओ को बोल्शेविको की कहानी बतानी शुरू की।

सध्या अधेरी रात म परिवर्तित हो गई और वे खडे खडे भाषण सुनते रहे। उसके बाद वे मशाले ले आये और यानिशेव का भाषण जारी रहा। उसकी आवाज फटने लगी। वे उसके लिए पानी, चाय और क्वास (रई की बियर) ले आये। बोलते-बोलते उसकी आवाज जवाब दे गयी और जब तक वह पुन बोलने की स्थिति म नही हुआ, तब तक वे धैय से वहीं खडे प्रतीक्षा करते रहे। ये किसान दिन भर खेता म कठिन परिश्रम कर चुके थे और शरीर के लिए गल्ला एकत्र करने को वे जितने

उत्सुक थे, उससे अधिक उत्सुक्ता के साथ मानसिक भोजन के लिए वे देर तक रात मे वहा डटे रहे। यह एक प्रतीकात्मक दृश्य था – उक्रइनी स्तेपी, रूसी मैदानो और सुदूरवर्ती साइबेरिया के विस्तृत भूभागा मे बसे लाखा गावा मे से एक के अधेरे मे नान की ज्योति जल रही थी। सैकडा अन्य गावो मे भी इसी तरह ज्ञान की मशाले जल रही थी और दूसरे यानिशेव उन गावो के किसानो को क्राति की कहानी बता रहे थे।

वक्ता के इद गिद खडे श्रोताओ के चेहरा से श्रद्धा एव चिरपोषित आकाक्षाओ की भावनाए परिलक्षित हो रही थी। उस अधेरे मे उनकी चमकती आखो से जिज्ञासा की भूख प्रकट होती थी। यानिशेव जब तक विल्कुल थक नही गया, तब तक भाषण करता रहा। जब वह और अधिक बोलने मे विल्कुल असमथ हो गया तभी वे अनिच्छापूवक वहा से हटे। मैने उनकी टिप्पणिया सुनी। क्या ये "मूढ अपढ किसान" इस नये दृष्टिकोण को अपनाने को तैयार थे, क्या वे एक प्रचारक के जोश से प्रभावित हो सकते थे?

वे कह रह थे, "मिखाईल पेत्रोविच अच्छा आदमी है। हम जानते है कि वह दूर दूर तक घूम चुका है और अनेक चीजें देख चुका है। जिस सिद्धान्त मे उसे विश्वास है, सम्भव है वह कुछ लोगो के लिए अच्छा हो, किन्तु हमे यह ज्ञात नही है कि वह हमारे लिए भी उपयुक्त है या नही।"

यानिशेव ने अपने अतस्तल की सारी भावनाए उडेली थी उसने बडे विस्तार स बोल्शेविज्म के सिद्धात को समझाया था, परतु किसी ने भी इसे अगीकार नही किया था। जब हम छोटे कमरे की घुटन से बचने के लिए फूस की छाजन वाले कोठे ऊपर चढ रहे थे, यानिशेव ने स्वय यही बात कही। फेदोसेयेव नामक एक युवा किसान न ववना की मानसिक पीडा और दद को भाप लिया, जिसने अपनी आत्मा निकालकर रख दी थी, किन्तु उसकी बाते श्रोताओ के गले से नीचे नही उतरी थी।

उसने कहा, 'मिखाईल पेत्रोविच, हमारे लिए यह सब कुछ विल्कुल नया है। हम जल्दी करना नही जानते। हम इस पर सोचने और आपस मे बातचीत करने के लिए समय चाहिए। हमने महीना पहले खेता मे बीज बोए थे और इतने दिना बाद आज ही गल्ले की फसल काटी है।'

मने भी सान्त्वना देने के ख्याल से कुछ उत्साहजनक शब्द कहने का प्रयास किया। अपने आदर्शों की अन्तिम विजय मे दृढ विश्वास के स्वर म यानिशेव न धीरे-से कहा, "कोई बात नही। वे निश्चय ही इन आदर्शों को स्वीकारेगें। वह पुआल पर लेट गया, खासी के कारण वह बेदम हो रहा था, परन्तु उसके मुख पर सौम्यता थी।

मुझे सन्देह था। परन्तु यानिशेव का कथन ठीक निकला। आठ महीने बाद उसन गाव के मैदान म दूसरा भाषण दिया। इस बार स्पास्सकोये गाव की कम्युनिस्ट पार्टी के निमत्रण पर वह यहा आया था। फेनोसेयेव न इस सभा की अध्यक्षता की।

यानिशेव ने जमीन की चर्चा की

सुबह होते ही अनेक किसान अपने प्रश्ना के उत्तर पान के लिए यानिशेव के पास आये। सर्वोपरि जमीन का प्रश्न था। उस समय इस समस्या का बोल्शेविक समाधान इस प्रकार का था इस प्रश्न को स्थानीय भूमि समितिया के हवाले कर दीजिए। ये समितिया बडी जागीरो जायदादो का अपने अधिकार म ले ले और उन्हे जनता को सौप दें। किसाना ने इस बात की ओर सकेत किया कि इससे स्पास्सकोये गाव की भूमि-समस्या हल नही होगी, क्याकि यहा राजा अथवा चच या किसी जागीरदार की जमीन नही है।

ग्राम पचायत के मुखिया ने कहा, "यहा तो आस पास की सारी जमीन किसाना की है। यह बहुत थोडी है, क्याकि भगवान ने हम बहुत बच्चे दिये ह। जसा मिखाईल पेत्रोविच कह रहे ह, बोल्शेविक शायद उतने ही अच्छे हा, परन्तु यदि व सत्तारूढ हो जाते हैं, तो क्या व हमारे लिए अधिक जमीन भी पैदा कर सकेगे? नही, यह तो केवल ईश्वर ही कर सकता है। हम ऐसी सरकार चाहते हैं, जिसके पास हम साइबेरिया अथवा किसी भी स्थान पर, जहा बहुत जमीन हो, भेजन के लिए काफी धन हो। क्या बाल्शेविक यह कर पायेंगे?

यानिशेव न परती जमीन का खेती योग्य बनाकर वहा नई बस्तिया बसान की योजना समझाई और उसके बाद कृषक-कम्यून की चर्चा की, जिस

व्यवस्था को बोल्शेविक रूस म लागू करने की बात मोच रहे थे। इस योजना के अंतगत ग्राम पचायत को अंतत बडे पैमाने पर सहकारी कृषि उद्यम म परिवर्तित करने का लक्ष्य निर्धारित था। उसने स्पासस्कोयेकी वतमान प्रणाली के अंतगत जितनी जमीन बेकार पडी रहती थी, उसकी ओर सकेत किया। सामान्य रूप से यहा जमीन चार भागा म विभाजित थी। एक हिस्से को साझे की चरागाह के रूप म इस्तेमाल किया जाता था। अच्छी, औसत और बुरी जमीन के समुचित बटवारे के ख्याल से प्रत्येक किसान का हर भाग म एक एक खेत दिया गया था। यानिशेव ने इस बात की ओर भी सकेत किया कि बिखरे हुए खेत होने के कारण एक खेत से दूसरे खेत पर जान म कितना समय नष्ट होता है। उसने बताया कि शतरज के पट्टे की भाति छाटे छोटे खेतो की जगह बडे पमाने पर उन्ह एक इकाई म बदल दने से क्या लाभ हागे। उसन बताया कि खेता की एक इकाई हा जान पर कस बोग्राई एव कटायी की मशीनो का इस्तेमाल किया जा सकेगा। दो किसाना न एक दूसरे प्रदेश मे इन मशीना का चमत्कारपूण काय देखा था और यानिशेव की बात की पुष्टि करते हुए उन्होंने कहा कि ये मशीनें तो "शैतान" की भाति काम करती हैं।

किसाना न पूछा, "क्या अमरीका हम ऐसी मशीनें द देगा?'

यानिशेव ने उत्तर दिया, 'कुछ समय तक। उसके बाद हम बडे बडे कारखान निर्मित करेंगे और यही रूस मे ऐसी मशीने तयार करेंगे।"

वह पुन अपने श्रोताओं को उनके शात ग्रामीण जीवन से दूर बडे आधुनिक कारखानो के शारगुल एव कोलाहलपूण वातावरण मे ले गया। और पुन इस वत्तान्त के प्रति वही व्याकुल प्रतिक्रिया हुई। वे आधुनिक औद्योगीकरण के प्रति आकृष्ट होने के बजाय भयभीत अधिक थे। वे चमत्कारपूण मशीनें तो चाहते थे। परतु वे यह भी मोचते थे कि यदि कारखानो की चिमनिया से निकलनेवाले धुए के काले बादल उनके हरित एव उज्ज्वल प्रदेश पर छा गये, तो यह सदिग्ध वरदान सिद्ध होगा। किसाना का "फक्टरी के बायलर म पकने' का विचार ही भयावह प्रतीत हुआ। आवश्यकतावश उनम से कुछ खाना और कारखाना मे काम करने को विवश हुए थे, परतु क्राति के बाद से वे पुन गावा मे लौटकर खेता मे काम करने लगे थे।

सामाजिक प्रश्नो के अतिरिक्त यानिशेव को अनेक व्यक्तिगत सवालो का भी सामना करना पड रहा था। क्या वह निजी विश्वासो की बलि देकर अपने राजनीतिक सिद्धान्तो का प्रचार करे? उदाहरणार्थ, क्या वह भोजन के पहले और बाद मे सलीब का चिन्ह बनाए, जबकि आर्थोडाक्स चर्च को वह छोड चुका था? यानिशेव ने निर्णय कर लिया कि वह यह सब कुछ नही करेगा और यदि इवान इवानोव इस बारे मे प्रश्न करगे, तो उनके उत्तर देगा। मगर यानिशेव के सलीब का निशान न बनाने पर यद्यपि वृद्ध किसान को परेशानी हुई और उनकी पत्नी दुखी हुइ, मगर उन्होने कोई सफाई नही चाही।

रूस मे खेत मे काम कर रहे किसान के लिए परम्परागत अभिवादन है, "ईश्वर आप की सहायता करे"। यानिशेव ने औपचारिक "नमस्ते" की जगह इसी अभिवादन की प्रथा को जारी रखने का निर्णय किया। फेदोसेयेव के बच्चे की मौत के बाद धार्मिक सस्कार से सम्बन्धित जो लम्बी प्रार्थना हुई यानिशेव ने उसमे शुरू से अन्त तक भाग लिया। उन दिनो रूसी गावो मे बच्चे की मौत पर अक्सर गिरजाघर के घण्टे बजते थे।

मुखिया ने कहा "ईश्वर हमे बहुत बच्चे देते ह और, जो जीवित है उन्ह भोजन देने के लिए हमे अपनी खेती की उपेक्षा नही करनी चाहिए। इसलिए अन्य किसान खेतो मे काम करने चले गए, जबकि पादरी मृत शिशु के मा बाप, यानिशेव और मैं गिरजाघर गए। मा के अतिरिक्त उसके नौ बच्चे भी वहा खडे थे। प्रति वर्ष वह बच्चा जनती थी और वे सभी उम्र के मुताबिक क्रमबद्ध वहा मौजूद थे। किन्तु इस कतार मे यहा-वहा कुछ व्यवधान भी था। उस वर्ष जो बच्चा पैदा हुआ था, वह मर गया था। और अब इस साल जो बच्चा हुआ था, वह भी चल बसा था। यह बहुत ही छोटा सा था, बगल मे रखे कुमुदिनी के फूल के बराबर। गिरजाघर की मोटी मोटी दीवारो और स्तम्भो के बीच नीले ताबूत म रखी हुई लाश और भी छोटी छोटी और सुकुमार लग रही थी।

सयोगवश स्पास्सकोये गाव का पादरी अच्छा था। वह दयालु एव सहानुभूतिशील व्यक्ति था, गाव वाले उसे पसन्द करते थे, उस पर उन्ह यकीन था। यद्यपि उसे अक्सर मृत बच्चो के धार्मिक सस्कार के अवसर पर प्रार्थनाए करनी पडती थी, तथापि वह उस समय यह प्रयास कर रहा

था कि यह केवल परिपाटी पालन जैसी बात प्रतीत न हो। उसने धीरे से ताबूत पर मोमबत्तिया जलाइ, बच्चे के सीने पर सलीब रखी एव इसके बाद प्रार्थना शुरू की और गिरजाघर म उसकी भारी भरकम आवाज गूजने लगी। पादरी और छोटे पादरी ने प्रार्थनाए की, बाप, मा एव बच्चा ने सलीब का चिह्न बनाकर एव झुककर ललाट स फर्श का स्पर्श किया। पादरी के सामने यानिशेव सिर झुकाए जडवत खडा था। जीवन और मृत्यु के रहस्य का अपने बीच छिपाये हुए ये दोना व्यक्ति एक दूसरे के सामने खडे थे। एक आर्थोडाक्स गिरजाघर का पादरी था और दूसरा समाजवादी क्रान्ति का पगम्बर, एक पथ्वी से दूर स्वर्ग म बच्चा को खुश और सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पवित्र धार्मिक संस्कार सम्पन्न करता था और दूसरा पथ्वी पर ही जीवित बच्चा को सुरक्षित एव सुखी बनाने के काम म अपने जीवन को अर्पित किये हुए था।

* * *

मैं यानिशेव की कई प्रचारात्मक यात्राओ मे उसके साथ रूसी कस्बो और नगरा म गया। इवानोवो वोज्नेसेन्स्क की कपडा मील के कुशल कारीगरा और सभी श्रेणिया के सवहाराओ से लेकर मास्को मे चोरो के घरौंदो तक मे भी हम गए, जिन्हे मक्सिम गोर्की ने अपने अमर नाटक 'तलछट' मे चित्रित किया है। मगर यानिशेव का ध्यान सदा गावा की ओर चला जाता।

मन छ महीने बाद मास्को मे चौथी सोवियत काग्रेस के समय उससे विदा ली। एक सत्तरवर्षीया, बिल्कुल ढली और झुकी हुई वद्धा उसके हाथ का सहारा लिये खडी थी। यानिशेव ने बडी श्रद्धा के साथ अपने "गुरु' के रूप मे मुझे उस वद्धा का परिचय दिया। रूस की सीमाओ के परे अथवा श्रमजीवी वर्गों के बाहर उसका नाम बिल्कुल अज्ञात था। परन्तु युवा मजदूर और किसान क्रातिकारियो के बीच उसका नाम आदर के साथ लिया जाता था। उसने उनके साथ तकलीफें झेली थी, कष्ट उठाय थे और कारावास दण्ड भोगा था। दीघकाल तक कठोर परिश्रम करने तथा भूखो रहने से उसका चेहरा पीला पड गया था एव वह बहुत कमजोर हो गई थी। उसे देखकर दया आती थी, पर उसकी आखें इसका अपवाद थी।

गाडी म यात्रा की, जिनके सम्बध म गोगोल* ने यह विस्मयोदगार प्रकट किया है, "हे भगवान! अरी स्तेपिये, तुम कितनी मनोरम हो!" हम चारो ओर पहाडियो से घिरे एक छोटे गाव म रुक गए और करीब तीन सौ महिलाए, चालीस वृद्ध पुरुष और बच्चे और दस-बारह पगु सनिक जिला परिषद् की गाडी के पास जमा हो गए। जब म उन्हे सम्बोधित करने के लिए खडा हुआ, तो मने पूछा, "आपमे से कितनो ने वाशिगटन का नाम सुना है?" एक लडके ने अपना हाथ उठाया। 'लिकन का?' तीन हाथ। "केरेन्स्की?" करीब नब्बे हाथ। "लेनिन?" पुन नब्बे। "ताल्स्ताय?" एक सौ पचास हाथ।

इससे उनका मनोरजन हुआ, वे विदेशी के इन प्रश्नो और उसके विचित्र उच्चारण पर हसते रहे। इसके बाद मुझसे बडी मूर्खता हो गई। मैंने यह प्रश्न पूछ दिया, "आपमे से कितनो ने युद्ध मे अपने किसी सगे सम्बन्धी को खोया है?" प्राय सभी हाथ ऊपर उठ गए और उस प्रसन्न भीड से अब क्रन्दन के स्वर ऐसे सुनाई पडे, जैसे शरद-ऋतु की ठडी हवा वृक्षो से होकर कराह रही हो। दो वृद्ध किसान गाडी के पहियो को थामकर सिसकने लगे और मेरा आसन हिल उठा। एक लडका रोता और भीड को चीरता हुआ भाग रहा था, "आह मेरा भाई—उन्होंने मेरे भाई को मार डाला!" और महिलाए अपनी आखो पर रूमाल डाले अथवा एक-दूसरे की बाहो म लिपटकर रो रही थी, विलाप कर रही थी। म सोच रहा था कि आसुओ की इतनी बडी सरिता कहा से प्रवाहित हो रही है। यह कौन सोच सकता था कि इन शान्त और गभीर चेहरो के पीछे इतनी वेदना निहित है।

रूस के उन हजारो गावो मे से यह भी एक गाव था, जहा के सभी हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियो को युद्ध निगल गया था। यह उन अनगिनत गावो म से एक था, जहा पगु, नेत्रहीन अथवा बाहुहीन घायल सैनिक रेंगते हुए वापस पहुचे थे। लाखो वापस नही आ सके थे। जर्मनो के खिलाफ काले सागर से बाल्टिक सागर तक १,५०० मील की दूरी म फैले रूसी मोर्चे के विशाल कब्रगाह मे वे चिर विश्राम कर रहे थे। किसानो के हाथो मे केवल

---

*गोगोल, नि० व० (१८०९–१८५२)—एक महान रूसी लेखक।

उनमे अभी वह आग थी, जिसने यानिशेव जैसे दर्जनो युवकों मे क्रान्ति की ज्वाला प्रज्वलित की थी और उन्हे समाजवादी क्रांति के उद्दीप्त सदेशवाहक बनाकर देश के विभिन्न भागो मे भेजा था। उसने क्रांति के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था, किन्तु उसने कभी स्वप्न मे भी यह नही सोचा था कि वह इसे देख सकेगी।

अब क्रांति हो गई थी और वह अपने क्रांतिकारी परिवार मे अपने युवा अनुयायियो के हाथो मे हाथ रखे बैठी थी। यह सच है कि उद्योग धधे तबाहहाल थे जर्मन फौज द्वार पर खडी थी, भूख एव शीत से नगर पीडित थे फिर भी प्राचीन और कुलीनो के भूतपूर्व सभा भवन मे बैठी हुई वह जब लेनिन का भाषण सुन रही थी, तो उसे यह आभास हो रहा था कि वह नये दिन को उदय होते देख रही है, जो सभी लोगो के लिए शांति लायेगा और उसे गाव मे रहने का अवसर प्रदान करेगा।

उसने मेरे कान मे कहा, '*हम दोनो गाव की उपज है, गावो को* प्यार करते है। और जब क्रांति पूर्णतया सफल हो जायेगी, तो मिखाईल और मै दोनो गाव मे जा बसेगे।"

चौथा अध्याय

फौजी तानाशाह

मैने १९१७ की ग्रीष्म ऋतु मे रूस के आरपार बहुत दूर दूर तक यात्राए की। सर्वत्र प्रताडित जनता का क्रन्दन सुनाई पडता था। मुझे इवानोवो वोज्नेसेस्क की कपडा मिलो, नीज्नी नोवगोरोद के मेलो और कीयेव की मण्डियो मे यही दु ख दर्द सुनने को मिला। यह व्यथा-कथा मुझे वोल्गा नदी पर चलनेवाले जहाजो से और रात मे दनेपर नदी पर जानेवाली नौकाओ एव बजरो से सुनाई पडी। जनता के दु ख का कारण युद्ध था, "अभिशप्त युद्ध।"

मैने सर्वत्र युद्ध का अमगलकारी प्रभाव और ध्वसावशेष देखे। मैने उक्रइना के उन टीलो से भरे विस्तृत चौरस मैदानो के पास से गुज़रनेवाली

लटठे थ ग्रार उह मशीनगना से लम जमन फौजा के विरुद्ध युद्ध म थार दिया गया था, जहा बहुत बडी सख्या म एकसाथ ही भून डाल गय थे।

ग्रार्खागेल्स्क म काफी हथियार थ। उह मालगाडिया म रखकर मार्चे की ग्रोर रवाना भी किया गया। परतु व्यापारी ग्रपनी वस्तुग्रो का ढोने के लिए इन गाडिया का इस्तेमाल करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने ग्रधिकारिया को कुछ हजार रूवला की घूस दी ग्रौर इसके परिणामस्वरूप ग्रार्खागेल्स्क से दस मील दूर ले जाकर इन हथियारा को गाडिया स फेंक दिया गया ग्रौर ये गाडिया शेम्पेन की बातलो, कारो ग्रौर पेरिस म तयार पोशाका का ढान के लिए वापस भेज दी गइ।

पत्रोग्राद ग्रार ग्रय वडे नगरा म युद्ध क दिना म खूब हाथ रगनेवाले धनी लागो का जीवन बहुत रगारग, प्रमुदित एव चकाचौंध पदा करनेवाला था, मगर ज़ार के ग्रादेश से खाइयो म झोक दिये जानेवाले १,००,००,००० सनिकों के लिए तो युद्ध मौत ग्रौर मुसीबते ही लाया था।

ग्रौर ग्रब केरेन्स्की के शासन म भी १,००,००,००० सशस्त्र सनिक थे जिह जबरन खेता ग्रौर कारखाना से खीचकर उनके हाथा मे बदूकें पकडा दी गई थी। शासक वर्गों ने सैनिको के हाथो मे इन हथियारा का पकडाए रखन के लिए हर तरीके का इस्तेमाल किया। उहान भण्डा फहराते हुए "विजय ग्रौर गौरव' की चीख पुकार की। उन्होंने महिलाग्रा की शहीदी टुकडिया खडी की, जो यह नारा लगाती थी, 'पुरुषो, तुम्हे धिक्कार है कि तुम्हारी जगह ग्रब महिलाए लडने जा रही ह!" उहाने विद्रोही रेजीमेंटो के पीछे मशीनगने तैनात कर दी ग्रौर यह घापणा कर दी कि जो पीछे हटगे उहे निश्चित रूप से भून दिया जाय। परन्तु यह सब कुछ निष्प्रयोजन सिद्ध हुग्रा।

सनिको का विद्रोह

हजारो सनिक ग्रपनी बदूके फेंककर झुण्ड के झुण्ड मोर्चे से लौट रहे थे। वे टिड्डी दला की भाति रेलगाडियो, राजपथो ग्रौर जलमार्गो से गतव्य स्थानो की ग्रार ग्रग्रसर होते। वे रेलगाडियो मे खचाखच भरे हुए थे, छता ग्रौर प्लेटफार्मो पर बैठे हुए थे, यहा तक कि डिब्बा के पायदाना पर

जार अलक्सान्द्र तृतीय की मूर्ति हटायी जा रही है

इस पोस्टर म कहा गया है "कज़ाक, तुम किसके साथ हो? हमारे अथवा उनके साथ?'

स्थाना पर अलाव जलत रहते थे, जिनकी लौ वेदी की ज्योति की भाति था। आग के गिद लम्बे कोट पहने सैनिक चौकसी करते रहते थे। यहा अगणित गरीवा और अभावग्रस्त व्यक्तिया की आशाए एव अभ्यथनाए केन्द्रीभूत था। यही वे दीघकालीन उत्पीडन और अत्याचारा से मुक्ति पाने की आशायें लगाये हुए थे। यही उनके जीवा मरण की समस्याग्रा को हल करने का प्रयास हो रहा था।

उस रात मैंने फटे-पुराने कपडे पहन एक दुबले पतले मजदूर को अधेरे माग पर धीरे धीरे आगे बढते हुए दखा। उसने अचानक अपना सिर ऊचा उठाकर स्मोल्नी के विशाल अग्रभाग की ओर दखा, जो गिरती हुई बफ के बीच जगमगा रहा था। सिर से टोपी उतारकर वह अपने हाथो को फैलाए हुए वहा कुछ क्षण खडा रहा। उसके बाद जोरा से चिल्लाता हुआ "कम्युन! जनता! क्रान्ति!", वह आगे बढा और दरवाजो से प्रवाहमान भीड मे शामिल हो गया।

ये प्रतिनिधि युद्ध के मार्चे, निष्कासन जेलो और साइबेरिया से स्मोल्नी पहुचे थे। वर्षो तक उन्ह पुराने साथियो के बारे म कोई सूचना नही मिली थी। अब अचानक एक-दूसरे को पहचानकर वे खुशी से चिल्ला उठते, एक-दूसरे से गले मिलते, कुछ कहते सुनते और क्षणिक आलिगन के पश्चात् वे शीघ्रता से सम्मेलनो, दल की बैठको और अन्तहीन सभाग्रो म व्यस्त हो जाते।

स्मोल्नी अब सावजनिक सभा के बडे मच के सदृश हो गया था, जहा विशाल शिल्पशाला के कोलाहल की भाति सशस्त्र क्रान्ति के लिए आह्वान करनेवाला की हुकार, श्रोताग्रो की सीटिया अथवा फश पर पैर पटकने की आवाजें, चुप कराने के लिए घटी बजने की आवाज, सन्तरियो के हथियारा की खनखनाहट, सीमेन्ट के फश पर मशीनगना की रगड और क्रान्तिकारी गीता का समवेत गान सुनाई पडता था और जो लेनिन और जिनोव्येव के गुप्त स्थान से वहा प्रकट होने पर तुमुल हषध्वनि एव तालियो की गडगडाहट से गूज उठा था।

हर चीज वहा तीव्र गति से हो रही थी, वातावरण मे तनाव था, जो प्रति क्षण वढता जा रहा था। प्रमुख कायकर्त्ता तो मानो अन्तहीन शक्ति स ओतप्रात थे, उनकी काय-क्षमता चमत्कारपूण थी, क्याकि वे बिना सोए,

त्रिना थके काय मे सलग्न थे और क्रान्ति की महत्त्वपूर्ण समस्याओं का साहस के साथ सामना कर रहे थे।

२५ अक्तूबर (७ नवम्बर) की इस रात को दस बजकर चालीस मिनट पर ऐतिहासिक बैठक शुरू हुई, जिसके परिणाम रूस और सारे ससार के भविष्य के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण एव प्रभावकारी होनेवाले थे। अपने अपने गुटो की बैठको से प्रतिनिधि विशाल सभा-कक्ष मे आये। बोल्शेविक विरोधी दान सभापति था। उसने चुप रहने के लिए घटी बजाते हुए घोषणा की, "सोवियतो की दूसरी काग्रेस के प्रथम अधिवेशन की कार्यवाही अब शुरू होती है। '

सर्वप्रथम काग्रेस की कार्यसचालन समिति (अध्यक्ष-मण्डल) का चुनाव हुआ। बोल्शेविको के १४ सदस्य चुन गए। अन्य सभी दलो को ११ स्थान मिले। पुरानी कार्य सचालन समिति मच से हट गयी और बोल्शेविक नेताओं ने, जो अभी हाल तक रूस के बहिष्कृत एव गैरकानूनी व्यक्ति थ, उनका स्थान ग्रहण किया। दक्षिणपथी दलो ने, जिनम मुख्यत बुद्धिजावी थे, प्रमाण पत्रो और कार्यक्रम पर आपत्ति के साथ अपना हमला शुरू किया। वे वाद विवाद म माहिर थे। वे कोरी बातो मे ही अपना कमाल दिखाते थे। वे सिद्धान्त और कार्यपद्धति के बारे म सूक्ष्म प्रश्न उठाते थे।

तभी अचानक उस रात के अधकार को भेदनेवाली प्रचण्ड गडगडाहट स प्रतिनिधि सन्नाटे म आ गये, अपने स्थानो से उछल पडे। यह तोप की दनदनाहट थी, क्रूजर 'अव्रोरा ने शिशिर प्रासाद पर गोला फेंका था। दूरी के कारण गडगडाहट धीमी एव दबी दबी सुनाई पडती थी, मगर वह सतत तथा क्रमबद्ध थी। यह गडगडाहट पुरानी व्यवस्था के अत की सूचक थी, नई व्यवस्था के आगमन का अभिवादन-गीत थी। यह जन समुदाय की आवाज थी, जो 'अव्रोरा की गडगडाहट के रूप म प्रतिनिधियो के सम्मुख यह माग प्रस्तुत कर रही थी, "**सारी सत्ता सोवियतो को दो!**"। इस प्रकार वस्तुत काग्रेस के सम्मुख यह प्रश्न रखा गया क्या प्रतिनिधि सोवियतो को रूस की सरकार घोषित करेंगे और इस नयी सरकार को वैधानिक आधार प्रदान करेंगे?

बुद्धिजीविया ने जन समुदाय का साथ छोडकर इतिहास का एक विस्मयकारी विरोधाभास और इसका एक अत्यन्त दु खद परिच्छेद प्रस्तुत किया। प्रतिनिधियो मे इस प्रकार के बीसियो बुद्धिजीवी थे। उन्होने "अज्ञानता के अधेरे मे भटकनेवाले लोगो" को अपनी निष्ठा का लक्ष्य बना रखा था। "जनता के निकट जाना' उनके लिए कभी धार्मिक कृत्य था। उन्होने जनता के लिए गरीबी, कारावास दण्ड और निष्कासन की यन्त्रणाए सहन की थी। उन्होने निष्चेष्ट जन समुदाय मे क्रातिकारी विचारो से जागरण की भावना पैदा की थी और उन्हे क्रान्ति के लिए प्रोत्साहित किया था। उन्होने अटूट रूप से जनता के चरित्र एव औदार्य की सराहना की थी। या कहना चाहिए कि बुद्धिजीवियो ने जनता को देवता बना दिया था। अब जन समुदाय देवता के आक्रोश एव वज्र ध्वनि के साथ विद्रोह के लिए सन्नद्ध हो रहा था और अब वह अपने विवेक के अनुसार दढता स काम करन को कटिबद्ध हो गया था। वह देवता के समान ही अपना स्वरूप प्रस्तुत कर रहा था।

परतु बुद्धिजीवी उस देवता को स्वीकारने को तैयार नही थे, जो उनकी बाता पर कान नही देता था और जो उनके वश से बाहर हो चुका था। बुद्धिजीवी अब नास्तिक हो गये थे। अपने भूतपूव देवता—जन समुदाय मे उनकी बिल्कुल आस्था नही रही थी। वे क्राति करने के उनके अधिकार को स्वीकार नही करते थे।

जिस जन समुदाय को बुद्धिजीवियो ने क्रान्ति के लिए जगाया था उसे अब अपने ही लिए खतरनाक मानकर वे त्रस्त थे, भय से काप रहे थे और आवेश से लाल पीले हो रहे थे। वे इसे अनधिकृत चेष्टा, पशाचिक कृत्य और भयानक सकट कहते थे, उनके अनुसार यह रूस को अराजकता के गत मे झोकना था और यह "सरकार के खिलाफ अपराधमूलक विद्रोह था"। वे जनता के विरुद्ध हो गये थे, उसके विरुद्ध बकते झक्ते और गालिया देते थे, उसकी आरजू मिनत करते थे तथा आग-बबला होकर अनाप शनाप बकने थे। उन्होंने प्रतिनिधियो की हैसियत से इस क्राति को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होने इस काग्रेस को यह अनुमति

प्रदान करने से इनकार कर दिया कि वह सोवियतों को रूस की नयी सरकार घोषित करे।

कितनी बेमानी, कितनी बेतुकी बात थी यह! इस क्रान्ति को न मानना तो ज्वार-तरंग अथवा ज्वालामुखी के विस्फोट को न मानने के समान था। यह क्रान्ति सर्वथा अनिवार्य अपरिहार्य थी। इसे सर्वत्र, बैरकों, खाइयों, कारखानों और सड़कों पर देखा जा सकता था। यहां, इस कांग्रेस में भी सैकड़ों मजदूर, सैनिक और किसान प्रतिनिधियों के माध्यम से क्रान्ति का स्वर औपचारिक रूप से गूंज रहा था। इस हाल की इंच इंच जगह को घेरे हुए, खम्भों और खिड़कियों के दासों पर चढ़े हुए, एक-दूसरे के साथ सटे हुए और भावनाओं की गर्मी से वातावरण को गर्माते हुए लोगों के माध्यम से क्रान्ति का अनौपचारिक रूप दिखाई दे रहा था।

लोग यहां इसलिए जमा थे कि उनके क्रान्तिकारी सकल्प की पूर्ति हो, कि कांग्रेस सोवियतों को रूस की सरकार घोषित करे। इस प्रश्न पर वे अटल थे। इस प्रश्न पर आवरण डालने के हर प्रयास, इस सकल्प को विफल करने अथवा इसे टालने की हर चेष्टा का आक्रोशपूर्ण विरोध किया जाता था।

दक्षिणपंथी पार्टियां इस प्रश्न पर लम्बे-लम्बे प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहती थी। भीड़ व्याकुल थी। लोगों का कहना था – 'अब अधिक प्रस्तावों की जरूरत नही है! अब अधिक भाषणों की आवश्यकता नही है! हम कार्य चाहते हैं! हम सोवियतों की सरकार चाहते है!'

बुद्धिजीवी अपनी परम्परा के अनुसार सभी दलों की संयुक्त सरकार के प्रस्ताव के आधार पर इस प्रश्न को समझौते से हल करना चाहते थे। उन्हें यह मुंहतोड़ उत्तर मिला, 'केवल एक ही सहमिलन संभव है – मजदूरों, सैनिकों और किसानों की संयुक्त सरकार।'

मार्तोव ने "आसन्न गृह युद्ध को टालने के ख्याल से समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान" की अपील की। इस सुझाव के उत्तर में यह नारा गूंज उठा, "विजय! विजय! – एकमात्र संभावित हल – क्रान्ति की विजय है!"

अफसर कुचिन ने इस विचार को प्रस्तुत कर उन्हें आतंकित करने की कोशिश की कि सोवियतें अलग-थलग पड़ गई हैं और पूरी सेना इनके खिलाफ है। सैनिक गुस्से से चिल्ला ... 'तुम ... ' तुम फौजी हाई कमान की ओर से बोल रहे हो ... से नहीं!

हम सनिको की माग है 'सारी सत्ता सोवियता को दो!'"

उनका सकल्प इस्पात के समान दृढ था। अनुनय विनय से न तो यह झुक सकता था, न धमकिया से टूट ही सकता था।

अन्त मे अब्रामोविच ने अगारा बनते हुए चिल्लाकर कहा, "हम यहा मौजूद रहकर इन अपराधो के लिए जिम्मेदार नही होना चाहते। हम सभी प्रतिनिधियो से इस काग्रेस से अलग हा जाने का अनुरोध करते है।" बडी ही नाटकीय भाव-भगिमा के साथ वह मच से नीचे आया और दरवाजे की आर लपका। करीब अस्सी प्रतिनिधि अपने स्थाना से उठकर उसके पीछे पीछे चल दिए।

त्रात्स्की ने उच्च स्वर मे कहा, "उन्हे जाने दो, जाने दो! वे बिल्कुल कूडे-करकट के समान ह और इतिहास के कचरे के ढेर मे समाहित हा जायेंगे।"

ताने बोलिया, उपहास और व्यग्य बाणो—"भगोडे! गद्दार!"—के बीच बुद्धिजीवी सभा कक्ष से बाहर चले गये और क्राति से अलग हो गये। यह एक बहुत ही दु खद घटना थी। बुद्धिजीवियो ने जिस क्राति का जन्म देने मे सहायता की थी, अब उन्होंने उसी से मुह मोड लिया था सघर्ष के कठिनतम क्षण मे जनता से नाता तोड लिया था! यह सबसे बडी मूर्खता भी थी। वे सोवियतो को विलग नही कर सके, उन्होंने खुद अपने को अलग कर लिया था। सोवियतो को जन-समुदाय का अपार ठोस समर्थन प्राप्त होता जा रहा था।

सोवियता को सरकार के रूप मे घोषित किया गया

प्रति क्षण क्रान्ति की विजय की ताजी सूचनाए प्राप्त हो रही थी—मत्रियो की गिरफ्तारी, राजकीय बैंक, तारघर, टेलीफोन-केन्द्र और फौजी हाइ कमान के सदर-मुकाम पर कब्जे की खबरे मिल रही थी। एक के बाद एक सत्ता के केन्द्र लोगो के कब्जे म आते जा रहे थे। पुरानी सरकार की नाम मात्र की सत्ता विद्रोहिया के हथौडो की चोट से खण्ड-खण्ड होकर गिर रही थी।

एक कमिसार ने, जो घोडे की तेज सवारी के कारण हाफ रहा था और जिसके कपडा पर कीचड के छीटे पडे हुए थे, मच पर चढकर यह

सूचना दी, 'राष्ट्रीय रेलों की गढ़ मना सावियता के पक्ष म है। वह पत्रोग्राद के सिंहद्वारा की रक्षा के लिए मुस्तैद खडी है।' दूसरे कमिसार स यह सूचना मिली, "साइक्लि सवार सैनिका का बटालियन सावियता के साथ है। एक भी सैनिक अपने भाइया का खून बहान को इच्छुक नहा है। इसके बाद क्रिनेको हाथ म तार लिये, लडखडाते हुए मच पर चढा और बोला, "बारहवी सेना की ओर से सावियत का अभिवादन! सैनिक समिति उत्तरी मोर्चे की कमान अपन हाथ म ल रही है।"

अतत इस कोलाहलपूण रात की समाप्ति पर वाद विवाद और सकल्पा के टकराव के बाद यह स्पष्ट एव सुगम घोषणापत्र स्वीकृत हुआ

> अस्थाई सरकार अपदस्थ कर दी गई। मजदूरा, सनिका और किसानो के भारी बहुमत की आकाक्षा के अनुकूल सोवियतो की यह काग्रेस सत्ता ग्रहण कर रही है। सोवियत सरकार तत्काल सभी राष्ट्रा के सम्मुख जनतात्रिक शान्ति और सभी मोर्चों पर तत्काल विराम सधि का प्रस्ताव रखेगी। यह बिना किसी मुआवजे के जमीना का हस्तातरण सुनिश्चित करेगी " आदि।

खुशी का पारावार न रहा! एक दूसरे को बाहो म लिए लोगो की आखो से खुशी के आसू छलक रहे थे। सन्देशवाहक तेजी से सूचनाए पहुचाने के लिए रवाना हो गये थे। तार टेलीफोन लगातार काम कर रहे थे। लडाई के मोर्चों की ओर मोटरगाडिया तेजी से भागी जा रही थी। नदियो और मदानो को पार करते हुए विमान द्रुत गति से उडते चले जा रहे थे। रेडियो से समुद्रो के पार सूचनाए पहुच रही थी। सभी साधना से इस सर्वाधिक महत्त्वपूण सवाद को प्रेषित किया जा रहा था।

क्रातिकारी जन समुदाय के सकल्प की विजय हुई थी। सोवियतो ने सरकार का रूप ले लिया था।

सुबह ६ बजे ऐतिहासिक अधिवेशन समाप्त हुआ। प्रतिनिधिगण थकावट से चूर थे रात भर जगन के कारण उनकी आखे धसी हुई थी। फिर भी वे बहुत खुश थे और पत्थर की सीढियो और दरवाजो का लाघते हुए स्मोल्नी के बाहर निकल रहे थे। बाहर अभी अन्धेरा और बडी सर्दी थी, मगर पूव म लाल पौ फट रही थी।

शिशिर प्रासाद की लूट

रूसी कवि त्यूत्चेव ने लिखा है –

जो निणायक कृत्यो के क्षणो म
यहा की गतिविधि का अवलोकन कर सका
वह भाग्यवान है।
महोत्सव को स्वय देखने के लिए
सर्वाधिक लोकप्रिय नेताओ ने
उस महाभाग को निमत्रित किया
और वह इस महान गौरवशाली दृश्य का
प्रत्यक्षदर्शी बन गया।

हम पाच अमरीकी – लुइसे ब्रयात, जान रीड, बेस्सी बिट्टी, अलेक्स गाम्बेग और मैं – भी भाग्यवान थे, क्योकि हमे इस महान गौरवशाली दश्य को देखने का अवसर मिला। हमने स्मोल्नी के बडे हाल मे हुई नाटकीय घटनाओ को देखा। हमने ७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) की रात की दूसरी बडी ऐतिहासिक घटना – शिशिर प्रासाद पर क्रान्तिकारी जन-समुदाय के आधिपत्य – को भी देखा।

हम स्मोल्नी के बडे हाल मे वक्ताओ के धुआधार भाषणा की तरगा मे बह रहे थे कि अधेरे को चीरती हुई उस प्रकाशमान हाल म एक दूसरी आवाज – क्रूजर 'अव्रोरा' की तोप द्वारा शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी की आवाज हमे सुनाई दी। 'अव्रारा की तोप की सुदढ और चुनौती देती हुई आवाज सुनाई पड रही थी, जो भविष्य की सूचक थी और इससे वक्ताआ का हम पर जो जादू था वह काफूर हो गया। हम इस आवाज की अवहेलना न कर सके और तेजी से बाहर निकल गये।

बाहर एक बडी ट्रक नगर म जान के लिए तैयार खडी थी, उसका इजन घरघरा रहा था। हम उस पर सवार होकर रात के सन्नाटे को चीरते

हुए बढे और अपने पीछे परचो की सफेद पूछ छोडते चले। दरवाजो से धुधली आकृतिया बाहर आकर परचो को अपने हाथो मे ले लेती थीं। उनमे लिखा था

मजदूरो और सैनिको के प्रतिनिधियो की पेत्रोग्राद सोवियत की क्रातिकारी सनिक समिति की ओर से

रूस के नागरिको के नाम

अस्थाई सरकार अपदस्थ कर दी गई। मजदूरो और सनिको के प्रतिनिधियो की पेत्रोग्राद सोवियत के सगठन, क्रातिकारी सैनिक समिति, जो पत्रोग्राद सवहारा वग और नगर की रक्षाथ स्थापित सेना की अगुआ है, के हाथ मे राज्यसत्ता आ गई है।

लोग जिन उद्देश्यो के लिए सघप कर रहे थे—जनवादी शाति के लिए तत्काल प्रस्ताव, जमीन पर जमीदारो के स्वामित्व का अन्त, उत्पादन पर मजदूरो का नियत्रण, सोवियत सरकार का गठन—उनम सफलता प्राप्त हो गई।

मजदूरो, सैनिको और किसानो की क्राति जिन्दावाद!

मजदूरो और सनिको के प्रतिनिधियो की
पेत्रोग्राद सोवियत की क्रातिकारी सनिक समिति

२५ अक्तूबर १९१७

(देखिय पृष्ठ १०७)

घोषणा घटना की पूवसूचना थी। केरेन्स्की को छोडकर अस्थाई सरकार के मत्रिगण अभी शिशिर प्रासाद म मत्रिपरिषद की बैठकों मे भाग ले रहे थे। इसी कारण क्रूजर 'अव्रोरा' की तोपें गरज रही थीं। उनकी गडगडाहट मत्रियो को आत्म-समपण करने के लिए चेतावनी दे रही थी। यह सच है कि केवल आवाजी गोले दागे जा रहे थे, परन्तु इससे वातावरण

Отъ Военно-Революціоннаго Комитета при Петроградскомъ Совѣтѣ Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ

Къ Гражданамъ Россіи.

Временное Правительство низложено. Государственная власть перешла въ руки органа Петроградскаго Совѣта Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ Военно-Революціоннаго Комитета, стоящаго во главѣ Петроградскаго пролетаріата и гарнизона.

Дѣло, за которое боролся народъ немедленное предложеніе демократическаго мира, отмѣна помѣщичьей собственности на землю, рабочій контроль надъ производствомъ, созданіе Совѣтскаго Правительства — это дѣло обезпечено

ДА ЗДРАВСТВУЕТЪ РЕВОЛЮЦІЯ РАБОЧИХЪ, СОЛДАТЪ И КРЕСТЬЯНЪ!

Военно-Революціонный Комитетъ при Петроградскомъ Совѣтѣ Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ

25 октября 1917 г. 10 ч. утра

कम्पायमान था महल हिल रहा था और मंत्रियों के मन में घबराहट पैदा हो रही थी।

जब हम द्वार्तोवाया चौक में पहुंचे, तो तोपों की गड़गड़ाहट बन्द हो गई थी। रात के अंधेरे में राइफलों के दगने की आवाज भी अब नहीं सुनाई पड़ती थी। लाल गार्ड अब रेंगते हुए अपने मृत साथियों की लाशें उठा रहे थे अथवा मरणासन्न साथियों को उठाकर ले जा रहे थे। उस रात के अंधेरे में यह आवाज गूंज उठी, 'युंकरों ने आत्मसमर्पण कर दिया।' परन्तु अपनी क्षति को ध्यान में रखते हुए घेरा डालनेवाले नाविक एवं सैनिक अभी भी अपनी जगह पर डटे हुए थे।

प्रासाद में भीड़ का प्रवेश

नेव्स्की मार्ग पर नयी भीड़ जमा हो रही थी। टुकड़ियों के रूप में विजय मेहराब से होकर वह शांतिपूर्वक धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। बैरिकेडों के निकट महल की खिड़कियों से छनछनकर बाहर आनेवाली रोशनी भीड़ पर पड़ी। भीड़ के अगले भाग के लोग लट्ठों की आड़ को पार कर लौह द्वार से होते हुए पूर्वी दरवाजों से घुसे और उनके पीछे-पीछे बहुत बड़ी संख्या में बाकी भी महल के अन्दर प्रविष्ट हो गये।

सर्वहारा वर्ग के ये लोग शीत और अंधेरे से सहसा महल के गर्म और प्रकाशमान कमरों में पहुंच गए। वे अपने घरौंदों और बैरकों से महल के चमकदार अतिथि कक्ष एवं सुनहले रंग से रंगे कमरों में आ गए। यह सचमुच क्रांति ही थी—इस प्रासाद के निर्माता अब इसमें प्रवेश कर रहे थे।

फिर महल भी तो कैसा शानदार था! सोने और कांसे की प्रतिमाओं से सुसज्जित कमरे, फर्श पर पूर्वी देशों के गलीचे, दीवालें शोभा-वस्त्रों एवं चित्रों से अलंकृत, क्रिस्टल के जगमगाते झाड़-फानूसों की दिव्य रोशनी से सभी कक्ष प्रकाशमान और शराब के तहखाने विविध प्रकार की उत्कृष्ट मदिरा की बोतलों से भरे हुए थे। उनकी कल्पना से बाहर यहां विविध प्रकार की मूल्यवान वस्तुएं अब उनकी पहुंच के भीतर थीं। वे सोच रहे थे—तो इन्हें हथिया क्यों न लिया जाये?

जिस प्रकार दीर्घकाल से बुभुक्षित व्यक्ति खाने पर टूट पडते हैं और अच्छी वस्तुए न पानेवाले के मन मे चित्ताकर्षक चीजो को हस्तगत करने का प्रलोभन पैदा होता है, उसी प्रकार महल मे प्रविष्ट भीड सभी सुन्दर एव आकर्षक वस्तुओ को हथिया लेना चाहती थी—लूट लेने की उत्कट इच्छा लोगो के मन मे पैदा हो गई थी। यहा तक हम दर्शकगण भी, इस भावना से सर्वथा मुक्त नही थे। लोगो का रहा सहा सयम भी खत्म हो गया था और लूट पाट एव छीना झपटी की तीव्र लालसा पैदा हो गई। उनकी नजर बहुमूल्य वस्तुओ पर टिकी हुई थी और हाथ उनकी ओर बढ रहे थे।

मेहराबदार कमरे की दीवारो के साथ साथ सामान से भरे हुए बडे बडे बक्से रखे थे। सैनिको ने अपनी राइफलो के कुदो से पीट पीटकर बक्सो को खोल दिया और पर्दे, लिनन के कपडे, दीवार घडिया अलकृत फूलदान और प्लेटे बाहर बिखर पडी।

लूट पाट की इन छोटी मोटी चीजो का तिरस्कार से देखते हुए भीड ऐसे कमरो की ओर बढती गई, जहा अधिक बहुमूल्य वस्तुए थी। जो लोग आगे थे, वे अलकृत कमरो से होते हुए और भी अधिक सजे धजे कमरो मे पहुचे, जहा अच्छे सामानो से भरी अलमारिया थी। खुशी से और चीखते चिल्लाते हुए वे उन पर टूट पडे। उसके बाद क्रोध, असतोष और उद्वेग के स्वर गूज उठे। उन्होने देखा कि शीशे टूटकर बिखरे हुए हैं ठोकरो की मार से चौखटे टूटे हुए हैं, दराजो मे रखे सामान लूटे जा चुके हैं और सबके इसके पूर्व हुई लूट पाट के चिह्न दृष्टिगोचर थे। युकरो ने सबसे अच्छी एव बहुमूल्य वस्तुए पहले ही लूट ली थी।

बहुतेरी बहुमूल्य चीजें तो गायब हो चुकी थी। जो अच्छी चीजें बाकी रह गई थी, उन्हे हथियाने की और अधिक तीव्र होड मच गई। इस महल और उसकी वस्तुओ पर उनके अधिकार को कौन अस्वीकार कर सकता था? यह सब कुछ उनके और उनके पूर्वजो के परिश्रम का फल था। यह रचना के अधिकार से उनकी चीजें थी। विजय की दृष्टि से भी ये वस्तुए उन्ही की थी। अपने हाथो मे आग उगलनेवाली बन्दूकें लिये हुए और हृदय मे साहस बटोरकर उन्होने इस महल पर अपना अधिकार स्थापित किया था। मगर कितने समय तक वे इस पर अपना कब्जा कायम रख सकेगे।

एव गनी तर यह जार का था। तब इस पर केरेन्स्की का प्रभुत्व था। आज य" मजदूरा वग का है। तब यह किसर अधिकार म होगा? इस जार म कोई कुछ नहा कह सकता। आज के दिन क्राति न इस मजदूरा वग के हाथ म सौंप दिया था। हो सकता है कि कल प्रतिक्रान्ति इस इनक हाथ स छीन ल। अब चूंकि विजय क बाद उन्ह यह सुनहरा मौका मिला है ता व अधिक स अधिक मान हस्तगत क्यो न कर ल? यदी वह समय था जब एव शताब्दी तक दरबारियो न गुलछर्रे उडाय थ, तो क्या व एव रात भी यहा मनाविनाद नहीं कर सकत? बबर अत्याचारो एव उत्पीडना स पूण उनका अतीत आकुल वतमान और अनिश्चित भविष्य– यह सब उन्ह जो कुछ हाथ लगे, उस हथियान का प्रेरित कर रहा था।

महल म हुडदग का बोलबाला था। बेशुमार व्यक्तियो की आवाजा की प्रतिध्वनि गूज रही थी। कपडे और परद फाडे जा रहे थे। लकडी की वस्तुए तोडी जा रही थी, टूटी खिडकियो के शीशे चूर चूर होकर फश पर गिर रहे थे, लकडी के चित्रकारी युक्त आकषक फश पर भारी बूटो की धप धप सुनाई दे रही थी और हजारो कण्ठो का स्वर छत से टकरा-टकराकर गूज रहा था। हर्षोन्मत्त आवाजें और फिर लूट पाट की वस्तुओ के बटवारे के प्रश्न पर वाग्युद्ध भी सुनाई देता। खरखरी फटी आवाजें, चीख चिल्लाहट भुनभुनाहट और गाली गलौज भी सुनाई पडती थी।

इस हगामे के बीच एक दूसरी आवाज–क्रान्ति की स्पष्ट और जोरदार आवाज सुनाई दी। यह आवाज थी क्रान्ति के परमनिष्ठावान समथको–पत्रोग्राद क मजदूरो की। व मुट्ठी भर थे, मुरझाय हुए, मगर लम्बे तडगे कृषक सैनिको के इस बडे समूह क बीच घुसकर वे जोरो स कह उठे, "यहा स कुछ मत उठाओ! क्रान्ति इसका निषेध करती है! लूट पाट बिल्कुल नहीं होनी चाहिए! यह सब कुछ जनता की सम्पत्ति है!"

इस दश्य को देखकर ऐसा लगा मानो बच्चे प्रचण्ड चक्रवात के विरुद्ध सीटी बजा रहे हो भीमकाय सैनिको के बडे समूह पर बौने चढ आये हो। व शब्दो से विजय के दप से फूले हुए और लूट पाट करन पर उतारू सैनिको को रोकना चाहते थे, किन्तु बेसूद लूट पाट जारी रही। आखिर भीड थोडे स मजदूरो क विरोध की क्या परवाह करती?

परन्तु इन मजदूरा की बाता पर ध्यान देना ही पडा। उन्हे मालूम था कि उनके शब्द शान्ति व दृढ सकल्प को व्यक्त करते है। इसी कारण वे निडर और दबग थे। वे बडे शीघ्र मे भीमकाय सैनिको पर बरस पडते, वे जली कटी सुनाते और उनके हाथो से लूट पाट की चीजे छीन लेते। उन्होने बहुत जल्द ही सैनिको को अपनी सफाई देने की स्थिति मे डाल दिया।

एक लम्बधडग किसान एक भारी ऊनी कम्बल लिये भागा जा रहा था। एक नाटे मजदूर ने उसे रास्ते म ही घेर लिया। उसने लपककर कम्बल पकडा और एक सिरे को जोर से खीचते हुए किसान को उसी प्रकार फटकारना शुरू किया, जैसे गलत काम करने पर बच्चे को डाटा जाता है। तीव्र आवेश से किसान का चेहरा तमतमा उठा और उसने गुर्राते हुए कहा

"कम्बल छोड दो! यह मेरा है।'

मजदूर ने जोर से कहा, "नही, नही, यह तुम्हारा नही है। यह जनता का है। आज रात महल से कोई भी चीज कोई बाहर नही ले जा सकता।

'तो आज रात म इस कम्बल को जरूर ले जाऊगा। बरफ म बडी सर्दी है।'

"कामरेड, मुझे दुख है कि तुम्हे सर्दी से कष्ट है। मगर तुम्हारी लूट पाट से क्रान्ति कलकित हो, इससे बेहतर यही है कि तुम जाडा बदाश्त करो।"

किसान ने झल्लाकर कहा, 'तुम पर शतान की मार! आखिरकार हमने किसलिये क्रान्ति की? क्या यह लोगो को वस्त्र और भोजन देने के लिये नही की गई?'

"हा, कामरेड, आज रात नही, परतु उपयुक्त समय पर क्राति आपकी जरूरत के अनुसार आपको हर चीज प्रदान करेगी। यदि इस महल से बाहर कोई भी चीज गई, तो हम सच्चा समाजवादी नही बल्कि आवारा और लुटेरा कहा जायगा। हमारे शत्रु यह कहेगे कि हम क्रान्ति के लिये नही, बल्कि लूट पाट के लिये यहा आये थे। इसलिये हमे यहा की कोई

चीज नष्ट नहीं करनी चाहिए। यह जनता की सम्पत्ति है। क्रान्ति की प्रतिष्ठा के लिए हम यहां की चीजों की रक्षा करनी चाहिए।"

समाजवाद, क्रान्ति, जनता की सम्पत्ति – इनके नाम पर कम्बल उससे छीन लिया जायगा। सदा ऐसे ही शब्दों तथा इसी प्रकार की अस्पष्ट धारणाओं के नाम पर उससे चीजें उससे छीनी जाती रही हैं। कभी 'ईश्वर की महिमा स्वरूप जारशाही' के नाम पर यह काम हुआ करता था। अब "समाजवाद, क्रान्ति, जनता की सम्पत्ति" के नाम पर वही हो रहा था।

परन्तु इसके बावजूद इस अंतिम धारणा में कुछ ऐसी बात थी, जिसे किसान समझ सकता था। यह उसकी सामुदायिक मानसिक गठन के अनुकूल थी। जब यह धारणा उसके मस्तिष्क में बैठ गई तो उसी कम्बल हथियाने का विचार उसके दिमाग से गायब होने लगा और अपनी बहुमूल्य निधि पर अंतिम मर्मभेदी निगाह डालकर वह वहां से धीरे धीरे चल पड़ा। बाद में मैंने उसे एक अन्य सैनिक को यही बात विस्तृत रूप से समझाते देखा। वह 'जनता की सम्पत्ति' की चर्चा कर रहा था। मजदूरों ने लूट पाट रोकने के लिए अनुनय विनय की, समझाया-बुझाया और जरूरत पड़ने पर धमकी भी दी और वे सफल हुए। महल के एक शयन-कक्ष में एक बोल्शेविक मजदूर गुस्से से अपना एक हाथ हिलाकर तीन सैनिकों को धमका रहा था और उसका दूसरा हाथ उसकी पिस्तौल पर था। उसने जोर से कहा

'यदि तुम लोगों ने उस मेज का स्पर्श किया, तो तुम्हें मुझे इसका जवाब देना होगा।'

सैनिकों ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा "ओहो, तुम्हें जवाब देना होगा! तुम हो कौन? हमारी ही तरह तुम भी महल में घुस आये हो। हम और किसी के सामने नहीं, केवल अपने ही सामने जवाबदेह हैं।"

मजदूर ने सख्ती से प्रत्युत्तर में कहा "तुम लोग क्रान्ति के सामने जवाबदेह हो।" वह अपने वक्तव्य के प्रति इतना अधिक निष्ठावान था कि इन तीनों सैनिकों ने उसमें क्रान्ति के अधिकार को महसूस किया। उन्होंने उसकी बातें सुनीं और उसके आदेश का पालन किया।

क्रान्ति ने जन समुदाय में साहस और जोश पैदा किया था। इसने उन्हें शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने के लिए उत्प्रेरित किया था। अब वह उन्हें नियंत्रित कर रही थी। वह गुल गपाड़े की जगह शान्ति और

व्यवस्था कायम करने, भीड की भावना को नियंत्रित करने की दिशा में प्रयत्नशील थी, जगह जगह सन्तरी तैनात किये जा रहे थे।

गलियारों में यह आवाज गूंज उठी, "सभी लोग बाहर चले जायें, महल से भीड़ बिल्कुल हट जाय, और इस निर्देश के अनुसार भीड़ दरवाजों की ओर बढ़ने लगी। सभी दरवाजों पर तलाशी और निरीक्षण के निमित्त आत्म नियुक्त समिति के सदस्य खड़े थे। वे बाहर निकलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की तलाशी लेते थे उनकी जेबों, कमीजों और यहां तक कि जूतों को भी पैर से निकलवाकर देखते थे। इस तलाशी के फलस्वरूप विविध प्रकार की स्मारिकाएं जैसे छोटी छोटी मूर्तियां मोमबत्तियां कपड़े टांगने की खूंटियां, बेलबूटेदार रेशमी वस्त्र, सजावटी गिलास फूलदान आदि वहां जमा हो गए। इन चीजों को हथियानेवाले बच्चों की भांति इन्हें ले जाने की अनुमति देने के लिए अनुनय विनय करते मगर उक्त समिति अपने निश्चय पर अडिग रहती और उसके सदस्य लगातार यही कहते जाते, "आज रात इस महल से कोई भी चीज बाहर नहीं जायेगी।

और उस रात लाल गार्डों द्वारा रक्षित महल से कुछ भी कोई बाहर न ले जा सका, गो कि चोर लुटेरे बाद में बहुत सी बहुमूल्य वस्तुएं लेकर चम्पत हो गए।

अब कमिसारों ने अस्थाई सरकार और उसके समर्थकों की ओर ध्यान दिया। उन्हें पकड़कर बाहर लाया गया। सबसे आगे आगे मंत्री थे, जिन्हें राजकीय हाल में हरे रंग के ऊनी कपड़े से सज्जित मेज के चारों ओर बैठे पकड़ा गया था। वे चुपचाप पंक्तिबद्ध बाहर निकले। भीतर जो भीड़ रह गई थी, उसने न तो एक शब्द कहा और न इनका मजाक उड़ाया। मगर बाहर जब एक नौसैनिक ने मोटरगाड़ी लाने को कहा, तो एकत्र भीड़ ने भयभीत मंत्रियों को धकियाते हुए जोरों से चिल्लाकर कहा, "उन्हें पैदल ले जाओ। बहुत दिनों तक मोटरों पर सवारी कर चुके हैं। तनी हुई संगीनों के साथ लाल नौसैनिक अपने बंदियों को चारों ओर से घेरकर उन्हें नेवा नदी के पुलों के पार ले गये। बंदियों के उस समूह में लम्बे कद के उजड्डनी पूंजीपति तेरेश्चेंको का सिर सबसे ऊपर दिखाई दे रहा था, जिसे नौसैनिक अब विदेश मंत्रालय से पीटर पाल जेल में डालने के लिए ले जा रहे थे और उसके स्थान पर बाल्शेविक त्रात्स्की को विदेश मंत्रालय लायेंगे।

चीज़ नही लनी चाहिय। यह जनता की म
के लिय हम यहा की चीजो की रक्षा करनी

समाजवाद, क्रान्ति, जनता की सम्पत्ति —
लिया जायगा। सदा ऐस ही शब्दा, इसी प्रकार व
चीजे उमस छीनी जाती रही ह। कभी ईश्वर
क नाम पर यह काम हुआ करता था। अब
की सम्पत्ति ' के नाम पर वही हा रहा था

परन्तु इसके बावजूद इस अतिम धारणा
किसान समझ मकता था। यह उसकी सामुदायि
थी। जब यह धारणा उसके मस्तिष्क म बैठ ग
का विचार उसके दिमाग से गायब हाने लगा
पर अतिम ममभेदी निगाह डालकर वह वहा
म मन उसे एक अय सनिक को यही बात वि
वह ' जनता की सम्पत्ति की चर्चा कर रहा
रोकन के लिए अनुनय विनय की, समझाया बु
धमकी भी दी और वे मफल हुए। महल के एक
मजदूर गुस्स से अपना एक हाथ हिलाकर तीा
और उसका दूसरा हाथ उसकी पिस्तौल पर थ

'यदि तुम लोगा न उस मेज का स्पश
जवाब देना हागा।'

सनिका न उसका मजाक उडाते हुए कहा
हागा ! तुम हो कौन ? हमारी ही तरह तुम
हो। हम और किसी के सामन नहा, केवल अप

मजदूर न गर्मी स प्रत्युत्तर म कहा,
जवाबदह हा। यह अपन कत्तव्य क प्रति इतना
इन तीना सनिका न उसम क्रान्ति के अधिकार
उसकी बात सुना और उसर आज्ञा का पालन

क्रान्ति न जन-समुदाय न आत्म और आत्म
ज ' निनिक प्रागार पर धावा बाता था निम उ
म ३ ह नियमित कर रहा थी। यह गुल-गपाड़ा

व्यवस्था कायम करने, भीड की भावना को नियंत्रित करने की दिशा में प्रयत्नशील थी, जगह जगह सन्तरी तनात किये जा रहे थे।

गलियारों में यह आवाज गूंज उठी 'सभी लोग बाहर चले जायें, महल से भीड बिल्कुल हट जाय," और इस निर्देश के अनुसार भीड दरवाजा की ओर बढने लगी। सभी दरवाजा पर तलाशी और निरीक्षण के निमित्त आत्म नियुक्त समिति के सदस्य खडे थे। वे बाहर निकलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की तलाशी लेते थे उनकी जेबों कमीजों और यहां तक कि जूतो को भी पैर से निकलवाकर देखते थे। इस तलाशी के फलस्वरूप विविध प्रकार की स्मारिकाएं जैसे छोटी छोटी मूर्तियां मोमबत्तियां रूपहले टागन की खटिया, बेलबूटेदार रेशमी वस्त्र, सजावटी गिलास फलदान आदि वहा जमा हो गए। इन चीजों को हथियानेवाले बच्चों की भांति इन्हें ले जाने की अनुमति देने के लिए अनुनय विनय करते मगर उक्त समिति अपने निश्चय पर अडिग रहती और उसके सदस्य लगातार यही कहते जाते, "आज रात इस महल से कोई भी चीज बाहर नही जायेगी।

और उस रात लाल गार्डों द्वारा रक्षित महल से कुछ भी कोई बाहर न ले जा सका, यद्यपि चोर लुटेरे बाद में बहुत सी बहुमूल्य वस्तुएं लेकर चम्पत हो गए।

अब कमिसारों ने अस्थाई सरकार और उसके समर्थकों की ओर ध्यान दिया। उन्हें पकडकर बाहर लाया गया। सबसे आगे आगे मंत्री थे जिन्हें राजकीय हाल में हरे रंग के ऊनी कपडे से सज्जित मेज के चारो ओर बैठे पकडा गया था। वे चुपचाप पंक्तिबद्ध बाहर निकले। भीतर जो भीड रह गई थी, उसने न तो एक शब्द कहा और न इनका मजाक उडाया। मगर बाहर जब एक सैनिक ने मोटरगाडी लाने को कहा, तो एकत्र भीड ने भयभीत मंत्रियों को धकियाते हुए जोरो से चिल्लाकर कहा, 'उन्हें पैदल ले जाओ। बहुत दिनों तक मोटरों पर सवारी कर चुके हैं।' तनी हुई संगीनों के साथ लाल सैनिक अपने बंदियों को चारों ओर से घेरकर उन्हें नेवा नदी के पुलों के पार ले गये। बंदियों के इस समूह में लम्बे कद के उजड्डी पूजीपति तेरश्चेन्को का सिर सबसे ऊपर दिखाई दे रहा था जिसे सैनिक अब विदेश मन्त्रालय में पीटर पाल जेल में डालने के लिए ले जा रहे थे और उसके स्थान पर बाल्शेविक त्रात्स्की को विदेश मन्त्रालय लायेंगे।

चीज रा ना चाहिए। यह जनता की सम्पत्ति है। क्रान्ति का प्रतिष्ठा के लिए हमें यहां की चीजों की रक्षा करनी चाहिए।"

समाजवाद, क्रान्ति, जनता की सम्पत्ति – इनके नाम पर कम्बल उससे छीन लिया जायगा। यहां ऐसे ही शब्द, इसी प्रकार की अस्पष्ट बातों के नाम पर उसकी चीजें उससे छीनी जाती रही हैं। कभी 'ईश्वर की महिमा स्वरूप जारशाह" के नाम पर यह काम हुआ करता था। अब "समाजवाद, क्रान्ति, जनता की सम्पत्ति के नाम पर वही हो रहा था।

परन्तु इसके बावजूद इस अन्तिम धारणा में कुछ ऐसी बात थी, जिसे किसान समझ सकता था। यह उसकी सामुदायिक मानसिक गठन के अनुकूल थी। जब यह धारणा उसके मस्तिष्क में बैठ गई, तो ऊनी कम्बल हथियाने का विचार उसके दिमाग से गायब होने लगा और अपनी बहुमूल्य निधि पर अंतिम मर्मभेदी निगाह डालकर वह वहां से धीरे धीरे चल पड़ा। बाद में मैंने उसे एक अन्य सैनिक को यही बात विस्तृत रूप से समझाते देखा। वह 'जनता की सम्पत्ति' की चर्चा कर रहा था। मजदूरों ने लूट पाट रोकने के लिए अनुनय विनय की, समझाया बुझाया और जरूरत पड़ने पर धमकी भी दी और वे सफल हुए। महल के एक शयन-कक्ष में एक बोलशेविक मजदूर गुस्से से अपना एक हाथ हिलाकर तीन सैनिकों को धमका रहा था और उसका दूसरा हाथ उसकी पिस्तौल पर था। उसने जोर से कहा

'यदि तुम लोगों ने उस मेज को स्पर्श किया, तो तुम्हें मुझे इसका जवाब देना होगा।'

सैनिकों ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, 'ओहो, तुम्हें जवाब देना होगा! तुम हो कौन? हमारी ही तरह तुम भी महल में घुस आये हो। हम और किसी के सामने नहीं, केवल अपने ही सामने जवाबदेह हैं।'

मजदूर ने सख्ती से प्रत्युत्तर में कहा, 'तुम लोग क्रान्ति के सामने जवाबदेह हो।' वह अपने कर्त्तव्य के प्रति इतना अधिक निष्ठावान था कि इन तीनों सैनिकों ने उसमें क्रान्ति के अधिकार को महसूस किया। उन्होंने उसकी बात सुनी और उसके आदेश का पालन किया।

क्रान्ति ने जन समुदाय में साहस और जोश पैदा किया था। इसने उन्हें शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने के लिए उत्प्रेरित किया था। अब वह उन्हें नियंत्रित कर रही थी। वह गुलगपाड़े की जगह शान्ति और

व्यवस्था कायम करने, भीड की भावना को नियंत्रित करने की दिशा में प्रयत्नशील थी, जगह जगह सन्तरी तनात किय जा रहे थे।

गलियारा म यह आवाज गूज उठी सभी लोग बाहर चले जाय, महल स भीड बिल्कुल हट जाय," और इस निर्देश क अनसार भीड दरवाजा की ओर बढने लगी। सभी दरवाजा पर तलाशी और निरीक्षण के निमित्त आत्म नियुक्त समिति के सदस्य खडे थे। व बाहर निकलनेवाले प्रत्यक व्यक्ति की तलाशी लेते थ उनकी जेबा कमीजा और यहा तक कि जूता को भी पैर से निकलवाकर देखते थे। इस तलाशी के फलस्वरूप विविध प्रकार की स्मारिकाए जैसे छोटी छोटी मूर्तिया मोमबत्तिया, कपडे टागने की खूटिया, बेलबूटेदार रेशमी वस्त्र, सजावटी गिलास, फलदान आदि वहा जमा हो गए। इन चीजा को हथियानेवाले बच्चा की भाति इन्हे ले जाने की अनुमति देने के लिए अनुनय विनय करते मगर उक्त समिति अपने निश्चय पर अडिग रहती और उसके सदस्य लगातार यही कहते जाते, 'आज रात इस महल से कोई भी चीज बाहर नही जायेगी।

और उस रात लाल गार्डों द्वारा रक्षित महल से कुछ भी कोई बाहर न ले जा सका, यद्यपि चोर लुटेरे बाद मे बहुत सी बहुमूल्य वस्तुए लेकर चम्पत हो गए।

अब बमिसारा ने अस्थाई सरकार और उसके समर्थका की ओर ध्यान दिया। उन्हे पकडकर बाहर लाया गया। सबसे आगे आगे मन्त्री थे जिन्हे राजकीय हाल मे हरे रग के ऊनी कपडे स सज्जित मेज के चारो ओर बैठे पकडा गया था। व चुपचाप पक्तिबद्ध बाहर निकले। भीतर जो भीड रह गई थी, उसने न तो एक शब्द कहा और न उनका मजाक उडाया। मगर बाहर जब एक सैनिक ने मोटरगाडी लाने को कहा, तो एकत्र भीड ने भयभीत मन्त्रिया को धकियाते हुए जोरो से चिल्लाकर कहा, 'उन्हे पैदल ले जाओ। बहुत दिना तक मोटरो पर सवारी कर चुके है।' तनी हुई सगीना के साथ लाल नौसैनिक अपने बदिया को चारो ओर स घेरकर उन्हे नेवा नदी के पुला के पार ले गये। बदिया के इस समूह म लम्बे कद के करोडपती पूजीपति तेरेश्चेन्को का सिर सबसे ऊपर दिखाई दे रहा था जिसे नौसैनिक अब विदेश मन्त्रालय म पीटर पाल जेल म डालने के लिए ले जा रहे थे और उसके स्थान पर बाल्शेविक त्रोत्स्की को विदेश मन्त्रालय ला रहे थे।

जब नौसैनिक नतशिर युकरा को बदी बनाकर ले जा रहे थे तो भीड चिल्ला उठी 'उत्तेजक! गद्दार! हत्यार!" उसी दिन सुबह प्रत्येक यकर न यह शपथ ली थी कि वे एक गोली शेष रह जाने तक बोल्शविका के खिलाफ लडते रहेंगे। बोल्शेविका के सम्मुख आत्म समपण करन की जगह वे इस आखिरी गाली से अपना काम तमाम कर लेंगे। मगर अब यकर बोल्शेविका को अपने हथियार सौंप रहे थ और गभीरता के साथ यह वादा कर रहे थे कि वे बोल्शेविको के विरुद्ध कभी भी हथियार नही उठायेंगे। (बदकिस्मत झूठे! उन्ह अपनी कसम तोडनी पडी!)

सबसे बाद मे महिला बटालियन की सदस्याओ को महल स बाहर लाया गया। उनमे से अधिकाश सवहारा वग की थी। लाल गार्डो ने उन्हे देखते ही चिल्लाकर कहा, "महिला बटालियन हाय, हाय! शम की बात है कि मजदूरिनें ही मजदूरा के खिलाफ लडती रही!' अपन आक्रोश को प्रकट करने के लिए कुछ लोगा ने लडकियो के हाथ पकडकर उन्ह खीचा और डाटा फटकारा।

सनिक लडकिया को इससे अधिक और कोई हानि नही पहुचाई गई, यद्यपि बाद म एक सनिक लडकी ने आत्म हत्या कर ली। दूसरे दिन विरोधी समाचारपत्रो न लाल गार्डो द्वारा शिशिर प्रासाद मे लूट पाट करने की खबरा क साथ महिला बटालियन के विरुद्ध जघन्य अत्याचार करने की मनगढ़त कहानिया प्रकाशित की।

मजदूर वग के लिए विनाशकारी कृत्या से बढकर उनके सहज स्वभाव के प्रतिकूल और कोई बात नही है। यदि यह न होता, तो इतिहास म २६ अक्तूबर (८ नवम्बर) की सुबह से सम्बधित सम्भवत कुछ भिन्न घटनाए ही दज की जाती। शायद इतिहास यह वत्तात प्रस्तुत करता कि जार का शानदार महल ध्वस्त पत्थरा का ढेर बन गया और दीघकाल स उत्पीडित लोगा की प्रतिहिसा के फलस्वरूप आग की लपटा म राख होकर रह गया।

यह निष्ठुर और हृदयहीन महल एक सदी से नेवा के तट पर खडा था। जनता न प्रकाश पान की आशा स इस आर देखा परन्तु उस अधकार मिला। लोगा ने अनुकम्पा की भीख मागी परन्तु उन्ह कोड मिले उनक गात पुरे और उन्ह निष्कासन की सजा दकर साइबेरिया भेज

दिया गया, नारकीय यत्रणाए दी गयी। १६०५ की शीतऋतु म एक दिन सुबह ठिठुरते हुए हजारो निहत्थे लोग अन्याय का दूर कराने के लिए जार से अननय विनय करने के ख्याल से यहा जमा हुए थे। मगर महल ने इस प्राथना के उत्तर म उन पर गोली वर्षा की और उन्ह तोपा स भून डाला उनके खून से बफ लाल हो गई थी। जन समुदाय के लिए यह प्रासाद निदयता एव उत्पीटन का स्मारक बन गया था। यदि उन्होंने इस भूमिसात कर दिया होता, तो यह केवल अपमानित जनता के गुस्से का एक और दृष्टान्त होता, जिसने सदा के लिए अपने उत्पीड़न के घणास्पद प्रतीक को मिटाकर आखो से ओझल कर दिया होता।

इसके विपरीत, उन्होंने इस ऐतिहासिक स्मारक का किसी भी तरह की क्षति से बचाने की कोशिश की।

केरेन्स्की ने सवथा भिन्न बात की थी। उसने शिशिर प्रासाद का अपने मन्त्रिमण्डल की बैठका और अपनी रिहायश का स्थान बनाकर इस मुठभेड़ा का केन्द्र बना दिया था। परन्तु इस पर धावा करके इस अपने अधिकार म करनेवाले जन समुदाय के प्रतिनिधिया न यह घोषणा की कि यह महल न तो उनका है, न सोवियतो का, बल्कि सारी जनता की विरासत है। सोवियत आज्ञप्ति के अनुसार शिशिर प्रासाद को लोक सग्रहालय घोषित करके कलाकारो की एक प्रबन्ध समिति के हवाले कर दिया गया।

सम्पत्ति के प्रति नया दृष्टिकोण

हा, तो घटनाओ ने प्रतिक्रियावादियो की एक और क्रूर भविष्यवाणी का असत्य साबित कर दिया। केरेन्स्की, दान और बुद्धिजीवी वग के अन्य सदस्यो ने क्रान्ति के विरुद्ध चीख पुकार मचाते हुए यह भविष्यवाणी की थी कि भयावह लूट पाट और भयानक अपराधो की घटनाए होगी, भीड की अधम प्रवत्तिया अपना नगा नाच नाचेगी तथा लाग मनमाना आचरण करेगे। उन्होंने कहा था कि एक बार जब भूखा एव क्षुभित जन समुदाय आवेश मे आ जायेगा, तो वह पागल पशुओ के झुण्ड की भाति सब कुछ पैरो तले कुचलता, बरबाद और नष्ट करता हुआ चला जायगा। 'यहा तक कि गार्की भी प्रलय की भविष्यवाणी कर रहे थ" (वास्की)।

जब नौसैनिक नतशिर युकरा को बन्दी बनाकर ले जा रहे थे, तो भीड चिल्ला उठी, "उत्तेजक! गद्दार! हत्यारे!" उसी दिन सुबह प्रत्येक युकर न यह शपथ ली थी कि वे एक गोली शेष रह जाने तक बोल्शेविको के खिलाफ लडते रहगे। बोल्शेविको के सम्मुख आत्म समपण करने की जगह वे इस आखिरी गाली से अपना काम तमाम कर लेगे। मगर अब युकर बोल्शेविको को अपने हथियार सौप रहे थे और गभीरता के साथ यह वादा कर रहे थे कि वे बोल्शेविको के विरुद्ध कभी भी हथियार नही उठायगे। (बदकिस्मत झूठे! उन्ह अपनी कसम तोडनी पडी!)

सबसे बाद मे महिला बटालियन की सदस्याओ को महल से बाहर लाया गया। उनमे से अधिकाश सवहारा वग की थी। लाल गार्डो न उन्हें देखते ही चिल्लाकर कहा, 'महिला बटालियन हाय, हाय! शम की बात है कि मजदूर्निें ही मजदूरो के खिलाफ लडती रही!" अपने आक्रोश को प्रकट करने के लिए कुछ लोगो न लडकियो के हाथ पकडकर उन्हे खीचा और डाटा फटकारा।

सैनिक लडकियो को इससे अधिक और कोई हानि नही पहुचाई गई, यद्यपि बाद म एक सनिक लडकी ने आत्म हत्या कर ली। दूसरे दिन विरोधी समाचारपत्रो न लाल गार्डो द्वारा शिशिर प्रासाद म लूट पाट करने की खबरो के साथ महिला बटालियन के विरुद्ध जघन्य अत्याचार करने की मनगढत कहानिया प्रकाशित की।

मजदूर वग के लिए विनाशकारी कृत्यो से बढकर उनके सहज स्वभाव के प्रतिकूल और कोई बात नही है। यदि यह न होता, तो इतिहास म २६ अक्तूबर (८ नवम्बर) की सुबह से सम्बधित सम्भवत कुछ भिन्न घटनाए ही दज की जाती। शायद इतिहास यह वृत्तात प्रस्तुत करता कि जार का शानदार महल ध्वस्त पत्थरो का ढेर बन गया और दीघकाल से उत्पीडित लोगो की प्रतिहिंसा के फलस्वरूप आग की लपटो म राख होकर रह गया।

यह निष्टुर और हृदयहीन महल एक सदी से नेवा के तट पर खडा था। जनता न प्रमाण पान की आशा से इस ओर देखा, परन्तु उसे अधकार मिला। लोगो ने अनुकम्पा की भीख मागी परन्तु उन्हे कोडे मिले उनके गाल फुके और उन्ह निष्कासन की सजा देकर साइबेरिया भेज

दिया गया, नारकीय यत्रणाए दी गयी। १९०५ की शीतऋतु म एक दिन सुबह ठिठुरते हुए हजारा निहत्थे लोग अन्याय का दूर कराने के लिए जार से अननय विनय करने के ख्याल स यहा जमा हुए थे। मगर महल ने इस प्राथना के उत्तर म उा पर गोली वर्षा की ग्रार उन्ह तापा स भून डाला उनके खून स वफ लाल हा गई थी। जन समुदाय के लिए यह प्रासाद निन्यता एव उत्पीडन या स्मारक बन गया था। यदि उन्हान इस भूमिसात कर दिया होता, तो यह केवल अपमानित जनता के गुस्से का एक और दष्टान्त हाता, जिसने सदा के लिए अपन उत्पीडन के घणास्पद प्रतीक को मिटाकर आखा से ओझल कर दिया हाना।

इसके विपरीत, उन्हान इस ऐतिहासिक स्मारक का किसी भी तरह की क्षति से बचान की कोशिश की।

केरेन्स्की ने सवथा भिन्न बात की थी। उसने शिशिर प्रासाद का अपन मत्रिमण्डल की बठका ग्रार अपनी रिहायश का स्थान बनाकर इस मुठभेडा का केन्द्र बना दिया था। परन्तु इस पर धावा करके इस अपन अधिकार म करनवाले जन समुदाय के प्रतिनिधिया न यह घोषणा की कि यह महल न ता उनका है, न सावियता का, बल्कि सारी जनता की विरासत ह। सावियत आज्ञप्ति के अनुसार शिशिर प्रासाद का लाक सग्रहालय घापित करके कलाकारा की एक प्रबन्ध समिति के हवाले कर दिया गया।

सम्पत्ति के प्रति नया दृष्टिकोण

हा, ता घटनाओं ने प्रतिक्रियावादिया की एक और क्रूर भविष्यवाणी का असत्य साबित कर दिया। केरेन्स्की, दान और बुद्धिजीवी वग के अन्य सदस्यो ने क्राति के विरुद्ध चीख पुकार मचाते हुए यह भविष्यवाणी की थी कि भयावह लूट पाट और भयानक अपराधो की घटनाए होगी, भीड की अधम प्रवृत्तिया अपना नगा नाच नाचेगी तथा लोग मनमाना आचरण करेंगे। उन्होने कहा था कि एक बार जब भूखा एव क्षुभित जन समदाय आवश म आ जायेगा, ता वह पागल पशुओ के झुण्ड की भाति सब कुछ परो तले कुचलता, बरबाद और नष्ट करता हुआ चला जायगा। 'यहा तक कि गार्की भी प्रलय की भविष्यवाणी कर रहे थे" (त्रात्स्की)।

और अब क्रान्ति हो गई थी। यह सच है कि यहा वहा कुछ विध्वसकारी घटनाए हुई और पूजीपति वर्ग के सदस्य अपने अपने घर कोटा के बिना घर लौटे। किन्तु अपराधियो पर क्रान्ति का नियन्त्रण होने के पूर्व ही वे इस तरह की हरकत कर सकते थे।

परतु यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि क्रान्ति के बाद सबसे पहला जो फल मिला, वह था—अमन-कानून का कायम हो जाना। जन समुदाय के हाथ म आने के बाद पेत्रोग्राद मे जीवन जितना सुरक्षित हो गया, उतना सुरक्षित वह पहले कभी नही था। सडको पर अभूतपूर्व शान्ति कायम हो गयी। बटमारी और डकती प्राय समाप्त हो गई। डाकू और ठग सवहारा वग के सख्त शासन से भयभीत होकर डकैती और ठगी करने का साहस खो बठे।

यह केवल भयजन्य अमन कानून नही था, यह केवल निषेधात्मक सयम नही था। क्रान्ति के फलस्वरूप सम्पत्ति के प्रति अदभुत सम्मान की भावना पैदा हो गयी। दुकानो की टूटी फूटी प्रदशन खिडकियो म रखी खाद्य सामग्रियो और कपडो को सडक से गुजरता हुआ कोई भी व्यक्ति, जिसे इनकी बहुत जरूरत थी आसानी से उठा सकता था। परन्तु व चीजे जहा थी वही रही और किसी ने उन्ह छुआ तक नही। ऐसे भूखे व्यक्तियो को देखकर जिनके सामने खाने पीने की चीजे थी पर व उन्ह उठाते नही थे, एक विशेष प्रकार की मानसिक पीडा की अनुभूति पैदा होती थी। क्रान्ति जय सयम आदर के योग्य था। हर जगह इसका सूक्ष्म प्रभाव परिलक्षित होता था। क्रान्ति का असर सुदूरवर्ती गावो पर भी पड रहा था। अब किसान बडी जगीरो को फूक नही रहे थे।

इसके बावजूद भी उच्च वग वाले यह दावा करते थे कि केवल उन्ही म सम्पत्ति की पवित्रता के प्रति सम्मान की भावना थी। विश्वयुद्ध के अन्त म यह दावा विचित्र लगता था, क्योकि इस महायुद्ध के लिए शासक वग जिम्मेदार थे। उनकी आज्ञा से नगरो को आग की लपटो की नजर कर दिया गया था, धरती राख से पटी हुई थी, सागर-तल पर नष्ट भ्रष्ट जलपोत बिखर पडे थे, सभ्यता का ढाचा क्षत विक्षत हो चुका था तथा इस विनाशकारी दृश्य के बाद भी अभी और अधिक विनाशकारी हथियारो का निर्माण हो रहा था।

फिर पूंजीपतियों में सम्पत्ति की रक्षा के प्रति वास्तविक सम्मान की भावना का आधार क्या है? वस्तुत वे बहुत कम पैदा करते हैं अथवा कुछ पैदा करते ही नहीं। विशेष सुविधाप्राप्त वर्ग के लिए सम्पत्ति ऐसी चीज है, जो चालाकी से, उत्तराधिकार में और नियति की कृपा से प्राप्त होती है। उनके लिए यह मुख्यत जन्मजात पदाधिकार अथवा उत्तराधिकार के मूल्यवान कागजात हैं।

मगर मजदूरों के लिए सम्पत्ति कठोर श्रम का प्रतिदान है। उनके लिए यह सृजन का श्रान्तिदायक कार्य है। वे जानते हैं कि कितने कठिन परिश्रम के बाद सम्पत्ति अर्जित की जाती है।

वोल्गा के नाव खींचनेवालों के गीत में कहा गया है

कन्धे पीछे खिंचे हुए और आगे छाती तनी हुई
कठोर श्रम के स्वेद कणों से तरबतर, जो वर्षा की बूंदों की भांति
झर रहे हैं,
दुपहरिया की इस भीषण गर्मी में, श्रम की थकान मिटाने के लिए
वे गीत गाते हुए भारी बजरे को
येन केन प्रकारेण खींचते जा रहे हैं।

जिन श्रमिकों ने कष्ट और परिश्रम से जिस चीज का सृजन किया है, वे अनुत्तरदायी ढंग से उसका वैसे ही नाश नहीं कर सकते, जैसे मां अपने बच्चे को नहीं मार सकती। जिनकी शक्ति और पट्ठे के सहारे वस्तुओं का निर्माण होता है, वे उनकी अच्छी तरह रक्षा करेंगे और उनकी एकमात्र आकांक्षा यही होगी कि उन्होंने जिन चीजों को तैयार किया है, वे नष्ट न होने पावें। वे उनका मूल्य जानते हैं, इसलिए वे उनकी पवित्रता को भी महसूस करते हैं। अनाड़ी और अपढ़ जन-साधारण कलात्मक कृतियों के प्रति भी बड़ी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। वे उनका अभिप्राय स्पष्ट समझ नहीं पाते। परन्तु वे इन कलात्मक कृतियों में रचना के प्रयास का दर्शन करते हैं। और सभी प्रकार का श्रम पवित्र है।

सामाजिक क्रान्ति वस्तुत सम्पत्ति के अधिकार का पवित्रतम आदर है। यह इसे नई पवित्रता प्रदान करती है। यह उत्पादन के नियंत्रण में

और अन्न क्रान्ति हो गई थी। यह सच है कि यहा वहा कुछ विध्वसकारी घटनाए हुइ और पूजीपति वग के सदस्य अपने अपने घर कोटा के बिना घर लौटे। किन्तु अपराधियो पर क्रान्ति का नियन्त्रण होने के पूव ही वे इस तरह की हरकत कर सकते थे।

परन्तु यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि क्रान्ति के बाद सबसे पहला जो फल मिला, वह था—अमन-कानून का कायम हो जाना। जन समुदाय के हाथ म आन के बाद पत्रोग्राद मे जीवन जितना सुरक्षित हो गया उतना सुरक्षित वह पहले कभी नही था। सडको पर अभूतपूव शान्ति कायम हो गयी। बटमारी और डकैती प्राय समाप्त हो गई। डाकू और ठग सवहारा वग के सख्त शासन से भयभीत होकर डकैती और ठगी करने का साहस खो बैठे।

यह केवल भयजन्य अमन-कानून नही था, यह केवल निषेधात्मक सयम नही था। क्रान्ति के फलस्वरूप सम्पत्ति के प्रति अदभुत सम्मान की भावना पैदा हो गयी। दुकानो की टूटी फूटी प्रदशन खिडकियो म रखी खाद्य सामग्रियो और कपडो को सडक से गुजरता हुआ कोई भी व्यक्ति, जिसे इनकी बहुत जरूरत थी, आसानी से उठा सकता था। परन्तु वे चीज जहा थी, वही रहा और किसी ने उन्ह छुआ तक नही। ऐसे भूखे व्यक्तियो को दखकर जिनके सामने खाने पीने की चीजे थी, पर वे उन्हे उठाते नही थे एक विशेष प्रकार की मानसिक पीडा की अनुभूति पैदा होती थी। क्रान्ति जन्य सयम आदर के योग्य था। हर जगह इसका सूक्ष्म प्रभाव परिलक्षित होता था। क्रान्ति का असर सुदूरवर्ती गावो पर भी पड रहा था। अब किसान बडी जगीरो को फूक नही रहे थे।

इसके बावजूद भी उच्च वग वाले यह दावा करते थे कि केवल उन्ही म सम्पत्ति की पवित्रता के प्रति सम्मान की भावना थी। विश्वयुद्ध के अन्त मे यह दावा विचित्र लगता था, क्योंकि इस महायुद्ध के लिए शासक वग जिम्मेदार थे। उनकी आज्ञा से नगरो को आग की लपटो की नजर कर दिया गया था, धरती राख से पटी हुई थी सागर-तल पर नष्ट ध्वस्त जलपोत बिखरे पडे थे सभ्यता का ढाचा क्षत विक्षत हो चुका था तथा इस विनाशकारी दृश्य के बाद भी अभी और अधिक विनाशकारी हथियारो का निर्माण हो रहा था।

फिर पूजीपतियो मे सम्पत्ति की रक्षा के प्रति वास्तविक सम्मान की भावना का आधार क्या है? वस्तुत वे बहुत कम पैदा करते है अथवा कुछ पैदा करते ही नही। विशेष सुविधाप्राप्त वर्ग के लिए सम्पत्ति ऐसी चीज है, जो चालाकी से, उत्तराधिकार मे और नियति की कृपा से प्राप्त होती है। उनके लिए यह मुख्यत जन्मजात स्वत्वाधिकार अथवा उत्तराधिकार के मूल्यवान कागजात है।

मगर मजदूरो के लिए सम्पत्ति कठोर श्रम का प्रतिदान है। उनके लिए यह सृजन का श्रान्तिदायक कार्य है। वे जानते है कि कितने कठिन परिश्रम के बाद सम्पत्ति अर्जित की जाती है।

वोल्गा के नाव खीचनवालो के गीत मे कहा गया है

कन्धे पीछे खिचे हुए और आगे छाती तनी हुई
कठोर श्रम के स्वेद कणो से तर बतर, जो वर्षा की बूदो की भाति
झर रहे है,
दुपहरिया की इस भीषण गर्मी मे, श्रम की थकान मिटाने के लिए
वे गीत गाते हुए भारी बजरे को
येन केन प्रकारेण खीचते जा रहे है।

जिन श्रमिको ने कष्ट और परिश्रम से जिस चीज का सृजन किया है, वे अनुत्तरदायी ढग से उसका वैसे ही नाश नही कर सकते, जैसे मा अपने बच्चे को नही मार सकती। जिनकी शक्ति और पट्ठे के सहारे वस्तुओ का निर्माण होता है, वे उनकी अच्छी तरह रक्षा करेगे और उनकी एकमात्र आकाक्षा यही होगी कि उन्होने जिन चीजो को तैयार किया है, वे नष्ट न होने पावे। वे उनका मूल्य जानते है, इसलिए वे उनकी पवित्रता का भी महसूस करते है। अनाडी और अपढ जन-साधारण कलात्मक कृतियो के प्रति भी बडी श्रद्धा व्यक्त करते है। वे उनका अभिप्राय स्पष्टत समझ नही पाते। परन्तु वे इन कलात्मक कृतियो मे रचना के प्रयास का दर्शन करते है। और सभी प्रकार का श्रम पवित्र है।

सामाजिक क्रान्ति वस्तुत सम्पत्ति के अधिकार का पवित्रतम आदर है। यह इसे नई पवित्रता प्रदान करती है। यह उत्पादको के नियत्रण मे

सम्पत्ति का सौंपकर इसकी रखवाली का दायित्व ऐसे लोगों के कन्धे पर डाल देती है, जो इसके निमाता होने के नाते इसके स्वाभाविक एव उत्साही रक्षक होते ह। स्रष्टा ही सर्वोत्कृष्ट परिरक्षक होते ह।

नवा अध्याय

लाल गार्ड, सफेद गार्ड और यमदूतसभाई

२५ अक्तूबर (७ नवम्बर) को सोवियतो ने अपने को सरकार घोषित कर दिया। किन्तु सत्ता को अपने हाथ मे ले लेना एक बात है और सत्तारूढ रहना दूसरी बात है। आज्ञप्तियो को लिखकर उन्हे जारी करना एक बात है और उन्हे अमल म लाना भिन्न बात है।

सोवियतो ने शीघ्र ही महसूस किया कि उन्हे अभी बहुत सघर्ष करना है। उन्होने यह भी देखा कि अफसरो की तोड फोड की कारवाइयो के फलस्वरूप फौजी व्यवस्था छिन भिन है। क्रातिकारी जनरल स्टाफ ऊपर से इस समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत न कर सका। उसने सीधे मजदूरो से अपील की।

उन्होने बेंजीन और मोटरो के स्टोर का पता लगा लिया और परिवहन के साधनो को दुरुस्त कर दिया। उन्होंने तोपो, तोप ढोनेवाली गाडियो और घोडो को जमा करके तोपखाना दस्तो को गठित किया। उन्होंने खाद्य-सामग्री, चारे और रेडक्रास सम्बन्धी सामग्रियो का प्रबन्ध करके उन्हे शीघ्र मोर्चे पर पहुचाने की व्यवस्था की। उन्होने कलेदिन* के सैनिको के लिए भेजी जानेवाली १०,००० राइफलो को अपने अधिकार मे लेकर उन्हे कारखानो के मजदूरो म वितरित कर दिया।

---

*कलेदिन अ० म० — जारशाही सेना का एक जनरल, जिसने १९१७ के अत और १९१८ के शुरु म दोन-क्षेत्र म प्रतिक्रातिवादी विद्रोह का नतत्व किया था। सोवियत फौजो द्वारा विद्रोह के कुचले जान के बाद उसने गोली मारकर आत्म हत्या कर ली थी।

कारखानों में हथौड़ों की चोट की जगह कवायद करते हुए सैनिकों के पैरों की आवाज सुनाई देने लगी। फारमैनों के आदेशों की जगह नये रंगरूटों को कवायद सिखानेवाले नासैनिकों के निर्देश सुनाई देने लगे। सड़कों पर दौड़ती हुई मोटरकारों से लोगों को यह सूचना दी गई

कार्नीलोव की कमान में करेन्स्की के फौजी गिरोहों ने राजधानी के लिए खतरा उपस्थित कर दिया है। जनता और इसकी विजय के खिलाफ हर प्रतिक्रान्तिवादी प्रयास को निर्ममता से कुचल देने के लिए सभी आवश्यक आदेश जारी कर दिये गए हैं।

फौज और क्रान्ति के लाल गार्डों को मजदूरों के फौरी समर्थन की जरूरत है।

जिला सोवियतों और कारखाना समितियों को यह आदेश दिया जाता है कि—

(१) वे खाइयां खोदने, अवरोध खड़े करने और कटीले तार को लगाने के लिए यथासंभव अधिकतम संख्या में मजदूर दें;

(२) इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिन कारखानों में काम को स्थगित करना आवश्यक हो, वहां तत्काल ऐसा ही कदम उठाया जाये;

(३) सभी सुलभ साधारण एवं कटीले तारों तथा खाइयों को खोदने एवं अवरोधों को खड़ा करने के काम आनेवाले औजारों को जमा किया जाये;

(४) सभी सुलभ हथियार ग्रहण कर लिये जायें;

(५) सख्त अनुशासन कायम रखा जाये और क्रान्तिकारी फौज को सर्वाधिक सहायता प्रदान करने के लिए सभी को तैयार रहना चाहिये।

इस आह्वान के उत्तर में सभी जगह मजदूर ओवरकोटों के ऊपर कारतूस पेटियों को बांधे, पीठ पर कम्बल लटकाए और फावड़ा, चाय की केतली एवं पिस्तौल को फीते से बंधे हुए दिखाई पड़ने लगे। अंधेरे को चीरती हुई संगीनों की लम्बी और अनियमित कतार आगे बढ़ती हुई दिखाई पड़ती।

दक्षिण से राजधानी की ओर बढ़नेवाली प्रतिक्रान्तिकारी फौजों को पीछे ढकेलने के लिए लाल पेत्रोग्राद सशस्त्र तैयार हो गया। कारखाना

वे भापुग्रा की कभी ववश ग्रौर कभी तीखी गूज युद्ध के खतरे की सूचना द रही थी।

नगर मे वाहर जानवाली सभी सडका पर पुरपा, स्त्रियो ग्रौर बच्चा का सागर सा उमट पडा था। वे फौजी थले, कुदालिया, राइफ्ले ग्रौर वम लिये हुए थे। देखने म यह विचित्र ग्रौर पचमेली भीड थी। इन लोगा को उत्साहित करने के लिए न ता कोई झडा था ग्रौर न नगाडा। गुजरती हुई टका से रास्त के कीचड की छीटें उछलकर उनके शरीर पर पड रही थी, उनके जूता से ठण्डा कीचड वह रहा था ग्रौर वाल्टिक सागर से वहनेवाली ठडी हवाग्रा से उनकी हड्डिया ठिठुर रही थी। कुहरे से ग्राच्छन धूम्रवर्ती दिन उदास रात म परिवर्तित हो गया, मगर वे ग्रविराम मार्चे की ग्रोर वढते रह। उनके पीछे नगर की रोशनी ग्राकाश मे फल रही थी, किन्तु व ग्र धेरे म ही मोर्चे की ग्रोर गतिमान रहे। मदाना एव जगलो म धुधली ग्राकृतिया फैल गइ, खेमे गाडे जा रहे थे ग्रलाव जलाये जा रहे थे, खाइया खाटी जा रही थी ग्रौर कटीले तार लगाय जा रहे थे। एक ही दिन म दसिया हजार व्यक्ति पेत्रोग्राद से बीस मील की दूरी पर पहुचकर प्रतिक्रातिवादी शक्तियो के विरुद्ध सजीव दुग के रूप म खडे हो गये थे।

फौजी विशेपना की दृष्टि म यह सेना नही, कीडे मकाडे थे, महज एक भीड थी। परन्तु इस भीड मे जा गति ग्रौर शक्ति थी, रण-नीति की पुस्तका से उसका नान नही प्राप्त हो सकता। यह उदास ग्रौर निस्तेज मूढ जन साधारण नये विश्व की कल्पना के उत्साह से ग्रोत प्रोत थी। उनकी नसो मे शत्रु से जूझने की ग्राग धधकती थी। वे जान की वाजी लगाकर लडे ग्रौर उन्हाने ग्रक्सर फौजी कुशलता भी प्रकट की। वे छिप शत्रुग्रा के खिलाफ ग्र धेरे म झाड झखाड के बीच से होते हुए ग्रागे वढते गये। उन्हाने कज्जाका से जमकर मोचा लिया, उन्ह घोडा से गिरा दिया। वे ग्राग उगलती मशीनगना के सामने जमीन पर लेट गये। तोपा के गोला के कारण वे बिखरे परतु फिर एक साथ जमा हो गये। वे ग्रपने घायल साथिया को पीछे उठा ले गये ग्रौर उनकी मरहम पट्टी की। ग्रपने मरणासन्न साथिया के काना म उन्होने फुसफुसाकर कहा, "क्राति! जनता!"। दम ताडते हुए वे कह उठे, "सोवियत जिन्दावाद! जल्द शाति कायम होगी!'

मजदूरो एव किसानो के इन रगरूटो के समूह म अव्यवस्था खनवनी और आतक की भावना का होना स्वाभाविक था। परन्तु अपन सिद्धात और आदश की रक्षा के लिए लडनवाले न भूखे एव अत्यधिक कायवलात स्त्रिया और पुरुषो की उत्कट उत्साह भावना शत्रुओ की सगठित बटालियनो की तुलना मे अधिक प्रभावकारी थी। इस भावना ने इन बटालियनो का ध्वस्त कर दिया। इसन शत्रु पक्ष के सनिको का साहस और धय तोड दिया। निमम कज्जाक लडन के लिए मदान म आते परन्तु इन रगरूटो को देखते ही उनस पराजय स्वीकार कर लते। विश्वसनीय डिवीजनो को मोर्चे पर जान का आदेश दिया गया, मगर उन्होन मजदूर-सनिको पर गोली चलान से बिल्कुल इनकार कर दिया। पूरा विरोध ध्वस्त हो गया, मानो भाप बनकर गायब हो गया। केरेन्स्की छद्मवश धारण कर मोर्चे स भाग गया। जो विशाल सनिक दल बल बोल्शेविको को कुचलनेवाला था उसके प्रधान सेनापति को अपन साथ भागन के लिए एक अगरक्षक तक भी सुलभ न हुआ। पूरे मोर्चे पर सवहारा वग की फौज विजयी रही।

सफेद गार्डो द्वारा टेलीफोन स्टेशन पर कब्जा

जब सोवियत जन समुदाय पेत्रोग्राद से बाहर मैदान म प्रतिक्रियावादी फौजो स लड रहा था, उसी समय प्रतिक्रातिवादियो न पृष्ठ भाग म सर उठाया। उन्होने नगर म ही सोवियत सत्ता को पगु बना देने की कारवाई शुरू की।

शिशिर प्रासाद मे बदी बनाये जाने के बाद जिन यकरो न वादा किया था कि वे अब सोवियत सत्ता के विरुद्ध नही लडेग, अपन वाद का उल्लघन कर सफेद गाड के इस विद्रोह म शामिल हो गए। उन्हे टेलीफोन स्टेशन पर कब्जा करने का कायभार सौपा गया।

टेलीफोन स्टेशन नगर का एक महत्त्वपूण केन्द्र है, यहा स लाखो तार लाखो शिराओ की भाति इधर उधर फल हुए हैं, जो नगर का एक इकाई म सबद्ध करते ह। पेत्रोग्राद म मोर्स्काया माग पर पत्थर से निर्मित एक विशाल गढी म टेलीफोन स्टेशन था। यहा कुछ सोवियत प्रहरी तनात

थे। दिन भर की परिश्रान्ति के बाद वे उत्सुकता से रात मे अपनी जगह अन्य सतरिया के डयूटी पर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

रात होते ही सडक पर फौजी बूट बजाते हुए बीस व्यक्ति उधर आये। सतरिया ने सोचा कि अब उनकी जगह सतरिया का दूसरा दल डयूटी पर आ रहा है। परन्तु बात ऐसी नही थी। यह लाल गार्डों के छद्मवेश म अफसरो और युकरा का गिरोह था। इनकी बदूके लाल गार्डो की भाति ही कधा से लटकी हुई थी। उन्होने सतरिया से गुप्त सकेत शब्द कहे। शुद्धमन से किसी प्रकार का सदेह न करते हुए सन्तरिया ने अपनी बदूको का एक जगह ढेर लगा दिया और जाने के लिए मुडे। बीस पिस्तौले उनके सिरो की ओर तन गइ।

आश्चयचकित लाल सतरी बरबस कह उठे, "तोवारिश्ची!" (साथियो!)

अफसरो ने चिल्लाकर कहा, "सूअर के बच्चो! चलो, उस हॉल मे, और अपने मुह बद रखो, वरना हम गोलियो से तुम्हारी खोपडी उडा देंगे।"

घबडाये हुए सतरिया को हॉल म बद कर दिया गया और डयूटी से छुट्टी पाने की जगह वे सफेद गार्डों द्वारा बदी बना लिये गए। टेलीफोन स्टेशन प्रतिक्रान्तिवादियो के हाथ म चला गया।

टेलीफोन स्टेशन पर कब्जा करनेवाला ने एक फ्रासीसी अफसर की देखरेख म सुबह इस स्थान पर अपनी मोर्चाबदी कर ली। अचानक इस फ्रासीसी अफसर ने मेरी ओर मुडते हुए बडी सख्ती स पूछा, आप यहा क्या कर रहे है?"

मैंने उत्तर दिया, "म अमरीकी सवाददाता हू। म यहा यह देखने आया हू कि क्या घटना घटी है।'

उसने मुझे अपना पासपोर्ट दिखाने को कहा। पासपोर्ट देखकर वह प्रभावित हुआ और उसने मुझसे क्षमा मागी। फिर बोला निश्चय ही इस काम स मेरा कोई सम्बन्ध नही है। आपकी तरह म भी यह देखने आ गया कि यहा क्या हो रहा है।' मगर वह पहले की भाति वहा आदेश देता रहा, देखरेख करता रहा।

युकरो न मुख्य दरवाजे के दोनो ओर बक्सा, मोटरगाडियो और लट्ठो के अवरोध खड कर दिये। वे वहा से गुजरनेवाली मोटरगाडियो स चुगी वसूल करके अपन लिए रसद एव हथियार प्राप्त करन लगे तथा वहा उन सभी राहगीरो को पकडने लगे, जिनके बारे मे उन्ह सोवियत सैनिक होने का सन्देह होता।

सोवियत युद्ध कमिसार अन्तोनाव भी इनके हाथ लग गये और इस तरह इनकी किस्मत न इनका बडा साथ दिया। अन्तोनोव अपनी कार से जा रहे थे कि अचानक उनकी कार रोककर उन्ह झटके से बाहर खीच लिया गया। इससे पहले कि वे सम्भल पाते उन्हे कमरे मे कैद कर दिया गया। जिस समय क्रान्ति के भाग्य का फैसला हो रहा था, उसी समय प्रतिक्रान्तिवादियो ने अन्तोनाव को अपना कैदी बना लिया। बन्दी बना लिये जाने पर उन्ह बडी मानसिक पीडा हुई और प्रतिक्रान्तिवादियों को उन्ह पकड लेने पर बडी खुशी हुई। प्रतिक्रान्तिवादी बहुत प्रमुदित थ, क्योकि क्रान्तिकारी पत्रोग्राद के असगठित जन समुदाय म नताओ की सख्या अभी बहुत ही कम थी। फौजी विज्ञान के सभी नियमो क अनुसार वे यह जानते थे कि नताओ क बिना जन-समुदाय उनके गढ पर प्रभावकारी तरीके से प्रहार नही कर सकता और बाल्शेविको का मुख्य फौजी नेता उनके हाथो म था।

क्रान्ति ने अपनी शक्तियो को एकजुट किया

य अफसर कुछ बातो से अनभिज्ञ थ। उन्ह यह मालूम नही था कि क्रान्ति किसी एक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति अथवा व्यक्तियो क समूह पर नही, बल्कि रूसी जन समुदाय के सामूहिक मस्तिष्क पर निभर थी। उन्ह इस बात का परिज्ञान नही था कि क्रान्ति न कितनी गहराई तक जाकर जन-समुदाय की मेधा शक्ति, नतृत्व शक्ति एव पहलकदमी को जागत किया था और उन्ह सजीव इकाई क रूप म परिवर्तित कर दिया था। उन्ह ज्ञात नहा था कि क्रान्ति एक जीता जागता, आत्मपोषित और आत्मनिर्देशित शरीर थी, जो खतरे की घटी बजत ही स्वरक्षा के निमित्त अपनी सभी निगूढ शक्तियो को समाहृत करता था।

जब मनुष्य के शरीर म कोई विषाणु प्रविष्ट करता है, तो सारा शरीर खतरे को महसूस करता है। सकडा नसो से जीवनाशक अणु विष केन्द्र पर प्रहार करने के लिए तीव्रता से अग्रसर होते है। वे विषाणु को अपन नियन्त्रण म करके उसे निकाल बाहर करने का प्रयास करते हैं। यह मस्तिष्क का कोई चेतन कायकलाप नही होता। यह मानवीय शरीर की अचेतन प्रज्ञा शक्ति है।

इसी भाति अब लाल पत्रोग्राद के शरीर मे प्रतिक्रान्तिवाद का जहर प्रविष्ट हो गया था, जिससे इसके अस्तित्व के लिए ही खतरा उपस्थित हो गया था। इसकी प्रतिक्रिया तत्काल हुई। अपने आप अनेक मार्गो और गलिया से होते हुए लाल सैनिका के समूह के समूह इस सक्रामक केन्द्र—टेलीफोन स्टेशन—की ओर आन लगे।

सनसनाहट! धमाका! लटठे का चीरती हुई एक गोली की आवाज ने बन्दूकधारी लाल सैनिका के पहुच जाने की सूचना दी। जोरा की सनसनाहट! तीव्रतर धमाका! गालियो के धुआधार प्रहार से दीवाला से टूट टूटकर पत्थर के गिरत टुकडो ने प्रहार करनेवाले और अधिक लाल दस्ता के आगमन की उदघोषणा की।

प्रतिक्रान्तिवादिया न अवरोधो से झाकते हुए सडक के छोर पर लाल गार्डो के उमडते हुए समूह का अपनी ओर बढ़ते देखा। उन्हे देखते ही एक पुराना जारशाही अफसर आग बबूला हो उठा। उसने चिल्लाकर आदेश दिया, निशान साध लो! इस जमावडे को भून डालो! सडक के इस पार और उस पार उन्होंने बेतहाशा गोलिया की बौछार शुरू कर दी। सकरे दर्रे की भाति उस सडक पर शोरगुल और छूटती हुई गोलिया की धडधडाहट गूज रही थी। परन्तु वहा लाल सनिका की लाश दिखाई नही पडी। क्रान्तिकारी जन समुदाय यहा शहादत का उदाहरण प्रस्तुत करन की ख्वाहिश लकर नही आया था। शत्रुओ का उकसात हुए व युद्ध मरना नहा चाहत थ।

पुरान दिना जसी बात अब नहा थी। पहले भीड चुपचाप अपन का बन्दूका के मुह के सामन कर दिया करती थी। शिशिर प्रासाद के चौक म सकडा की सख्या म लाग गालिया से भून दिय गये, तापा क गाला म टुकडे-टुकडे होकर मौत के मह म चल गय कज्जाका क घाडा की टापा

के नीचे कुचलकर मर गए और मशीनगनो से सामूहिक रूप म काल कवलित हो गए। उस समय उन्ह मार डालना कितना आसान था! यदि इस समय भी वे अवरोधो की ओर दौड पडते तो उन्ह गोलियो और गोलो से भून डालना कितना आसान होता!

परन्तु क्रान्ति अब अपने साधनो की रक्षा करने के लिए सावधान थी। उसन इस जन समुदाय को सजग कर दिया था। इसने उसे रण-नीति का यह प्रथम पाठ द दिया था कि पहले यह पता लगा लो कि तुम्हारा शत्रु क्या चाहता है और उसे मत करो। लाल गाड समझ गये थे कि उन्ह मार डालने के इरादे से अवरोध खडे किये गये ह उनका लक्ष्य अब इन अवरोधो को विनष्ट करना था।

उन्होने इन अवरोधो को ध्यान से देखा और उन पर प्रहार करने की तरकीब तय की। उन्होने अपनी सुविधा एव सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्व रखनवाली हर जगह की तलाश की। व प्रस्तर स्तम्भो के पीछे छिपे, दीवालो पर चढे, उन्होन मुडेरो का उपयोग किया और वे छतो पर जा लेटे। व खिडकियो और चिमनियो की आड म घात लगाकर बैठ गये। वे हर कोण से अवरोधो की ओर निशाना साधते। तब अचानक वे अवरोधो पर गोली वर्षा शुरु कर देते।

उन्होन जिस प्रकार सहसा गोलियो की बौछार शुरु की उसी प्रकार इसे बन्द कर दिया और छिपे छिप आगे बढकर नयी स्थिति ग्रहण कर ली। फिर दूसरी बार गोलियो की बौछार हुई और पुन गोलियाँ दगने की आवाज बन्द हो गई। अब अफसर यह अनुभव करन लगे कि वे घिरे हुए पशुओ की भाँति है जिनके चारो ओर अदृश्य शिकारियो न प्रहारात्मक घेरा डाल दिया है।

नये क्रान्तिकारी दस्ते लगातार आते जा रह थे और घेरे के रिक्त स्थानो को भरते जा रहे थे। घेरा अधिकाधिक मजबूत होता गया और इसन प्रतिक्रान्ति को वहीं आबद्ध कर लिया। क्रान्तिकारी जन समुदाय ने प्रतिक्रान्ति के घातक अड्डे को विच्छिन्न कर अब इसके मूलोच्छेदन की तैयारी शुरु की।

प्रतिक्रान्तिवादी गोलियो की बौछार से अवरोध का परित्याग करने और तोरण द्वार मे जाकर शरण ग्रहण करन को विवश हुए। पत्थर की माटी

दीवारा के पीछे उन्होंने विचार विमर्श किया। उन्होंने पहले यह सोचा कि लाल घेरे को तोड़ते हुए निकल भागें। परन्तु उन्हें यह समझने में देर न लगी कि यह आत्महत्या करना होगा। एक टोही रेंगकर छत पर पहुंचा, परन्तु घायल कंधा लिये हुए उल्टे पैरों नीचे भागा। कुछ समय पाने के लिए उन्होंने शांति-वार्ता की प्रार्थना की, मगर घेरा डालनेवालों ने उत्तर दिया

तीन रोज पहले हमने तुम्हें शिशिर प्रासाद में बंदी बनाया था और तुम्हारे कसम खाने पर रिहा कर दिया था। तुम लोगों ने अपनी कसम तोड़ी है और हमारे साथियों पर गोलियां चलाई हैं। हम तुम्हारा कोई विश्वास नहीं है।"

उन्होंने अन्तोनोव को रिहा कर देने का प्रस्ताव करते हुए क्षमा दान की प्रार्थना की।

लाल सैनिकों ने उत्तर दिया "अन्तोनोव! हम उन्हें स्वयं तुम्हारे पंजे से छुड़ा लेंगे। यदि उनका बाल भी बांका हुआ, तो तुममें से एक भी जिन्दा नहीं बचेगा।"

रेड क्रास की गाड़ी ने लाल गार्डों को चकमा दिया

निराशाजनक स्थितियां खतरनाक कार्यों के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

गहरी सांस लेते हुए एक अफसर ने कहा, 'काश! हमारे पास रेड क्रास की गाड़ी होती! लाल सैनिक शायद उसे अपने बीच में गुजर जाने दें।'

एक दूसरे अफसर ने रेड क्रास के चार बड़े लेबल प्रस्तुत करते हुए कहा हमारे पास यदि रेड क्रास की गाड़ी नहीं है, तो क्या हुआ, धोखा देने के लिए रेड क्रास के लेबल तो हैं।' उसने एक मोटरकार के आगे पीछे और अगल-बगल इन लेबलों को चिपका दिया। वह रेड क्रास की गाड़ी की भांति दिखाई पड़ने लगी।

दो अफसर आगे वाली सीटों पर बैठ गये — एक ड्राइवर की सीट पर और दूसरा उसकी बगल में — एक हाथ गाड़ी के दरवाजे पर रखे तथा दूसरे में पिस्तौल लिये हुए। एक युवक का कप्तान, भयभीत और दुबला पतला पिता पीछे की सीट पर बैठा।

के बाद हम इंजीनियर गढ़ी के सामने पहुंच गये। हमारे अंदर प्रविष्ट होने के लिए बड़े दरवाजे खोल दिये गये और एक क्षण बाद ही हम हाल में पहुंच गये, जहां रूसी, फ्रांसीसी और ब्रिटिश अफसर भरे हुए थे। फौजी स्टाफ ने टेलीफोन स्टेशन के संकट पर रिपोर्ट सुनी और तत्काल वहां एक बख्तरबंद गाड़ी और कुमक भेजने का आदेश दिया। कुछ अन्य प्रश्नों पर विस्तार से बातें हुईं और एक जारशाही जनरल से दो चार बातें करने के बाद हम लौटने के लिए मुड़े।

जनरल ने हमें रोकते हुए कहा, "जरा रुको। मैं तुम लोगों को अपने साथ ले जाने के लिए कुछ उपयोगी चीज देना चाहता हूं।' वह एक मेज़ के पास बैठ गया और उसने सोवियत प्रमाण पत्र के आकार प्रकार के कुछ कागजों को मेज पर फैला दिया। उसने एक ठप्पा उठाकर पहले प्रमाण पत्र पर मुहर लगा दी। उस पर चमत्कारपूर्ण "क्रांतिकारी सैनिक समिति" शब्द अंकित हो गए, जो आकार एवं वर्ण की दृष्टि से बिल्कुल सोवियत मुहर के सदृश थे। यदि यह चोरी किया गया सोवियत ठप्पा नहीं था, तो ठीक उसका प्रतिरूप था। इस नकल को कोई पहचान नहीं सकता था।

इस प्रमाण पत्र को देते हुए जनरल ने कहा, स्वयं त्रात्स्की तुम लोगों को इससे बेहतर प्रमाण पत्र नहीं दे सकता था।" उसने दो और प्रमाण पत्रों पर सोवियत मुहर लगाते हुए उसी तरह मजाक में फिर कहा, 'ऐसे गड़बड़ समय में सदा इस प्रकार के यथोचित कागजों को अपने साथ लेकर चलना चाहिए।' उसने अपनी बात जारी रखी, "लो, यह भी तैयार हो गये। जरूरत के वक्त काम आ जायेंगे। बुरी लिखावट में इसको भर दो, शब्दों को अशुद्ध रूप में लिखो और इसके बाद तुम लोग जहां भी जाना चाहोगे, वहां जाने के लिए प्रथम कोटी का बोल्शेविक अनुमति पत्र तुम्हारे पास होगा। फिर उसने लोहे के कुछ काले गोले थमाते हुए कहा, "हां, ये भी तुम्हारे काम आयेंगे।"

"हथगोले? मैंने पूछा।

जनरल ने उत्तर दिया, 'अजी नहीं, ये तो गोलियां हैं। कैप्स्यूल हैं। बोल्शेविकों के लिए औषधि है। लाल गार्ड के शरीर के उचित भाग पर इनमें से एक का प्रयोग करो और निश्चय ही वह कम्युनिज्म क्रान्ति, समाजवाद और इसी प्रकार की अन्य सभी बीमारियों से मुक्त हो जायगा।

ग्रहा! कितनी ग्रच्छी दवा है!" वह ग्रपन बुद्धि चातुय से वहत प्रमुदित होकर जोर से कह उठा, "गोलिया से भरी हुई रेड क्रास की गाडी!"

हमारी कार फिर से टेलीफोन स्टेशन के लिए रवाना हुई।* मगर पिछले ग्राध घण्टे म ही सडका की स्थिति वदल गई थी। प्राय हर कोने पर लाल सतरी तैनात हा गय थे। वे मुख्यत किसान थे, जिन्ह भाग्य न शान्त ग्रामीण ग्रचला से लाकर इस नगर म पटक दिया था, जा क्रान्तिकारिया ग्रौर प्रतिक्रान्तिवादिया की कारवाइया के फलस्वरूप विकल एव कोलाहल स पूण था ग्रौर जहा इस समय इन दोना के वीच भेद कर पाना बहुत कठिन था।

जव उनकी ग्रोर ग्रपन कागज हिलात, ग्रपनी कार पर रड क्राम के चिन्ह की ग्रोर सकेत करते ग्रौर चीखते हुए हमने कहा, घायल साथिया के लिए सहायता" तो व उलझन म पड जाते। जव तक व प्रकृतिस्थ होन का प्रयास करत, हम उन्ह पीछे छोडकर ग्रागे वढ जात। एक के वाद एक सतरी को इसी प्रकार धाखा देते हुए हम एक भीमकाय किसान सतरी के सम्मुख पहुचे, जा मील्लियोनाया के मध्य म पहरा दे रहा था। उसन राइफल उठाकर हमारा रास्ता रोक दिया ग्रौर हम वहा ग्रचानक ग्रपनी कार खडी करनी पडी।

ग्रफसरा न चिल्लाकर कहा, 'वेवकूफ! क्या तुम्ह दिखाई नही पड रहा है कि यह रड क्रास की गाडी है? उधर जव साथी मर रहे हैं, तो तुम यहा हमारा समय वर्वाद मत करो।'

सन्देह के साथ ग्रफसरा की वर्दी की ग्रार देखते हुए किसान न पूछा, 'क्या ग्राप लाग भी साथी ह?

---

* हम ठीक समय ही इजीनियर गढी स रवाना हा गये, जिसके फलस्वरूप मैं गिरफ्तार हान स वच गया। इस वार मे २० वष वाद केरेन्स्की मत्रिमडल के भूतपूव युद्ध मत्री के सहायक से मुझे जानकारी प्राप्त हुई। उसन मुझे बताया कि सफेद फौजो के जनरल स्टाफ को जब यह ज्ञात हुग्रा कि मैं इजीनियर गढी म था, ता उन्होने मुझे तत्काल गिरफ्तार कर लेन का टेलीफ़ान पर ग्रादश दिया। परन्तु रेड क्राम की हमारी गाडी पहले ही रवाना हा चुकी थी।—लेखक का नोट।

अफसरा ने विश्वास दिलाने के लिए क्रान्तिकारी नारा का उच्चारण करते हुए कहा, "बेशक, साथी हैं। बहुत दिनो तक पूजीपति लोगो का शोषण कर चुके हैं। गद्दार प्रतिक्रान्तिवादी मुर्दाबाद!"

वृद्ध किसान न चिन्तन की मुद्रा मे जैसे स्वय अपने आप से कहा, क्या वह दिन आ गया, जब अफसर गवार लोगो की सहायता करने जा रहे हैं।" उसे इस बात का विश्वास नही हुआ और उसने हम अपने कागज़ दिखाने को कहा।

वह हर पक्ति पर उगली रखकर बडी मुश्किल से एक एक शब्द पढ रहा था। अफसर इसी समय पिस्तौल पर हाथ रखे हुए किसान के मनोभाव का अध्ययन कर रहा था। किसान नही जानता था कि उसकी मौत उसके सिर पर मडरा रही है। यदि वह उन्ह रोक देता, तो अफसर अपनी पिस्तौल की गोलियो से उसका भेजा निकाल देता। हमे अनुमति देना उसके लिए स्वय जीवित रहने की अनुमति पाने के समान था। उसे यह मालूम नही था कि हमारे कागज़ पर जाली ठप्पा लगा है। उसन केवल यही देखा कि यह मुहर सोवियत ठप्पे के समान है, इसलिए उसने कहा, "जाइये," और हम फिर आगे बढे।

टेलीफोन स्टेशन के पास लाल सैनिको के घेरे के सामन हम फिर से पहुचे। अफसरो के लिए यह बडी चिता का क्षण था। घायल सफेद सैनिका की जीवन रक्षा के लिए दवाए लाने के बहाने व लाल रक्षका के लिए मौत और आघात पहुचाने की सामग्री लिये जा रहे थे। लाल सनिका को इस बात की कोई जानकारी नही थी। यद्यपि उन्ह प्रतिक्रान्तिवादिया की गद्दारी का सबूत मिल चुका था, इसका उन्हे अनुभव प्राप्त हो गया था, फिर भी उनके दिमाग मे यह बात नही आई कि वे सभी नैतिक नियमो का उल्लघन करेगे और रेड क्रास सम्बन्धी अपनी ही सदाचार नियमावली को भग करेगे। इसलिए जब इन अफसरो ने मानवता के नाम पर यह प्रार्थना की कि हमारी कार को शीघ्रता से गुज़र जाने दिया जाये, तो लाल गार्डो न उत्तर दिया, "अच्छी बात है, रेड क्रास वालो, जल्दी से निकल जाओ।

लाल पक्ति से होकर जान की अनुमति मिल गई और क्षण भर के बाद ही हथगोला से भरी हुई कार घेरे म लगभग बन्दी हुए

प्रतिक्रान्तिवादियों की तुमुल हर्षध्वनि के बीच टेलीफोन स्टेशन के तोरण-द्वार के भीतर पहुँच गई। वे हथगोले और ताजी फौजी सूचना प्राप्त कर प्रसन्न थे। परन्तु उन्हें सब से अधिक खुशी यह जानकर हुई कि उनकी सहायता के लिए बख्तरबन्द गाड़ी आ रही है।

दसवाँ अध्याय

सफेद गार्डों के लिए दया या मौत?

टेलीफोन स्टेशन के भीतर घिरे सफेद गार्डों के लिए वह निराशाजनक एवं दुःखद स्थिति थी। मगर जब उन्हें यह सुखद संवाद मिला कि उनके परित्राण के लिए बख्तरबन्द गाड़ी आ रही है, तो वे इसकी झलक पाने के लिए सड़क के निचले भाग की ओर टकटकी बाँधकर देखने लगे।

धचके खाती हुई यह बख्तरबन्द गाड़ी जब नेव्स्की मार्ग से इधर आयी, तो उन्होंने हर्षध्वनि से उसका स्वागत किया। लोहे के एक विशाल युद्धाश्व की भाँति यह सड़क पर भदभदाती हुई अवरोधों के सामने आकर खड़ी हो गई। सफेद गार्डों ने पुनः हर्षध्वनि की। मगर यह हर्षध्वनि दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुई। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि वे अपने ही ध्वंस का जयजयकार कर रहे थे। उन्हें मालूम नहीं था कि यह बख्तरबन्द गाड़ी उनकी नहीं थी — लाल सैनिकों के हाथ में चली गई थी। यह तो माना ट्रोजन के घोड़े के समान थी, जिसकी कवचित कोख में क्रान्ति के सैनिक छिपे बैठे थे। इसके नालमुख को इधर उधर घुमाकर ठीक तोरण द्वार की ओर कर दिया गया। उसके बाद इसने अपने नालमुख से अचानक ऐसे ही गोलियाँ बरसानी शुरू की, जैसे पौधों को सींचने के काम आनेवाले अभिनाल से पानी बहने लगता है। हर्षध्वनि की जगह अब चीख चिल्लाहट सुनाई देने लगी। बबसों और एक दूसरे पर गिरते और चीत्कार करते हुए संकटग्रस्त इन अफसरों का समूह हॉल को लाँघकर सीढ़ियों की ओर भागा।

कितना चमत्कारपूर्ण न्याय है यह! यही अभी कुछ घंटे पूर्व प्रतिक्रान्तिवादियों ने क्रान्ति की कनपटी पर अपनी पिस्तौल तानी थी और अब क्रान्ति की तोपें उनकी कनपटी की ओर तनी हुई थीं।

सीढियो के ऊपर पहुचकर सफेद गार्ड एक दूसरे से अलग हो गये, परन्तु प्रतिरोध करने के लिए नही, बल्कि इसलिए कि अधिक तेजी से भाग सके। दस दृढसकल्प सैनिक एक हजार सैनिको के विरुद्ध इस सीढी को अपने कब्जे म रख सकते थ। परन्तु ऐसे दस सैनिक होते, तभी न! दस की बात तो अलग रही, वहा एक भी ऐसा सैनिक नही था। वहा केवल आतकग्रस्त समूह था, जो भय के पजे मे जकडा हुआ था, डर स उनके चेहरे पीले पड गये थे और विवेक समाप्त हो गया था। उनकी हिम्मत बिल्कुल जवाब दे गई थी। प्रज्ञा समाप्त हो गई थी। विपत्ति के समय एकता के लिए समूह प्रियता की सामान्य भावना भी उनमे नहा रही थी।

अपनी अपनी जान बचाओ!" अफसरो का अब यही नारा हो गया था।

वे अपनी टोपियो, पटियो और तलवारो को फेंकने लगे, जो कभी प्रतिष्ठा के चिन्ह थे, व अब शर्म एव मौत के बैंज बन गये। वे कधो पर लगी सुनहरी रेशमी फीतियो फाड रहे थे और बटनो को काट काटकर फेंक रहे थे। वे ओहदे को छिपाने के लिए श्रमिको की पोशाक, लबादा और कोई श्रमिक परिधान पाने के लिए अनुनय विनय कर रहे थे। एक अफसर खूटी पर टगी हुई कारीगरो की एक गन्दी बण्डी पाकर खुशी से पागल हो उठा। एक कप्तान का बावर्ची का पेशबन्द मिल गया, उसने उसे पहन लिया, अपनी बाहो को आटे से लथपथ कर और डर के कारण पहले से ही सफेद हुआ यह रूस का सबसे अधिक सफेद गार्ड बन गया।

मगर उनमे से अधिकाश के लिए अलमारियो, टेलीफोनो के स्टैंडो, कोष्ठो और अटारियो के अधेरे कोनो मे छिपने के अलावा और कोई जगह सुलभ नही थी। जिस प्रकार शिकारियो द्वारा पीछा किये जानेवाले जानवर भागते भागते थककर कही भी भहराकर गिर पडते ह उसी प्रकार वे अपनी रक्षा के लिए इन अधेरे स्थानो म रेग रहे थे। पहले तो इन अफसरो ने अपने शत्रुओ को धोखा दिया और अब अपने पक्ष के साथ गद्दारी कर रहे

है – उनकी वजह से युवक इस घेरे मे आ गये थे। अब जबकि फन्दा कसता जा रहा था, तो अफसर उनका साथ छोड रहे थे।

पहले विवेक से काम लेकर युवको ने अपने होश हवास सम्भाले और आवाज लगानी शुरू की, 'हमारे अफसर! कहा हैं हमारे अफसर?" जब कोई उत्तर नही मिला, तो युवको ने चिल्लाकर कहा, "जहन्नुम मे जाने दो इन बुजदिलो को! कम्बख्त पीठ दिखाकर भाग गये!"

इस विश्वासघात से युवक क्रोधाभिभूत हो गये थे और इस कारण एकजुट हो गये। उनके लिए सबसे अच्छी बात यही होती कि वे सीढियो पर डटे रहते, परन्तु हिम्मत ने साथ न दिया। अब वे लाल गार्डो के प्रतिशोध का शिकार होनेवाले थे और काप रहे थे। परित्रस्त होने के कारण वे आगे न बढ सके। वे मोटी और ठोस दीवारोवाले एक कमरे मे छिप गये, जिसका दरवाजा बहुत छोटा था। बिल मे भरे हुए चूहो के झुण्ड की भाति वे इस छोटे से कमरे मे भयातुर उस क्षण की प्रतीक्षा मे थे, जब उमडती हुई लाल लहर सीढियो और गलियारो को डुबोती उन्हे भी यहीं डुबा देगी।

इनमे से कुछ युवाजन मध्यम वर्ग के थे और उनके लिए इस प्रकार मरना दुहरी दुखान्त घटना थी। जिन किसानो और मजदूरो से उनका कोई झगडा नही था, उन्ही हाथो अब उनकी मौत होनेवाली थी! मगर प्रतिक्रान्तिवादियो के इस शिविर मे फस जाने के बाद उनके विनाश के साथ उनका अन्त भी लाजिमी था। वे इसे अच्छी तरह जानते थे कि अपनी करनी का फल पा रहे है। अपने अपराध की इस चेतना से वे बहुत व्याकुल और व्यथित थे। बन्दूके उनके हाथ से गिर पडी। वे आह भरते हुए कुर्सियो और मेजो पर ढह पडे और उनकी नजर उस दरवाजे पर जमी हुई थी, जहा से उमडती हुई लाल लहर किसी भी क्षण वहा पहुच सकती थी। उन्होने कान लगाकर सीढियो पर इस लहर के प्रथम वेग के उमडन घुमडन, दरवाजे पर इसके प्रहार की आवाज सुनने की कोशिश की लेकिन वहा स्तब्धता छाई हुई थी उनकी भयाक्रान्त नाडियो की तीव्र गति के अलावा और कोई आवाज सुनाई नही दे रही थी।

इस भवन में एक और यत्रणाप्रद कमरा था। वहा अतानाव, लाल सतरी और सफेद गार्डों द्वारा दिन में पकडे गये अन्य सभी कैदी थे। वे वहा असहाय अवस्था मे कमरे में बन्द थे और बाहर घनघोर लडाई चल रही थी, जिससे उनकी शान्ति एव स्वय उनके भाग्य का फैसला होनेवाला था। उन्हे यह सूचना नही मिलती थी कि बाहर लडाई कैसे चल रही है। कमरे की मोटी दीवारो से होकर बरसते गोलियो के दगने और शीशे के गिरकर चकनाचूर होने की आवाजें बराबर सुनाई पड रही थी।

अब अचानक यह शोर-गुल बन्द हो गया। इसका क्या अर्थ था? क्या प्रतिक्रान्ति की विजय हो गई? क्या सफेद गार्डों ने बाजी मार ली? अब आगे क्या होगा? गोली मारनेवाला का दल वहा आकर दीवाल के सामने हम पक्तिबद्ध खडा कर देगा? हमारी आखो पर पट्टिया बाध दी जायेंगी? हम पर राइफल से तडातड गोलिया दाग दी जायेंगी? हम मौत के शिकार हो जायेंगे? शान्ति की भी मौत हो जायेगी? हथेलियो पर सिर रखे हुए वे इसी प्रकार की चिन्ताओ में डूबे हुए थे और दरवाजे के ऊपर लगी हुई दीवार घडी की सुई प्रति सेकेण्ड निर्ममता से आगे बढती जा रही थी। कोई भी क्षण उनके जीवन का अन्तिम क्षण हो सकता था। इस अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा मे वे गोली मारनेवालो की पद चाप सुनने की पूरी कोशिश कर रहे थे। मगर दीवार घडी की टिक टिक के अलावा वहा और कोई आवाज सुनाई नही देती थी।

इसके अलावा एक और भी सतापकारी कमरा था, जो महिलाओ से भरा हुआ था। यह सबसे ऊपर की मजिल पर था, जहा टेलीफोन कार्यालय मे काम करनेवाली भयाक्रान्त लडकिया स्विचबोड के इर्द गिर्द जमा थी। आठ घण्टे की गोलाबारी, अफसरो की भगदड और सहायता के लिए पागलो की भाति उनकी चीख पुकार से ये लडकिया बुरी तरह परेशान हो उठी थी और सभी तरह की ऊट पटाग बात सोचने लगी थी। उन्होने बोल्शेविको के "पाशविक अत्याचारो" के बारे मे अफवाहे सुनी थी, यह अफवाह भी उनके कानो तक पहुची थी कि उन्होने महिला बटालियन की लडकियो के साथ बलात्कार किये और जिन बोल्शेविको पर इस प्रकार के आरोप थोपे गये थे, वे ही अब नीचे प्रागण मे खचाखच भरते जा रहे थे।

उत्तेजनावश मानसिक सन्तुलन खो देने के कारण वे विह्वलता की दशा में इस प्रकार की कल्पनाएं कर रही थीं, मानो वे पाशविकता की शिकार हो चुकी हैं, राक्षसों की बाहों में छटपटा रही हैं। वे रोने लगीं। उन्होंने अपने सगे सम्बन्धियों को विदाई के अंतिम पत्र लिखे। डर के मारे उनके चेहरे का रंग उड़ गया था और वे समूहों में जमा होकर बदमाशों के हाल में दाखिल होने तथा उनके आक्रोश भरे स्वर और उनके बूटों की ठपठप सुनने की प्रतीक्षा कर रही थीं। परन्तु वहां बूटों की ठपठप नहीं, बल्कि स्वयं उनके अपने धड़कने दिलों की धड़कन सुनाई पड़ रही थी।

इमारत में मकबरे का सा सन्नाटा छा गया था। यह मृत व्यक्तियों की शांति नहीं, बल्कि व्यग्र एवं दोलायमान शांति थी—भवन के अन्दर आतंक से जड़ हुए सैकड़ों जीवित व्यक्तियों की शांति थी। निस्तब्धता संक्रामक होती है। दीवालों से बाहर लाल सैनिकों की भीड़ को भी इसने अपने चंगुल में ले लिया। वे भी भयग्रस्त होकर मौन हो गये। डर के कारण वे सीढ़ियों से परे हट गये। कहीं वहां से उन पर ढेरों गोले न फट पड़ें, गोलियों की बौछार न हो जाय। अन्दर छिपे सफेद गार्डों से बाहर के सैकड़ों लाल गार्ड आतंकित थे। बाहर खड़े लाल गार्डों से अन्दर के सैकड़ों सफेद गार्ड भयाक्रान्त थे। हजारों मनुष्य एक दूसरे को यन्त्रणा दे रहे थे।

इमारत के अन्दर निस्तब्धता की यह अग्नि परीक्षा असहनीय हो उठी। कम से कम मैं अब इसे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इस सन्नाटे से मुक्ति पाने के लिए मैं यह जाने बिना ही कि किधर जा रहा हूं, तेजी से आगे बढ़ गया। संयोगवश बगल का दरवाजा खोलते ही मैंने अपने को युवकों से भरे हुए कमरे में पाया। वे ऐसे घबराकर उछल पड़े, मानो यह उनके विनाश का धमाका हो।

हांफते हुए उन्होंने कहा, 'अमरीकी संवाददाता! आह! आप हमारी सहायता कीजिये! हमें बचाइये!'

हिचकिचाते हुए मैंने कहा, 'मैं किस प्रकार आप लोगों की सहायता कर सकता हूं? मैं क्या करूं?'

उन्होंने अनुनय विनय के स्वर में कहा, 'कुछ भी कीजिए, कृपया कोई उपाय कीजिए। हमें किसी प्रकार बचा लीजिए।

उनसे मैं मिला। मैंने अन्तोनोव का नाम लिया। दूसरे भी मेरी भाँति उनका नाम का ... अन्तोनोव, हाँ अगर अन्तोनोव आयें, तो हमारी प्राण रक्षा हो सकती है। आप अन्तोनोव के पास जायें। वह यहाँ अन्तोनोव हैं। जल्दी कीजिए, हमको सदा अन्तोनोव के पास पहुँच जाइए। यह कहते हुए उन्होंने सबने भी आग्रह किया।

एक क्षण के बाद ही मैं उसी से दूसरे कमरे में दाखिल हुआ। वहाँ सब प्रभावशाली व्यक्ति—अन्तोनोव और ... थे।

अब आप सभी न्यायाधीश हैं। आपके सामने वे। युंकर आत्म-समर्पण कर रहे हैं। वे आपसे अपनी प्राण रक्षा के लिए अनुनय विनय कर रहे हैं। उन्हें हर बात मंजूर है। वे केवल अपनी प्राण रक्षा चाहते हैं। बस, जल्दी कीजिये, जल्दी।

वही अन्तोनोव, जो यहाँ परिस्थितिवश मृत्यु की बाट जोह रहे थे, एक क्षण बाद स्वयं दूसरों के जीवन और मौत के निर्णायक बन गये। अपराधी से न्याय करने का पद जा रहा था। कितना आश्चर्यजनक परिवर्तन था! परन्तु इन कठिन और परिवर्तनशील क्रान्तिकारी के चेहरे की भावनाओं में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यदि उनके दिमाग में प्रतिशोध की भावना आई भी, तो उसी क्षण दूर भी हो गई। उन्होंने सौम्य भाव से कहा, 'तो मेरी मौत नहीं आई, बल्कि मैं अब कमाण्डर हूँ। हाँ तो अब सब से पहले युंकरों से भेंट की जाय। अच्छी बात है।' अपना हैट उठाकर वे युंकरों से मिलने ऊपर चल दिए।

अन्तोनोव को देखते ही युंकर कहने लगे, अन्तोनोव! गोस्पोदीन (श्रीमान) अन्तोनोव! कामरेड अन्तोनोव! हमारी प्राण रक्षा कीजिये। हम जानते हैं कि हम दोषी हैं। किन्तु अब हम अपने को आपकी दया पर छोड़ देते हैं।'

सुखद दुस्साहस का यह दुखद अन्त! सुबह बोल्शेविकों को मार डालने के लिए उन पर धावा बोलने का उफान और शाम को उन्हीं बोल्शेविकों से जीवन की भीख मांगते हुए गिड़गिड़ाना। उस समय उन्होंने "कामरेड" शब्द का वैसे ही प्रयोग किया, जैसे सम्भवत कोई 'सूअर' शब्द का इस्तेमाल करता है, और अब सम्मान सूचक शब्द के रूप में बड़ी श्रद्धा के साथ इसका प्रयोग कर रहे थे।

उन्हान गिडगिडाते हुए कहा, "कामरेड अतानोव, एक बोल्शेविक, एक सच्चे बोल्शेविक के रूप म आप हम प्राण रक्षा का वचन दे। हमारी सुरक्षा का आश्वासन दें।

अतोनोव ने कहा, "म वचन देता हू। मैं तुम्हे सुरक्षा का विश्वास दिलाता हू।

एक युकर ने बुदबुदाते हुए कहा, 'कामरेड अन्तोनाव, हो सकता है कि वे आपकी बात पर कान न दे, हमे मार ही डाल।"

अतोनोव ने आश्वासन दिया, मुझे मार डालने के बाद ही वे तुम्ह मारेंगे।"

उस घणित व्यक्ति ने रिरियाते हुए कहा, पर, हम मरना नही चाहते।"

भीड ने सफेद गार्डों की मौत की माग की

अतोनोव युकरा के प्रति अपनी घणा को नही छिपा सके। व हाल को लाघकर सीढिया से नीचे उतरने लगे। तनाव के कारण उनका हर कदम बदूक के धमाके के समान प्रतीत हो रहा था।

बाहर खडे लाल गार्डों ने परा की आवाज़ सुनी ता गालिया की बौछार की आशका से अपनी राइफले तान ली। और तब यह आश्चयजनक दश्य उपस्थित हुआ। उन्हान देखा कि अतोनोव, उनके नता अतोनोव आ रहे है।

सैंकडा कण्ठ एकसाथ कह उठे, "नाश। नाश!" (अपन। अपन।) अन्तोनोव। अतोनोव जिदावाद।" प्रागण म जो जयजयकार हो रहा था उसे सुनकर सडक पर भी यह जयध्वनि गूज उठी और आगे बढ़ती हुई भीड ने चिल्लाकर पूछा, अतोनोव, अफसर कहा हैं? अफसर और युकर कहा ह?'

उन्होंने हार मान ली, अतानोव ने सूचित किया, 'हथियार डाल दिए।

जिस प्रकार बाध टूटन से पानी के तज़ बहाव का स्वर गूज उठता है, उसी प्रकार हजारो कण्ठ दहाड उटे। विजय के जयघाप और उच्छ्वास

वे बीच भीड म उदघापणा की   अफसरा रा मौत के घाट उतार रा! यकरा रा मार डाला!"

सफेद गार्डों व थर थर कापन व लिय यह पर्याप्त कारण था! व अब उनकी दया पर थे, जिनस दया पान का हक वे पूरी तरह खा चुक थ। लडन के कारण नही, बल्कि कपटपूण ढग से लडने के कारण उन्होंने जन-समुदाय म ज्वालामुखी की भाति गुस्से की यह तेज आग भडका दी था। इन मजदूरा और सनिका की दष्टि म सफेद गाड उनके लाल साथिया के हत्यार, शाति को खून म डुबोने की साजिश करनेवाले, पाखण्डी व दुराचारी थे और कीडे मकाडा की भाति उन्हें मिटा देना चाहिय। लाल सनिक डर के कारण ही अभी तक सीढ़िया लाघकर अदर नही घुसे थे। मगर अब भय के सभी कारण दूर हा गये थे। क्षुभित जन समुदाय न आग बढकर भवन पर धावा बाल दिया और रात म लागा के य नारे गूज उठे, 'हत्यारा को मिटा दा! सफेद शैताना का मौत के घाट उतार दा! कोई बचने न पाए, सबको खत्म कर दो!"

उस अधेरे म इधर और उधर मशाल की राशनी म दाढ़ीवाले किसाना व सनिका के चेहरे, नगर के शिल्पकारा के रौद्र एव कृश चेहरे और अग्रिम पक्ति म भीमकाय बाल्टिक नौसनिका के निष्कपट, परन्तु सजग मुखमण्डल चमक रहे थे। उन सभी की चमकती आखा और भिचे हुए जबडा से प्रतिशोध की भावना अभिव्यक्त हो रही थी—दीघकालीन उत्पीडन के फलस्वरूप पैदा होनेवाली भीषण प्रतिशोध की भावना। पीछे मे उमडती हुई भीड के दबाव से आगे के लोग सीढिया की ओर बढ़ते जा रहे थे, जहा शान्त एव आवेगरहित अन्तोनोव खडे थ। परन्तु इस उमडते हुए जन समुदाय के सम्मुख वे बहुत निबल और असहाय दिखाई पड रहे थे।

अन्तोनोव ने अपना हाथ उठाते हुए उच्च स्वर म कहा, "साथियो, आप उन्हें मार नही सकते। युकरो ने आत्म समपण कर दिया है। वे हमारे बदी है।"

यह सुनकर भीड स्तम्भित रह गई। फिर सम्भलते हुए नाराजगी म चीखते हुए अपनी भावनाओं का अभिव्यक्त किया   नही, नही! व हमारे बदी नही   लाशे ह!

अन्तोनोव ने दोहराया, उन्होंने अपने हथियार डाल दिये हैं। मैंने उन्हें प्राण दान दिया है।

भीड़ की ओर अनुमोदन के लिए देखते हुए एक हृष्ट-पुष्ट किसान ने गल्लावर कहा, 'आप उन्हें जीवन दान दे सकते हैं मगर हम ऐसा नहीं करेंगे। हम उन्हें संगीनों से मौत के घाट उतारेंगे।'

इस कथन के समनुमोदन में भीड़ ने एक साथ जोर से कहा, 'संगीनें! हां, हम उन्हें संगीनों से मौत के मुंह में झोंक देंगे।'

अन्तोनोव ने इस बवण्डर का सामना किया। उसने एक बड़ी पिस्तौल हाथ में लेकर उसे ऊपर हिलाते हुए उच्च स्वर में कहा, "मैंने युवकों की सुरक्षा का वचन दिया है। समझे! मैं इस पिस्तौल से अपने वचन की सुरक्षा करूंगा।"

भीड़ हक्का-बक्का रह गई। यह अविश्वसनीय था।

'यह क्या मामला है? क्या अभिप्राय है आपका?" उन्होंने जानना चाहा।

अपनी पिस्तौल को कसकर पकड़े और उंगली को उसके घोड़े पर रखे हुए अन्तोनोव ने अपनी इस चेतावनी को दुहराया, 'मैंने उन्हें, उनकी प्राण-रक्षा का वचन दिया है। मैं इस पिस्तौल से अपने वचन की सुरक्षा करूंगा।"

सैकड़ों कण्ठों से यह वज्र घोष गूंज उठा, 'गद्दार! भगोड़ा!" एक भीमकाय नौसैनिक ने क्रोध में द्रुतगति से उनकी ओर बढ़कर उनके मुंह पर कहा, "सफेद गार्डों का रक्षक! तुम इन बदमाशों को बचाना चाहते हो। परन्तु तुम उनकी प्राण-रक्षा नहीं कर सकते। हम उन्हें मार ही डालेंगे!"

अन्तोनोव ने धीरे-धीरे परन्तु हर शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'कैदियों पर प्रहार करनेवाले को मैं वहीं पर खत्म कर दूंगा समझे! वह मेरी गोली का शिकार हो जायेगा!"

हम गोली मारोगे?" अपमानित नौसैनिकों ने पूछा।

क्रोधाभिभूत भीड़ ने एक साथ कड़ककर कहा, हमें गोली मारोगे! तुम हमें गोली मारोगे!"

यह सही अर्थ में एक भीड़ थी—आवेश में उग्र भावनाओं को व्यक्त करनेवाली भीड़। इस भीड़ की सभी पाशविक भावनाएं उत्तेजित हो गई

थी। वह क्रूर और निर्मम थी, खून की प्यासी थी। इसमें भेड़िये की बर्बरता और बाघ की हिंस्रकता भडक उठी थी। वह तो शिकारियों द्वारा उत्तेजित उस विशालकाय जगली जानवर के समान थी, जिसे जगल से खदेड़ा दिया गया हो, जो घायल हो, जिसके घावों से रक्त बह रहा हो, जो दिन भर प्रक्षोभित एव व्यथित रहा हो और अब अन्त में खुशी व क्रोध के सवेग में वह अपने उत्पीडकों पर टूट पडने को उद्यत हो और उन्हें टुकडे टुकडे कर देना चाहता हो। ठीक इसी समय यह ठिगना सा आदमी इसके और इसके शिकार के बीच अवरोध के रूप में आकर खडा हो गया था। मेरी दृष्टि में पूरी क्रान्ति के दौरान सर्वाधिक भावात्मक बात इस उग्र भीड के सामने इस ठिगने से व्यक्ति का जीने पर खडे हो जाना था। वह निडरता से भीड की ओर देख रहा था, उसकी हजारों क्रोधित आखों से आख मिला रहा था। उसका चेहरा पीला पड गया था, परन्तु अगों में किसी तरह की कोई कपकपी नहीं थी। और जब उसने पुनः धीरे धीरे एव शान्त भाव से यह कहा कि, "युकर को मारने की कोशिश करनेवाले पहले व्यक्ति को मैं वहीं खत्म कर दूगा," तो उसके स्वर में कोई कम्पन नहीं था।

इस दिलेरी एव दृढता से लोग स्तब्ध रह गये।

उन्होंने चिल्लाकर पूछा, "क्या मतलब है तुम्हारा? क्या तुम इन अफसरों, इन प्रतिक्रान्तिवादियों को बचाने के लिये हम मजदूर क्रान्तिकारियों को मारना चाहते हो?"

अन्तोनोव ने प्रत्युत्तर में व्यग्यपूर्ण ढग से कहा, "हु, क्रान्तिकारी! क्या खब क्रान्तिकारी हो तुम लोग भी! कहा है यहा क्रान्तिकारी? तुम लोग अपने को क्रान्तिकारी कहने की हिम्मत करते हो? तुम लोग जो असहाय व्यक्तियों, कैदियों को मारना चाहते हो!" इस व्यग्योक्ति का असर पडा। भीड ऐसे चौकी मानो उस पर कोडे की चोट पडी हो।

अन्तोनोव कहते गये, "मेरी बात सुनो! जानते भी हो कि तुम क्या कर रहे हो? इस पागलपन का परिणाम क्या होगा, यह भी समझते हो? तुम एक बन्दी सफेद गार्ड को मारकर प्रतिक्रान्ति की नहीं, बल्कि क्रान्ति की हत्या करोगे। मैंने इस क्रान्ति के लिये निष्कासन और जेल में अपने जीवन के बीस वर्ष व्यतीत किये हैं। तुम क्या सोचते हो कि मैं स्वय एक क्रान्तिकारी होते हुए क्रान्तिकारियों को क्रान्ति की हत्या करते देखता रहूगा?"

तब किसान ने चीखते हुए कहा परन्तु यदि वे हमें पा जाते, तो जरा भी दया न दिखाते। वे हमें मार डालते!'

अन्तोनोव ने कहा 'हाँ, यह सही है। परन्तु इससे क्या हुआ? वे क्रान्तिकारी नहीं हैं। वे पुरानी व्यवस्था और जार के पोषक हैं, वे उस व्यवस्था के पोषक हैं, जिसमें लोगों की हत्या की जाती थी, उन्हें पीटा जाता था। परन्तु हम क्रान्तिकारी व्यवस्था के समर्थक हैं। और क्रान्ति का अर्थ है बेहतर व्यवस्था। इसका अभिप्राय है सब के लिए स्वतंत्रता और जीवन रक्षा की व्यवस्था। इसीलिए आप अपना जीवन न्योछावर करते हैं और रक्तदान करते हैं। परन्तु इसके लिए आपको इससे अधिक समर्पण करना होगा। आपको विवेक से काम लेना होगा। आपको क्रान्ति की सेवा को अपनी भावनाओं की तुष्टि से ऊपर मानना चाहिये। आपने क्रान्ति की विजय के लिए अपनी वीरता प्रदर्शित की है। अब क्रान्ति की प्रतिष्ठा के लिए दयाशील बनिए। क्रान्ति से आपको प्यार है। मैं केवल यही चाहता हूँ कि जिस चीज से आप प्यार करते हैं, उसे नष्ट न कीजिए।'

अन्तोनोव बड़े जोश के साथ बोले उनका चेहरा उत्तप्त था, हावो-भावों और वाणी के उतार चढ़ाव से उन्होंने अपनी बातों में जोर पैदा किया। अपनी अन्तिम अपील में उन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा दी और अब वे परिक्लान्त दिखाई पड़ रहे थे।

अन्तोनोव ने मुझसे अनुरोध किया, 'कामरेड, अब आप बोलिये!'

मैंने चार सप्ताह पूर्व 'गणराज्य' नामक युद्धपोत पर इन नौसैनिकों के समक्ष भाषण दिया था। मैं ज्योंही बोलने के लिए आगे बढ़ा, उन्होंने मुझे पहचान लिया और चिल्ला उठे, अमरीकी कामरेड!'

मैंने उच्च स्वर में और बहुत जोश के साथ क्रान्ति जमात एवं स्वतंत्रता के लिए सारे रूस में हो रही लड़ाई सफेद गार्डों के विश्वासघात और उनके उचित क्रोध का उल्लेख किया। परन्तु सारे विश्व की निगाहें समाजवादी क्रान्ति के लिए संघर्षरत इन हरावल दस्तों की ओर लगी हुई हैं। क्या वे बदले की भावना से उसी पुराने खूनी मार्ग का अनुसरण करेंगे अथवा सदाचार का नया गरिमापूर्ण पथ प्रशस्त करेंगे? उन्होंने क्रान्ति की रक्षा में अपने साहस का परिचय दिया है। क्या वे इसकी मर्यादा के अनुरूप अपनी विशाल हृदयता का भी परिचय देंगे?

मेरे शब्दों का उन पर असर पड़ा। किन्तु विषय वस्तु की दृष्टि से नहीं। यदि मैंने ईश्वर की प्रार्थना अथवा वेब्स्टर का पाठ किया होता, तब भी प्रायः इतना ही असर पड़ता। सैकड़ों में शायद एक भी मेरी बात समझा होगा क्योंकि मैं अंग्रेजी में बोला था।

परन्तु अंधेरे में गूंजते हुए इन विचित्र एवं विदेशी भाषा के शब्दों ने उनका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया और उन्हें सोचने के लिए विवश किया—अंतानोव यही तो चाहते थे कि कुछ समय बीत जाये और उग्र भावनाओं का यह झंझावात कुछ शांत हो और तब तक दूसरी भावनायें उन पर हावी हो जायेंगी।

क्रांति ने भीड़ को अनुशासित किया

कुछ समय तक इस जन समुदाय का व्यवहार भीड़ की भांति था, मगर यह क्रांतिकारी भीड़ थी। मजदूरों और सैनिकों की इस भीड़ में कम से कम आधे लोगों के हृदयों में क्रांति के प्रति अक्षुण्ण निष्ठा की प्रबल भावना थी। यह शब्द ही उनके लिये जादू का असर रखता था। क्रान्ति में ही उनके सपने, आशाएं और आकांक्षाएं निहित थीं। वे इसके पुजारी थे। क्रांति ही उनके लिये सब कुछ थी।

यह सच है कि इस क्षण क्रांति के हर विचार को तिरोहित कर एक अन्य भावना उन पर हावी हो गई थी। इस समय उनके सिरों पर प्रतिशोध का भूत सवार था और भीड़ इसके इशारों पर नाच रही थी। किन्तु यह स्थिति अस्थाई थी। केवल क्रान्ति के प्रति ही उनके जीवन की स्थाई निष्ठा थी। समय आने पर यह उग्र भीड़ अवसर के अनुकूल तुच्छ भावनाओं में अपने को ऊपर उठा लेगी अन्यायपूर्वक अधिकार छीननेवालों को खदेड़ देगी, अपने प्राधिकार का प्रयोग करेगी और पुनः अपने अनुयायियों पर नियंत्रण कायम करेगी। केवल अन्तोनोव ही इस विशाल जन समुदाय की भावनाओं का विरोध नहीं कर रहे थे। इस भीड़ में हजारों अन्तोनोव थे जो उन्हीं की भांति क्रान्ति की मर्यादा की रक्षा के लिये उच्च भावनाओं से परिपूर्ण थे। अन्तोनोव तो इस भीड़ की एक इकाई मात्र थे उसी का अंग थे। उनकी भी वही हो भावना थी, जो भीड़ की थी, वे

भी युकरा ग्रौर ग्रफसरा क विरुद्ध थे ग्रौर वे भी भीड की भाति उग्र भाव
नाग्रा स दहक रह थ।

इस भीड म ग्रतोनाव पहले व्यक्ति थ, जिन्हाने ग्रपन भावावेश पर
नियत्रण कायम किया ग्रौर क्रान्ति ने जिनकी चेतना से प्रतिशोध की भावना
दूर की। क्रान्ति की धारणा स जिस प्रकार उनकी भावनाग्रा म परिवतन
हुग्रा, उसी प्रकार सैनिको एव मजदूरा का भी हृदय परिवतन होगा।
ग्रन्तोनोव यह जानते थे। उन्हान 'क्राति' चमत्कारी शब्द को दुहराकर
उनकी क्रातिकारी चेतना को सजग करन की कोशिश की, उन्हाने उस
ग्रराजकता के बीच क्रातिकारी व्यवस्था कायम करने की चेष्टा की। उन्हे
इसम सफलता मिली।

हमारी ग्राखो के सामन ही शब्द का पुराना जादू काम कर गया—
हुल्लड समाप्त हो गया, तूफान शात हो गया। इधर उधर एकाध व्यक्ति
के गुस्स म ग्रभी ग्रपनी जिद्द पर ग्रडे रहन के ग्रतिरिक्त भीड की गुर्रा ग्रौर
ग्राक्रोश भरी चिल्लाहट समाप्त हो गइ। परन्तु जब वोस्कोव ने रूसी भाषा
म मेरा भाषण समझाया ग्रौर ग्रतोनाव पुन बोले, तो विरोध करनेवाले
लोग भी शात हो गये। सयमित तथा बात सुनने को इच्छुक थे सैनिक
ग्रौर नाविक ग्रब प्रतिशोध लेने की ग्रपनी इच्छा की जगह क्राति की इच्छा
को महत्त्व दे रहे थे। उन्हे तो केवल यह समझाने की ग्रावश्यकता थी कि
क्रान्ति उनसे किस चीज की ग्रपेक्षा करती है।

उन्होने चिल्लाकर पूछा, 'तो ग्रतोनोव, यह कहिये कि ग्राप हमसे
क्या चाहते है?'

ग्रन्तोनोव न कहा, युकरा को युद्धबन्दी माना जाय। ग्रात्म समपण
की शर्तो का पालन किया जाये। मने उन्हे वचन दिया है कि उनकी प्राण
रक्षा की जायगी। मै चाहता हू कि ग्राप लाग भी मेरे ग्राश्वासन का समथन
कर।

भीड ने सोवियत का रूप ग्रहण कर लिया। पहले एक नौसैनिक ने
भाषण किया, उसके बाद दो सैनिक ग्रौर एक मजदूर न भाषण किये।
हाथ उठाकर वोट लिया गया। युद्ध ग्रपराजित सैकडा हाथ ऊपर उठे फिर
सैकडा हाथ ग्रौर उठे तथा इस तरह उनकी सख्या हजारो तक पहुच गई।
ये वही हजारा हाथ थे जो कुछ ही समय पहले मुट्ठिया बाधे

अफसरा के लिये मात का खतरा प्रस्तुत कर रहे थे, अब उदारता से उनकी प्राण रक्षा का वचन दे रहे थे।

ठीक उसी समय पत्रोग्राद दूमा* का प्रतिनिधिमण्डल वहा पहुच गया, जिसे नागरिक मुठभेडो को यथासंभव कम से कम रक्तपात द्वारा खत्म करने का कार्यभार सौंपा गया था। परन्तु क्रान्ति तो स्वय ही रक्तपात के बिना अपने मामलो को निपटा रही थी। इसने इन महाशयो की ओर कोई ध्यान नही दिया। सफेद गार्डो को बाहर लाने के लिये एक दल भेजा गया। पहले युकरो और उनके बाद अफसरो को छिपे हुए स्थानो से निकालकर बाहर लाया गया। एक को तो टाग से पकडकर घसीटते हुए बाहर लाना पडा। वे मशालो की रोशनी मे अपनी आखें चपचपाते हजारो बदूको के नालमुखो का सामना करते और हजारो हृदयो की धिक्कारो को सुनते हुए तथा हजारो नेत्रो से बरसनेवाली आग से पत्थर की ऊची सीढियो पर भयाक्रात खडे थे।

उन पर कुछ फब्तिया कसी गयी, उन्हे 'क्राति के हत्यारो' के नाम से पुकारा गया और उसके बाद शाति छा गई – एक न्यायालय की गभीर शाति। हा, यह न्यायालय ही तो था – अधिकारवचितो का न्यायालय। उत्पीडित अब उत्पीडकों के अपराध का निर्णय करनेवाले थे। नई व्यवस्था पुरानी व्यवस्था के अपराध के विरुद्ध सजा सुनानेवाली थी। यह था क्रान्ति का महान न्यायालय।

"अपराधी! सभी अपराधी है!" यही निर्णय हुआ। वे क्राति के साथ शत्रुता करने के अपराधी थे। वे जारशाही और शोषित वर्गों के शोषण को कायम रखने के अपराधी थे। वे रेड गार्ड और युद्ध के नियमो का उल्लघन करने के अपराधी थे। वे रूस और सारे ससार के मजदूरो के साथ सभी तरह से गद्दारी करने के अपराधी थे।

---

*जारशाही रूस और अस्थाई सरकार के शासन काल मे नगरो के पूजीवादी प्रशासकीय अग का नाम नगर दूमा था। औपचारिक रूप से यह स्वशासन का स्वरूप था, मगर वस्तुत यह सहायक राजकीय सगठन था, जो नगर की अर्थ व्यवस्था का सचालन करता था।

न्याय सभा के कठघरे म खडे उधम कदी अपन अभियोग सुनकर शम स पानी पानी हो गये और उन्होने अपने सिर झुका लिय। इनमे से कुछ न इस अपमान को बर्दाश्त करन की अपेक्षा बन्दूको की बौछार का अधिक आसानी स सामना कर लिया होता। परन्तु यहा बन्दूके इनकी रक्षा के लिये थी।

कन्धो पर बन्दूके रखे हुए पाच नौसनिक सीढी के नीचे जाकर खडे हो गय। अतोनाव न एक अफसर का हाथ पकडकर एक नौसनिक को थमा दिया।

उन्होन कहा, 'नम्बर एक। यह असहाय और निरस्त्र कदी है। इसका जीवन तुम्हारे हाथो म है। क्रान्ति की मर्यादा के लिए इसकी रक्षा करो।' इस दल ने कैदी को चारो ओर से घेर लिया और वह तोरण द्वार स उस बाहर ले गया।

इसी प्रकार एक के बाद एक कैदी को चार या पाच सनिको के दल के हवाले कर दिया गया। जब अन्तिम अफसर को अनुरक्षक दल के हवाल किया गया और मोस्कोया सडक से होते हुए यह जुलूस आगे बढा, तो एक वृद्ध किसान न भुनभुनाते हुए कहा चलो बूडे-करकट का अन्त हुआ।

शिशिर प्रासाद के निकट उत्तेजित भीड युकरो पर टूट पडी और उन्हे अनुरक्षक दलो से छीनकर अलग कर दिया। परन्तु क्रातिकारी नौसनिको न भीड को तितर बितर करते हुए कैदियो को उसके पजे स छुडा लिया और वे उन्हे हिफाजत के साथ पीटर पाल किले मे ले गये।

क्रान्ति सवत्र भीड की हिंस्र भावनाओ को नियत्रित करने म सक्षम नही थी। समया-बुलावर खून की बबर प्यास को शान्त करने के लिय समय पर और सभी जगह योग्य क्रातिकारी नेताओ का पहुचना भी सभव नही था। उपद्रवकारियो न निर्दोष नागरिको पर प्रहार किये। सुनसान स्थानो पर बदमाशो ने अपन को लाल गाड कहते हुए जघन्य अपराध किए। मोर्चे पर कमिसारो के विरोध के बावजूद जनरल दुखोनिन को उसकी गाडी स खीचकर उसके टुकडे टुकडे कर दिए गए। उत्तेजित भीड न पत्रोग्राद मे भी कुछ युकरो को डण्डो और बन्दूक के कुदो से पीट पीटकर मौत के मुह म पहुचा दिया और कुछ युकरो को पकडकर नेवा नदी म फेंक दिया गया।

मानवीय जीवन के प्रति क्रान्तिकारी श्रमजीवी वर्गों का दृष्टिकोण फिर भी उन उपद्रवकारियों एवं दायित्वशून्य व्यक्तियों के उन्मादपूर्ण और असयत कार्यों में नहीं, बल्कि सत्तारूढ होते ही पेत्रोग्राद सोवियत ने जो पहला कानून बनाया, उसमें अभिव्यक्त हुआ।

शासक वर्ग हो जाने के फलस्वरूप मज़दूर अब अपने भूतपूर्व शोषकों एवं वधिकों से बदला चुकाने की स्थिति में थे। मैंने जब उन्हें क्रान्ति करके सरकार को अपने हाथों में लेते और इसके साथ ही उन पर भी काबू पाते देखा, जिन्होंने उन्हें कोडों से पीटा था, जेल में झोंका था और उनके साथ विश्वासघात किया था, तो मुझे यह भय हुआ कि प्रतिशोध की पाशविक भावनाओं का विस्फोट होगा।

मैं जानता था कि इस समय सत्तारूढ मज़दूरों में से हज़ारों के हाथों में हथकड़ियाँ डालकर उन्हें साइबेरिया के बर्फीले इलाके में निष्कासित किया गया था। मैंने उन्हें श्लीसेलबुर्ग की उन पत्थरीली काल कोठरियों में लम्बे समय तक बन्दी बनाये रखने के फलस्वरूप विवर्ण एवं हड्डियों का ढाँचा बने हुए देखा था। मैंने उनकी पीठों पर कज़्ज़ाकों के कोडों की मार के चिह्न देखे थे और उन्हें देखते ही अब्राहम लिंकन के ये शब्द मुझे स्मरण हो आये थे, 'यदि कोडे की मार से गिरे रक्त की प्रत्येक बूँद के बदले तलवार के प्रहार से दूसरे का खून इसी प्रकार बहा दिया जाय, तो ईश्वर का न्याय पूर्णतया पवित्र और उचित होगा।'

परन्तु लोमहर्षक रक्तपात नहीं हुआ। इसके प्रतिकूल मज़दूरों के दिमाग में प्रतिशोध की भावना तो बहुत ही कम थी। सोवियत ने २८ अक्तूबर (१० नवम्बर) को वह ज्ञप्ति स्वीकार की, जिसके अन्तर्गत मृत्यु दण्ड को समाप्त करने की घोषणा की गई। यह मात्र मानवतावादी कार्य नहीं था। मज़दूरों ने न केवल अपने शत्रुओं को उनकी प्राण रक्षा के लिये आश्वासन प्रदान किया, बल्कि कइयों को तो आज़ादी भी दी।

केरेन्स्की ने पुराने शासन-काल के अनेक दुष्कर्मियों को पीटर पाल किले के जेलखाने में बन्दी बना रखा था। हमने वहाँ ज़ार की गुप्तचर

सेवा के प्रधान वेलेत्स्की को देखा, जिसने अनगिनत लोगों को इसी प्रकार के तहखानों में झोंक दिया था। अब यह पुराना पापी अपनी ही दमन नीति का मजा चख रहा था। यहीं भूतपूर्व युद्ध मंत्री सुखोम्लीनोव भी कैद था, जिसकी जर्मनों के साथ हुई साठगांठ के फलस्वरूप लाखों रूसी सैनिक खाइयों में ही मौत के शिकार हो गये थे। इन दोनों छटे हुए बदमाशों ने बड़े हृदयग्राही ढंग से हमसे बातचीत की, अपने को निर्दोष बताया और 'अमानवीय उत्पीडन' की निंदा की। उन्होंने यह भी कहा कि केरेन्स्की की तुलना में बोल्शेविकों का व्यवहार अधिक मानवीय है। वे हमें समाचारपत्र देते हैं।

हमने अधिकार-च्युत अस्थाई सरकार के बन्दी मंत्रियों को भी उनकी कोठरियों में जाकर देखा और हमारी यह धारणा बनी कि वे संयम और धैर्य से अपने इस दुर्भाग्यपूर्ण समय को गुजार रहे हैं। तरेश्चेन्को पूर्ववत स्वस्थ्यवान लग रहा था और अपनी चारपाई पर पैरों को एक दूसरे पर चढ़ाए एवं सिगरेट पीते हुए उसने हम लोगों से बातचीत की।

उसने प्रांजल अंग्रेजी में कहा, 'यह कोई ऐशो आराम का जीवन तो नहीं है। परन्तु इसके लिये कमांडेंट दोषी नहीं है। उसे अचानक सैंकड़ों अतिरिक्त कैदियों के लिये व्यवस्था करनी पड़ी और उस अतिरिक्त खाद्य सामग्री नहीं दी गई। इस कारण हम भूखे हैं। परन्तु हमें भी उतना ही भोजन मिलता है, जितना लाल गार्डों को दिया जाता है। यद्यपि वे हमारी ओर आँखें तरेरते हैं, परन्तु अपनी रोटी हमारे साथ बाँटकर खाते हैं।'

जब हम बन्दी युंकरों की कोठरियों में गये, तो हमने उन्हें टेलीफोन स्टेशन के अपने दुस्साहसिक कृत्यों की चर्चा करते हुए पाया। उनमें से कुछ मित्रों से प्राप्त बण्डलों को खोल रहे थे अथवा गद्दों पर पैर फैलाये ताश खेल रहे थे।

कुछ दिनों बाद ये युंकर रिहा कर दिये गये। दूसरी बार उन्होंने वफादारी की कसम खाई और दूसरी बार उन्होंने अपने मुक्ति-दाताओं के साथ विश्वासघात किया—वे दक्षिणी भाग में जाकर वहां बोल्शेविकों के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार की जा रही सफेद गार्डों की फौजों में शामिल हो गये।

हजारों सफेद गार्डों ने बोल्शेविकों के क्षमा-दान का बदला इसी प्रकार के विश्वासघात द्वारा चुकाया। जनरल क्रासनोव ने अपने हस्ताक्षरों में

सत्यनिष्ठा के साथ यह वचन दिया था कि वह बाल्शेविकों के विरुद्ध अपना हाथ नहीं उठायेगा और उसे रिहा कर दिया गया। तत्काल दान प्रदेश में पहुंचकर उसने बाल्शेविकों का खत्म करने में संलग्न एक कज्जाक फौज का कमान अपने हाथ में ले ली। बाल्शेविकों के आदेश से बूर्त्सेव पीटर-पाल जेल से रिहा किया गया। इसके बाद वह सीधे पश्चिम जाकर प्रतिक्रान्तिवादियों के साथ मिल गया और वहा गाली गलौज करनेवाले घोर बाल्शेविक विरोधी एक बड़ा पत्र का सम्पादक हो गया। बाल्शेविकों ने दया करके जिन हजारों प्रतिक्रान्तिवादियों को जेलों से रिहा कर दिया था, वे ही बाद में उन पर हमला करनेवाली सफेद फौजों के साथ बिना करुणा या दया के अपने मुक्तिदाताओं को मार डालने के लिये वापस आये।

बाल्शेविकों ने जिन लोगों को जेलों से रिहा कर दिया था, उन्हीं व्यक्तियों द्वारा मारे गये साथियों के समूहों का सर्वेक्षण करते हुए लाल्कों ने कहा, "क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनों में हम जिस मुख्य अपराध के दोषी हैं वह है हमारी अतिशय दयाशीलता।"

कितने तीखे शब्द हैं! मगर इतिहास का यह निर्णय होगा कि रूसी क्रान्ति १७८९ की महान फ्रांसीसी क्रान्ति की तुलना में कहीं अधिक आधारभूत होते हुए भी प्रतिशोध की भावना से ओतप्रोत क्रान्ति नहीं थी। हर दृष्टि से यह "रक्तहीन क्रान्ति" थी।

पत्रोग्राद के गोली काण्ड, मास्को की तीन दिन की लड़ाई, कीयव और इर्कुत्स्क की सड़कों पर हुई मुठभेड़ों और प्रान्तों में किसानों के विद्रोहों में मारे गये लोगों के बारे में अत्यधिक अतिशयोक्तिपूर्ण अनुमानों को ही ले लीजिये और हताहतों की संख्या जोड़कर रूस की जनसंख्या से उसे भाग दीजिये। इस सम्बन्ध में यह स्मरण रखना चाहिये कि अमरीकी क्रान्ति की भांति ३०,००,००० व्यक्तियों और फ्रांसीसी क्रान्ति की भांति २,३०,००,००० व्यक्तियों ने नहीं, बल्कि १६,००,००,००० लोगों ने रूसी क्रान्ति में भाग लिया। आंकड़ों से यह प्रकट है कि अटलांटिक से लेकर प्रशान्त महासागर तक और उत्तर में श्वेत सागर से लेकर दक्षिण में काले सागर तक सोवियत को अपनी सत्ता कायम करने एवं उसे सुदृढ़ बनाने में जो चार महीने लगे, उस अवधि में प्रति तीन हजार रूसियों में एक से कम रूसी मारा गया।

निश्चय ही यह अपने में उपेक्षणीय नहीं है।

परन्तु इस पर इतिहास के परिवेश म दष्टिपात करना चाहिये। गलत या सही, जब अमरीका के राष्ट्रीय लक्ष्य की पूर्ति के लिये गुलामी की बुराई को दूर करने की माग प्रस्तुत हुई तो बडे स्वामित्व के अधिकार पर जोरदार प्रहार किये गये और ऐसा करने म प्रति तीन सौ व्यक्तियो के पीछे एक व्यक्ति मौत के घाट उतर गया। गलत या सही किसानो और मजदूरो ने रूस से जारशाही सामतवाद और पूजीवाद की बुराई को दूर करना नितान्त आवश्यक महसूस किया। इस प्रकार की पुरानी और घातक बीमारी को दूर करने के लिये एक बडा आपरेशन करना जरूरी था। परन्तु यह आपरेशन अपेक्षाकृत बहुत कम रक्तपात के साथ सम्पन्न किया गया। बच्चो की भाति क्षमा कर देना और बीती बातो को भुला देना महान जनता का स्वभाव माना जाता है। बदला लेना उसका स्वभाव नही है। प्रतिकारपरायणता श्रमजीवी लोगो की भावना के प्रतिकूल है। उन्होने उन प्रारम्भिक दिनो म गृह युद्ध के दौरान भी इस बात की पूरी कोशिश की कि कम से कम नुकसान हो।

वे अपने इस प्रयास म अधिकाश रूप म सफल हुए। रूसी क्राति म सफेद और लाल गार्डो—इन दोनो पक्षो के कुल मिलाकर जितने व्यक्ति मरे, उनकी सख्या महायुद्ध की एक बडी लडाई म हताहत हुए सैनिको की सख्या के बराबर भी नही थी।

पर कोई कह सकता, 'और वह लाल आतक!' किन्तु यह आतक तब फैला, जब हस्तक्षेपकारियो की फौज रूस म घुस गई और उनके सरक्षण म राजतत्रवादियो और यमदूतसभाइयो ने किसानो एव मजदूरो म प्रतिक्रान्ति वादी आतक बुरी तरह फैला दिया—जब भयानक अत्याचार और बलात्कार किये गये और असहाय स्त्रियो और बच्चो की सामूहिक हत्याए की गई।

मजदूरो ने सुरक्षा के लिये परिस्थिति से विवश होकर क्राति के लाल आतक के साथ शत्रुओ पर प्रहार किया। तब मृत्यु दण्ड पुन लागू किया गया और तब सफेद षडयत्रकारियो ने क्रान्ति के दण्ड देनेवाले मजबूत हाथ को फौरन महसूस किया।

लाल और सफेद आतक के बारे मे भयकर आरोप और प्रत्यारोप लगाये गये। इस विवाद से चार तथ्य सामने आये जिनका यहा उल्लेख करना उचित होगा।

निश्चित रूप से लाल आतंक क्रान्ति के बाद के दौर की बात है। यह प्रतिक्रान्तिवादियों के सफ़ेद आतंक के उत्तर में एक सुरक्षात्मक कदम था। सख्ती और पैशाचिकता—दोनों ही दृष्टियों से गोरों के अत्याचार मजदूरों द्वारा किये गये जवाबी अत्याचारों की तुलना में कुछ भी नहीं थे। यदि मित्रराष्ट्रों ने रूस में घुसकर फौजी हस्तक्षेप न किया होता और सोवियतों के खिलाफ गृहयुद्ध न भड़काया होता, तो इस बात की पूरी सम्भावना थी कि लाल आतंक पैदा ही न होता और जिस प्रकार प्राय "रक्तहीन क्रान्ति" के रूप में यह क्रांति शुरू हुई थी उसी प्रकार रक्तपात के बिना जारी रहती।

ग्यारहवां अध्याय

वर्गीय युद्ध

हिंछोरे दुस्साहसिक धोखेबाज! —पूंजीपति वर्ग ने बोल्शेविकों के विरुद्ध ऐसे अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया अथवा राजतन्त्रवादी शास्त्री का साथ देते हुए उनका ऐसे मजाक उड़ाया—"ये कुत्ते, यह भीड़ भला सरकार चला सकती है!

यह विचार कि बोल्शेविक शासन कुछ घंटे अथवा कुछ दिनों से अधिक कायम रह सकता है मजाक बन गया था। हमसे अक्सर यह कहा जाता था, 'कल फांसी पर लटकाने का काम शुरू हो जायेगा।' ऐसे कई कल गुज़र गये, मगर किसी बोल्शेविक की लाश बत्ती के खम्भों से लटकती हुई नहीं दिखाई पड़ी। जब सोवियतों के पतन का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ा, तो पूंजीपति वर्ग आतंकित हो उठा। प्रतिक्रांतिवादी गणतंत्र परिषद की अपील में कहा गया, 'संघर्ष कर सोवियतों का अन्त करना आवश्यक है। ये जनता और क्रान्ति के शत्रु हैं।'

नगर दूमा सोवियतों के विरुद्ध प्रवृत्त सभी शक्तियों का केन्द्र बन गई। यहां जनरलों, पादरियों, बुद्धिजीवियों, अधिकारियों, सट्टेबाजों, सेंट जार्ज के शूरवीरों, फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश अफ्सरों, सफेद गार्डों और कैडेट पार्टी के सदस्यों का जमावड़ा लग गया। इन तत्त्वों के बीच से 'बचाव समिति' गठित हुई, जो प्रतिक्रान्तिवाद का गढ़

पुरान मेयर श्रेइदेर न ग्रहकार के साथ कहा इसमे पूरे रूस का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। बेशक ऐसा ही था भी – केवल रूस के किसानो मजदूरो, नाविको और सैनिको को छोडकर। सर्वहारावर्गीय केंद्र – स्मोल्नी – से यहा आने पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे दूसरी दुनिया म पहुच गये, अच्छे खाते पीते, सुखी एव सपन्न लोगो की दुनिया म। विशेषाधिकारो एव शासन की पुरानी व्यवस्था न मजदूर वग द्वारा कायम नई व्यवस्था पर यहा से प्रहार किया। यहा से पूजीपति वग न सावियतो को वदनाम करन, पगु बना देने और नष्ट करने के लिय हर तरीके का इस्तमाल करते हुए उनके विरुद्ध अपने प्रचार आदोलन का निर्देशन किया।

पूजीपति वग की हडताल और तोडफोड की कारवाइया

पूजीपति वग ने एक ही प्रहार मे सोवियतो को घुटन टेकन के लिय विवश कर देन का प्रयास किया। इसने नई सरकार के सभी विभागो म आम हडताल की घोषणा कर दी। कुछ मत्रालयो म काम करनेवाले सफेदपोश कमचारी एक साथ काम छोडकर बाहर निकल आय। विदेश मत्रालय के ६०० अधिकारियो न शाति सम्बन्धी आज्ञप्ति को अनूदित करन की त्रोत्स्की की अपील सुनी और उसके बाद इस्तीफे द दिय। बको और व्यावसायिक प्रतिष्ठानो द्वारा जमा किये गये हडताल कोष की मदद स छोटे अधिकारियो और मजदूर वग क कुछ हिस्सो को भी फोड लिया गया। कुछ समय तक डाकियो ने सोवियत डाक वितरित करन, तारघरवालो न सोवियत तार भेजन, रेलवे अधिकारियो ने गाडियो म फौजे न जान से इनकार कर दिया, टेलीफोन ऑपरेटरो न भी काम छोड दिया, बडी बडी इमारत खाली पडी थी – वहा आग जलानवाले तक भी नही थ।

बोल्शेविको न इस आम हडताल के जवाब म यह घोषणा की कि यदि हडताली तत्काल काम पर वापस नही आयगे तो अपनी नौकरियो और पेशन पाने के अधिकार स वचित हो जायेंगे। इसके साथ ही उन्होंने अपन बीच से नये लोगो को काम क लिय भर्ती करना शुरू कर दिया। किसान और मजदूर कार्यालयो के खाली स्थानो पर जा डटे। सनिक फाइलो एव हिसाब किताब के काम म जुट गय और ऐसे दिमागी काम क अभ्यस्त

निश्चित रूप से तीन श्रातक शान्ति के दौर के दौर की बात है। यह प्रतिक्रान्तिवादी के गपूर्ण श्रातक के उत्तर में एक सुरक्षात्मक कदम था। सख्या श्रौर पैशाचिकता – दोनों ही दृष्टियों से लालों के श्रत्याचार मफेदों द्वारा किए गए बर्बर श्रत्याचारों की तुलना में कुछ भी नहीं थे। यदि मित्रराष्ट्रों ने रूस में घुसकर फौजी हस्तक्षेप न किया होता श्रौर सोवियतों के खिलाफ गृहयुद्ध न भडकाया होता, तो इस बात की पूरी सभावना थी कि लाल श्रातक पैदा ही न होता श्रौर जिस प्रकार प्राय 'रक्तहीन क्रान्ति' के रूप में यह क्रान्ति शुरू हुई थी उसी प्रकार रक्तपात के बिना जारी रहती।

ग्यारहवां श्रध्याय

वर्गीय युद्ध

छिछोर, दुस्साहसिक धोखेबाज! —पूजीपति वर्ग ने बोल्शेविकों के विरुद्ध ऐसे श्रपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया श्रथवा राजतन्त्रवादी शास्त्री का साथ देते हुए उनका ऐसे मजाक उडाया – 'ये कुत्ते, यह भीड भला सरकार चला सकती है!'

यह विचार कि बोल्शेविक शासन कुछ घटे श्रथवा कुछ दिनों से श्रधिक कायम रह सकता है, मजाक बन गया था। हमसे श्रक्सर यह कहा जाता था, 'कल फासी पर लटकाने का काम शुरू हो जायेगा।' ऐसे कई कल गुजर गये मगर किसी बोल्शेविक की लाश बत्ती के खम्भों - हुई नहीं दिखाई पडी। जब सोवियतों के पतन का कोई चिह्न पडा तो पूजीपति वर्ग श्रातकित हो उठा। प्रतिक्रातिवादी गण की श्रपील में कहा गया, "सघर्ष कर सोवियतों का श्रत करना है। ये जनता श्रौर क्रान्ति के शत्रु हैं।'

नगर दूमा सोवियतों के विरुद्ध प्रवृत्त सभी शक्तियों का केन्द्र बन यहां जनरलों, पादरियों, बुद्धिजीवियों, श्रधिकारियों, सट्टेबाजों, सेठ के शूरवीरों फ्रासीसी एव ब्रिटिश श्रफसरों, सफेद गार्डों श्रौर कडेट के सदस्यों का जमावडा लग गया। इन तत्त्वों के बीच से बचाव गठित हुई, जो प्रतिक्रान्तिवाद का गढ बनी।

पुरान मयर श्रेडदेर ने ग्रहकार के साथ कहा, उसम पूरे रूस का प्रतिनिधित्व प्राप्त है।' बेशक ऐसा ही था भी – केवल रूस के किसाना, मजदूरा, नाविका ग्रार सनिका को छोडकर। सवहागवर्गीय केन्द्र – स्मोल्नी – से यहा ग्रान पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे दूसरी दुनिया म पहुच गये अच्छे खाते पीते, सुखी एव सपन्न लोगो की दुनिया म। विशेषाधिकारा एव शासन की पुरानी व्यवस्था ने मजदूर वग द्वारा कायम नई व्यवस्था पर यहा से प्रहार किया। यहा से पूजीपति वग न सावियता का बदनाम करने पगु बना देने ग्रौर नष्ट करने के लिय हर तरीके का इस्तेमाल करत हुए उनके विरुद्ध ग्रपन प्रचार ग्रान्दोलन का निर्देशन किया।

पूजीपति वग की हडताल ग्रौर तोडफोड की कारवाइया

पूजीपति वग ने एक ही प्रहार स सावियता का घुटा टकने के लिय विवश कर देने का प्रयास किया। इसने नई सरकार के सभी विभागा म ग्राम हडताला की घोषणा कर दी। कुछ मत्रालया म काम करनेवाले सफेदपोश कमचारी एक साथ काम छोडकर बाहर निकल ग्राये। विदेश मत्रालय के ६०० ग्रधिकारिया ने शाति सम्बधी ग्राज्ञप्ति का ग्रनूदित करने की त्रोत्स्की की ग्रपील सुनी ग्रौर उसके बाद इस्तीफे द दिये। बका ग्रौर व्यावसायिक प्रतिष्ठाना द्वारा जमा किय गय हडताल कोष की मदद स छोटे ग्रधिकारिया ग्रौर मजदूर वग के कुछ हिस्सा को भी फाड लिया गया। कुछ समय तक डाकिया न सोवियत डाक वितरित करने तारघरवाला ने सोवियत तार भेजने, रेलवे ग्रधिकारिया न गाडिया म फौजे ले जाने स इनकार कर दिया, टेलीफोन ग्रापरेटरा ने भी काम छोड दिया यहा तक कि इमारत खाली पडी थीं – वहा ग्राग जलानेवाले तक भी नहीं थ।

बोल्शेविका न इस ग्राम हडताल के जवाब म यह घोषणा की कि यदि हडताली तत्काल काम पर वापस नहीं ग्रायेगे तो ग्रपनी नौकरिया ग्रौर पेंशन पाने के ग्रधिकार से वचित हो जायेंगे। इसके साथ ही उन्होंने ग्रपने बीच से नये लोगा को काम के लिय भर्ती करना शुरू कर दिया। किसान ग्रौर मजदूर कायालया के खाली स्थाना पर जा डटे। सनिक पादरी एव सिपाही सिपाह के काम म जुट गये ग्रौर लेन देन सम्बन्धी काम के ग्रभ्यस्त

निश्चित रूप से लाल आतंक शान्ति के बाद के दौर की बात है। यह प्रतिक्रान्तिवाद के सफेद आतंक के उत्तर में एक सुरक्षात्मक कदम था। सभ्यता और पैशाचिकता – दोनों ही दृष्टियों से लालों के अत्याचार सफेदों द्वारा किये गये बर्बर अत्याचारों की तुलना में कुछ भी नहीं थे। यदि मित्रराष्ट्रों ने रूस में घुसकर फौजी हस्तक्षेप न किया होता और सोवियतों के खिलाफ गृह युद्ध न भड़काया होता, तो इस बात की पूरी संभावना थी कि लाल आतंक पैदा ही न होता और जिस प्रकार प्रायः "रक्तहीन क्रान्ति" के रूप में यह क्रांति शुरू हुई थी, उसी प्रकार रक्तपात के बिना जारी रहती।

ग्यारहवां अध्याय

वर्गीय युद्ध

'छिछोरे दुस्साहसिक धोखेबाज!' – पूंजीपति वर्ग ने बोल्शेविकों के विरुद्ध ऐसे अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया अथवा राजतन्त्रवादी शास्त्री का साथ देते हुए उनका ऐसे मजाक उड़ाया – 'ये कुत्ते, यह भीड़ भला सरकार चला सकती है!'

यह विचार कि बोल्शेविक शासन कुछ घंटे अथवा कुछ दिनों से अधिक कायम रह सकता है मजाक बन गया था। हमसे अक्सर यह कहा जाता था, 'कल फांसी पर लटकाने का काम शुरू हो जायेगा।" ऐसे कई कल गुजर गये, मगर किसी बोल्शेविक की लाश बत्ती के खम्भों से लटकती हुई नहीं दिखाई पड़ी। जब सोवियतों के पतन का कोई चिह्न नहीं दिखाई पड़ा, तो पूंजीपति वर्ग आतंकित हो उठा। प्रतिक्रान्तिवादी गणतंत्र परिषद की अपील में कहा गया, संघर्ष कर सोवियतों का अन्त करना आवश्यक है। ये जनता और क्रांति के शत्रु हैं।

नगर दूमा सोवियतों के विरुद्ध प्रवृत्त सभी शक्तियों का केन्द्र बन गई। यहां जनरलों, पादरियों बुद्धिजीवियों अधिकारियों, सट्टेबाजों, सेंट जार्ज के शूरवीरों, फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश अफसरों, सफेद गार्डों और कैडेट पार्टी के सदस्यों का जमावड़ा लग गया। इन तत्वों के बीच से "बचाव समिति" गठित हुई, जो प्रतिक्रान्तिवाद का गढ़ बनी।

पुराने मेयर श्रेदेर ने अहंकार के साथ कहा "हमसे पूरे रूस का प्रतिनिधित्व प्राप्त है।' बेशक ऐसा ही था भी—केवल रूस के किसानों, मजदूरों, नाविकों और सैनिकों को छोड़कर। सर्वहारावर्गीय केन्द्र—स्मोल्नी—से यहां आने पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे दूसरी दुनिया में पहुंच गये, अच्छे खाते पीते, सुखी एवं सम्पन्न लोगों की दुनिया में। विशेषाधिकारों एवं शासन की पुरानी व्यवस्था ने मजदूर वर्ग द्वारा कायम नई व्यवस्था पर यहां से प्रहार किया। यहां से पूंजीपति वर्ग ने सोवियतों को बदनाम करने, पंगु बना देने और नष्ट करने के लिये हर तरीके का इस्तेमाल करते हुए उनके विरुद्ध अपने प्रचार आंदोलन का निर्देशन किया।

पूंजीपति वर्ग की हड़ताल और तोड़फोड़ की कारवाइयां

पूंजीपति वर्ग ने एक ही प्रहार से सोवियतों को घुटने टेकने के लिये विवश कर देने का प्रयास किया। इसने नई सरकार के सभी विभागों में आम हड़ताल की घोषणा कर दी। कुछ मंत्रालयों में काम करनेवाले सफेदपोश कर्मचारी एक साथ काम छोड़कर बाहर निकल आये। विदेश मंत्रालय के ६०० अधिकारियों ने शांति सम्बन्धी आज्ञप्ति का अनूदित करने की त्रात्स्की की अपील सुनी और उसके बाद इस्तीफे दे दिये। बैंकों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों द्वारा जमा किये गये हड़ताल-कोष की मदद से छोटे अधिकारियों और मजदूर वर्ग के कुछ हिस्सों को भी फोड़ लिया गया। कुछ समय तक डाकियों ने सोवियत डाक वितरित करने, तारघरवालों ने सोवियत तार भेजने, रेलवे अधिकारियों ने गाड़ियों में फौजें ले जाने से इनकार कर दिया, टेलीफोन आपरेटरों ने भी काम छोड़ दिया। बड़ी बड़ी इमारतें खाली पड़ी थीं—वहां आग जलानेवाले तक भी नहीं थे।

बोल्शेविकों ने इस आम हड़ताल के जवाब में यह घोषणा की कि यदि हड़ताली तत्काल काम पर वापस नहीं आयेंगे तो अपनी नौकरियों और पेंशन पाने के अधिकार से वंचित हो जायेंगे। इसके साथ ही उन्होंने अपने बीच से नये लोगों को काम के लिये भर्ती करना शुरू कर दिया। किसान और मजदूर कार्यालयों के खाली स्थानों पर जा डटे। मल्लाह, पादरी एवं सिपाही किताबें के काम में जुट गये और तेज स्मिागों राम र प्रभरगा

मट्टेबाजा न सभी मामला की क्रान्तिकारी सैनिक समिति को तत्काल सूचना दें।

इन बुराइयो के खिलाफ संघर्ष करना सभी ईमानदार लोगो का कर्त्तव्य है। क्रान्तिकारी सैनिक समिति को आशा है कि लोक हित की चिंता करनेवाले इस कार्य म उसे अपनी सहायता प्रदान करगे।

क्रान्तिकारी सैनिक समिति सट्टेबाजो और मुनाफाखोरो का दमन करने मे तनिक भी दया नही दिखायेगी।

क्रान्तिकारी सैनिक समिति

पेत्रोग्राद,
१० नवम्बर, १९१७

(देखिये पृष्ठ २२३)

जो व्यक्ति लोगो को भूखा मारकर हाथ रंगना चाहते थे, वे इस धमकी से आतंकित होकर बचाव के लिये छिपने लगे। बाद म इस प्रकार के अपराधियो और नई सोवियत व्यवस्था के शत्रुओ से निपटने के लिये असाधारण आयोग (चेका) सगठित किया गया।

पूंजीपतियो ने उन वर्गों म भी सोवियतो के विरुद्ध शत्रुता की भावना पैदा की जहा इस प्रकार की भावना पहले नही थी। सार्वजनिक कल्याण विभाग बन्द करके लाखो पंगुओ, अनाथो और घायलो के कष्ट और बढ़ा दिये गये। अस्पतालो एव अनाथाश्रमो के लिये भोजन और ईंधन की व्यवस्था बन्द कर दी गई। बैसाखी के सहारे चलनेवालो एव गोद म बच्चा को लिये भूखी माताओ की प्रतिनिधियो ने नई कमिसार श्रीमती कोल्लोन्ताई को आकर घेर लिया। मगर वे असहाय और निरुपाय थी। तिजोरियां बन्द थी और अधिकारी चाबियां लेकर चम्पत हो गये थे। भूतपूर्व मंत्री मामला पानिना कोष की सारी धनराशि लेकर चम्पत हो गई।

वोल्शेविको ने ऐसी तथा इसी प्रकार की अन्य कार्रवाइयो का सामना करने के लिये सिर काटने की नीति का प्रयोग न कर क्रान्तिकारी न्यायाधिकरण गठित किया। महाराजा निकोलाई के महल के संगीत-कक्ष म अर्धवृत्ताकार मेज के पास बैठनेवाले सात न्यायाधीशो म दो सैनिक दो मजदूर और दो किसान थे तथा इस न्यायाधिकरण के अध्यक्ष जूकोव थे।

न्यायाधिकरण के सम्मुख प्रथम बन्दी सामन्ता पानिना प्रस्तुत की गई। प्रतिवादी की ओर से उसके अच्छे कार्यों और दानशीलता का विस्तृत बखान किया गया। युवा मजदूर अभियाजक नाऊमाव ने उत्तर दते हुए कहा

साथियो! यह सब कुछ सत्य है। ये महिला सहृदय हैं। परन्तु ये गलत काम करती रही ह। उन्हाने अपने धन से लोगो की सहायता की है। मगर यह धन उनके पास कहा स आया? शोषित जनता से यह धन उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने स्कूल, अनाथालय और भोजनालय स्थापित कर गरीबो की सहायता की। किन्तु यदि जनता के खून पसीने से प्राप्त यह धन स्वय जनता के पास होता तो हमारे अपने स्कूल, अनाथालय और भाजनालय हात। सा भी वे वैसे होते, जसे हम चाहते, न कि इनकी इच्छा के अनुसार। इनके अच्छे कार्यों से मत्रालय का सारा धन लेकर चम्पत हो जाने का उनका अपराध खत्म नही हो जाता।"

न्यायाधिकरण का निणय हुआ कि वह अपराधी है। धन वापस कर देने तक उसे जेल म रखा गया और बाद म जन भत्सना करके रिहा कर दिया गया। प्रारम्भ म अपराधिया को इसी प्रकार की हल्की सजाए दी जाती रही। मगर जैसे जसे वर्गीय सघष कटुतर होता गया, वैसे-वैसे क्रातिकारी न्यायाधिकरण द्वारा अपराधिया को अधिकाधिक कठोर दण्ड दिया जाने लगा।

सभी सरकारा का चलान के लिये धन की नितान्त आवश्यकता होती है और सारी वित्तीय सस्थाए पूजीपति वग के हाथा म थी। बैंको ने गुप्त रूप से नगर दूमा और "बचाव समिति" को पाच करोड से अधिक रूबल दिये, मगर सोवियतो को एक रूबल भी नही दिया गया। उनके सभी अनुनय विनय और अजिया बेकार गइ। पूजीपति वग को इस स्थिति से बडा आनन्द प्राप्त हाता था कि अखिल रूसी सरकार के प्रतिनिधि बैंका मे जाकर हाथ फैलाते थे, परन्तु एक दमडी भी उन्ह नही मिलती थी।

तब एक दिन अपने हाथा मे बन्दूकें लिये बोल्शेविक बैंको मे पहुच गये। उन्होने कोष पर कब्जा कर लिया। उसके बाद उन्होने बैंको को अपने हाथ म ले लिया। बका के राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति जारी कर देने के फलस्वरूप वित्तीय शक्ति के ये केन्द्र मजदूर वग के नियत्रण मे आ गये।

पूजीपतियो ने जन समुदाय को मद्यपान से विवेकशून्य बनाने के लिये शराब का सहारा लिया। शहर मे बहुत से शराब के तहखान थे, जो बारूदखाना की अपेक्षा अधिक खतरनाक थे। अधिक मात्रा म लोगा को शराब पिलाकर उन्हे मदोमत्त बना देने का अथ था नगर के जीवन म अव्यवस्था पैदा करना। इस लक्ष्य को दष्टि म रखने हुए शराब के तहखाने खोल दिये गये और भीड को वहा आकर पीने की पूरी छूट दे दी गई। शराब के नशे म चूर शराबी हाथो मे बोतल लिये तहखाना से निकलते और बफ पर गिर पडते अथवा सडका पर आवारागर्दी करते हुए गालीगलौज एव लूटमार करत।

पूजीपतिया द्वारा नियाजित इस लूटमार और हत्याकाण्ड को बन्द करन के लिये बोल्शेविका ने मशीनगनो से शराब के तहखानो को खत्म किया–हाथो से शराब की बोतले तोडकर उन्हे नष्ट कर देने का समय नही था। उन्होने *शिशिर प्रासाद के तहखाना मे सचित शराब को नष्ट कर दिया*, जिसकी कीमत तीस लाख रूबल थी। वहा सचित शराब की कुछ किस्म तो एक सदी पुरानी थी। ज़ार एव उसके परिचारका के गले से होकर नही, बल्कि दमकल से बधे अभिनाल द्वारा सारी शराब नहरा म बहा दी गई। बोल्शेविका को इसका बहुत खेद भी हुआ, क्योकि उन्ह धन की बडी आवश्यकता थी। मगर अमन कानून कायम करने की इससे भी अधिक ज़रूरत थी।

उन्होने घोषणा की, '*नागरिको, क्रान्तिकारी व्यवस्था* का उल्लघन नही होना चाहिये! कोई चोरी अथवा लूट पाट नही होनी चाहिये! पेरिस कम्यून के आदश का अनुसरण करते हुए हम किसी भी लुटेरे अथवा अव्यवस्था फैलाने के लिये उकसानेवाले को मिटा देंगे।" इस सकट का सामना करन के लिये जगह जगह यह पोस्टर लगा दिया गया

अनिवार्य अध्यादेश

१) यह घोषणा की जाती है कि पत्रोग्राद नगर पर माशल लॉ लागू किया जाता है।

२) सडका और चौका म सभी प्रकार के जमावा, सभाओ और भीड भाड पर रोक लगा दी गई है।

ОБЯЗАТЕЛЬНОЕ ПОСТАНОВЛЕНІЕ.

1) Городъ Петроградъ объявленъ на осадномъ положенiи.

2) Всякія собранія, митинги, сборища и т п на улицахъ и площадяхъ воспрещается.

3) Попытки разгромовъ винныхъ погребовъ, складовъ, заводовъ, лавокъ, магазиновъ, частныхъ квартиръ и проч и т п будутъ прекращаемы пулеметнымъ огнемъ безъ всякаго предупрежденія

4) Домовымъ комитетамъ швейцарамъ дворникамъ и милиціи вмѣняется въ безусловную обязанность поддерживать самый строжайшій порядокъ въ домахъ дворахъ и на улицахъ причемъ ворота и подъѣзды домовъ должны запираться въ 9 час вечера и открываться въ 7 час утра Послѣ 9 час вечера выпускать только жильцовъ подъ контролемъ домовыхъ комитетовъ

5) Виновные въ раздачѣ продажѣ или пріобрѣтеніи всякихъ спиртныхъ напитковъ а также въ нарушеніи пунктовъ 2 го и 4-го будутъ немедленно арестованы и подвергнуты самому тяжкому наказанію

Петроградъ 6 го декабря, 3 часа ночи

Комитетъ по борьбѣ съ погромами при Исполнительномъ Комитетѣ Совѣта Рабочихъ и Солдатскихъ Депутатовъ

) शराबखाना, गोदामा कारखानो, भण्डारो, निजी घरो आदि का लूटने का प्रयास करनेवालो को रोकने के लिए पूवचेतावनी के बिना उन पर मशीनगना से गोली वर्षा की जायेगी।

४) भवन समितिया, दरवानो, पहरेदारा और मिलिशिया का यह काम सौंपा जाता है कि वे सभी घरा, अहातो और सडका पर पूण शाति व्यवस्था कायम रखे, सभी मकानो के दरवाजा और फाटको पर रात के ६ बजे ताला लगा दिया जाये और सुबह ७ बजे उन्हे खोला जाये। रात के ६ बजे के बाद केवल वहा रहनेवाला को ही भवन समिति के कडे निर्देशन मे घर से बाहर जाने दिया जाय।

५) जो व्यक्ति शराब का वितरण या विक्री करने अथवा खरीदने के दोषी होगे और वे भी जो इस अध्यादेश की धारा २ और ४ का उल्लघन करते पाये जायेंगे, तत्काल गिरफ्तार कर लिये जायेंगे तथा उन्हे बहुत ही सख्त सजा दी जायेगी।

पेत्रोग्राद, ६ दिसम्बर, रात के तीन बजे

मजदूरो और सनिको के प्रतिनिधियो की सोवियत की कायकारिणी समिति से सम्बद्ध डाकेजनी और हत्याओ के विरुद्ध सघष करनेवाली समिति

(दखिये पष्ठ २२७)

यदि शराब स लोगो के दिमाग को खराब करना सभव न हुआ, तो क्या है, समाचारपत्र तो यह काम कर ही सकते थे। झूठी खबरा की फक्टरिया ढेरा समाचारपत्र और पोस्टर निकालती तथा मनगढ़त सवा" कथाओ द्वारा यह प्रचार करता कि बोल्शेविका का शीघ्र पतन होनवाला है, कि राज्य बक स तीन करोड रूबल का सोना और चादी चुराकर लनिन फिनलण्ड भाग गये हैं, कि बाल्शेविका न स्त्रिया और बच्चा की हत्याए की ह, कि स्मोल्नी म सारा कामकाज जमन अफसरा की देखरेख म हो रहा है।

बोल्शेविकों ने इस मिथ्या प्रचार को बन्द करने के लिये उन सभी समाचारपत्रों का प्रकाशन रोक दिया, जो खुले विद्रोह के लिये अपील करते थे अथवा अपराध के लिये लोगों को उकसाते थे।

उन्होंने घोषणा की "अधिकांश समाचारपत्र धनी वर्गों के हाथों में हैं और वे लोगों के विचारों को दूषित एवं चेतना को कुंठित करने के लिये लगातार बदनामी फैलानेवाली अपमानजनक निराधार बातें और झूठी खबरें प्रकाशित कर रहे हैं यदि राजतंत्र को खत्म करनेवाली प्रथम क्रांति को जार के पोषक समाचारपत्रों को समाप्त कर देने का हक हासिल था, तो पूंजीपति वर्ग के शासन को उलट देनेवाली इस क्रांति को पूंजीवादी समाचारपत्रों को खत्म कर देने का अधिकार प्राप्त है।"

फिर भी विरोधी समाचारपत्रों का प्रकाशन पूर्णतया बन्द नहीं किया जा सका। आज जिस अखबार का प्रकाशन रोक दिया जाता, वह दूसरे दिन किसी अन्य नाम से प्रकाशित हो जाता। 'रेच' (भाषण) 'स्वोबोदनाया रेच' (बेलगाम भाषण) बन गया। 'दिन' पहले 'रात' के नाम से, फिर 'अंधेरी रात', आधी रात रात के २ बजे' आदि के नामों से प्रकाशित होने लगा। 'नोवी सतिरिकोन' नामक पत्र बोल्शेविकों के विरुद्ध व्यंग्यचित्र और उपहासजनक कविताएं छापने लगा। सार्वजनिक सूचना सम्बन्धी अमरीकी समिति* की रूसी शाखा ने खुले आम अपना प्रचार-कार्य और 'सोशलिस्टों द्वारा युद्ध का समर्थन' शीर्षक के अन्तर्गत सैमुएल गोम्पर्स** के लेख को प्रकाशित किया। किन्तु इतने बड़े पैमाने के झूठे प्रचार के विरुद्ध बोल्शेविकों के प्रयास भी काफी प्रभावकारी रहे।

---

*अमरीका के महायुद्ध में शामिल होने के तत्काल बाद ही राष्ट्रपति विलसन ने अप्रैल १९१७ में सार्वजनिक सूचना सम्बन्धी अमरीकी समिति का गठन किया था। इसके कार्यकलाप में युद्ध सम्बन्धी प्रचार, सेंसरशिप और गोपनीय सूचनाएं जमा करना शामिल था। १९१७ की पतझड़ में इस समिति की रूसी शाखा कायम हुई। इसने रूस में सोवियत विरोधी कार्रवाइयों का संचालन किया और 'अमरीकी बुलेटिनें' प्रकाशित कीं।

**गाम्पर्स – प्रतिक्रियावादी अमरीकी ट्रेड-यूनियन नेता, जिसने सोवियत रूस के खिलाफ हस्तक्षेप का समर्थन किया था।

जार ने आर्थोडाक्स चर्च के पादरियों को अपनी आध्यात्मिक पुलिस के रूप में इस्तेमाल करके 'धर्म को जनता के लिये अफीम" बना दिया था। नरक की धमकियाँ देकर और स्वर्ग के सब्ज बाग दिखाकर उन्होंने लोगों को राजतन्त्र के अधीन रखा। अब पादरियों से पूँजीपति वर्ग के लिये यही कार्य करने को कहा गया। धार्मिक घोषणापत्र द्वारा बोल्शेविकों को सभी प्रकार के धार्मिक संस्कारों एवं गिरजाघर के पूजापाठ से वंचित कर दिया गया।

बोल्शेविकों ने धर्म पर सीधे प्रहार न करके चर्च को राज्य से अलग कर दिया। सरकारी कोष से गिरजाघरों के कोष में धन का जाना रोक दिया गया। विवाह को एक नागरिक रस्म घोषित कर दिया गया। मठों की जमीन जब्त कर ली गई। कुछ मठों में अस्पताल खोल दिये गये।

बिशप ने इस धर्मोल्लंघन के विरुद्ध बहुत कड़े शब्दों में विरोध किया, मगर इसका कोई असर न हुआ। पवित्र गिरजाघर के प्रति लोगों की निष्ठा वैसी ही निराधार प्रमाणित हुई, जैसी जार के प्रति। उन्होंने चर्च के उस फरमान की ओर देखा, *जिसमें कहा गया था कि यदि उन्होंने* बोल्शेविकों का साथ दिया, तो उन्हें मरने के बाद नरक में ही जगह मिलेगी। उसके बाद उन्होंने बोल्शेविकों का फरमान देखा, जिसके द्वारा उन्हें जमीन और कारखानों का स्वामित्व प्रदान किया गया था।

कुछ ने कहा, "यदि हमें चुनना ही है तो हम बोल्शेविकों को चुनेंगे।" कुछ दूसरों ने चर्च को चुना। कुछ लोगों ने केवल इतना ही कहा, "सब ठीक है!" और एक दिन वे गिरजाघर की प्रार्थना में शामिल होते और दूसरे दिन बोल्शेविकों की परेड में भाग लेते।

किसान, अराजकतावादी और जर्मन सोवियतों के विरुद्ध

नगर बोल्शेविकों के गढ़ बन गये थे। पूँजीपति वर्ग ने गाँवों को उनके विरुद्ध खड़ा करने की साजिश की।

उन्होंने किसानों से कहना शुरू किया, 'जरा गौर करो! नगरों में मजदूर दिन में आठ घंटे काम करते हैं, तुम क्या सोलह घंटे काम कर रहे हो? जब तुम अपने गल्ले के बदले शहरों से कुछ नहीं पाते, तो तुम

अपना खाद्यान उन्हे क्यो देते हो?" किसान सोवियतो की पुरानी कार्यकारिणी समिति ने स्मोल्नी की नई सरकार का मानने से साफ इनकार कर दिया।

किंतु बोल्शेविका ने उनकी उपेक्षा करके किसाना की नई काग्रेस बुलाई। इसमे चेर्नोव के नतत्व म 'पुराने गाड' ने बोल्शेविको की बडी कटु आलोचना की। किंतु दो अकाटय तथ्यो की अवहेलना करना सम्भव नही था। पहली बात यह थी कि बोल्शेविका ने केवल आश्वासन ही नही, वल्कि किसानो को जमीन दे दी थी। दूसर बोल्शेविक अब किसाना का नई सरकार मे भाग लेने के लिये निमन्त्रित कर रह थे।

अनेक दिना की तूफानी बहस के बाद समझौता हुआ। रात को किसाना का मशाल जुलूस निकला, पाव्लोव्स्की रेजीमेट के बैण्ड ने 'मर्सेइयेज' धुन बजाई और मज़दूरो न आगे बढकर किसानो को गले लगाया और चुम्बन लेकर उनके प्रति अपना प्रगाढ स्नेह प्रकट किया। किसान सोवियत के बहुत बडे झडे के नीचे जिस पर यह लिखा हुआ था कि "मेहनतकश जनता की एकता जिन्दाबाद!' यह जुलूस बर्फ से ढकी सडका से होता हुआ स्मोल्नी पहुचा। यहा किसानो न सनिको एव मज़दूरा के साथ एक आधिकारिक समझौता किया। हर्ष एव उल्लास के इस वातावरण मे एक वृद्ध किसान न अपने उदगार प्रकट करत हुए कहा, "मै ज़मीन पर चलकर नही, बल्कि हवा मे उडकर यहा आया हू।" सरकार सच्चे अर्थो मे मज़दूरो, सैनिको और किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियत बन गई।

सोवियता को भग करने के प्रयास मे पूजीपति वर्ग वाम और दक्षिण पक्ष की ओर लपका, यहा तक कि उसने अराजकतावादिया का भी सहारा लिया। अराजकतावादी सगठनो मे सैकडा की सख्या मे अफसर और राजतन्त्रवादी घुस गये और काले झण्डे के नीचे वे सचमुच काले कारनामे करनेवाले अराजकतावादी बन गये।

उन्होने होटला मे घुसकर वहा ठहरे हुए व्यक्तिया की गर्दन पर पिस्तौल तानकर उनकी जेबें खाली कर दी। मास्को मे उन्होंने चौंतीस विराट भवनो का "राष्ट्रीयकरण" किया और उनमे रहनेवाले व्यक्तियो को सडको पर ढकेल दिया। वे एक किनारे खडी कर्नल रोबिन्स की रेड क्रास की

गाडी न उडे और इस तरह उसका "समाजीकरण" किया। व जो कुछ भी करत उसका औचित्य सिद्ध करने के लिए यह कहत, "हम असली क्रान्तिकारी ह – बोल्शेविका स बढकर उग्रवादी हैं।"

बोल्शेविको ने सच्चे अराजकतावादिया से माग की कि वे ऐसे व्यक्तिया को अपन सगठना से निकाल दें। इसके साथ ही उन्होंने अराजकतावादिया" के केन्द्रा पर छापे मारे और प्रचुर मात्रा म खान पीन की चीजें, रत्नाभूपण और हाल ही मे जमनी से आई मशीनगनें प्राप्त की। उन्होंने मालिका को उनकी चुराई गई चीजें वापस कर दी और अति उग्र शातिवादियो के नाम पर इस प्रकार के कुत्सित काय करनेवाले सभी प्रतिक्रियावादियो को गिरफ्तार कर लिया।

पूजीपति अब सहायता के लिये अपने पहले क शत्रुओ – जमना – का मुह ताकन लगे। वे अक्सर हम लोगा से कहते कि अगले सप्ताह आप जमन फौजो को मास्को मे आते देखेंगे।

बोल्शेविको के पास उस समय जमना का सामना करने के लिए न तो लाल फौजें थी और न ही तोपखाना था। मगर उनके पास अच्छी सख्या मे लाइनोटाइप मशीनें और मुद्रणालय थे और इनसे जो प्रचार-सामग्री प्रकाशित की जाती थी, वह जमन सैनिको पर भयानक श्रेप्नेल गोलिया का सा प्रभाव करती थी। फाकेल' (मशाल) और 'नरोदनी मीर' (जन ससार) मे सभी भापाओ मे जमन सैनिको के नाम यह अपील प्रकाशित हुई कि वे रूस म मजदूरो के जनतत्र को नष्ट करने के लिये नही, बल्कि जमनी मे मजदूरो के जनतत्र को स्थापित करने के लिये अपनी बन्दूको का प्रयोग करे।

जॉन रीड और मने सोवियत कार्यालय मे एक सचित्र पोस्टर तयार किया। चित्र न० १ मे पेत्रोग्राद मे जमन दूतावास दिखाया गया था, जिसके अग्र भाग मे एक बडा झडा लगा हुआ था। इस चित्र के नीचे यह लिखा गया था –

> इस महान झडे को देखो। इस पर एक विख्यात जमन के शब्द अकित हैं। क्या वह विस्मार्क हैं? क्या वह हिंडेनबग है? नही। यह अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातत्व के लिए अमर काल मार्क्स का आह्वान है – "दुनिया के मजदूरो, एक हो!"

यह केवल जमन दूतावास का सुदर अलकरण नही है। रूसिया ने बडी गभीरता के साथ इस झडे को ऊचा उठाया है। जमन साथियो, काल माक्स के उन्ही शब्दा से वे तुम्हारा भी आह्वान कर रह हैं, जो उन्होने सत्तर वष पूव सारी दुनिया को जगाने के लिये लिखे थे।

अन्तत एक वास्तविक सवहारा वर्गीय जनतन्त्र स्थापित हो गया है। परन्तु जब तक सभी देशा के मजदूर सत्ता पर अपना अधिकार कायम नही कर लेते, तब तक यह जनतन्त्र सुरक्षित नही रह सकता।

रूसी किसान, मजदूर एव सैनिक शीघ्र ही एक समाजवादी को अपना राजदूत बनाकर बलिन भेजेंगे। पत्रोग्राद स्थित जमन दूतावास के इस भवन मे जमनी कब एक अन्तर्राष्ट्रीयतावादी समाजवादी को अपना राजदूत बनाकर भेजेगा?

चित्र न०३ मे यह दिखाया गया था कि एक सैनिक एक महल से रूसी साम्राज्यवादी निशान–गरुड ध्वज–को निकालकर फाड रहा है और नीचे जमा भीड उन्हे जला रही है। चित्र के नीचे यह लिखा गया था

एक सैनिक एक महल की छत पर चढकर स्वेच्छाचारी शासन के घणास्पद प्रतीक, रूसी साम्राज्यवादी ध्वज को, फाड रहा है। नीचे एकत्रित भीड इस गरुड निशान को जला रही है। उस जन समुदाय के बीच खडा सैनिक लोगो को समझा रहा है कि स्वेच्छाचारी शासन को समाप्त कर देना समाजवादी क्रान्ति के अभियान का पहला कदम है।

निरकुश शासन को खत्म करना आसान है। यह और किसी बात पर नही, बल्कि केवल सैनिको की अध आधीनता पर आश्रित रहता है। रूसी सैनिको की आखें खुलते ही स्वेच्छाचारी शासन खत्म हो गया।

ऐसे चित्रो, पोस्टरो और परचा को हवा मे फेंका गया ताकि अनुकूल वायु उन्हें जर्मन खाइया मे पहुचा दे। इन्ह विमानो से गिराया गया और

जूता एवं सन्दूकों में भरकर तथा जर्मनी वापस जा रहे युद्धबन्दियों की गठियों में छिपाकर भेजा गया।

इन सब बातों का असर पड़ा और जर्मन फौजों का मनोबल क्षीण हो गया तथा वे शांति की ओर उन्मुख हुई। जनरल हाफमन* ने कहा, 'लेनिन एवं बोल्शेविज्म ने हमारे मनोबल को तोड़ा और इस प्रकार हमें पराजित करना दिया तथा अब यह शान्ति हम नष्ट कर रहा है।' सम्भवतः प्रचार इतना अधिक प्रभावकारी नहीं था। परन्तु इसने सोवियता को दबा देने के लिये जर्मन फौजों का आना जरूर रुक गया। इसके बाद रूसी पूंजीपति वर्ग ने मित्रराष्ट्रों के हस्तक्षेप की साजिशें करनी शुरू कीं।

संविधान सभा टांय-टांय फिस

वर्ग संघर्ष ने जब उग्र रूप ग्रहण कर लिया था, उसी समय ५(१८) जनवरी १६१८ को संविधान सभा का अधिवेशन आयोजित हुआ। इसने क्रांति के बीत चुके दौर को प्रतिबिम्बित किया और वह समय के अनुरूप नही थी। इसका चुनाव पुरानी सूचियों के आधार पर हुआ—इनमें एक सोवियत पार्टी—वामपंथी समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी का नाम ही शामिल नही किया गया था। इस संविधान सभा का स्वरूप अब विगलित युग के भूत की भांति था और इसी कारण जन समुदाय में इसके प्रति उपेक्षा का भाव था। परन्तु पूंजीपति वर्ग ने बड़े जोर शोर से इसका स्वागत किया। यथार्थतः पूंजीपति वर्ग के मन मे संविधान सभा के लिये कोई उत्साह की भावना नहीं थी और पूंजीपतियों ने महीनों इसे स्थगित करने अथवा बिल्कुल खत्म कर देने की हर मुमकिन कोशिश की थी। अक्सर मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना कि "हम संविधान सभा पर थूकते हैं।' मगर अब यह उनकी अंतिम आशा थी, अंतिम आड़ थी, जिसके पीछे से वे अपनी चाल चल सकते थे और इसलिये वे इसके प्रबल समर्थक बन गये।

---

*हाफमन—एक जर्मन जनरल, पूर्वी मोर्चे का चीफ आफ-स्टाफ। नवम्बर १६१७ मे इसे सोवियत सरकार के साथ शान्ति वार्ता करने का दायित्व सौंपा गया था।

जिस दिन सविधान सभा का अधिवेशन शुरू होना था, उस दिन बडा प्रदशन सगठित किया गया। करीब १५,००० अफसरो, नौकरशाहो और बुद्धिजीवियो ने सडको पर जुलूस निकाला। फर के कोट एव अन्य तक दक परिधान पहन हुए महिलाओ, लाल झडे लिये हुए पुरान राजतत्रवादियो न, बडे जाश के साथ "लोगो के लिए हम भूखे रहे और हमन अपना खून बहाया" गाते हुए तादल जमीदारो न क्रान्तिकारी जुलूस बनान की पूरी कोशिश की। परन्तु केवल गान क्रातिकारी और झण्डे लाल थे। मगर जुलूस म शामिल अधिकाश व्यक्ति सफेद गाड और यमदूतसभाई थ — शायद ही उनमे कोई किसान अथवा मजदूर रहा हो। जन-समुदाय इस जुलूस म अलग रहा, इन प्रदशनकारियो का मजाक उडाता रहा अथवा उनकी ओर घणा से देखते हुए मौन रहा।

सविधान सभा बहुत देर से अस्तित्व म आई। वह मतजात शिशु के समान थी। क्रान्ति की तीव्र गति म क्रातिकारी जन समुदाय पूणतया सोवियतो की ओर हो गया था। सोवियतो के लिये ५०० ००० प्रदशनकारियो का विराट जुलूस निकला था और वे इसके लिये केवल जुलूस निकालन को ही नही, बल्कि सघप करने एव जीवन बलिदान करन को भी प्रस्तुत थे। श्रमिक वग को सोवियते बहुत प्यारी थी, क्योकि ये उन्ही की सस्था थी, उन्ही के वग से प्रादुर्भूत हुई थी और अपन लक्ष्यो को प्राप्त करने म पूणतया सक्षम थी।

प्रत्येक प्रभुताशाली वग राज्य की व्यवस्था को वह रूप प्रदान करता है, जिसके अन्तगत उसकी सत्ता अधिकतम सुरक्षित हो जाय और जिसके माध्यम से वह अपने हितो के अनुरूप शासन का काय सचालित कर सके। जब नरेशो एव सामतो का राज था, तो उन्होने एकतन्त्रवादी और नौकरशाही राजकीय शासन उपकरण का इस्तेमाल किया। जब १८ वी शताब्दी म पूजीपतियो न सत्ता पर अधिकार जमाया, तो उन्होने इस पुरान उपकरण को खत्म कर अपने उद्देश्यो के अनुकूल नूतन शासकीय प्रणाली गठित की जिसके अन्तगत ससद, काग्रेस आदि का जन्म हुआ।

इसी प्रकार रूस म जब श्रमजीवी वर्गों के हाथ म सत्ता आई, तो उन्होने अपनी राजकीय सस्था — सोवियत — का गठन किया। व हजारो

स्थानीय गोवियतो में इस संस्था की उपयुक्तता की हर दृष्टि से परीक्षा कर चुके थे। वे इसकी कार्य प्रणाली से अच्छी तरह परिचित थे। सोवियतें उनके दैनिक अनुभव की अंग बन गई थीं। इनके द्वारा उन्होंने अपनी हार्दिक आकांक्षाएं पूरी की थीं—जमीन, कारखाने और शान्ति प्राप्त की थी। सोवियतों के साथ वे विजय की ओर बढ़े थे। उन्होंने इस रूस की सरकार बना लिया था।

और अब इस विगलित संविधान सभा ने सोवियतो को रूस की सरकार मानने से इनकार कर दिया। इसने 'श्रमिक तथा शोषित जनता के अधिकारों की घोषणा'— रूसी क्रान्ति के मैग्नाकार्टा (महाधिकारपत्र)" को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। यह बिल्कुल ऐसी ही बात थी, जैसे फ्रांसीसी क्रान्ति 'मानव अधिकार घोषणापत्र' को मानने से इनकार कर दे।

फलत यह भंग कर दी गई। ६(१९) जनवरी १९१८ की सुबह को नौसनिक रक्षकों ने कहा कि हमें नींद आ रही है और शेष प्रतिनिधिगण भाषण देना बन्द कर तथा अपने घर जायें। इस प्रकार एक बैठक के बाद इस संविधान सभा का अस्तित्व समाप्त हो गया। पश्चिमी जगत में इस पर बड़ा कुहराम मचा, मगर रूस के जीवन में तो बुलबुला भी नहीं फूटा। जनता पर इसका कोई प्रभाव नहीं था। जिस प्रकार इस संविधान सभा का अंत हुआ, उससे चरितार्थ हो गया कि इसे कायम रहने का कोई अधिकार नहीं था।

संविधान सभा के भंग हो जाने का सबसे अधिक दुःख पूंजीपतियों को हुआ। यह उनकी अंतिम आशा थी। चूंकि यह भी जाती रही, इसलिये क्रान्ति एवं सभी क्रान्तिकारी कार्यों के प्रति उनके मन में भयानक क्रोध पैदा हुआ। यह बिल्कुल स्वाभाविक था। क्रान्ति उनके लिये बहुत अनर्थकारी थी। इसने यह उद्घोषणा की 'जो काम नहीं करेगा, वह खायेगा भी नहीं,' 'जब तक प्रत्येक व्यक्ति को रोटी सुलभ नहीं हो जाती, तब तक कोई पकवान नहीं खा सकता।" इसने उनके जीवन की सारी मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया। इसने जमींदारों की बड़ी-बड़ी जागीरें उनके हाथों से छीन लीं, ऊंची-ऊंची जगहों पर काम करनेवाले अधिकारियों से

उनके पद छीन लिये और पूजीपतिया को बैंको एव कारखाना से वंचित कर दिया। कोई भी व्यक्ति यह नही चाहता कि उससे उसकी कोई चीज छीन ली जाय। कोई भी आरामपसन्द वग सुख चैन का जीवन छोड़कर खुशी म काम नही करना चाहता। कोई भी विशेषाधिकारप्राप्त वग स्वेच्छा स अपने किसी भी विशेषाधिकार को नही छोडना चाहता। परम्परा म निमग्न कोई भी वग पुराने को त्याग कर खुशी स नूतन को अगीकार नही करता।

निस्सदेह इस नियम के कुछ अपवाद भी होते ह – रूस म इसके कुछ उल्लेखनीय उदाहरण सामने आये। पुराने जारपथी जनरल निकोलायेव न अपने को बाल्शेविक घोषित कर दिया और लाल फौज म कमान सभाल ली। बाद मे याम्बुग म सफेद गार्डों द्वारा पकड लिय जान पर उनस कहा गया कि वे बोल्शेविकों स नाता तोड ल। उन्होने ऐसा करने से इनकार कर दिया। उन्ह यातनाए दी गइ – उनकी छाती पर जलता लाल सितारा दागा गया। फिर भी उन्होने झुकने स इनकार कर दिया। उन्हें फासी के तख्त पर ले जाकर उनके गले मे फदा डाल दिया गया। फासी पर लटकाये जाने के समय उन्होंने चिल्लाकर कहा, "म एक बोल्शेविक के रूप म मर रहा हू। सोवियते जिन्दाबाद!"

उन्ही के समान कुछ और व्यक्ति भी थ, जो तोल्स्ताय एव अन्य रूसी मानवतावादियो की शिक्षा से प्रेरित थ और जिन्होने पुराना व्यवस्था के अन्याय और नई व्यवस्था के औचित्य को महसूस किया था।

परन्तु ये अपवाद थे। एक वग के रूप म रूसी पूजीपतिया ने क्रान्ति को भार आतक एव घृणा की भावना से देखा। व इसे हर सूरत म खत्म कर देने पर तुले हुए थे। प्रतिशोध की भावना से क्रोधान्ध उन्होने प्रतिष्ठा, कारुणा और देशभक्ति के सभी सदाचारो का परित्याग कर दिया। इस क्रान्ति को कुचलने के हेतु उन्होने विदेशी फौजो का हस्तक्षेप के लिये आह्वान किया। क्रान्ति के विरुद्ध हर हथियार का प्रयोग पवित्र माना गया – यहा तक कि हत्याओ को भी ठीक समझा गया। सभ्यता के आवरण को छिन्न भिन्न कर दिया गया था। आदिकालीन बबर युग के विपन्न और नग्न प्राणी हो गया करता और संस्कृति के पावक मनुष्य राक्षस बन गये।

नई व्यवस्था का निर्माण

पुन सत्ता हथियाने के प्रयास म रूम के धनी वग न जिस आचरण को अपनाया, वह इतिहास म कोई नई अथवा असाधारण बात नही थी। अभूतपूव बात तो थी रूसी मजदूर वग का सत्तारूढ बने रहने का दढ निश्चय। वह निम्म दढता के साथ अपन पथ पर अग्रसर रहा, उसन आक्रमण का जवाब प्रत्याक्रमण से, इट का जवाब पत्थर से और लोहे का जवाब फौलाद से दिया। उसने अभूतपूव अनुशासन एव एकता की भावना विकसित की।

कहा जाता है कि नेताओ के दढ सकल्प के सहारे क्राति के सामाय सनिको को निर्धारित पथ पर एकता के सूत्र म आबद्ध रखा गया और उनका दढता केवल उनके नेताओ की दढता की ही परिचायक थी। परन्तु विपरीत बात सत्य के अधिक निकट है।

वास्तव म नेतागण ही दोलायमान थे। कठिन समय म पाच नेता (जिनोव्येव, कामेनव, मिल्यूतिन, नोगीन, रीकोव) बोल्शेविक पार्टी की केद्रीय समिति से अलग हो गये और अतिम तीन ने कमिसार के पदो से इस्तीफे दे दिये। मास्को के विनाश के बारे मे सभी कपोलकल्पित कथाओ पर विश्वास करते हुए लुनाचार्स्की चीख उठे, "अब प्याला लबरेज हो चुका ह। मै यह वीभत्सता सहन नही कर सकता। इन पागल कर देनेवाले विचारो का मन पर भारी बोझ लिये हुए काम करना असभव है। अब मै और अधिक बर्दाश्त नही कर सकता। मै इस्तीफा देता हू।'

लेनिन ने तिरस्कार के स्वर म कहा 'कच्ची आस्था रखनेवाले, ढुलमुल और इन सन्देहशील व्यक्तियो पर लानत है, जो पूजीपति वग की चिल्ल पो सुनकर आत्म समपण कर रहे ह। जन समुदाय की ओर देखो। उसम किसी तरह का सकल्प विकल्प नही है।" सारे रूस म इन भगोडो की खिल्ली उडाई गई। सवहारा वग मे अपन विरुद्ध घृणा की तीव्र भावना

बोल्शेविक पार्टी की सदस्यता के लिये उच्च मापदण्ड, कठिन कर्तव्य एवं सख्त अनुशासन के कारण बहुत-से साधारण लोग इसके सदस्य होने को अनिच्छुक थे। परन्तु उन्होंने इसके पक्ष मे अपने मत दिये।*

संविधान सभा के चुनाव म उत्तरी एव मध्य रूस म बोल्शेविको को एक या दो प्रतिशत नही, बल्कि ५५ प्रतिशत वोट मिले। पत्रोग्राद म बोल्शेविको और उनके साथियो – वामपंथी समाजवादी क्रान्तिकारियो – को ५७६,००० वोट मिले, जो १७ अन्य दलो को मिलनेवाले कुल वोटो से अधिक थे।

कहा जाता है कि तीन प्रकार के झूठ होते है – झूठ, सफेद झूठ और सांख्यिकी। क्रातिकारी सांख्यिकी विशेष रूप से अविश्वसनीय होती है, क्योकि क्राति के समय लोक मत ज्वार-तरग की भाति उठता गिरता है। लोग आज एक पक्ष को वोट देते है, तो कुछ सप्ताह बाद किसी दूसरे ही पक्ष को।

जब १९१७ के नवम्बर मे संविधान सभा का चुनाव हुआ, तो क़रीब एक तिहाई मतदाताओ ने बोल्शेविको के पक्ष मे (जिनम उनके साथी वामपंथी समाजवादी क्रान्तिकारी शामिल थे) वोट दिये। जब १९१८ की जनवरी मे संविधान सभा का अधिवेशन हुआ, तो संभवत दो तिहाई

---

*समाजवादी पार्टी की सदस्य संख्या की तुलना मे समाजवादियो को वोट देनेवालो की संख्या सदा १० से ५० गुनी अधिक हुआ करती है। १९२० मे न्यूयार्क मे सोशलिस्ट पार्टी के सदस्यो की संख्या १२,००० थी। चुनाव म इस पार्टी को १७६,००० वोट मिले। १९१८ मे व्लादीवोस्तोक मे बोल्शेविक पार्टी की सदस्य-संख्या ३०० थी। परन्तु जून के चुनाव मे बोल्शेविक पार्टी को वोट देनेवालो की संख्या १२,००० थी। यह चुनाव मित्रराष्ट्रो के तत्वावधान मे उस समय हुआ था, जब बोल्शेविक पार्टी के समाचारपत्रो का प्रकाशन बन्द कर दिया गया था और उसके नेता जेलो म बन्द थे, फिर भी अन्य १६ दलो को कुल जितने वोट मिले थे, मतदाताओ ने बोल्शेविको को उससे अधिक वोट दिये थे। इसके बावजूद जारपंथी कोल्चाक और दनीकिन के जॉन स्पैर्गो जैसे प्रचारको ने लोगो का ध्यान सदस्य-संख्या की ओर ही आकृष्ट करने का प्रयास किया, जो सर्वथा भ्रामक था। – लेखक का नोट

मे सवार होकर यात्रा पर निकला। यह जानकर कि हम दोनो अमरीकी है, हमारा कोचवान, जो पन्द्रह वष का लडका था, उत्साह से ओत प्रोत हो उठा।

उसने जैसे जोश से कहा, "ओह, आप अमरीकी ह! क्या आप मुझे बता सकते है कि बफ्फलो बिल और जेस्सी जेम्स सचमुच जीवित ह?"

हमने कहा, "हा"। बस, फिर क्या था, हम फौरन अपने कोचवान की नजरो मे ऊचे उठ गये। उसे इन पश्चिमी दु साहसिक व्यक्तियो के कारनामे अच्छी तरह याद थे। अब उसके लिए इससे अधिक खुशी की क्या बात हो सकती थी कि वह अपने प्यारे वीरो के देश के दो व्यक्तियो को अपनी स्लेज म ले जा रहा था। अपनी नीली आखो मे प्रशसा की भावना लिये वह हमारी ओर देखता रहा और हमने भी इस बात की पूरी कोशिश की कि हम उसे बफ्फलो बिल एव जेस्सी जेम्स जैसे प्रतीत हो।

उसने जोश म चिल्लाकर कहा, "वाह, वाह! अब मैं आप लोगो को यह दिखाऊगा कि गाडी कसे चलायी जाती है।" उसने लगाम ढीली कर दी और एक झटके के साथ हमारी स्लेज बर्फीले टीलो पर उछलती हुई तेजी से दौडने लगी, मानो रोकी माउण्टिन के माग पर घोडा डाक गाडी दौडी चली जा रही हो। खुशी से चिल्लाता हुआ वह अपनी सीट पर खडा हो गया और चाबुक सटकारने लगा। स्लेज इधर उधर हचकोले खा रही थी। मै और कूत्स डरे सहमे, अपनी सीट के साथ चिपके हुए थे और उससे बार बार गाडी को रोकने के लिए कह रहे थे।

हमने उसे यकीन दिलाया कि बफ्फलो बिल ने इससे अधिक तेज सवारी कभी नही की थी और उससे अनुरोध किया कि अब वह फिर इतनी तेज गाडी न चलाये। उसने पश्चिमी अमरीका के बारे म प्रश्नो की झडी लगा दी और हम यह कोशिश करते रहे कि वह रूस के बारे म बातचीत करे। किन्तु हमारा प्रयास निष्फल रहा। उसके लिए तो रूसी क्रान्ति का मानो कोई महत्व ही नही था। पत्रोग्राद की सडको पर हुए वीरतापूर्ण कार्यों की तुलना म रगीन चित्रो से सुसज्जित पुस्तको के कारनामे उसके लिए अधिक उत्तेजनापूर्ण थे।

क्रान्ति के प्रति उदासीनता का रूप हमेशा इतना अधिक प्रकट नही था। बहुत से लोगो की शक्ति दैनिक कार्यों और भोजन एव वस्त्र प्राप्ति

म लग जाती थी। कुछ दूसरे लोगा म नीचता जाग उठी और उन्होने क्रान्ति को लूटपाट और काहिली का जीवन व्यतीत करने का अच्छा अवसर माना। उन्होने गुलामा की भाति कठिन परिश्रम किया था और अब उन्होंने यह सोचा कि वे रईसो की तरह मौज मनायेंगे। उनके लिए क्राति का अर्थ काम करने की स्वतत्रता नही, बल्कि काम से छुटकारा था। वे दिन भर सडको के कोना पर खडे रहते और नई व्यवस्था के निर्माण मे उनका केवल यही योगदान होता था कि वे पटरिया पर सूर्यमुखी के बीज छील छीलकर खाते और छिलके बिखराते। सैनिक "मुफ्तखोरे" बन गये और सरकार की ओर से उपलब्ध भोजन, वस्त्र एव रहने के बदले व कुछ भी नही करते थे। वे ताश खेलकर रात बिताते और सोकर दिन गुजारते। अनुशासन मे रहने एव शस्त्राभ्यास तथा कवायद करने की जगह वे फेरीवाले बन गये और सडको पर घूम घूमकर गालोश (चमडे के जूते के ऊपर पहना जानेवाला रबड का जूता) सिगरेट और छोटी-मोटी चीजें बेचने लगे।

क्रान्ति के हिता के प्रति सिद्धान्तशून्य एव अपराधमूलक उपेक्षा का भाव भी अपना लिया गया था। क्राति के क्षेत्र से बुद्धिजीविया का पलायन कर जाने के बाद महत्त्वाकाक्षिया और स्वार्थजीविया ने लूटखसोट करने और यश कमाने का यह अच्छा मौका देखा। जब जान रीड और म पत्नाग्राद के पुलिस अधिनायक से मिलने गये, तो उसने हम अपनी बाहा म भरकर बडा स्नेह प्रदर्शित करते हुए कहा "प्यारे साथियो आपका स्वागत है! म आप लोगा के लिये नगर के सबसे अच्छे फ्लैट म रहने की व्यवस्था करूगा। हम एक साथ मर्सेइयज' का गीत गाना चाहिये। वाह! हमारी शानदार क्रान्ति!' उसने बडे उल्लासपूर्ण ढग से यह उदगार प्रकट किया। उसकी ऐसी उमग के बारे म कोई सन्देह नही हो सकता था। उसका स्रोत था– मेज पर रखी हुई लगभग एक दजन शराब की बोतल। मदिरा के नशे म वह वाचाल हो गया था–

'फ्रासीसी क्रान्ति के समय दातोन और मारात न पेरिस पर शासन किया। उनके नाम इतिहास म अमर हो गये हैं। आज म पत्नाग्राद पर शासन कर रहा हू। मेरा नाम भी इतिहास म अमर हो जायगा।' हा, यह कुछ ही समय की चादनी थी। अगले ही दिन घूस लेने के अपराध मे उसे जेल की हवा खानी पडी।

ऐसा ही एक अन्य शूरवीर किसी प्रकार फौजी कमिसार के पद पर नियुक्त हो गया। जैसे जैसे वह मास्को से दूर होता गया, वैसे वैसे उसकी अहम्मन्यता बढ़ती गयी। उसने एक स्थानीय सोवियत को संदेश भेज दिया कि उसके आगमन की सूचना तोप की गर्जना के साथ प्रचारित की जाये और उसके स्वागत के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल भेजा जाये। वह अपने हाथ में पिस्तौल लिये मंच पर गया और आश्चर्यचकित श्रोताओं को बुलन्द आवाज में अपने आदेश सुनाता तथा प्रत्येक वाक्य के अन्त में छत में एक गोली मारकर अपना रोब जमाता रहा। ऐसे दुस्साहसी अधिकारियों को शीघ्र ही दण्ड दिया गया।

परन्तु आम जनता के प्रति बाल्शेविकों ने असीम सहिष्णुता की भावना प्रदर्शित की। वे इस बात को जानते थे कि जारशाही राज्य ने उन्हें हतबुद्धि एवं जड़ बना रखा था, चर्च ने उनकी चेतना को कुंठित और विकृत कर दिया था, अकाल ने उनके शरीर का सत्व खींच लिया था और शराब ने उनकी स्फूर्ति समाप्त कर उनमें जड़ता की भावना पैदा कर दी थी। वे वर्षों के युद्ध के कारण परिक्लान्त और सदियों के निर्मम अत्याचारों एवं प्रतारणा के फलस्वरूप पथ भ्रष्ट हो गये थे। इस प्रकार के लोगों को सही रास्ते पर लाने और उन्हें शिक्षा देने के लिये बाल्शेविकों ने बहुत धैर्य का परिचय दिया।

नयी रचनात्मक भावना

बोल्शेविकों ने घोषणा की, "अन्य खर्चों में चाहे जितनी भी कमी की जाये, परन्तु जन शिक्षा पर अधिक धन राशि अवश्य व्यय होनी चाहिये। शिक्षा पर उदारतापूर्वक व्यय के लिये बजट में समुचित धन राशि की व्यवस्था प्रत्येक राष्ट्र के लिये सम्मान एवं गौरव की बात है। हमारा प्रथम लक्ष्य अज्ञानता के विरुद्ध संघर्ष होना चाहिये।"

सर्वत्र स्कूल खोले गये—यहां तक कि प्रासादों, बैरकों और कारखानों में भी स्कूल खोले दिये गये। उन पर मोटे मोटे अक्षरों में लिखा गया, "बच्चे विश्व की आशा हैं।" इन स्कूलों में लाखों बच्चे दाखिल हो गये, कुछ चालीस और साठ वर्ष की अवस्था के भी थे। बूढ़ी-बुढ़िया और वयोवृद्ध किसान भी पढ़ने लगे। सारा राष्ट्र पढ़ना लिखना सीखने लगा।

शिक्षा प्रसार सम्बन्धी सोवियत पोस्टर "निरक्षर व्यक्ति, अन्धा व्यक्ति है। हर जगह अप्रत्याशित आपत्तियों और मुसीबतों से ही उसका वास्ता रहता है।"

क्रान्तिकारी परचा और ओपेरा के विज्ञापना के साथ ही जगह जगह तख्ता पर महान पुरुषो के सक्षिप्त जीवन चरित्र और स्वास्थ्य एव कला तथा विज्ञान के बारे मे जानकारी प्रदान करनेवाले पोस्टर लगाने का क्रम शुरू हुआ। सभी क्षेत्रा म मजदूरा के थिएटर और पुस्तकालय खुलने लगे और शिक्षा प्रसार के निमित्त भाषणा का आयोजन होन लगा। अभी तक सस्कृति के द्वार जन-समुदाय के लिये कसकर बद रखे गये थे, परन्तु अब वे उनके लिये पूरी तरह खोल दिये गये। किसान और मजदूर सग्रहालयो और चित्रशालाओ मे जाकर सास्कृतिक निधियो को देखन लगे।

बाल्शेविका का लक्ष्य नागरिका को केवल सुशिक्षित बनाना ही नही था, बल्कि उन्होने उनके स्वास्थ्य के प्रश्न पर भी ध्यान दिया। इस लक्ष्य की पूत्ति के लिये कई कानून बनाये गये, जसे दैनिक काय के लिये आठ घटे का कानून। यह घोषणा की गई कि हर बच्चा चाहे जिस प्रकार से भी पैदा हो, जायज माना जायेगा। अवैध सतान का कलक मिटा दिया गया। हरेक कारखाने के लिये प्रति दो सौ श्रमिक महिलाओ के पीछे एक मातृ शय्या की व्यवस्था करना अनिवाय कर दिया गया। प्रसव के आठ सप्ताह पूव और आठ सप्ताह बाद मा को काम स मुक्त कर देने का नियम लागू हो गया। विभिन्न केन्द्रा म मातृ सदन की स्थापना की गई। धनी लोगा के बजाय बच्चा का सबसे पहले दूध, फल जसी "ऐश" की चीजे दी जान लगी। घर सम्बन्धी कानून द्वारा धनी व्यक्तिया का दस अथवा बीस कमरा या अनेक घरा पर स्वामित्व का अधिकार समाप्त हो गया। अब दजना परिवारा का प्रथम बार ताजी हवा, रोशनी और अच्छे घरा म रहन का अधिकार प्राप्त हुआ। इससे न केवल लोगा के स्वास्थ्य म सुधार हुआ, बल्कि उनके आत्म सम्मान एव गौरव म भी वद्धि हुई। जनता के समथन पर आधारित सवहारा वग के अधिनायकत्व न जनता को मानसिक और शारीरिक दृष्टि स स्वस्थ बनान की कोशिश की। बोल्शेविक भविष्य-निर्माण म सलग्न थ।

पुरानी पूजीवादी व्यवस्था की नीव खोखली करन के पश्चात उन्हे अब नई सामाजिक व्यवस्था की रचना के कही अधिक दुष्कर काय को पूरा करना था। उन्हे हर क्षेत्र म नये सिरे से, अधाभाग से निर्माण-काय करना था, अतीत के विनाश के खडहरा पर इसकी सजना करनी थी और सो

क्रान्तिकारी पर्चा और ओपेरा के विज्ञापनो के साथ ही जगह जगह तख्तो पर महान पुरुषो के सक्षिप्त जीवन चरित्र और स्वास्थ्य एव कला तथा विज्ञान के बारे म जानकारी प्रदान करनेवाले पोस्टर लगाने का क्रम शुरू हुआ। सभी क्षेत्रो म मजदूरो के थिएटर और पुस्तकालय खुलने लगे और शिक्षा प्रसार के निमित्त भाषणो का आयोजन होने लगा। अभी तक संस्कृति के द्वार जन समुदाय के लिये कसकर बन्द रखे गये थे, परन्तु अब वे उनके लिये पूरी तरह खोल दिये गये। किसान और मजदूर सग्रहालयो और चित्रशालाओ म जाकर सास्कृतिक निधियो को देखने लगे।

बोल्शेविको का लक्ष्य नागरिको को केवल सुशिक्षित बनाना ही नही था, बल्कि उन्होने उनके स्वास्थ्य के प्रश्न पर भी ध्यान दिया। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये कई कानून बनाये गये, जैसे दैनिक काय के लिये आठ घटे का कानून। यह घोषणा की गई कि हर बच्चा चाहे जिस प्रकार से भी पैदा हो, जायज माना जायेगा। अवैध सतान का कलक मिटा दिया गया। हरेक कारखाने के लिये प्रति दो सौ श्रमिक महिलाओ के पीछे एक मात शय्या की व्यवस्था करना अनिवाय कर दिया गया। प्रसव के आठ सप्ताह पूव और आठ सप्ताह बाद मा का काम से मुक्त कर देने का नियम लागू हो गया। विभिन्न केन्द्रो मे मात सदन की स्थापना की गई। धनी लोगो के बजाय बच्चो को सबसे पहले दूध, फल जैसी 'ऐश' की चीज दी जाने लगी। घर सम्बन्धी कानून द्वारा धनी व्यक्तियो का दस अथवा बीस कमरो या अनेक घरो पर स्वामित्व का अधिकार समाप्त हो गया। अब दजनो परिवारो को प्रथम बार ताजी हवा, रोशनी और अच्छे घरो म रहने का अधिकार प्राप्त हुआ। इससे न केवल लोगो के स्वास्थ्य मे सुधार हुआ, बल्कि उनके आत्म सम्मान एव गौरव म भी वृद्धि हुई। जनता के समथन पर आधारित सवहारा वग के अधिनायकत्व ने जनता को मानसिक और शारीरिक दष्टि स स्वस्थ बनाने की कोशिश की। बाल्शेविक भविष्य-निर्माण म सलग्न थे।

पुरानी पूजीवादी व्यवस्था की नीव खोखली करने के पश्चात उन्ह अब नई सामाजिक व्यवस्था की रचना के कही अधिक दुष्कर काय को पूरा करना था। उन्ह हर क्षेत्र म नये सिरे से, आधारभाग से निर्माण-काय करना था, अतीत के विनाश के खडहरो पर इसकी सजना करनी थी और सो

भी हर दिशा से पैदा होनेवाले अवरोधों तथा भारी कठिनाइयों का सामना करते हुए।

एक नूतन समाज की नवरचना का कार्य कितना विकट होता है, इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की अतिशयोक्ति से काम लेना असंभव है। मैंने एक ही विभाग—सेना विभाग—में इस तरह की विघ्न बाधाओं की झलक प्राप्त की। तोत्स्की ने अपने इन शब्दों से जनरल वान हाफमैन के मुंह पर तमाचा मारा था कि 'आप जीवित राष्ट्रों के शरीर पर तलवार से लिख रहे हैं।" और उसने प्रथम ब्रेस्त लितोव्स्क की संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। तब जर्मन फौजों ने फौरन पेत्राग्राद की ओर अपना अभियान शुरू किया। नगर की रक्षा के लिए मैं लाल सेना में शामिल हो गया। लेनिन ने यह सुनकर मुझे विदेशी सैन्य दल गठित करने का सुझाव दिया। 'प्राव्दा' ने, जैसा भी सम्भव हुआ, अंग्रेजी टाइप की व्यवस्था की और हमारी अपील प्रकाशित की।

करीब साठ व्यक्ति विदेशी सैन्य दल में शामिल हुए। उनमें तोल्स्तोय के विचारों के पोषक चार्ल्स कूस भी थे, जिन्हें एक चूहे को मारने में भी नैतिक आपत्ति थी। किन्तु अब, जब क्रान्ति खतरे में थी, उन्होंने शांतिवाद का परित्याग कर बन्दूक उठा ली। पचासवर्षीय दार्शनिक का सैनिक बनना बहुत ही बड़ा परिवर्तन था। अभ्यास के समय निशाना साधते हुए उनकी राइफल दाढ़ी में अटक जाती, परन्तु जब एक बार उनकी गोली ठीक निशाने पर जा लगी, तो खुशी से उनकी आंखें चमक उठीं।

हमारा विदेशी सैन्य दल तो मानो भानमती का कुनबा था और हमारी लड़ने की शक्ति सचमुच नगण्य थी। परन्तु इसकी भावना का रूसियों पर बहुत अच्छा नैतिक प्रभाव पड़ा। इससे उन्होंने महसूस किया कि वे बिल्कुल अकेले नहीं हैं। और छोटे स्तर पर हम भी उन कठिनाइयों का एहसास हुआ जिनका बहुत बड़े स्तर पर बोल्शेविकों को सामना करना था। हमने अनुभव किया कि यहां किसी भी संगठन के सुचारु रूप से कार्य करने के पूर्व उसे अनेक अवरोधों को दूर करना होगा।

एक ओर ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी गुप्तचरों तथा दूसरी ओर जर्मन गुप्तचरों ने हमारे सैन्य दल में शामिल होने की कोशिशें कीं। सफेद गार्डों ने प्रतिक्रान्तिवादी लक्ष्यों की पूर्ति के लिये इसे अपने नियंत्रण में करने की

है कि क्रान्ति ने कम उनकी सृजनात्मक शक्ति को जगाया और उन्होंने रचनात्मक समस्या की पूर्ति के लिए किस तरह शक्ति का उपयोग किया। अब क्रान्ति का आदर्श-वचन था, "सुव्यवस्था, श्रम और अनुशासन"।

किन्तु क्या यह नई रचनात्मक भावना केवल क्रान्ति [illegible] म ही पैदा हो रही थी? अथवा यह प्रक्रिया [illegible] जन-समुदाय म फैल रही थी? इस सम्बन्ध म हम [illegible] करनी थी। क्रान्ति के बीच प्राय एक वर्ष व्यतीत [illegible] म स्वदेश वापस जा रहे थे। हमारी आंखें अब पूर [illegible] की ओर लगी हुई थीं। हम जिन दो महाद्वीपों म [illegible] हो हुए ट्रांस-साइबेरियाई रेलवे से ६,००० मील की यात्रा [illegible] प्रशान्त सागर के तट पर पहुंचनेवाले थे।

चेष्टा की। उत्तेजना पैदा करनेवालो ने ईर्ष्या-द्वेष और फूट के बीज बोये। जब हमने सैनिक जमा कर लिये, तो फौजी साज सामान प्राप्त करना प्राय असभव हो गया। फौजी भण्डार की दशा बहुत ही गडबड और शोचनाय थी। राइफले एक जगह थी, तो गोलिया किसी दूसरी जगह। टेलीफोन, कटीले तार और सफरमैना दस्ते के उपकरण एक ही जगह गड्ड मड्ड हुए पडे थे और अफसरो ने और भी अधिक घपला करन की कोशिशें की। जब तोड फोड करनेवाले हटा दिये गये, तो अनुभवशून्य व्यक्तिया ने उनर स्थान ग्रहण किये। हमे सैनिक अभ्यास के लिए पेत्रोग्राद से दो मील दूर पहुचना था। मालगाडी के डिब्बे मे भयानक कष्ट उठाकर जब हम गाडी से उतरे, ता पता चला कि हम नगर के दूसरी ओर चार मील दूर पहुच गये हैं। इस गलती के कारण हम गतव्य स्थान से छ मील दूर ऐस रेलव याड म जा पहुचे जहा गाली-गलौज करते हुए सनिक खाली गाडिया और खराब इजन जमा थे। क्रोध एव आवेश से भरे हुए कमिसार रलव अधिकारिया के सामने कागज पटकते और मुक्के तानते और वे चाखते हुए जवाब देते कि हम कुछ नही कर सकते।

सारे रूस म जो अराजकता फैली हुई थी, उसका यह केवल एक उदाहरण था। उस समय व्यवस्था कायम करना असभव प्रतीत हो रहा था। फिर भी इस असभव को सभव बना दिया गया। इस गडबडी और अव्यवस्था की स्थिति म महान लाल फौज का उदय हो रहा था, जो अपन सगठन, अनुशासन और वीरता से सारे विश्व को विस्मयाभिभूत करनेवाली थी। और केवल युद्ध के क्षेत्र मे ही नही, बल्कि सास्कृतिक एव आर्थिक क्षेत्रो मे भी क्राति से सुनभ शक्तिशाली रचनात्मक भावना के सुपरिणाम प्रकट होन लगे थे।

रूसी जनता म सदा से बहुत ही शक्ति निगूढ रही है। परतु अभी तक यह अभिव्यक्त नही हो पाई थी। निरकुश राजतत्र न अपन उत्पीडन से इसे कभी अभिव्यक्त होने का मौका नही दिया था। क्राति ने उसकी सदिया से सुप्त शक्ति जगा दी और वह बडे वेग के साथ प्रकट हुई एव उसने पुरानी पूजीवादी व्यवस्था मटियामेट कर दी।

हम यह देख चुके हैं कि क्राति ने विनाशात्मक उद्देश्या के लिये लोगो की अपार शक्ति को किस प्रकार मुक्त किया था। अब हम यह देख रहे

चेष्टा की। उत्तेजना पैदा करनेवालो ने ईर्ष्या द्वेष और फूट के बीज बोये। जब हमने सनिक जमा कर लिये, तो फौजी साज-सामान प्राप्त करना प्राय असभव हो गया। फौजी भण्डार की दशा बहुत ही गडबड और शोचनीय थी। राइफले एक जगह थी, तो गोलिया किसी दूसरी जगह। टेलीफान, कटीले तार और सफरमैना दस्ते के उपकरण एक ही जगह गड्ड मड्ड हुए पडे थे और अफसरो ने और भी अधिक घपला करने की कोशिशें का। जब तोड फोड करावाले हटा दिये गये, तो अनुभवशून्य व्यक्तिया ने उनक स्थान ग्रहण किये। हम सैनिक अभ्याम के लिए पेत्रोग्राद से दो मील दूर पहुचना था। मालगाडी के डिब्बे मे भयानक कष्ट उठाकर जब हम गाडी से उतरे, तो पता चला कि हम नगर के दूसरी ओर चार मील दूर पहुच गये है। इस गलती के कारण हम गतव्य स्थान से छ मील दूर ऐसे रलवे याड मे जा पहुचे, जहा गाली-गलौज करते हुए सनिक खाली गाडिया और खराब इजन जमा थे। क्राध एव आवेश से भरे हुए कमिसार रेलवे अधिकारियो के सामने कागज पटकते और मुक्के तानत और वे चीखते हुए जवाब देते कि हम कुछ नही कर सकते।

सारे रूस म जो अराजकता फैली हुई थी, उसका यह केवल एक उदाहरण था। उस समय व्यवस्था कायम करना असभव प्रतीत हो रहा था। फिर भी इस असभव को सभव बना दिया गया। इस गडबडी और अव्यवस्था की स्थिति म महान लाल फौज का उदय हो रहा था, जो अपने सगठन, अनुशासन और वीरता से सारे विश्व को विस्मयाभिभूत करनेवाली थी। और केवल युद्ध के क्षेत्र म ही नही, बल्कि सास्कृतिक एव आर्थिक क्षेत्रा मे भी क्राति से सुलभ शक्तिशाली रचनात्मक भावना के सुपरिणाम प्रकट होन लगे थे।

रूसी जनता मे सदा से बहुत ही शक्ति निगूढ रही है। परतु अभी तक यह अभिव्यक्त नही हो पाई थी। निरकुश राजतत्र ने अपने उत्पीडन से इसे कभी अभिव्यक्त होने का मौका नही दिया था। क्राति ने उसकी सदियो से सुप्त शक्ति जगा दी और वह बडे वेग के साथ प्रकट हुई एव उसने पुरानी पूजीवादी व्यवस्था मटियामेट कर दी।

हम यह देख चुके ह कि क्राति ने विनाशात्मक उद्देश्या के लिये लागो की अपार शक्ति को किस प्रकार मुक्त किया था। अब हम यह देख रहे

क्रान्ति की व्यापकता

एक्सप्रेस गाडी से साइबेरिया के पार

तेरहवा अध्याय

स्तेपियो मे क्रान्ति की लहर

१९१८ का अप्रैल समाप्त होनेवाला था। क्र्स और म लाल पेत्रोग्राद कम्यून से विदा हो रहे थे। बफ गिर रही थी और रात घिरने ही वाली थी। यह तूफानी एव भव्य प्राचीन नगर हम बहुत प्रिय था, यह क्रांति के उतार चढाव के अनेकानेक दृश्या का प्रतीक था जिसकी हर सडक एव प्रत्येक राजमाग पर क्रांति के समय अभूतपूव घटनाए घटी थी।

हम निकोलाई स्टेशन की सीढिया से जिस चौक को देख रहे थे, वह क्रांति के प्रथम शहीदो के खून से लाल हो चुका था और एक रात को ट्रक द्वारा यहा पहुचकर हमने सावियत पोस्टरा की बौछार से इसे सफेद बनाने मे सहायता की थी। अपने मत साथियो की लाशें उठाय और मर सिया गाते हुए क्रान्तिकारी मजदूर भी यहा से गुजरे थे। हमने इसी चौक म उनके जोशीले नारो की यह गूज भी सुनी थी "सारी सत्ता सोवियता का दा!"। इसी चौक म मजदूरो के जुलूस म कज्जाक अपने घोडे दौडाते हुए आये थे और उन्होने प्रदशनकारियो को खडजो पर गिराया था। यही मजदूर अजेय लाल सना के रूप म सगठित होकर फिर स यहा आये थे।

अनक स्मतिया इस नगर से हम बाधे हुए थी। परन्तु टास साइबेरियाई एक्सप्रेस गाडी तो अब चलनेवाली थी और इसे हमारी भावुकता से क्या मतलब! प्रति सप्ताह यह गाडी ६,००० मील की लम्बी यात्रा पर प्रशान्त महासागर के तट की ओर रवाना हाती थी और वह केवल सिगनल की घटी की टनटनाहट की ही परवाह करती थी, जो चाहे जार के आदेश

सावियत सरारार द्वारा प्रदत्त पासपोट लिये, जिस पर वाल्शेविका की मुहर नगी हुई थी, ये उत्प्रवासी बाहर जा रहे थे। वोरशेविक कोचवाना न इह स्टेशन पर पहुचाया था, वाल्शेविक कुलिया की सहायता से व इस गाडी मे सवार हुए थे और इसके कडक्टर, ब्रेकमन और इजीनियर—सभी बोल्शेविक थे। इस एक्सप्रेस गाडी म सवार वे जिस रेल-पथ स जा रहे थे, उसकी देखभाल बोल्शेविक मजदूर करते थे, वोरशेविक सैनिक इसकी रक्षा करते थे, वोल्शेविक काटा वदलनेवाले काटा वदलते थे और बोल्शेविक परिचारक उन्ह भाजन देते थे। और फिर भी व इन्ही वोल्शेविको को गाली देते हुए, उन्ह लुटेरे एव हत्यारे कहकर अपना समय व्यतीत कर रहे थे। कितना विचित्र दृश्य था यह! वे उन्ही बोल्शेविका की भत्सना कर रहे थे, उन्ह ही गालिया दे और कोस रहे थे, जिन पर वे भोजन, सुरक्षा एव यात्रा यहा तक कि अपनी जान के लिए भी आश्रित थे। केवल कडक्टर का छाडकर इस गाडी के सभी कायकर्ता बोल्शेविक थे।

कडक्टर नीच एव खुशामदी और जारशाही का पापक था। मूलत किसान हाते हुए भी विचारो से घोर जारपथी था। सभी देशत्यागिया को वह अब भी "मेरे मालिक' (बारिन) कहकर सम्बाधित करता था।

वह कहता, 'मेरे मालिक, हम गवार लोग वहुत काहिल और मूख हैं। हम एक वातल वोदका दे दीजिए और हम उसे पाकर खुश हो जाते हैं। हमे इससे अधिक स्वतत्रता नही चाहिए। हम डण्डे के भय से ही काम करते हैं। हमारे लिये जार जरूरी है।'

उत्प्रवासियो का उसकी वात सुनकर बडी खुशी होती। उनके लिए वह चैन एव आराम का सतत स्रोत था—बोल्शेविक अधेर म प्रदीप्त प्रकाश था।

उन्हाने यह मत प्रकट किया, 'इस ईमानदार किसान के विचारा मे लाखा रूसी किसाना की भावनाए अभिव्यक्त होती ह, जो अपन मालिक की सेवा, चच के निर्देशो का पालन और जार के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने से सतुष्ट और प्रसन्न ह। यह सच है कि बाल्शेविको ने कुछ किसानो को पथ भ्रष्ट कर दिया है, किन्तु वे वहुत थोडे ही ह। इन धयवान एव परिश्रमी लाखो किसानो को उस पागलपन से क्या लेना देना है, जो मास्को तथा पेत्रोग्राद मे फैला हुआ है।"

तथा प्रदशन एव सभाये उसके जीते-जागते प्रमाण थे। किन्तु यहा, साइबेरियाई स्तेपी के अचल मे क्रांति का कोई चिह्न दृष्टिगोचर नही होता था। हम यहा कुल्हाडे उठाये लकडहारे, घोडा के साथ कोचवान, टोकरिया उठाये स्त्रिया और बदूकधारी कुछ सैनिक दिखाई देते थे। खम्भो के साथ फहराते हुए फटे-पुराने कुछ लाल झण्डा के अतिरिक्त क्रांति के और कोई चिह्न नही थे।

हमने मन ही मन प्रश्न किया, "क्या इन जीण शीण झण्डो की भाति क्रातिकारी भावना भी निर्जीव हो गई है? क्या इन स्वदेशत्यागियो का रूसी किसान की आकाक्षाओ का मूल्याकन सही है कि वह अपने मालिक, चच और जार की सेवा से सतुष्ट है? क्या यह सचमुच 'पवित्र रूस' ही है?"

हम इसी सोच विचार म डूब उतरा रहे थे कि जोर की आवाज हुई। अचानक ब्रेक लगने से पहिये चीख उठे, झटका लगा और हम अपनी सीटो से गिर पडे। सहसा ट्रेन रुक गई। प्रत्यक यात्री खिडकी से बाहर देखने लगा और चिन्तित होकर पूछने लगा "क्या हुआ? क्या हुआ? क्या पुल टूटा हुआ है?" मगर जहा-तहा जाडे के अवशेषा—बर्फीले टीला—और समतल स्तेपी के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई न पडा।

बोल्शेविको ने ट्रेन रोक ली!

अचानक बफ के टीले के पीछे से एक व्यक्ति उठता हुआ दिखाई पडा और अपने पीछे सकेत करके दौडता हुआ ट्रेन की ओर बढ आया। उसके बाद घाटी के पीछे से दूसरा व्यक्ति तथा इसी प्रकार अन्य व्यक्ति ट्रेन की ओर आने लगे। जब तक इन लोगा से वह मदान प्राय भर नही गया, तब तक बफ के अन्य टीला और झाडिया के पीछे से एव सुदूर क्षितिज से गाडी की ओर भगते हुए आनेवाले व्यक्तियो का क्रम जारी रहा। पल भर म उस परती एव निजन प्रदेश म जैसे जीवन आ गया, वह सशस्त्र व्यक्तियो से परिपूरित हो गया और दन्त-कथा के उस मदान जैसा बन गया, जहा राक्षस के दात बोये जाने के फलस्वरूप सशस्त्र सनिक जन्म लेते थे।

सजी धजी महिलाओ म से एक ने चीखकर कहा, "हे भगवान, अब क्या होगा! बदूकें! हा, वे बदूको से लैस है!" उसने अपनी कल्पना म जो ताना-बाना बुना था, उसने अब साकार रूप ग्रहण कर लिया था।

उसकी मनगढ़न्त कथाओं के बोल्शेविक अब साक्षात उसके समक्ष उपस्थित थे। उनका जो चित्र उसने मन में बना रखा था, उसी के अनुरूप हाथों में बन्दूक एवं हथगोले लिए हुए वे वहां आ धमके और उनके चेहरों पर कठोरता दिखाई पड़ रही थी। सबसे आगे आनेवाला व्यक्ति रुका और अपने मुंह पर हाथ रखकर उसने जोर से चिल्लाते हुए कहा, "खिड़कियां बन्द कर लो!"

किसी में तर्क वितर्क करने का साहस नहीं हुआ। पूरी ट्रेन में सभी डिब्बों की खिड़कियां तत्काल बन्द हो गई। इसी प्रकार इन आगन्तुकों के चेहरों पर कठोरता की झलक देखकर स्वदेशत्यागियों के दिल भी बैठ गये थे। वे मस्त एवं दृढनिश्चय के व्यक्ति थे। उनमें से अधिकांश कोयले के चूरे से सने हुए होने के कारण प्रायः काले लग रहे थे। वे गाड़ी की ओर बहुत गुस्से से देख रहे थे। उनकी मुखाकृति एवं भावभंगी से यह साफ प्रकट हो रहा था कि किसी भी क्षण वे अपने हथियारों का हमारे विरुद्ध उपयोग कर सकते हैं।

हमें अपने अपराध की कोई जानकारी नहीं थी। हम केवल इतना ही जानते थे कि हमारी गाड़ी अचानक रुक गई है और शोर मचाते हुए मस्त लोगों ने हमें घेर लिया है। हमें 'खूनी तानाशाह को मार डालने" के बारे में उत्तेजनापूर्ण शब्द सुनाई पड़ते और ज्योंही अत्यलंकृत महिला का चेहरा खिड़की से दिखाई पड़ता, त्योंही उपहास के स्वर में वे चिल्ला पड़ते, "ओ, श्रीमती रासपूतिन!" इस महिला को इस बात में तनिक भी सदेह नहीं था कि ये बदमाश यही विचार कर रहे हैं कि हम ट्रेन से बाहर करके एक एक की हत्या की जाये अथवा ट्रेन को जलाकर या बारूद से उड़ाकर एक साथ सब की हत्या कर दी जाये।

असमंजस की यह स्थिति बहुत कष्टदायक थी। मैंने सोचा कि मैं स्वयं पता लगाऊं कि आखिर बात क्या है और इसी ख्याल से खिड़की खोलने लगा। वह आधी ही खुली थी कि मैंने बन्दूक की नाल का मुंह अपनी ओर तना हुआ पाया। एक लम्बे-तड़ंग किसान ने, जो मुझ पर अपनी बन्दूक ताने हुए था, गुर्राते हुए कहा, 'तत्काल खिड़की बन्द कर लो अन्यथा मैं तुम्हें गोली से भून डालूंगा।' देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह मुझे मार ही डालेगा, परन्तु साल भर रूस में रहकर मैं समझ चुका था कि वह

ऐसा नही करेगा। कारण कि रूसी किसान अभी इतना सभ्य नही हुआ कि किसी मनुष्य की जान लेने मे उसे मजा आये। इसलिए मने अपनी खिडकी बद नही की, बल्कि अपना सिर बाहर निकालकर उस लम्ब तडग किसान को "कामरेड" कहकर सम्बोधित किया।

फुफकारते हुए उसने मुझसे कहा, "ओ, प्रतिक्रातिवादी! लोगो का खून पीनेवाले! ओ, राजतत्रवादी, जारपथी! तुम मुझे कामरेड मत कहो!"

क्राति के शत्रुओ के लिए सामान्य रूप से इन्ही उपनामो का प्रयोग किया जाता था। परन्तु मैंने इसके पहले किसी को इतने गुस्से से एक साथ इतने विशेषणो का प्रयोग करते कभी नही सुना था। मैंने तत्काल अपने बारे म सोवियत प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर दिया, जिस पर चिचेरिन * के हस्ताक्षर थे। किन्तु इस किसान के लिये काला अक्षर भैस बराबर था। एक दूसरे भारी भरकम व्यक्ति ने, जिसकी भौह चढी हुई थी, इसे अपने हाथ म लिया और बडे ध्यान से इसे देखा।

उसने अपना निर्णय अविलम्ब घोषित कर दिया, "जाली है।"

तब मैंने त्रोत्स्की के हस्ताक्षरो वाला प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया। उसने फिर वही बात दुहराइ, 'जाली है।" मैंने उसके पश्चात बाल्शेविक रलवे कमिसार द्वारा प्रदत्त कागज पेश किया। उसने फिर वही नपे-तुले शब्द दोहराये, जाली है।" वह अपनी बात पर अडा रहा। अब अतत मने अपने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। मैंने लेनिन के हस्ताक्षर वाला पत्र प्रस्तुत किया। इस पर केवल उनके हस्ताक्षर ही नही थे, बल्कि पूरे का पूरा पत्र लेनिन के हाथ स लिखा हुआ था। मुझसे पूछताछ करनेवाला बडी तन्मयता से उस पत्र को देख रहा था और मैं यह प्रतीक्षा कर रहा था कि लेनिन का चमत्कारपूर्ण नाम देखकर उसके चेहरे की कठोरता कब मुस्कान म परिवर्तित होती है। मुझे विश्वास था कि इससे मामला तय हो जायगा। और ऐसा ही हुआ भी। किन्तु मेरे पक्ष म नही। उसकी तनावपूर्ण मुखाकृति से यह स्पष्ट हो गया कि उसका निर्णय मेरे विरुद्ध है। मने प्रमाण पत्रो के मामले म कुछ अतिरजित व्यवहार का परिचय दिया था।

चिचेरिन, ग० व० (१८७२-१९३६) – एक प्रमुख सोवियत कूटनीतिज्ञ एव राज्यदर्शी।

उसकी दृष्टि से मेरा मामला बिल्कुल साफ था। उसके विचार से मैं क्रान्ति के विरुद्ध षड्यन्त्र रचनेवाला कोई भयानक व्यक्ति था। वह यही समझ रहा था कि बोल्शेविकों का कृपापात्र बनने के लिये मैंने इतने सोवियत कागज, यहां तक कि स्वयं लेनिन के हाथ का लिखा पत्र भी, प्रस्तुत किये। इसमें उसकी निगाह में मैं बहुत बड़ा गुप्तचर बन गया था। उसने सोचा कि उन्हें अब तत्काल कारवाई करनी चाहिये।

वह मेरे कागजों का पुलिन्दा उस लम्बे व्यक्ति के पास ले गया, जो अभी घोड़े से उतरा था। खिड़की खोलते समय जिस लम्बे-तड़ंग किसान ने मेरी ओर अपनी बन्दूक तानी थी, उसने बताया, "वे अन्द्रेई पत्रोविच हैं। वे इन सभी कागजों को जांच लेंगे। वे अभी अभी मास्को से लौटे हैं। वे सभी बोल्शेविकों को जानते हैं और उनके हस्ताक्षर भी पहचानते हैं। वे प्रतिक्रान्तिवादियों और उनकी सभी चालों से परिचित हैं। वे शैतान अन्द्रेई पेत्रोविच को मूर्ख नहीं बना सकते।"

मैं और कूस यही प्रार्थना करते रहे कि अन्द्रेई पेत्रोविच अपनी ख्याति के अनुरूप समझदार व्यक्ति सिद्ध हों। हमारी खुशकिस्मती ही कहिये कि वे वास्तव में वैसे ही सिद्ध भी हुए। वे निश्चय ही बोल्शेविक पार्टी के नेताओं को जानते थे और उनके हस्ताक्षर पहचानते थे। उन्होंने कुछ प्रश्न करके हमारी परीक्षा ले ली। सन्तुष्ट होकर उन्होंने बड़ी सहृदयता से हमसे हाथ मिलाया, कामरेड कहकर हमारा स्वागत किया और हमें बाहर आने के लिये निमन्त्रित किया, ताकि वहां वे हमसे बहुत से प्रश्न पूछ सकें।

हमने तत्काल कहा, "मगर हम भी आपसे कई प्रश्न पूछते हैं। ये इतने व्यक्ति यहां अचानक कहां से आ गए? यह ट्रेन क्यों रोकी गई? ये हथियार किसलिए हैं?"

उन्होंने हंसते हुए कहा, "एक बार एक ही प्रश्न पूछिए। पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि ये लोग यहां से आध मील से कम दूर की बड़ी कोयला खानों में काम करनेवाले खनिक और गावों के किसान हैं। इनके अतिरिक्त हजारों अन्य व्यक्ति भी यहां आते ही होंगे। दूसरे सवाल का जवाब यह है कि महज दिखावे के लिये नहीं, बल्कि तत्काल इस्तेमाल करने के लिये हमने पन्द्रह मिनट पहले अपने को इन बन्दूकों और हथगोलों से

लैसे किया है। तीसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि जार और शाही परिवार को गाडी से उतार लेने के लिये ही हमने इस ट्रास-साइबेरियाई एक्सप्रेस को रोका है।"

हम चिल्ला उठे, "जार और शाही परिवार! इस गाडी में? यही?"

अन्द्रेई पेत्रोविच ने उत्तर मे कहा, "हम निश्चित रूप से नही जानते। हम केवल इतना ही जानते हैं कि करीब बीस मिनट पूर्व ओम्स्क से हमे एक तार मिला था, जिसमे कहा गया है 'अफसरों के एक गुट ने निकोलाई को अभी अभी रिहा कर दिया है। सभवत वह स्टाफ के साथ एक्सप्रेस ट्रेन से भाग रहा है। इर्कुत्स्क मे जारशाही की स्थापना की साजिश की गई है। उसे जीवित या मृत रोक लो।'"

(अब हमारी समझ मे आया कि ये लोग जार के लिये "खूनी तानाशाह" और जारीना के लिये "श्रीमती रासपूतिन" शब्दों का प्रयोग कर रहे थे।)

जार नहीं मिला, लोगों को निराशा हुई

अन्द्रेई पेत्रोविच ने आगे कहा, "हमने दो व्यक्तियों को गावो की तरफ और दो को खानो की ओर दौडाया कि वे गाववालो एव खनिको को तार की सूचना दे दें। प्रत्येक व्यक्ति ने अपना औजार जहा का तहा छोडा और अपनी बन्दूक उठाकर ट्रेन की ओर दौड पडा। एक हजार आदमी यहा पहुच चुके हैं और रात होने तक उनका आना बन्द न होगा। आप यह देख रहे है न कि जार के लिए हमारे मन मे कितनी गहरी भावना है! केवल बीस मिनटो मे ही उसके स्वागतार्थ इतनी बडी सख्या मे लोग यहा पहुच गये है! उसे फौजी प्रदर्शन बहुत प्रिय है। तो वह हाजिर है। विधिवत तो नही, मगर काफी प्रभावोत्पादक है। ठीक है न?'

यह दृश्य निश्चय ही बहुत प्रभावोत्पादक था। मैने ऐसे हथियारबन्द व्यक्ति पहले कभी नही देखे थे। वे तो सचल शस्त्रागार की भाति थे। उनके हाथो मे हजार जारो को मौत के मुह मे पहुचा देने के लिए पर्याप्त हथियार था और उनके हृदयो एव आखो मे लाख जारो को मिटा देने के लिए प्रतिशोध की भयानक आग जल रही थी।

परन्तु यहा तो मौत के घाट उतार देने के लिये कोई जार था ही नहीं।

अन्द्रेई पत्रोविच ने आगे कहा, "मेरे ख्याल में तो यह भी प्रतिक्रान्तिवादियों की एक और चाल है। उत्तेजकों ने सोवियतों के खिलाफ वातावरण पैदा करने के घणित विचार से यह तार भेज दिया है। वे खनिकों के उत्साह को भंग कर खानों के काम में बाधा उत्पन्न करना चाहते हैं और इसमें उन्हें सफलता भी मिल रही है। हमारे आदमी अब इतने उत्तेजित है कि दिन में और कुछ भी नहीं कर सकेंगे। आगे इसी प्रकार के और तार मिलते रहेंगे। उनका ख्याल है कि बारबार यह शोरगुल करने पर कि "जार भाग रहा है, जार भाग रहा है, लोग खतरे की इन झूठी पूर्वचेतावनियों से तंग आ जायेंगे। और जब हम लोग असावधान हो जायेंगे, तो वे जार को भगाने की कोशिश करेंगे। मगर वे यहा के हमारे आदमियों को नहीं जानते। जार को अपनी गोली का शिकार बनाने का मौका पाने के लिए वे साल भर प्रतिदिन यहा आते रहेंगे।"

जार का पता लगानेवाला दल जिस जोश-खरोश के साथ इस गाड़ी के डिब्बों में जा जाकर खोज बीन कर रहा था, उससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो रहा था कि "जार पिता" के प्रति उनका क्या रुख है। उन्होंने एक सिरे से दूसरे सिरे तक सन्दूकों को खोलकर एवं बिस्तरों को हटाकर पूरी ट्रेन की तलाशी ली। इतना ही नहीं, उन्होंने इंजन के साथ जुड़े इंधन डिब्बे के लट्ठों को भी हटाकर देखा कि कहीं "महामहिम सम्राट" लकड़ी के इस ढेर में न छिपे बैठे हों।

पकी हुई दाढी वाले दो वृद्ध किसानों ने अपने ही ढंग से जार को ढूंढने की कुछ कोशिशें कीं। वे डिब्बों के नीचे बन्दूकों की संगीनों को कोंचते हुए शिकार की तलाश करते और कामयाबी हासिल न होने पर दुःख में अपने सिर हिलाते हुए संगीनें बाहर निकालते। उन्हें यह आशा थी कि रूसी जार बम्पर पर बैठा हुआ यात्रा कर रहा होगा। हर बार वे आशा करते थे कि अगले डिब्बे में उन्हें सफलता प्राप्त होगी। परन्तु इस गाड़ी में जार नहीं था और इस कारण उनकी बन्दूकों की संगीनें उसे न बेध सकीं।

मगर उन्होंने अपनी संगीनों से एक महत्वपूर्ण काम जरूर किया— "जार पिता" के प्रति रूसी किसानों की श्रद्धा एवं निष्ठा की पुरानी

परम्परा को वेघ दिया। इन दो धर्मनिष्ठ एव दयालु किसानो द्वारा अंधेरे कोनो मे अपनी सगीनो से जार को टटोलने और उन्हे वाहर खीचने पर 'जार पिता" के रक्त का चिन्ह न देखकर होनेवाली निराशा के इस नाटक ने उस कपोल कल्पना का भडाफोड कर दिया कि जार के प्रति किसानो की अटूट निष्ठा है।

जार की जगह–हम

अन्द्रेई पेत्रोविच सूझबूझ के आदमी थे। जब उस गाडी मे जार न मिला, तो उन्होने कत्स और मेरी उपस्थिति का सदुपयोग किया।

उन्होने अपने साथियो को सम्बोधित करते हुए कहा, "साथियो, यह विचित्र दुनिया है, यहा बहुतेरी आश्चयजनक बात होती रहती है। हम इतिहास के सबसे बडे अपराधी को पकडने के उद्देश्य से यहा आये थे। यहा एक भी ऐसा व्यक्ति नही है, जिसने जार के कारण मुसीबत न झेली हो। मगर यहा अपने घोर शत्रु को पाने की जगह हमने अपने सर्वोत्कृष्ट दोस्तो को पा लिया। यह गाडी निरकुश राजतत्र के विचारो की जगह हमारी क्रान्ति के सन्देश को–सो भी दूरस्थ अमरीका ले जा रही है। क्रान्ति जिन्दाबाद! हमारे अमरीकी साथी जिन्दाबाद!"

तालियो की गडगडाहट और जयघोष से हमारा स्वागत हुआ, लोग हमसे हाथ मिलाते रहे, तस्वीरे खीचते रहे और इसके बाद हम पुन अपनी यात्रा पर आगे रवाना हुए। परन्तु बहुत दूर हम न जा सके। धावा बोलनेवाले जन समुदाय ने फिर हमारी ट्रेन रोक ली। इसी प्रकार बारबार लोग गाडी को रोकते रहे। यह कहना समझाना व्यर्थ था कि जार इस गाडी मे नही है। इस बात की पुष्टि करनेवाले कागज को भी लोग प्रतिक्रान्तिवादियो की जालसाजी कहकर एक तरफ हटा देते। हर जगह भीड स्वय छान-बीन करके ही सतुष्ट होती। इस कारण ट्रास साइबेरियाई लाइन की यह सबसे तेज एक्सप्रेस सबसे धीमी गति से जानेवाली गाडी बन गई।

परिवहन कमिसार ने मारिईस्क मे निम्नाकित तार भेजकर घटनाओ को नया मोड प्रदान कर दिया

"सभी सोवियतो के नाम

क्रूस और विलियम्स, जिन्होंने लाल सेना के सगठन मे भाग लिया, इसी गाडी से यात्रा कर रहे है। म सोवियतो के प्रतिनिधियो को निर्देश देता हू कि वे विचार विमश के लिए उनसे मिले।

सादोव्निकोव"

हर स्टेशन पर जार की तलाश मे जमा होनेवाली भीड को उक्त तार पढकर सुनाया जाता। जिन लोगो की भावनाए जार को पकडने के लिए उत्तेजित होती और जो उसे खत्म कर देने के लिए अपने हथियारो को अच्छी तरह तैयार करके लाते अचानक दो कामरेड उनके हवाले कर दिये जाते। उन्हे झटपट भावना परिवर्तन करना पडता, मगर वे बडी शालीनता से ऐसा करते। प्रत्येक स्टेशन पर जोरो की हर्षध्वनि से हमारा अभिवादन होता। लाल फौज के नये दस्तो ने हमे सलामी दी, कमिसारो ने बडी गभीरता के साथ हमारे सम्मुख अपनी समस्याए प्रस्तुत की और भीड आगे बढकर फौजी विषयो के मेधावी जानकारो के रूप मे हमे आदर से देखती।

यह स्थिति घबराहट पैदा करनेवाली, मगर साथ ही बहुत महत्व रखनेवाली भी थी। हम उस नयी सभ्यता की, जो निर्मित हो रही थी, उस भविष्य की, जो अस्तित्व मे आनेवाला था, झलक मिली। एक नगर मे इस भविष्य की नीव पड चुकी थी – किसानो का समुदाय अग्रसर होकर एक केन्द्रीय सोवियत मे मजदूरो के साथ शामिल हो गया था। एक दूसरे नगर मे अभी मुश्किल से नीव डालने का काम शुरू हुआ था – बुद्धिजीवी रोडे अटका रहे थे। कई केन्द्रो मे नये ढाचे के निर्माण म प्रगति हो रही थी, सोवियत स्कूलो म कक्षाए भरी हुई थी, किसान अपना गल्ला मण्डी मे लाते थे, कारखानो म माल तैयार होने लगा था और इसके साथ ही बोल्शेविक सिद्धान्तो पर भाषण भी होते थे। उपलब्धिया यद्यपि छोटी और गौण होती थी, फिर भी उनसे जनता की वास्तविक सृजनात्मक शक्तियो की उन्मुक्ति परिलक्षित होती थी।

हमने स्वदेशत्यागियो का ध्यान इन बातो की ओर आकृष्ट किया, परन्तु वे पश्चिमी लोकतन्त्रवादियो के लिये मनगढन्त किस्से-कहानियो के ताने बाने बुनने म लगे हुए थे और तथ्यो से उन्हे चिढ होती थी। उनम स कुछ

चिटचिटे एव शकालु हो उठे और हमे अपने वग के प्रति विश्वासघाती व गद्दार मानने लगे। अन्य जारशाही के स्वणिम दिना, रूसी जन समुदाय की "अज्ञानता" और बोल्शेविका की निरी बुद्धिहीनता का पुराना राग मूखतापूवक अलापते रहे।

चौदहवा अध्याय

चेरेम्खोवो के भूतपूव बन्दी

हमारी गाडी म सफर करनेवाले भगोडो मे कई प्रश्ना पर आपस मे विवाद था। मगर इस बात पर उनमे पूण मतैक्य था कि साइबेरिया मे अपराधिया की बडी चेरेम्खोवो बस्ती मे उनके सम्मुख गभीर खतरा उपस्थित होगा।

उन्होने कहा चेरेम्खोवो म पन्द्रह हजार कैदी ह। वे बहुत ही भयानक अपराधी हैं—ठग, चोर और हत्यारे। उनके साथ निबटने का एकमात्र तरीका यही है कि उन्ह खानो मे डाल दिया जाये और बन्दूक से सिर उडा देने का भय दिखाकर वही बन रहने को विवश किया जाये। यह भी उनके लिए बहुत अधिक स्वतन्त्रता है। प्रति सप्ताह चोरियो एव छुरेबाजी की बीसिया घटनाए होती रहती हैं। अब इनमे से अधिकाश शैतान अनियन्त्रित हो गये हैं और वे बोल्शेविक बन गये ह। यह जगह सदा से नरक-कुण्ड रही है। भगवान ही जानें कि अब वहा की क्या स्थिति है।"

पहली मई की उदास, ठण्डी सुबह को हम चेरेम्खोवो पहुचे। उत्तर से बहनेवाली हवा के कारण वहा गद का आवरण फैला हुआ था। हम अपन डिब्बे मे अधजगे लेटे हुए थ कि अचानक यह शोर सुनकर उठ बैठे, "वे आ रहे ह! वे आ रहे हैं!" हमने खिडकियो से बाहर झाका। जहा तक हमारी दृष्टि जा सकती थी, हम धूल के अबार के सिवा और कुछ भी इधर आता दिखाई नही पडा। कुछ समय बाद उस गद-गुबार के बीच स किसी लाल चीज और चमकदार इस्पाती हथियारा की झलक प्राप्त हुई और धुधली धुधली आकृतिया आगे बढती हुई दिखाई पडी।

खिडकिया के पर्दों के पीछे कुछ भगेड़ू तो प्राय पागलपन की दशा म तेजी स अपने रत्नाभूषण एव धन छिपाने लगे और अन्य ऐसे आतकग्रस्त

बैठे थे, मानो उन्हें लकवा मार गया हो। बाहर नाल जड़े बूटों के नीचे अधजले कोयला के पिसने की आवाज हो रही थी। किसी को यह ज्ञात नहीं था कि किस मनोवृत्ति से 'वे" यहां आ रहे हैं, किस लोभ से इधर चले आ रहे हैं और उनके पास किस प्रकार के हथियार हैं। हमें केवल इतना ही मालूम था कि वे चेरेम्खोवा के भयानक अपराधी—"हत्यारे, ठग एवं चोर —है और वे अब इस ट्रेन के मुसज्जित डिब्बों की ओर बढ़े आ रहे हैं।

झक्कड़ से उनकी आखों में धूल एवं राख के कण पड़ रहे थे। गहर लाल रंग का झण्डा हाथ मे लिये और हवा से जूझते हुए वे धीरे धीरे पथ पर बढ रहे थे। तभी अचानक हवा थम गई, इससे धूल का आवरण दूर हो गया और पचमेल अग्रिम समूह दिखाई पड़ने लगा।

कोयला खाना मे काम करने से उनके कपड़े गन्दे और जहां-तहां तागों से बंधे हुए थे और उनके चेहरे गभीर एवं म्लान थे। उनमे से कुछ लम्बे चौड़े और बेडौल तथा कुछ जीवन मे विकट यन्त्रणाओं एवं झक्कड़ो का सामना किए हुए गठीले व ग्रन्थिल दिख रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत हुआ, मानो तोल्स्ताय द्वारा वर्णित कुटिल भौहों एवं पशुवत जबड़ो वाले राक्षस साक्षात सामने आ गये हों। फिर ऐसा लगा, मानो दोस्तोयेव्स्की के 'मृत घर' का दृश्य उपस्थित हो गया है। उनमे से कुछ लगड़े थे, कुछ के गालों पर घावों के ढेरों निशान थे और कुछ काने थे—ये सभी गोलियां लगने, छुरा के वारों अथवा खान दुर्घटनाओं के परिणाम थे। कुछ जन्मजात शारीरिक विकारों से भी पीड़ित थे। किन्तु उनमें दुर्बल प्राणी यदि ये भी तो बहुत कम।

कमजोर लोग लम्बे समय की कठोर परिस्थितियों का सामना न कर सकने के कारण दूसरी दुनिया में पहुंच चुके थे। जिन लाखों व्यक्तियों को चेरेम्खोवो मे निष्कासित किया गया था, उनमें से अब ये ही कुछ हजार बच गये थे। बारिश और बर्फ, जाड़े के बर्फीले तूफानों और ग्रीष्मकाल की गर्म हवाओं का कष्ट झेलते हुए अन्तहीन साइबेरियाई सड़को पर लड़खड़ाते हुए वे यहां पहुंचे थे। कालकोठरियों ने उनके शरीर का सारा खून चूस लिया था। जार की पुलिस के तेगों के प्रहार से उनकी खोपड़ियों की हड्डियां चटखकर रह गई थी। लोहे की बेड़ियों से उनका मांस कट गया

था। कज्ज़ाक सैनिकों के कोडों की मार से उनकी पीठों पर गहरे घाव हो गये थे और उनके घोड़ों के सुमों तले वे धरती पर रौंदे जा चुके थे।

शारीरिक यन्त्रणाओं के समान ही उन्हें मानसिक यन्त्रणाएं भी दी गई थीं। शिकारी कुत्ते की भांति बर्बर कानून से उनका पिण्ड नहीं छूटा, उसी पाशविक कानून के फलस्वरूप उन्हें इन कालकोठरियों में धकेल दिया गया था, साइबेरिया के इस भयानक सुदूरवर्ती नाके में उन्हें निष्कासित कर दिया गया था, पशुओं की भांति जीवन व्यतीत करने के लिए पृथ्वी से उठाकर उन्हें यहां खोहों में डाल दिया गया था और वे घोर अंधेरे में खानों से कोयला खोदकर उनके हवाले कर देते थे, जो प्रकाश में रहते हैं।

अब वे खानों के अंधेरे से बाहर निकलकर प्रकाश की ओर अग्रसर हो चुके थे। हाथों में बन्दूकें व क्रान्ति के लाल झण्डे लिए हुए वे राजपथ पर स्वच्छन्दतापूर्वक एक बड़े जनसमूह की भांति आगे बढ़ते आ रहे थे और उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो अपार शक्ति मूर्तिमान हो उठी हो। उनके रास्ते में इस गाड़ी के गर्म सुसज्जित डिब्बे थे—एक ऐसी दुनिया, जो उनके लिये सर्वथा अजनबी थी, उनकी दुनिया से बिल्कुल भिन्न थी। अब यह दुनिया उनसे कुछ ही इंचों की दूरी पर थी, यह अब उनकी पहुंच के भीतर थी। कुछ ही क्षणों में वे यहां पहुंच सकते थे और इच्छा होने पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक इस ट्रेन के यात्रियों को लूट पाट कर ध्वंस का ऐसा दृश्य प्रस्तुत कर सकते थे, मानो प्रचण्ड आंधी ने सब कुछ नष्ट कर दिया हो। इनके लिये अपने को एक बार मालामाल कर लेने की कल्पना कितनी मीठी हो सकती थी! और यह कितना आसान था! एक ही भीषण धावे में सब माल उनका हो सकता था!

मगर उनकी गति विधि से न तो कोई व्यग्रता और न उन्मत्तता ही प्रकट हो रही थी। अपने लाल झण्डे को जमीन में गाड़कर बीच की खुली जगह में ट्रेन की ओर मुंह किये वे अर्धमण्डलाकार में खड़े हो गये। अब हम उनके चेहरों को अच्छी तरह देख सकते थे—अवसादपूर्ण, गहरी घृणा की झुर्रियों से भरे हुए और कठोर परिश्रम के कारण निर्मम हुए। इन सभी पर दुराचार और आतंक का दुष्प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा था। उन सब की मुखाकृति से असीम व्यथा एवं वेदना, मानो सारे संसार की मर्मस्पर्शी पीड़ा टपक रही थी।

मगर उनकी आखो मे विलक्षण प्रकाश था – उल्लास की चमक थी। अथवा क्या यह प्रतिशोध की चमक तो नही थी? इट का जवाब पत्थर से देने की भावना तो नही थी? कानून ने उन पर अनेक बार प्रहार किये थे। क्या अब बदला चुकाने की उनकी बारी आई है? लम्बे समय तक उन्होने जो उत्पीडन बर्दाश्त किये थे, क्या अब वे उनका बदला लेगे?

बदी साथियो के बीच

हमने कधे पर किसी का कर स्पश अनुभव किया। उधर मुडकर देखा तो दो कद्दावर खनिका को अपने सामने पाया। उन्होने हम बताया कि वे चेरेम्खोवो के कमिसार है। इसके साथ ही उन्होने उन व्यक्तियो को सकेत किया, जो अपने हाथो में ध्वज पकडे हुए थे और तभी हमारे सम्मुख लाल झण्डे लहराने लगे। एक झण्डे पर मोटे मोटे अक्षरा म यह सुविदित नारा अकित था **"मजदूरो और किसानो, जगो! गुलामी की जजीरो के अतिरिक्त तुम्हारे पास खोने को कुछ नहीं है!"** दूसरे झण्डे पर यह नारा अकित था **"हम सभी देशो के खनिको की ओर अपनी दोस्ती के हाथ बढ़ाते ह। विश्व भर के अपने साथियो को हमारा अभिवादन!"**

कमिसार ने चिल्लाकर कहा, सिर से टोपिया उतार लो!" उन्होने अटपटे ढग से अपनी टोपिया सिर से उतार ली और उन्हे हाथ म लिए खडे हो गये। उन्होने धीरे धीरे 'इटरनेशनल' गीत गाना शुरू किया

उठ अब, जजीरो म जकडे
भूखा, दासा के ससार।
खून खौलता है नस-नस मे
मर मिटने को हम तयार।।
ईश्वर, राजा, योद्धा नायक
मुक्ति नही हमको देंगे।
अपने ही बल-बूते पर हम
अपनी आजादी लेगे।।

मने विश्व भर के नगरो की सडको पर विशाल प्रदशना मे शामिल जन समुदाय के कण्ठो से 'इटरनेशनल' गीत के गूजते हुए स्वर सुने थे। मैंने कालेजा के बडे सभा वक्षा मे विद्रोही छात्रा को उच्च स्वर म इसे गाते सुना था। मै ताव्रीचेस्की प्रासाद म चार फौजी बैंडा के साथ दो हज़ार सोवियत प्रतिनिधियो को 'इटरनेशनल' गाते सुन चुका था। मगर उस समय इस गीत के गायको मे कोई भी 'ज़जीरो म जक्डा' दिखाई नही पडा था। वे 'ज़जीरो मे जक्डा" के साथ सहानुभूति करनेवाले अथवा उनके प्रतिनिधि थे। चेरेम्खोवो के ये खनिक बदी स्वय "ज़जीरो मे जकडे" हुए थे–सबसे अधिक अभागे थे। वे अपने कपडो और चेहरो, यहा तक कि अपनी वाणी की दृष्टि से भी दीन हीन थे।

उन्होंने फटी आवाज़ा म और बेसुरे ढग से 'इटरनशनल' गाया, परन्तु उनके गायन म सभी युगा के शोषितो एव प्रताडिता की वेदना एव विरोध अभिव्यक्त हुआ। उसमे सुनाई दिया बदिया का दीघ नि श्वास, कोडा की मार खाते हुए नौका की पतवार खेनेवाले दासा की आह, चक्र से बाधे गये गुलामो की कराह, फासी की सज़ा पानेवालो का क्रदन, जीवित जलाकर मारे गये लागो की चीख पुकार और उन लाखो-करोडो व्यक्तियो की वेदना एव व्यथा, जो एक ज़माने से गिडगिडात और मिन्नत समाजत करते रहे ह।

ये बदी सदियो से अत्याचारा को बर्दाश्त करनेवाला के वारिस थे। वे समाज से बहिष्कृत थे, इसके निमम हाथो से कुचले रौंदे गये थे और इस गडढे के गहन अधेरे मे झाक दिये गये थे।

अब कल के अभागो, इन बदियो का जय गीत इस गडढे के बाहर गूज रहा था। दीघकाल तक उनका मुह बद रखा गया था, मगर अब उनके मुख से गीत फूट पडा था–शिकायत का गीत नही, बल्कि विजय गीत। अब वे समाज से बहिष्कृत प्राणी नही, बल्कि नागरिक थे। इतना ही नही, नये समाज के रचयिता थे।

उनके हाथ पाव शीत से सुन थे, परन्तु उनके हृदया म आग थी। उनके कठार एव रुक्ष चेहरे उदय होते हुए सूय की प्रखर किरणा से प्रकाशमान हो रहे थे। अलस नत्रा म चमक पैदा हो गई थी। ककश चेहरा पर कोमलता का भाव आ गया था। अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे की भावना

से पूरित एवं बडे परिवार के रूप मे सभी राष्टो के मेहनतकशा के रूपान्तरित स्वरूप की इनसे झलक प्राप्त हो रही थी।

उन्होने जोर से नारे लगाये "अन्तर्राष्टीय भ्रातत्व जिन्दाबाद! अमरीकी मेहनतकश जिन्दावाद!" इसके बाद उन्होने अपने बीच से एक व्यक्ति को आगे कर दिया। वह विक्टर ह्यूगो के 'वहिष्कार' उपन्यास के जान वाल्जॉन जैसा लम्बा-तडगा था और उसका दिल भी उसी के समान था।

उसने कहा, "हम चेरेम्खोवो के खनिको की ओर से इस ट्रेन से जानेवाले साथियो का स्वागत करते हैं! पहले स्थिति कितनी भिन्न थी! दिन प्रतिदिन यहा से गाडिया गुजरती थी, परन्तु उनके पास आने की हमारी हिम्मत नही होती थी। हम जानते ह कि हममे से कुछ व्यक्तियो ने अपराध किये ह। परन्तु इसके साथ यह भी सच है कि हमभ से अधिकाश व्यक्तियो के विरुद्ध अधिक भयानक अपराध किये गये हैं। यदि न्याय किया गया होता, ता हमम से कुछ इस ट्रेन पर होते और इस पर सवार कुछ लोग खानो म काम करते होते।

"परन्तु अधिकाश मुसाफिर यह नही जानत कि यहा अनक खाने ह। अपने गम और आरामदेह बिस्तरो पर लेटे हुए वे इस तथ्य से अनजान ह कि यहा ज़मीन के नीचे हज़ारो व्यक्ति जन्तुओ की भाति खाना मे काम करते है और रेलगाडी के डिब्बा को गम एव इजन को चालू रखन के लिए कायला खोदते ह। वे नही जानते कि हममे से सैकडो व्यक्ति भूख से तडप तडपकर मर गए, कोडो की मार स अनेक साथियो के प्राण-पखेरू उड गए अथवा चट्टान के गिर जाने से वे कालकवलित हो गए। यदि उन्हे इसकी जानकारी भी होती, ता भी व कोई परवाह न करते। उनकी दृष्टि म हम निरथक प्राणी या कीडे मकाडे थे। उनके लिए हमारे अस्तित्व का कोई मूल्य नही था।

"अब हम सब कुछ हैं। हम इन्टरनेशनल म शामिल हो गये हैं। हम अब सभी देशा के श्रमिको के लशकर के अग बन गये ह। हम इस विशाल फौज के हरावल दस्ते है। हम, जो पहले गुलाम थे, अब पूणतया मुक्त और सबसे अधिक स्वतत्र हो गये हैं।

"साथियो, हम केवल अपनी स्वतन्त्रता नही, बल्कि विश्व भर के श्रमिका के लिए आज़ादी चाहते है। जब तक सारी दुनिया के मजदूर बन्धन

मुक्त नहीं हो जाते तब तक हम न तो अपना घर अपना स्वामित्व और भाग्य-निर्माता की अपनी स्वाधीनता भी कायम नहीं रख सकेंगे।

दुनिया के साम्राज्यवादियों के साथ हाथ बढ़ाने में ही शान्ति का गला घोटने के लिए इधर बढ़ रहे हैं। केवल विश्व-श्रमिकों के हाथ ही साम्राज्यवादी पंजे से हमारे गले को मुक्त कर सकते हैं।"

स्थानीय विषयों के बारे में इस व्यक्ति का दृष्टिकोण एवं विचारों की गहराई आश्चर्यजनक थी। मुझ तो इतना विस्मयाभिभूत हो गया कि इस स्वागत भाषण के उत्तर में भाषण करते हुए मैं अटक-अटक जाने और बार बार हकलाने। रूसी भाषा की मेरी जानकारी जैसे एकाएक हवा हो गई। हमने यह महसूस किया कि इस प्रकरण में हमारी भूमिका बहुत नगण्य एवं प्रभावशून्य रही। परन्तु खनिकों ने ऐसा महसूस नहीं किया। बधाई के दौरान उन्होंने 'इन्टरनेशनल' और 'इंटरनेशनल आर्केस्ट्रा' के सम्मान में नारे लगाये।

'आर्केस्ट्रा' में चार युद्धबन्दी वायलिन-वादक शामिल थे, उनमें एक चेकोस्लोवाकिया का, दूसरा हंगरी का, तीसरा जर्मनी का और चौथा आस्ट्रिया का था। वे पूर्वी मोर्चे पर पकड़े गये थे और एक युद्धबन्दी शिविर से दूसरे में होते हुए साइबेरिया की इन कोयला-खानों में पहुंच गये थे। वे अपने घरों से बहुत दूर थे। वे रूस के इन धरती पुत्रों से जाति एवं व्यवहार की दृष्टि से सर्वथा भिन्न थे। मगर क्रान्ति के सम्मुख जाति एवं धर्म और वंश की भावनाएं ध्वस्त हो गई थीं। उन्होंने यहां इस अन्धकारग्रस्त स्थान में अपने बन्दी खनिक साथियों के आयोजन में उसी उत्साह एवं तन्मयता के साथ अपना संगीत प्रस्तुत किया, जैसा कि अपने सुखकर दिनों में बर्लिन अथवा बुडापेस्ट के जगमगाते उद्यानों में किया होता। उनके तन मन में बसी उत्साह भावनाएं उनके वायलिन के तारों से अभिव्यक्त हो रही थीं और वे उनके श्रोताओं की हृदतन्त्री को स्पर्श कर रही थीं।

उस सभा स्थल में जमा सभी लोग—खनिक, संगीतज्ञ और मेहमान, जर्मन, स्लाव और अमरीकी—एक हो गए। ज्योंही कमिसार हमसे हाथ मिलाने और हमारा अभिवादन करने के लिए आगे बढ़े, त्योंही सारे अवरोध भहराकर गिर पड़े। एक विशालकाय व्यक्ति ने, जिसकी मुट्ठी

हथौडे की भांति कडी थी, हमारा हाथ अपने हाथ में ले लिया। दो बार उसने बोलने की कोशिश की, मगर दोनों बार उसका गला रुध गया। भ्रातृत्व की भावनाओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने में असमर्थ होने के कारण उसने बडे ज़ोर से अपनी मुट्ठी में हमारे हाथों को दबाकर अपनी यह उत्कट भावना प्रकट की। मैं भाईचारे की उस प्रगाढ पकड को आज भी महसूस करता हू।

वह चेरेम्खोवो की प्रतिष्ठा की दृष्टि से इस बात के लिए परेशान था कि यहा के इस प्रथम सार्वजनिक आयोजन का कार्यक्रम समुचित रीति से सम्पन्न हो जाय। मेरा ख्याल है कि उस समय भूतकाल के किसी ऐसे ही समारोह की स्मृति उसके मस्तिष्क में ज़रूर ताज़ी हो गई थी, जब भाषणों के साथ उपहार प्रदान करने की बात भी शामिल रही होगी। चुनाचे वह कुछ समय के लिए गायब हो गया और फिर डाइनमाइट के दो टुकडे लिए दौडता हुआ वापस आया — यह था अमरीकियों को चेरेम्खोवो का उपहार। हम इसे ग्रहण करने में आगा पीछा करने लगे। वह ज़िद्द करने लगा कि हम इस उपहार को स्वीकार कर लें। हमने उसका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया कि यदि दुर्भाग्य से कही विस्फोट हो गया, तो डाइनेमाइट के साथ प्रतिनिधि भी खत्म हो जायेंगे और इससे अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे की भावना को बडी क्षति पहुचेगी। इस पर भीड हस पडी। भीमकाय बच्चे जैसे इस व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुची और वह भौचक्का-सा रह गया। फिर वह भी ज़ोरों से हस पडा।

दूसरा वायलिन वादक, वियना का नीली आखों वाला नौजवान, लगातार खिलखिलाता रहा। निष्कासन के बावजूद हसी मज़ाक की उसकी प्रवृत्ति दूर नही हुई थी। अमरीकी मेहमानों के सम्मान में उसने 'अमरीकी जाज़' प्रस्तुत करने का आग्रह किया। उसने इसे ऐसा ही नाम दिया था, परन्तु मैंने जीवन मे आज तक ऐसा अद्भुत संगीत कभी नही सुना। वह वायलिन बजाता हुआ धुन की लय के साथ साथ हाथों पैरों को हिलाता डुलाता और चारों ओर घूम घूमकर नृत्य भी करता रहा और भीड को इससे बडा आनन्द प्राप्त हुआ।

सिगनल की घटी की टन-टन से यह मनोरंजक और सरस कार्यक्रम भंग हो गया। फिर एक बार सब ने हाथ मिलाकर विदा ली,

हम ट्रेन मे अपने स्थान पर बैठ गए और उस समय आर्केस्ट्रा पर यह स्थायी गूजने लगी

> यह अतिम जग है जिसको
> जीतेंगे हम एक साथ
> गाओ इटरनेशनल
> नव स्वतन्त्रता का गान!

इस सभा मे कोई सज धज, कोई बाहरी तडक भडक नही थी। उमडते हुए उत्साह ने ही इसम जान डाल दी थी। यह सभा क्रान्ति की शक्ति की परिचायक थी। सभ्यता के तहखाने मे भी क्रान्ति की भावना फैल गई थी—अभिशप्त व्यक्तियो के इस अचल मे भी वह तूयनाद की भाति गूज रही थी और उसने उनकी *शवास्थिशाला* की दीवारो को *ध्वस्त* कर दिया था। वे दौडते हुए इससे बाहर निकल आये थे, किन्तु प्रतिशोध की भावना से उनकी आखें रक्ताभ नही थी, वे गुस्से से आग नही उगल रहे थे और छुरे तानकर नही आये थे, बल्कि सत्य एव न्याय के लिये नारे लगाते हुए, एकता के गीत गाते हुए आये थे और उनके झण्डा पर नये विश्व के नारे अकित थे।

उत्प्रवासी अप्रभावित रहे

उत्प्रवासियो पर इन घटनाओ का कोई प्रभाव नही पडा। उन्हाने इस चमत्कार की एक किरण का भी अपने वग हित के कवच म प्रविष्ट नही होने दिया। पहले उनम भय की भावना व्याप्त थी, ता अब व्यग्य ने उसका स्थान ले लिया

"देख लिया बोल्शेविक विचारो का नाटक! कदी राज्यदर्शी बनन लगे है। है न अदभुत तमाशा! खानो मे कोयला खोदने की जगह बदी सडका पर प्रदशन कर रहे है। क्रान्ति से हमे यही कुछ मिला है।"

हमने क्रान्ति की अय उपलब्धियो की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया—*अमन कानून*, सयम और सदभावना। परन्तु य स्वदेशत्यागी कुछ भी समझन को तैयार नही थे। वे समझना ही नही चाहते थे।

उन्होने तिरस्कारपूर्ण ढग से हसते हुए कहा, "यह तो क्षणिक बात है। जब यह जोश ठडा हो जायेगा, तब वे पहले की भाति चोरिया करेंगे, शराब पियेंगे और हत्याए करेंगे।' इन उत्प्रवासियो के ख्याल मे यह आकस्मिक भाव-तरग थी, जो हमारी इस गाडी के ओझल होने के साथ तिरोहित हो जायेगी।

हमने अपने डिब्बे के पायदान पर खडे होकर तथा हाथ उठाकर उन सैकडो व्यक्तियो से विदा ली जो कालिख से काले हुए अपने बडे-बडे हाथ हिलाकर हम विदा कर रहे थे। हमारी आखो के सामने बहुत देर तक यही दृश्य बना रहा। ट्रेन छूट जाने के बाद हम आखिरी झलक यह मिली कि तेज ठण्डी हवा के बावजूद चेरेम्खोवा के इन लोगो ने अपनी टोपिया अभी तक नही पहनी थी, जान वाल्जॉन के हाथ लयबद्ध ढग से ऊपर नीचे हो रहे थे, वह लाल झण्डा फहरा रहा था, जिस पर यह नारा अकित था "विश्व भर के अपने साथियो को हमारा अभिवादन" और उठे हुए बीसियो हाथ विदा दे रहे थे। इसके बाद वह दृश्य धूल और दूरी के आवरण मे विलुप्त हो गया

दो वर्ष बाद जॉ रेडिंग चेरेम्खोवा मे काम करने एव वहा क्रान्तिकारी कार्यो की प्रगति का अवलोकन करने के पश्चात् डेट्रायट वापस आये। उन्होने बताया कि क्रान्ति का वहा क्या स्थाई प्रभाव हुआ है। चोरिया और हत्याये लगभग खत्म हो गई हैं। गुर्रानेवाले पशु मनुष्य बन गये है। हाल ही मे कठोर नियत्रण एव बेडिया हथकाडियो से मुक्त होनेवालो ने अपने को लाल फौजो के कडे अनुशासन मे ढाल लिया है। पुरानी व्यवस्था के अन्तर्गत वे बेलगाम एव उच्छृखल थे, किन्तु अब वे नई व्यवस्था के रचयिता और प्रतिरक्षक बन गये है। स्वय बहुत से अन्यायो के शिकार होनेवाले लोग अब दुनिया के अन्यायो को दूर करने का व्रत ग्रहण कर चुके है। अपनी शक्तियो के उपयोग के लिए अब उनके सामने बहुत सम्भावनाए है और मानसिक विचारो के विकास के लिए उन्हे विस्तीर्ण दृष्टिशक्ति प्राप्त हो गई है।

सम्पन्न एव विशेषाधिकारप्राप्त व्यक्तियो के लिए, बिना परिश्रम के आराम का जीवन व्यतीत करनेवालो अथवा आरामदेह एव सुसज्जित रेल

के डिब्बा म सफर करनवाला के लिए क्रान्ति आतकप्रद और भयावह होना है। यह शैतान का काय होता है। परन्तु तिरस्कृत एव अभागा के लिय क्रान्ति मुक्तिदायिनी होती है, जा 'गरीबा क लिय शुभ सन्देश लाती है, बदिया की मुक्ति की घोषणा करती है और घायला के घावा क लिय मरहम बनकर आती है।" अब दोस्तायेव्स्की के अपराधी यह नही बुदबुदायेगे, 'यद्यपि हम जी रह ह, परन्तु हम जीवित नही ह। यद्यपि हम मर चुके ह, किन्तु कब्रा म नही ह।"'मृत घर म क्रान्ति मानो पुनरुज्जीवन बनकर आती है।

पद्रहवा अध्याय

व्लादीवोस्तोक सोवियत और इसके नेता

क्राति की सीमाए—आखिर वे सीमाए क्या थी?

नगरा के मजदूरा द्वारा प्रारम्भ की गई इस क्रान्ति को हमन रूस म गहरी पैठते हुए देखा और यह भी देखा कि किस प्रकार वह समाज के निचले तबका के लोगा तक जा पहुची। जब इसने चेरेम्खोवो के बदिया को भी प्रभावित कर दिया, तो यह समझिय कि वह तल तक पहुच गई। अब इसके और गहराई म जाने की गुजाइश नही रही थी। अब देखना यह है कि इसका विस्तार कहा तक था? क्या अटलाटिक के तटवर्ती क्षेत्रा के समान प्रशान्त महासागर की सुदूर तटवर्ती सीमा चौकिया म भी उसका गहरा असर था? क्रान्ति ने मध्यवर्ती रूसी प्रदेशो को जिस प्रकार जगा दिया था, क्या उसी प्रकार इन सुदूरवर्ती क्षेत्रो को भी स्पदित किया था?

हम सोवियत देश की बडी और धीमी एव सर्पिल गति से उत्तर की ओर बहनेवाली नदियो, उराल पवत माला, तगा के जगला और स्तेपी प्रदेशो को पार कर चुके थे। रेलवे कमचारियो एव खनिको ने अपनी सोवियता के बारे म हमे विस्तार से सभी बाते बताई थी और किसानो तथा मछुआ ने अपनी सोवियता के नाम पर लाल ध्वजो के साथ हमारा स्वागत किया था। हमने मध्य साइबेरिया की सोवियत और सुदूर पूव की सोवियत के प्रतिनिधिया से विचार विनिमय किया था। परे अमूर प्रदेश मे सोवियता

का अस्तित्व ख़त्म हो चुका था। अब जहाँ हम व्लादीवोस्तोक स्टेशन प-
ट्रेन से उतरे, तो हमने [illegible] में [illegible] दूर [illegible] की सोवियत
को पत्रोग्राद की सोवियत की भाँति ही क्रियाशील पाया।

सोवियतों ने छ महीने में सभी विरोधियों को मैदान से हटाकर व प्रत्येक प्रकार के धक्कों का प्रतिरोध कर अब निर्विवाद रूप से उत्तर में श्वेत सागर से दक्षिण में काले सागर तक तथा बाल्टिक तट पर स्थित नार्वा से प्रशान्त महासागर के व्लादीवोस्तोक तक अपना शासन कायम कर लिया था, रूस की धरती में अपनी जड़ें जमा ली थीं।

व्लादीवोस्तोक नगर पहाड़ियों पर निर्मित है, इसकी सड़क पहाड़ी पगडंडियों की भाँति खड़ी ढाल वाली हैं। लेकिन एक अतिरिक्त घोड़े की बदौलत हमारी बग्घी पत्थर से बनी इन सड़कों पर भी उसी तेजी से चलती था, जिस तेजी से पत्रोग्राद में लकड़ी के समतल मार्गों पर। व्लादीवोस्तोक की मुख्य सड़क स्वेतलान्स्काया पहाड़ियों के आर-पार ऊपर से नीचे तक फैली हुई है, इसके दोनों ओर फ्रांसीसियों एवं अंग्रेजों के व्यावसायिक प्रतिष्ठान थे, अमरीकी इंटरनेशनल हार्वेस्टर कम्पनी का आफिस और रूस के नये शासकों के भवन थे—मजदूर प्रतिनिधियों की सोवियत और बाल्शेविक पार्टी की नगर समिति के कार्यालय।

पहाड़ियों पर चारों ओर निर्मित विशाल सैन्य दुर्ग नीचे की ओर घूर रहे थे, किन्तु अब वे शान्ति-सूत्र कपोत के बाड़े की भाँति अनिष्टशून्य थे। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में ही इन किलों की मोर्चेबन्दी तोड़ दी गई थी और बड़ी तोपें यहाँ से जहाजों द्वारा पूर्वी मोर्चे पर भेज दी गई थीं। यह अरक्षित नगर हो गया था। पानी की एक धारा इसके अन्दर तक घुसी हुई है और खाड़ी के इस प्रक्षिप्त भाग को जोलोतोय रोग (स्वर्ण सींग) के नाम से पुकारते हैं। मित्रराष्ट्रों के [illegible] बिना बुलाए यहाँ घुस आए थे और उन्होंने अपने लंगर डाल दिए थे। इस लम्बी साइबेरियाई यात्रा के अन्त में इन युद्धपोतों पर मित्रराष्ट्रों के झंडे लहराते देखकर रूस से भागनेवालों को बड़ी प्रसन्नता हुई। रूस को छोड़कर वे यहाँ जम गए। उन्हें विश्वास था कि शान्ति शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी। तब वे अपने अपने स्थान वापस लौट जायेंगे और रूस में फिर से जीवन का पुराना ढर्रा कायम हो जायगा।

नगर मे बेदखल किये गये जमीदारो, पुराने अफसरो और सट्टेबाजो की भीड लगी हुई थी। जमीदार फिर से अपनी जागीरे पाने, नौकरो एव अनुचरो को सेवा मे नियुक्त करने तथा आमोद प्रमोद का जीवन बिताने के ख्वाब देख रहे थे। अफसर पहले की अनुशासन भावना की चर्चा कर रहे थे, जब सैनिक उन्हे देखते ही गन्दी नालियो मे कूद पडते थे और मुह पर थप्पडो की मार के बावजूद सीधे तने हुए अभिवादन की मुद्रा मे खडे रहते थे। सट्टेबाज युद्ध के उन पुराने वक्तो के लौटने की कामना कर रहे थे, जब उन्होने सौ और पाच सौ प्रतिशत तक मुनाफा कमाया था और अपनी देशभक्ति का ढिढोरा पीटा था। उनकी वह अधी दौलत अब उनके हाथो से निकल गई थी। क्रान्ति ने अफसरो के निरकुश अधिकारो एव जमीदारो के सपनो को भी ध्वस्त कर दिया था।

चूकि व्लादीवोस्तोक निगम बन्दरगाह है, इसलिए देश छोडकर भागनेवाले रूसियो की यहा बडी भीड जमा थी। प्रवेश बन्दरगाह होने के नाते यहा मित्रराष्ट्रो के पूजीपतियो की भरमार थी, जो रूस के आन्तरिक भागो मे जाने के उद्देश्य से यहा आये हुए थे। यह नगर रूस की प्रचुर सम्पदा को प्राप्त करने की कुजी के समान था। अपनी विपुल अनुपयोगित प्राकृतिक सम्पदा एव सुलभ श्रम शक्ति के कारण साइबेरिया का प्रदेश चुम्बक के समान था, जो विश्व भर के पूजीपतियो को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। स्वर्णिम सभावनाओ के प्रलोभन से लन्दन, टोकियो, पेरिस और वाल स्ट्रीट के पूजीपतियो की यहा भीड इकट्ठी हो गई थी।

मगर इन पूजीपतियो ने मत्स्य क्षेत्रो, सोने की खानो एव जगलो और अपने बीच एक बडा अवरोध पाया। उन्होने देखा कि यहा भी सोवियत कायम हो चुकी है। रूसी मजदूर को अब रूसी पूजीपतियो द्वारा अपना शोषण अमान्य था। इसके साथ ही वे अपने खून एव पसीने की गाढी कमाई से विदेशी वर्गो की समृद्धि म अभिवृद्धि करने को भी तयार नही थे। सोवियतो ने ही सभी शोषको की उम्मीदो पर पानी फेर दिया।

रूसी पूजीपति वर्ग को जिन बाधाओ का सामना करना पडा, उन्ही प्रतिरोधो का सामना करने के कारण मित्रराष्ट्रो मे शोषको की प्रतिक्रिया

भी उन्ही के समान हई। इन विदेशी पूजीपतियो ने अपनी रूसी बिरादरी के सदस्यो के मुह से बोल्शेविको के विरुद्ध गाली गलौज एव प्रलाप को बडी दिलचस्पी से सुना, जिनकी दृष्टि म सोवियते और इनके सदस्य नरक के कीडो के समान थे।

मित्रराष्ट्रो के कोन्सल, अफसर, ईसाई युवक सघ के सदस्य और गुप्तचर मुख्यत इन्ही लोगो के बीच उठते-बैठते, इन्ही से मिलते जुलते और वास्ता रखते। वे शायद ही कभी इस क्षेत्र से बाहर जाते थे। वे क्रान्तिकारी रूस मे थे, परन्तु क्रान्तिकारी तत्त्वो के सम्पर्क से दूर थे। और उनके लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक बात थी। किसान और मजदूर शायद ही फ्रासीसी अथवा अग्रेजी भाषा, पहनने ओढने का तौर-तरीका अथवा खान पीने का बढिया ढग जानते थे।

यह बात नही थी कि व्लादीवोस्तोक मे मित्रराष्ट्रो का यह समाज "सूचनाओ" से वचित था। रूसी पूजीपति वग के उनके दोस्त तथा स्वय बोल्शेविक विरोधी उनके पूर्वाग्रह उनकी सूचनाओ के स्रोत थे। स्पष्ट रूप स उनकी मनोकामना के अनुरूप और इस तरह की एकतरफा "सूचनाए" इस प्रकार के वाक्यो मे अभिव्यक्त होती थी

"सावियतो मे मुख्यत भूतपूव अपराधी शामिल ह।"

"पाच बोल्शेविको मे चार यहूदी हैं।"

"क्रान्तिकारी साधारण डाकू हैं।"

"लाल फौज के सनिक भाडे के टट्टू है और गोलियो की पहली बौछार होते ही व भाग खडे होगे।"

"गवार एव अनभिज्ञ जन समुदाय अपने नताओ के प्रभाव म है और य नता भ्रष्टाचारी ह।"

"हो सकता है कि ज़ार म अवगुण रहे हो, परन्तु रूस को निरकुश तानाशाह की आवश्यकता है।'

"सोवियत लडखडा रही हैं और दो सप्ताह स अधिक कायम नही रह सकेगी।'

बहुत ही सरसरी तौर पर वस्तु स्थिति की जाच पडताल करते ही इन वाक्यो की असत्यता प्रकट हो जायेगी। फिर भी केवल उन्ही लोगो को दूरदर्शी कहा जाता था, जो तोते की भाति इन्ही रटे-रटाए वाक्यो का दुहरान थे।

जो व्यक्ति इन वाक्यो के साथ यह भी जोड देता था कि "लेनिन ग्रार त्रात्स्की के बारे मे और लोग जो कुछ कहते है, मैं उसकी रत्ती भर परवाह नही करता और यह जानता हू कि वे जमन गुप्तचर ह," तो उस ता पक्की निष्ठा वाला आदमी एव लोकतन्त्र का सच्चा सैनिक माना जाता था।

कुछ ऐसे भी थे जो इमानदारी के साथ सच्ची बात जानना चाहत थे। एशियाई स्क्वाड्रन के मिलनसार सेनापति ने अधिकारियो का सन्देह भाजन बनन का खतरा मोल लेते हुए भी अपने युद्धपोत 'ब्रुकलिन' पर मुझे रात के खाने पर निमन्त्रित किया। अमरीकी कोसल ने भी इस झूठ के घेरे को तोडने की बडी कोशिशे की। किन्तु उन्होंने भी वाशिंगटन स निर्देश प्राप्त हाने तक मुझे वीज़ा नही दिया। इस कारण मुझे व्लादीवोस्ताक म सात सप्ताह तक रुके रहना पडा।

मै ज्यो ज्यो मज़दूरा और किसानो के प्रति अधिकाधिक खुलकर अपनी सहानुभूति प्रकट करने लगा, त्यो-त्या पूजीपति मेरे अधिक विरुद्ध होते गए। सोवियत स निकट सम्पर्क स्थापित हो जाने के फलस्वरूप मुझे इसके काय को देखने तथा उसमे हाथ बटाने का अवसर प्राप्त हुआ था और म इसके कई सदस्यो को अपना मित्र समझने लगा था।

कुछ छात्रो द्वारा सोवियतो की सहायता

इन छात्रा म पहले कोन्स्तान्तीन सुखानोव थे। जब फरवरी* म क्रान्ति शुरू हुई, ता वे पेत्रोग्राद विश्वविद्यालय म भौतिकी गणित विभाग के छात्र थे। व जल्दी मे व्लादीवोस्तोक लौटे। उस समय वे मेंशेविक थ। कोर्नीलोव की दुस्साहसिक कारवाई के पश्चात् व बोल्शेविक बन गये, सा भी बहुत ही उत्साही बाल्शेविक। व ठिगन कद के, परन्तु बहुत ही कमठ व्यक्ति थे। वे दिन रात परिश्रम करते रहते, सावियत भवन के ऊपर एक छोटे कमरे म मौका पाकर झपकी ले लेते और सूचना पाते ही दायित्व पालन के लिए

---

*नय कलेण्डर के अनुसार माच।

निकल पडते अथवा टाइपराइटर लेकर आवश्यक कागज़ तैयार करने लगते। यद्यपि उनके चेहरे पर सदैव चिंतन की गंभीर रेखाएं खिंची रहती थीं, परन्तु वे अक्सर ऐसे खिलखिलाकर हंस पडते कि दूसरे भी हंसे बिना नहीं रह पाते थे। उनके भाषण संक्षिप्त एवं सुगठित और कभी कभी जोशीले भी होते थे। मगर व्लादीवोस्ताक जैसे विस्फोटक नगर में केवल जोश से काम नहीं चल सकता था। उन्होंने बडी होशियारी और कुशलता से उन्हें कई अप्रिय स्थितियों से सोवियत को बचा लिया था जिनमें इसके शत्रुओं ने इसे धकेल दिया था।

सब लोगों, यहां तक कि अपने घोर राजनीतिक विरोधियों द्वारा भी सम्मानित सुखानोव सोवियत के अध्यक्ष चुन लिये गए। इस प्रकार प्रशांत महासागर और सुदूरपूर्वी दुनिया की ओर बाल्शेविकों द्वारा छोड़े गये तीर की वे मानो नोक थे। २४ वर्ष की अवस्था में उन्हें ऐसी ऐसी जटिल समस्याओं का सामना करना पडा, जिनसे अनुभवी राजनयिक भी चकरा जाता।

परन्तु राज्यदर्शिता उनके खून में थी। उनके पिता पुराने शासन-काल में एक अधिकारी थे और क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करने का काम उन्हें सौंपा गया था। ज़ार के खिलाफ साज़िश रचनेवालों में उनकी बेटी और यह बेटा कोंस्तांतीन भी शामिल थे। कोंस्तांतीन बंदी बना लिये गये। विक्षुब्ध एवं चिडचिडे बाप ने न्यायाधिकरण की मेज़ के सम्मुख अपने *अभियोगी बेटे को देखा और उसके विरुद्ध कानूनी* कारवाई की।

महामहिम सम्राट निकोलाई द्वितीय की अनुकम्पा से मजिस्ट्रेट की कुर्सी पर बडे सुखानोव विराजमान थे और उच्च आसन के पीछे निरकुश रूसी राजतन्त्र का सफेद, नीले और लाल रंग का झण्डा लगा हुआ था। जब हम व्लादीवास्तोक पहुंचे, तो इस झण्डे की जगह क्रान्ति का लाल झण्डा लहरा रहा था। यहां भी हमने सुखानोव परिवार के ही एक सदस्य को न्यायाधीश के आसन पर आरूढ पाया। इस बार पुत्र कोंस्तान्तीन न्याय की कुर्सी पर विराजमान थे, जो जनतन्त्रवादी महामहिमों रूसी सोवियत जनतन्त्र के मज़दूरों, किसानों और नौसैनिकों की कृपा से अब व्लादीवास्तोक सोवियत के अध्यक्ष थे।

यह नाति का विचित्र विपयय था। जिस प्रकार छोटे सुखानोव जार के शासन के खिलाफ साजिश करने के अभियोग मे वन्दी बनाये गये थे, ठीक उसी प्रकार बडे सुखानोव को सोवियत शासन के खिलाफ पडयन्त्र रचने के अभियोग मे पकडा गया था। एक बार पुन न्यायालय मे दोना ने एक दूसरे का सामना किया पिता के विरुद्ध पुत्र, प्रतिक्रान्तिवादी के खिलाफ क्रान्तिकारी, राजतन्त्रवादी के खिलाफ समाजवादी। मगर इस बार पुत्र न्यायाधीश और पिता अभियुक्त थे। केवल इस बार कोस्तातीन सुखानोव ने अपने क्रातिकारी क्तव्य का पालन नही किया। उसने अपने पिता को गिरफ्तार करन से इनकार कर दिया।

एक दूसरा विद्यार्थी—सिवीर्त्सेव—सुखानाव का सतत सहायक था। इसके अतिरिक्त तीन छात्राए—जोया, ताया और जोया भी थी, जो क्रमश बोल्शेविक पार्टी समिति वित्त विभाग और सोवियत पत्र किसान और मजदूर' की सचिव थी और क्रमश एक अफसर, एक पादरी एव एक सौदागर की वेटिया थी। उन्हाने अपने बुर्जुआ जीवन से बिल्कुल नाता तोड लिया था। वे सवहारा वग के साथ एकाकार हो गई थी। उनकी आय सवहाराओ की सी थी और उनके विचार भी। वे सवहारा वग के लोगो की भाति रहन लगी थी। दो खाली कमरे अब उनका घर बन गये थे और घर का वे कम्यून के नाम से पुकारती थी। वे सनिको की चारपाइया पर सोती थी, जिनक तख्तो पर स्प्रिंगदार तोशक की जगह घास फूस से भरे हुए गद्दे बिछे थे।

ये सभी छात्र परम्परागत रूसी छात्रा के सवथा अनुरूप थे। एक रात जब रूसी भाषा मे अपन को अभिव्यक्त करने के यातनापूण प्रयास के परिणामस्वरूप मेरी जबान और मेरे विचारा को गाठ लग गई, तो सिवीर्त्सेव न कहा, "हम सभी विश्वविद्यालय म शिक्षा प्राप्त कर चुके ह, इसलिए हम लातीनी भाषा म आपस म बात कर सकते है।" परन्तु अमरीकी कालेजा के कितन स्नातक अपने उपाधिपत्रा पर लातीनी म अकित शब्दा तक को भी पढ सकते ह? ये रूसी छात्र लातीनी भाषा म केवल बातचीत ही नही करते थे, बल्कि उन्हाने लातीनी म लिखी गयी अपनी कविताओ के बारे मे मेरी राय भी जाननी चाही। तब इसलिए कि कहीं मेरी कलई न खुल जाय, मन झटपट रूसी भाषा का सहारा लिया।

ब्लादीवास्तोक सोवियत के सदस्यो म इन छात्रो के अलावा मेहनतकश मजदूर—मेकेनिक, खलासी, रेलवे कमचारी आदि शामिल थे। मगर वे सभी रूसी मेहनतकश थे हथौडा, हसिया और कुल्हाडी का इस्तेमाल करते हुए उहाने अपने दिमागो से भी काम लिया था। इसी कारण उह जार शाही के बबर अत्याचारो का सामना करना पडा था। उनमे से कुछ को जेला मे डाल दिया गया था, अयतर निष्कासित कर दिये गये थे और वे खानाबदोशा की भाति पृथ्वी पर एक जगह से दूसरी जगह भटकते रहे थे।

क्रान्ति के आह्वान पर वे निष्कासन-स्थाना से वापस आ गये थे। ऊत्किन और जोदन आस्ट्रेलिया से वापस आये थे और अग्रेजी बोलते थे, अतानोव नेपल्स से लौटा था और वह इतालवी भाषा बोलता था।

मेल्निकोव, निकीफोरोव और प्रोमिन्स्की जेल की कोठरियो से फ्रासीसी भाषा सीखकर निकले। इन तीना ने जेल को अपने लिए विश्वविद्यालय बना लिया था। उहोने जेल मे गणित का विशेष अध्ययन किया और अब वे कलन म विशेषज्ञ हो गये थे, जिस कुशलता से उहोने क्राति के लिए युक्तिया सोची थी, उसी कुशलता से अब वे ग्राफ तैयार करते थे।

वे सात साल तक जेल मे इकट्ठे रहे थे। अब वे अपनी अपनी मर्जी से अपनी राह पर जाने के लिए स्वतत्र थे। परन्तु इतनी लम्बी अवधि तक एक साथ कठोर कारावास दण्ड भोगते हुए उनके हृदयो के बधन हथकडिया से भी अधिक मजबूत हो गये थे। वे मौत की भाति भयानक जेल की कालकोठरिया मे एक साथ रहे थे और अब इस अभिनव जीवन मे वे अलग नही हो सकते। परन्तु विचारो की दृष्टि से उनम बडी भिनता थी और वे बडे जोश के साथ अपने सिद्धातो का पक्ष पाषण करत थे। चाहे सैद्धान्तिक दृष्टि से एक दूसरे से बहुत दूर होते हुए भी वे सघप म एक साथ थे। मेल्निकोव की पार्टी उस समय सोवियत समथक नही थी, परन्तु उनके दा साथी सोवियत का समथन करते थे। इसलिए उहोने अपने इन दोना साथिया का अनुसरण करते हुए डाक-तार कमिसार की हैसियत से सोवियत की सेवा अगीकार की।

मलिनवाव के ग्रतस्तल मे बहुत उथल पुथल रही थी और उनके चहरे पर पडी गहरी झुरिया तथा ग्राखो म झलकनेवाली वेदना की गहरी भावनाए, इसकी साक्षी थी। मगर उनके चेहरे से विजय और बडी शान्ति का भावना भी व्यक्त होती थी। उनकी ग्राखें चमकती रहती थी और होठो पर सदा मुस्कान की रेखाए खेला करती थी। जब कठिनाइया और ग्रधिक बढ जाती, तो वे और भी ग्रधिक मुस्कराते।

बुद्धिजीविया से सोवियत को बहुत थोडी ही सहायता प्राप्त हुई थी। उन्होने यह घोषणा कर दी थी कि जब तक मजदूर अपने कायक्रम म ग्रामूल परिवतन नही करते, तब तक वे सोवियत के विरुद्ध अपना बहिष्कार ग्रान्दोलन जारी रखेंगे। उन्होने खुली सभा मे तोडफोड की नीति अपनाने की उदघोषणा की।

एक खनिक ने बहुत ही कटु एव तीखे ढग से प्रत्युत्तर देते हुए कहा, "आप अपने ज्ञान एव कौशल पर घमण्ड करते है। परन्तु यह ग्रापको कहा से प्राप्त हुग्रा? हम ही से। हमारे खून पसीने की कीमत पर यह ग्रापको सुलभ हुग्रा। जब हम अधेरी खानो और फैक्टरिया की चिमनिया से निकलते धुए से भरे हुए वातावरण मे अपना पसीना बहाते थे, उसी समय ग्राप स्कूलो और विश्वविद्यालयो मे पढ रहे थे। अब हम ग्राप लोगो से कहते ह कि हमारी मदद कीजिये और इसके उत्तर मे ग्राप हमसे कहते ह, 'अपना कायक्रम छोड दो और हमारा कायक्रम अपना लो, तभी हम तुम्हारी सहायता करेंगे।' और हम ग्राप लोगो से यह कहना चाहते ह हम अपने कायक्रम का परित्याग नही करेंगे। ग्रापके बिना ही हम अपना काम चलायेंगे।"

इन मजदूरो की सर्वोपरि दिलेरी और दढता का यह प्रमाण था कि सरकार चलाने के काम मे नौसिखिया होते हुए भी उन्होने फ्रास के क्षेत्रफल जसे बडे और भारत की भाति प्राकृतिक साधनो से सम्पन्न प्रदेश का प्रशासन अपने हाथ म ऐसे समय ग्रहण किया, जब षड्यत्रकारी साम्राज्यवादियो का गिरोह चढाई कर रहा था और असख्य समस्याओ की चुनौतिया का उन्हें सामना करना था।

कार्यरत स्थानीय सोवियत

व्लादीवोस्तोव सोवियत ने रक्तपात के बिना ही सत्ता पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। यह काम आसान था। मगर अब उसके सम्मुख प्रस्तुत कायभार कठिन, बहुत ही दुरूह और जटिल था।

सबसे पहले तो आर्थिक समस्या का समाधान करना था। युद्ध एव क्राति के फलस्वरूप उद्योग धधे छिन भिन हो गये थे, सैनिका की वापसी और मालिका की तालेबन्दी के कारण सडके बेकारो से भरी हुई थी। सोवियत ने यह महसूस कर लिया कि बेकारी मे बहुत खतरा निहित है और उसने कारखाने खोलने का काम शुरू कर दिया। प्रबध की जिम्मेदारी स्वय मजदूरा के हाथा मे सौंप दी गई और सोवियत ने उधार की व्यवस्था की।

नताओ ने स्वेच्छा से अपना पगार परिसीमित कर लिया। केन्द्रीय रूमी सावियत के फरमान के अनुसार किसी भी सोवियत अधिकारी की तनख्वाह ५०० रूबल प्रति मास से अधिक नही हो सकती थी। व्लादी वोस्तोक के कमिसारो ने सुदूर पूव मे रहन सहन के कम व्यय की ओर सकेत करते हुए अपना अधिकतम वेतन घटाकर ३०० रूबल निश्चित किया। इसके बाद यदि कोई इससे अधिक तनख्वाह पान की लालसा प्रकट भी करता, तो उससे यही पूछा जाता कि "क्या तुम लेनिन अथवा सुखानोव से अधिक वेतन पाना चाहते हो?" यह लाजवाब प्रश्न था।

सोवियत द्वारा उद्योग धधा की व्यवस्था

ज्यो ही कारखान मजदूरो के हाथ मे आ गए, त्या ही उनकी मन स्थिति मे परिवतन हुआ। केरेन्स्की के शासनकाल मे किसी ढीले-ढाले, नरम स्वभाव वाले व्यक्ति को फोरमन चुनने की प्रवत्ति थी। अब अपनी ही सरकार, सावियत के शासन मे, मजदूरो ने ऐसे साथी को फोरमन चुना, जो कारखाने मे अनुशासन क़ायम रख सके तथा उत्पादन बढाये। म जब पहली बार सुदूर पूव सोवियत के प्रधान क्रास्नोश्चोकोव से मिला, तो वे निराश-से प्रतीत हुए।

उन्होंने कहा ' मैं पूंजीपतियों की तोड़फोड़ की कारवाइयों के खिलाफ जो कुछ कहता हूं, उससे दस गुणा अधिक मजदूरों की ढिलाई के बारे में कहना पड़ता है। किन्तु मुझे यकीन है कि स्थिति बदल रही है।'

मैं जब १६१८ के जून के अन्त में उनसे मिला, तो वे प्रसन्न मुद्रा में थे। परिवर्तन आ चुका था। उन्होंने बताया कि ६ कारखानों का उत्पादन पहले की तुलना में काफी बढ़ गया है।

तथाकथित "अमरीकी कारखाने" में अमरीका से रेल के डिब्बों के पहिये, फ्रेम और ब्रेक मंगाये जाते थे और संयोजन के बाद तैयार डिब्बों को ट्रांस-साइबेरियाई रेलवे द्वारा विभिन्न स्थानों पर भेजा जाता था। यह कारखाना सारी गड़बड़ियों का अड्डा बन गया था, उसमें एक के बाद दूसरे उपद्रव हुआ करते थे। इसमें काम करनेवाले मजदूरों की संख्या ६,००० थी मगर प्रति दिन वे केवल १८ डिब्बे तैयार करते थे। सोवियत आयोग ने इस कारखाने को बंद करके कमशालाओं का पुनर्गठन किया और मजदूरों की संख्या घटाकर १,८०० कर दी। डिब्बों के निचले ढांचे से सम्बन्धित कमशाला में १,४०० मजदूरों की जगह अब केवल ३५० कामगार काम करते थे, मगर स्वयं मजदूरों द्वारा अपनायी गयी विधि के फलस्वरूप इस विभाग के उत्पादन में वृद्धि हो गई थी। अब इस कारखाने में कुल १,८०० श्रमिक काम करते थे और वे प्रति दिन १२ डिब्बे तैयार कर लेते थे—इस प्रकार प्रति व्यक्ति की कार्यक्षमता में १०० प्रतिशत की वृद्धि हो गई थी।

एक दिन मैं सुखानोव के साथ पहाड़ी पर खड़ा था, जहां से कारखाना दिखाई पड़ रहा था। वे घाटी में काम करनेवाले क्रेनों का शोर और घनों के पीटने का ठनठन स्वर सुन रहे थे।

मैंने कहा, "यह शोर और टनटनाहट आपको तो मधुर संगीत जैसी लग रही होगी।"

उन्होंने उत्तर दिया, "हां, पुराने क्रांतिकारी बम विस्फोटों से शोर मचाया करते थे। यह नये क्रान्तिकारियों का शोर है, जो नूतन सामाजिक व्यवस्था को गढ़ रहे हैं।

खनिकों की ट्रेड-यूनियन सोवियत का सबसे शक्तिशाली संघाती थी। इसने बेकारों को ५० और १०० व्यक्तियों की छोटी छोटी टोलियों में संगठित किया, उन्हें आवश्यक उपकरण प्रदान किये और महानदी अमूर

के किनारे किनारे खानो मे काम करने के लिए भेज दिया। यह उद्योग बहुत ही सफल रहा। प्रत्येक व्यक्ति प्रति दिन ५० से १०० रूबल तक का सोना निकाल लेता था। तब मजदूरी का प्रश्न उठा। एक खनिक ने सोच-विचारकर यह नारा लगाया, "प्रत्येक को उसका पूरा श्रमफल।' यह नारा खनिको मे तत्काल बहुत लोकप्रिय हो गया, जिन्हाने इस आधारभूत समाजवादी सिद्धान्त के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा की। उन्होने कहा कि कोई भी प्रलोभन उन्हे इस सिद्धान्त से विरत नही कर सकता।

सोवियत का दृष्टिकोण भिन्न था। इस कारण गत्यवरोध की स्थिति पदा हो गई। मजदूरो ने बमो और फौजा से विवादो को सुलझाने के अतीतकालीन तरीके की जगह सोवियत म बहस एव विचार विमश द्वारा उस सवाल को हल करने की नयी प्रणाली अपनाई। खनिका ने सोवियत के तक को स्वीकार कर लिया। प्रति दिन १५ रूबल के हिसाब से उनकी मजदूरी निश्चित कर दी गई और यह भी तय किया गया कि अतिरिक्त उत्पादन के लिए उन्हे बोनस दिया जायेगा। कम समय मे ही सोवियत के भवन म ६३६ पौण्ड सोना जमा हो गया। सोवियत ने इस सचित स्वण राशि के अनुपात मे नोट जारी किए। इस नोट पर हसिया एव हथौडे का चिन्ह और एक हाथ मिलाते हुए किसान और मजदूर का चित्र था तथा यह दश्य भी अकित था कि सुदूर पूव की प्रचुर प्राकृतिक सम्पदा विश्व भर म फैल रही है।

उत्तराधिकार मे प्राप्त "फौजी बन्दरगाह' के रूप म सोवियत को एक भारी मुसीबत से दो चार होना पडा। सैनिक और नौसनिक उद्देश्यो से बनाया गया यह वडा प्रतिष्ठान पुराने शासन की अकुशलता का स्मारक था। इसमे भ्रष्टाचारी अधिकारिया और उनके लगुओ भगुआ की सख्या इतनी ही थी, जितनी कि जारकालीन किसी भी प्रतिष्ठान म हो सकती थी। इसलिए इस नौसनिक बेडे पर ढेरा अनावश्यक मुफ्तखोर भरे हुए थे। सोवियत ने इन मुफ्तखोरो को काम स हटा दिया, परन्तु प्रमुख प्रविधिन के रूप म पुराने मैनेजर को काम पर कायम रखा। सवहारा वग के सदस्या न विशेषज्ञो की आवश्यकता महसूस की और उन्हे अपने बीच न पाकर वे उन्ह मोटी तनख्वाहे देने का तैयार थे। जिस प्रकार पूजीपतिया ने सदा मोटी-मोटी तनख्वाह देकर विशेषज्ञो की सेवाए प्राप्त की थी, उसी प्रकार मजदूर

वग भी उनकी सवाम्रा के लिए उन्ह अधिक वेतन न्न को तैयार हो गया।

एक विशेष समिति ' फौजी बन्दरगाह " नामक उद्यम का शांतिपूर्ण कामा क लिए उपयोग करन लगी। उसन हिसाब किताब रखन की सम्न प्रणाली लागू की। इससे यह प्रकट हुआ कि इस उद्यम म जो नये हल और हेंग तयार हो रहे ह, उनका उत्पादन व्यय बाहर से मगाये गए इन्हा कृषि औजारा क मूल्य स अधिक है। तब व्यवस्था मे तेजी से परिवतन लान का काम शुरू किया गया। मशीना एव जहाजा की मरम्मत होने लगी। आठ घट के कार्य दिवस के अन्त म यदि निर्धारित काम पूरा न होता, तो फोरमन काम की स्थिति के बारे म अपना विवरण प्रस्तुत करता और बताता कि इसे पूरा करने के लिए कितने अतिरिक्त घटा की जरूरत होगी। तेज काम करने मे गव महसूस करनेवाले मजदूर अब यदि निर्धारित काय पूरा करने म रात भर का समय भी लग जाता, तो भी काम पर डटे रहते। इसक साथ ही कामगारा की सम्मति स फोरमन की तनख्वाह म वृद्धि कर दी गई।

पुराने प्रशासन के अन्तगत मजदूर फैक्टरी से इतनी दूर रहते थे कि उन्ह आने म एक से तीन घटे तक का समय लग जाता था। समिति न श्रमिको के लिए नये क्वाटरा के निर्माण का काम शुरू करा दिया। समय एव शक्ति बचाने के लिए अनेक युक्तिया काम मे लायी गइ। वेतन पाने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हुए लम्बी पक्ति मे मजदूरा के खडा होन की प्रथा खत्म कर दी गई और उसके स्थान पर प्रति दो सौ कामगारो का पगार वितरित करने के लिए एक व्यक्ति नियुक्त किया गया।

वेतन बाटने के लिए जो व्यक्ति नियुक्त किये गये थे, उनमे दुर्भाग्य से एक ऐसा था, जो अपना प्रलोभन न रोक सका। दो सौ मजदूरा का वेतन पाने के बाद वह अचानक कही चम्पत हो गया। कोई भी यह नहा जानता था कि आखिर यह बात हुई कैसे। कुछ मजदूरो न बताया कि किसी पूजीवादी शैतान ने इस कमजोर कामरेड का चुपके से इस काम के लिए बहकाया होगा और उसके दिमाग से अपने परिवार, कमशाला एव क्रांति के बारे मे सभी विचार निकाल दिये होगे। वह अन्ततः वादका की कुछ खाली बोतलो के पास पडा पाया गया और उसकी जेब भी खाली थी। जब उसका नशा उतर गया, तो उसे कमशाला समिति के सम्मुख पेश किया गया और उस पर क्रांतिकारी प्रतिष्ठा के विरुद्ध आचरण करन एव

"फौजी बन्दरगाह" के साथ विश्वासघात करने का अभियोग लगाया गया।

क्रान्तिकारी न्यायाधिकरण के समक्ष इस मामले की सुनवाई काफी देर तक मुख्य कमशाला में हुई, जिसमें १५० पंच उपस्थित थे। न्यायाधिकरण का निर्णय हुआ कि यह व्यक्ति अपराधी है। पंचों को निम्नांकित तीन सजाओं पर राय प्रकट करने को कहा गया – (१) तत्काल नौकरी से बर्खास्तगी, (२) पदच्युति किन्तु पत्नी व बच्चों को मजदूरी मिलती रहे और (३) क्षमादान एवं बहाली।

पंचों ने दूसरे नम्बर की सजा देने के पक्ष में निर्णय किया और इस प्रकार अपराधी को सजा दी गई और साथ ही उसके परिवार को कठिनाई से बचा लिया गया। परन्तु इससे उन दुर्भाग्यग्रस्त दो सौ मजदूरों को तो उनका पगार नहीं मिला। इसलिए पन्द्रह सौ मजदूरों ने अपने इन दो सौ साथियों की क्षति-पूर्ति के लिए इस रकम को आपस में बांट लेने का निर्णय किया।

मजदूरों ने अपने नये प्रयोगों में भारी भूलें कीं और इनसे काफी नुकसान उठाना पड़ा। मगर सामान्य रूप से सोवियत के बारे में उनका निर्णय यही था कि इसने अच्छा और उपयोगी काम किया है। उन्होंने सोवियत की गलतियों के प्रति वही रुख अपनाया, जो एक व्यक्ति अपनी भूलों के प्रति अपनाता है—बहुत ही नरम रुख।

मजदूरों को अपने अनुभवों से विश्वास प्राप्त हुआ। उन्होंने महसूस किया कि वे उद्योग धन्धों को संगठित कर सकते हैं और उत्पादन बढ़ा सकते हैं। आर्थिक क्षेत्र में सोवियत की स्थिति दिन ब दिन सुदृढ़ होने से उनके मन में उत्साह की भावना पैदा हुई। यदि उनके शत्रु सोवियत के विरुद्ध लगातार अपने तीव्र प्रहार जारी न रखते, तो उनका उत्साह और भी अधिक बढ़ जाता।

सोवियत द्वारा सेना का संगठन

कारखानों का काम ढंग से चलने ही लगा था कि मजदूरों को औजार रखकर अपने हाथों में बन्दूकें पकड़नी पड़ीं, मालगाड़ियों से भोजन और औजार भेजने की जगह लड़ाई का सामान एवं फौजें भेजनी पड़ीं। श्रमिकों

को नयी गस्याग्रा को सुदढ बनाने की जगह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मजबूर होना पडा।

मजदूरा के जातन्त्र पर लगातार शत्रुग्रा के हमल होने रहे। ज्या ही शत्रुग्रा की फौजें सीमा म घुस ग्राती, त्यो ही यह नारा गूज उठता, समाजवादी मातभूमि खतरे म है!" हर गाव एव कारखान भ सशस्त्र होकर शत्रुग्रा का सामना करने के लिए तैयार हो जाने का ग्राह्वान सुनाई पडता। प्रत्यक गाव एव फक्टरी म छोटे छोटे सैय दस्ते सगठित हो जाने ग्रौर व सडका ग्रौर पगडडिया पर क्रातिकारी गीत तथा गावो के लोक-गीत गाते हुए मचूरियाई पवतमाला तक पहुच जाते। उनके पास न ता काफी रमद होती थी, न ग्रच्छे फौजी साज सामान ग्रौर न ही ग्रच्छे हथियार। फिर भी व निमम एव ग्रच्छे हथियारा से लैस शत्रुग्रो का सामना करन के लिए चढते चले जाते। जिस प्रकार ग्राज ग्रमरीकी जाज वाशिगटन के जजरित एव नगे पाव सैनिको की पुण्य स्मृति को सजोए हुए हैं, जिहाने वली फोज की बफ पर ग्रपने रक्त के ग्रमिट चिन्ह छोड दिये थे, उसी प्रकार रूसी भी भविष्य म लाल गार्डो के इन फटेहाल प्रथम सय दला की वीरतापूण कहानियो को पढकर उल्लास एव गव से भर जाया करगे, जो खतरे की पुकार पर ग्रपने हाथा म बदूक पकडे सोवियत जनतन्त्र की रक्षा के लिए निकल पडे।

लाल गार्डों के ग्रतिरिक्त नयी लाल सेना के दस्ते भी सगठित हो रहे थे। यह एक ग्रतर्राष्ट्रीय फौज थी। इसमे चेकोस्लोवाकिया ग्रौर कोरिया वासिया के ग्रलावा बहुत से ग्रय राष्ट्रा के लाग शामिल थे। ग्रलाव के इद गिद बैठे हुए कोरियाई कहते, "ग्रापकी स्वतत्रता की रक्षा के लिए इस समय हम ग्रापका साथ देंगे, कभी हमारी ग्राजादी की रक्षा के लिए जापान के विरुद्ध ग्राप हमारा साथ देंगे।"

लाल फौज ग्रनुशासन की दष्टि से नियमित राष्ट्रीय फौजा की तुलना म निम्नतर स्तर की थी। परन्तु उनमे जो स्फूर्ति एव उत्साह था, ग्रय सैनिको मे उसका ग्रभाव होता है। मन उन किसानो एव श्रमिका से कई बार काफी देर देर तक बाते का, जो हफ्तो से वर्षा सिक्त इन पहाडी ग्रचलो मे खुले ग्राकाश के नीचे पडे हुए थे।

मने उनसे पूछा, "किसने तुम्हे यहा आने के लिए अनुप्रेरित किया और किस भावना से यहा तुम खुले मे पडे हुए हा?

उन्हाने उत्तर दिया, "पुराने समय म ज़ार की सरकार की रक्षा के लिए लाखो गवार किसानो व मजदूरो को फौजो म भर्ती हाकर लडन के लिए बाहर जाना पडता था और उन्हे अपना खून बहाना पडता था। अब यदि हम अपनी ही सरकार के लिए लडन को यहा न आते तो हम उचित रूप से ही कायर समझा जाता।"

कुछ ऐसे भद्रजन भी थे, जो सावियता के बारे म ऐसा विचार नहा रखते थे। उनका दृष्टिकोण बिलकुल भिन्न था। व चाहते थे कि रूसी किसाना एव मजदूरो के लिए सवथा भिन्न प्रकार की सरकार हो। वस्तुत वे स्वय अपने को ही रूस की सच्ची एव एकमात्र सरकार मानते थे।

वे आडम्बरपूर्ण शब्दावली मे सुदूर पूव की इन जालोनाय गाग खाडी स पश्चिम मे फिनलैण्ड की खाडी तक और उत्तर म श्वेत सागर से दक्षिण म काले सागर तक फले प्रदेशो पर अपन पूर्ण शासनाधिकार का दावा करते। ये महाशय शालीन एव विनम्र तो नही थ, मगर होशियार बहुत थे। उन्हाने अपनी व्यापक जागीरो मे कहीं अपन पर नहा रखे। यदि व ऐसा करन का साहस करते, ता सावियत द्वारा जा सच्चे अर्थो म सरकार थी, वे साधारण अपराधियो की भाति पकड लिय जाते।

वे मचूरिया के सुरक्षित स्थानो म रहत हुए आडम्बरपूर्ण शब्दावली म अपने घोषणापत्र जारी करत। वही सोवियत के खिलाफ सारी साजिशें रची गइ। कलेदिन की पराजय के पश्चात् प्रतिक्रान्तिवादियो ने विदशी पूजी की सहायता से कज्ज़ाक जनरल सेम्योनोव मे अपनी सारी आशाए केंद्रित की। उसके नेतत्व म हुन-हुज दस्यु गिरोहा, जापानी भाडे के टट्टूओ और चीनी समुद्र तट के बदरगाहो से जमा किए गए राजतत्रवादियो को मिला जुलाकर फौजी दस्ते गठित किय गये।

सम्यानाव ने घोषणा की कि वह मजबूत हाथ और कठोर तरीके म बोल्शेविको की अक्ल ठिकाने लगा देगा और उन्हें भद्रता एव मर्यादापूर्वक अपनान का विवश कर दगा। उसन अपन फौजी राज्य की घोषणा करन

हुए कहा कि वह चार हजार मील की दूरी पर स्थित उराल पर्वतमाला पर अधिकार स्थापित करने के बाद मास्को के मैदानों से होते हुए पेत्रोग्राद पहुंचकर उस पर अपना कब्जा कायम करेगा और सारा देश उसका स्वागत करेगा।

पूंजीपति वर्ग की प्रशंसा एवं जयघोष के बीच अपनी रणपताका लहराते हुए वह दो बार साइबेरियाई सीमा में घुसा और दोनों बार पीछे खदेड़ दिया गया। जनता ने उसका स्वागत तो किया, मगर फूलों से नहीं, बल्कि बंदूकों और कांटों से।

सेम्यानोव को हराने में ब्लादीवास्तोक के मजदूरों ने सहायता दी। पांच सप्ताह बाद वे थके मांदे, सकलाये हुए, फटेहाल और सूजे हुए पांव लिये वापस लौटे। परन्तु वे विजयी होकर वापस आए थे। मजदूर वर्ग ने बड़ी संख्या में जमा होकर अपने साथी सशस्त्र सैनिकों का स्वागत किया। उन्हें गुलदस्ते भेंट किये गये, उनके सम्मान में भाषण हुए और इस विजयोत्सव को मनाने के लिए उनका जुलूस निकाला गया। इस विजय से उनके हृदय उत्साह से उत्फुल्ल हो गये। मगर पूंजीपतियों एवं मित्रराष्ट्रीय देशों को इससे बड़ा सदमा पहुंचा। यह स्पष्ट हो गया कि फौजी क्षेत्र में सोवियत की शक्ति बढ़ रही है।

जन शिक्षा में सोवियत का योगदान

क्रांति की रचनात्मक शक्ति ने सांस्कृतिक क्षेत्र में एक जन विश्वविद्यालय, तीन मजदूर-थियेटरों और दो दैनिक पत्रों की स्थापना में सफलता प्राप्त की। 'किसान और मजदूर' नामक दैनिक पत्र सोवियत का अपना अखबार था। इसका एक अंग्रेजी परिशिष्टांक भी प्रकाशित होता था, जिसका सम्पादन एक युवा रूसी अमरीकी जेरोम लीफिशत्स करते थे। कम्युनिस्ट पार्टी के मुखपत्र 'लाल झंडा' में लम्बे लम्बे सैद्धान्तिक लेख प्रकाशित होते थे। पत्रकारिता की दृष्टि से इनमें से कोई भी पत्र उच्च कोटि का नहीं था, मगर वे दोनों अभी तक मूक रहनेवाली जनता की वाणी थे और उसके विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करते थे।

क्रान्ति मुख्यत जमीन, रोटी और शान्ति की मागो से शुरु हुई, मगर उसका ध्येय यही तक सीमित नही था। मुझे व्लादीवोस्तोक सोवियत की एक बैठक की कार्यवाही याद है, जब एक दक्षिणपंथी ने सोवियत की कटु आलोचना करते हुए राशन की कटौती की भर्त्सना की और कहा

"बोल्शेविकों ने आपको बहुत से सब्ज बाग दिखाये थे परन्तु क्या उन्होने अपने वादे पूरे किये? उन्होने आपको रोटी देने का वचन दिया था, मगर वह कहा है? कहा है वह रोटी जिसके लिए ' वक्ता के शब्द श्रोताओ की ऊची सीटियो और धिक्कार की सी सी' की आवाजो मे डूब गये।

मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नही रहता। इसलिए सोवियत ने केवल पेट की भूख ही नही, बल्कि मानसिक विकास की भूख भी शान्त करने की कोशिश की।

सभी मनुष्य दोस्ती करना चाहते हैं। जान बाल* ने चौदहवी सदी मे अंग्रेज किसानो से ठीक ही कहा था, दोस्ती स्वर्ग है और इसका अभाव–नरक।" सोवियत एक बडे परिवार के समान थी, जिसमे छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी अपनी मानवीय गरिमा को समझने लगा था।

सभी मनुष्यो मे अधिकार प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा होती है। मजदूरो ने सोवियत मे यह महसूस किया कि वे स्वय अपने भाग्य निर्माता और एक विस्तृत राज्य के मालिक है। मजदूर भी किसी अन्य मानव की भाति होते है। अधिकार प्राप्त कर लेने के बाद वे इसे छोडने को तयार नही थे।

सभी मनुष्य साहसपूर्ण कार्य करने को उत्सुक रहते है। सोवियत लोग सर्वोच्च साहसपूर्ण कार्य–न्याय पर आधारित नये समाज की रचना, एक नये विश्व के निर्माण मे सलग्न हो गये।

---

*जॉन बॉल–अंग्रेज उपदेशक, इगलण्ड मे १३८१ के कृषक विद्रोह के नेता।

सभी मनुष्यो म ग्राध्यात्मिक उत्कण्ठा एव भावना होती ह। क्वल इस जागत करन की आवश्यक्ता पडती है। क्रान्ति न उदासीन एव ग्रात्म तुष्ट किसानो को भी जगा दिया। इसने उनमे लिखने-पढन की ग्राकाक्षा पैदा की। एक दिन एक वद्ध किसान वच्चा की पाठशाला मे आया। कठोर श्रम से उसके हाथ कडे हो गये थे, उनमे गट्टे पडे हुए थे। उन्ह ऊपर उठाकर उसन कहा

वच्चो, मेरे य हाथ लिखना नही जानते, क्योकि जार केवल यही चाहता था कि वे हल चलाते रहे।" उसकी ग्राखो से ग्रश्रु धारा बह चला ग्रौर उसन कहा, ' किन्तु नये रूस के वच्चो, तुम लिखना सीख सक्ते हो। काश कि मैं भी वच्चा होता ग्रौर इस नये रूस म ग्रपना जीवन ग्रारम्भ कर सकता!"

मजदूर राजनयिको के रूप में

मजदूरा न राज्य के शासन रूपी जलपोत का ग्रपन ग्रधिकार म कर लिया था। ग्रव उन्ह इस जलपोत को चक्करदार खाडिया, ग्रज्ञात समुद्री मार्गों ग्रौर मित्रराष्ट्रा के कुचक्रा के बीच से वचाकर ल जाना था, जो लगातार इस चट्टान से टकराकर डुबो देन की कोशिश कर रहे थे।

मित्रराष्ट्रा के दूतो का समथन न प्राप्त हाने पर सावियत न ग्रौपचारिक रूप स चीन के सम्मुख दोस्ती का प्रस्ताव रखा। जार न चीनिया के साथ इतना पाशविक व्यवहार किया था कि वे रूस की किसी भी सरकार से ग्रच्छे व्यवहार की ग्राशा नही कर सकत थे। उन्हान साचा कि यह भी कोई नये ढग की चालवाजी है। परन्तु सावियत न ग्रपन समुचित वादा के ग्रनुकूल समुचित ग्राचरण भी किया। चीनी नागरिका का ग्रन्य विदेशिया के समान ग्रधिकार दिय गये। चीनी जहाजा को रूसी नदिया म ग्रान जान की ग्रनुमति प्रदान कर दी गइ। चीनी यह ग्रनुभव करन लगे कि यह रूसी सरकार उन्ह निकृष्ट जाति नही मानती, जिनका ग्रपमान किया जाय ग्रौर खून चूस जाये, वल्कि मानव समझती है। वार्ता

के लिए लाल फौज के अधिकारियो के पास अपने प्रतिनिधियो को भेजते हुए उन्होने कहा

"हम जानते है कि सम्योनोव के दस्यु गिरोहो और दु साहसी सनिको को चीनी प्रदेश म अपने दस्ते सगठित करने की अनुमति देने का हम कोई अधिकार नही है। हम यह भी जानते है कि मित्रराष्ट्रो को यह अधिकार प्राप्त नही है कि वे आपके खिलाफ हम घाटबदी की नीति अपनाने को विवश कर। हम चाहते है कि हमारे खाद्यान्न रूसी मजदूरो और किसानो को सुलभ हो।"

जून म सीमा स्थित ग्रोदकोवो म इनकी भेट हुई, जिसम ताकानोगी ने चीनी भाषा म चीनी प्रतिनिधियो का स्वागत किया। यह साहसी व प्रतिभासम्पन्न २१ वर्षीय युवक नवोदित क्रान्तिकारी रूस का सजीव प्रतीक था। भू मण्डल की एक तिहाई जनसख्या का प्रतिनिधित्व करनेवाले इन दो राष्ट्रो के प्रतिनिधि शान्ति और सहयोग के वातावरण म एक साथ रहने के उद्देश्य से अपनी समस्याओ के समाधान खोजने लगे।

यह बातचीत वार्साई सम्मेलन की भाति नही थी, जहा सुनहरे रग के कक्ष म अपने अपने दावपेच म सलग्न प्रवचक सदहशील पुरानपथी राजनीतिज्ञ शब्दो एव वाक्यो के प्रयोग के प्रश्न पर आपस म झगडते रहे थे। ये खुले दिमाग और खुले हृदय के युवाजन थे, वे भाईचारे की भावना से मुक्त आकाश के नीचे निष्कपट वार्ता कर रहे थे। फिर भी यह भावनाओ का ऐसा उफान नही था, जिसम वास्तविकता आखो से ओझल हो जाती है। उन्होने कठिन से कठिन प्रश्नो का सामना किया—चीनियो के रूस म भर जाने, कुली श्रमिको के रहन सहन के निम्न स्तर आदि के खतरे तथा इसी प्रकार के अन्य सवालो पर खुले दिल दिमागो से गौर किया गया। यह वार्ता ईमानदारी और भाईचारे के वातावरण मे हुई। रूसी प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष क्रास्नोश्चोकोव ने ठीक ही कहा था

'पश्चिमी सभ्यता की बुराइयो से मुक्त और कूटनीतिक प्रपच एव साजिश म अदक्ष चीनी एव रूसी जन समुदाय सच्चे अर्थों मे सहज स्वभाव के है।"

फिर भी जिस समय दोनो महान राष्ट्रों के प्रतिनिधि अपनी समझदारी के नाम पर एक दूसरे का दृष्टिकोण जानने का प्रयास कर रहे थे, उसी समय हार्बिन और व्लादीवोस्तोक में उनकी पीठ पीछे विदेशी कूटनीतिज्ञ इन दोनो राष्ट्रों को आपस में लड़ा देने के लिए षड्यंत्र रच रहे थे। वे साइबेरिया पर हमले के लिए चीनी फौजों का इस्तेमाल करने और सोवियतों को खत्म कर देने की योजनाएं तैयार कर रहे थे।

क्रान्ति की विजय

सोवियतें पूजीवादी विश्व के खिलाफ

सत्रहवा अध्याय

त्रिसराष्ट्रो ने सोवियत को कुचल दिया

किसी न एक बार किसी अमरीकी बैंकर से पूछा, "मित्रराष्ट्र सोवियता क विरुद्ध ऐम खार खाये क्या बैठे है? क्या न रूस को एक विशाल वनानिक प्रयाग मान लिया जाये? क्यो न इन स्वप्नदर्शिया को अपनी समाजवादी योजनाग्रा के कार्यान्वयन का अवसर दिया जाये? जब उनके सपने कोरे सपने ही रह जाये और हवाई किला टूट जाये, तो आप सदा समाजवाद की घार विफलता के उदाहरण क रूप म इस ओर सकेत कर सकेंगे।'

उस अमरीकी बैंकर ने जवाब दिया "बात तो आपकी बढिया है किन्तु यदि मान ल कि यह प्रयोग विफल न हुआ तब? उस समय हमारी स्थिति क्या हागी?'

मित्रराष्ट्र यही चाहते थे कि समाजवादी योजना विफल हो जाय ग्रार बडी उत्सुकता से सावियता के पतन की प्रतीक्षा करते रहे। परन्तु ऐसा न हुआ। इसी कारण मित्रराष्ट्र आप से वाहर हुए जा रह थ। सावियतो की सफलता के चिह्न दृष्टिगाचर हो रहे थे। उनकी बदौलत अव्यवस्था नही, बल्कि व्यवस्था अराजकता नही, बल्कि सुसगठित प्रणाली कायम हो रही थी। आर्थिक और फौजी क्षेत्रा म इनकी स्थिति सुदृढ हाती जा रही थी। सास्कृतिक एव राजनयिकता के क्षेत्रा म भी य प्रगति के पथ पर अग्रसर थी। हर क्षेत्र म ये अपनी उपलब्धिया का पुष्ट कर रही थी।

साम्राज्यवादियो के मार्ग मे सोवियत आडे आ गई थी। यदि उनकी शक्ति नष्ट की जाती तो साम्राज्यवादियो की योजनाए निष्फल विफल हो जाती। तब वे रूस के अपरिमित साधनो के स्वच्छन्दतापूर्वक शोषण की आशा नही कर सकते।*

इसलिए सोवियत को कुचल देने का फरमान जारी हुआ। अब साम्राज्यवादियो ने निर्णय किया कि सोवियत के बहुत अधिक शक्तिशाली और सबल होने के पूर्व ही इसे निश्चित रूप से खतम कर देना चाहिए।

प्रतिक्रांतिवादियो ने चेकोस्लोवाकिया के सैनिको से काम निकाला

प्राणघातक प्रहार करने के लिए चेकोस्लोवाकिया के सैनिको से काम लेने की बात सोची गई। फ्रासीसी अफसर इसी काम के लिए उन्हे चुपके चुपके तैयार कर रहे थे। इन अनुभवी एव कुशल फौजो के सैनिक दस्ते पहले से तैयार की गई रणनीतिक योजना के अनुसार ट्रास-साइबेरियाई लाइन के किनारे किनारे तैनात थे। इनमे से १५,००० व्लादीवास्तोक मे थे, जो सोवियतो की कृपा से यहा आये थे, उन्ही से भोजन पाते थे और यहा से यूरोप भेजे जानेवाले थे।

फ्रासीसियो ने कहा कि उन्हे पश्चिमी मोर्चे पर ले जाने के लिए जहाज आ रहे है। प्रति सप्ताह यह सूचना दी जाती कि जहाज मार्ग मे है और आने ही वाले है। परन्तु जहाज नही पहुचे। इन चेक सैनिको को

---

* अब हम रूस मे जो कुछ देख रहे है, वह है उसके अपरिमित कच्चे माल को हथियाने के लिए बडे सघर्ष की शुरुआत," 'रोस्सीया' (रूस) नामक आग्ल रूसी वित्तीय क्षेत्रो की पत्रिका ने मई १९१८ मे लिखा था।

"नगर की घटनाए अधिकाधिक ऐसा रुख लेती दिखाई दे रही है कि रूस मे भी मिस्र के लिए तयार की गई ब्रिटिश योजना के अनुरूप अतर्राष्ट्रीय सरक्षण कायम हो जायेगा। ऐसा हो जाने पर रूसी प्रतिभूति अतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्तम तत्व मे रूपान्तरित हो जायेंगे, — लन्दन फाइनेशल न्यूज', नवम्बर १९१८।—लेखक का नोट

यहा से हटान का फ्रासीसिया का काई इरादा नहा था। उनका इरादा सोवियना को कुचल डालन के लिए यही साइबेरिया म उनम काम लेने का था।

चेक सैनिक पहले से ही उद्विग्न थे व निष्क्रिय हान क कारण चिडचिडे हा गय थे। ग्रास्ट्रिया ग्रौर जमनी क प्रति उनम गहरी पुश्तनी घणा की भावना भरी हुई थी। फ्रासीसिया न उह बताया कि लाल फौज म ग्रास्ट्रिया एव जमनी के हजारो सनिक हैं। बडी हाशियारी मे उनकी दशभक्ति की भावनाए जगाकर फ्रासीसिया न उनके सम्मुख यह चित्र प्रस्तुत कर दिया था कि सोवियते ग्रास्ट्रिया व जमनी की दोस्त तथा चेकोस्लोवाकिया के निवासिया की शत्रु हैं। उन्हान इस प्रकार झगडा पदा कर दिया ग्रौर उह सावियता पर हमला करने के लिए तयार कर लिया। हर स्थान की स्थिति के ग्रनुकूल ग्राक्रमण के तरीके ग्रपनाये गय।

यहा ब्लादीवोस्तोक पर ग्रचानक हमला करना ग्रावश्यक समझा गया। योजना यह बनाई गई कि सोवियत का ग्रसावधान कर दिया जाय ग्रौर तब ग्रचानक हमला किया जाय। इस योजना को ग्रमल म लान क लिए दोस्ती का प्रपच रचकर सोवियन को उल्लू बनाना जरूरी था। यह काम ग्रग्रेजा को सौंपा गया। उन्हाने विरोधी भावना के परित्याग का ढोग कर बाल्शेविको के प्रति सदभावना का रख ग्रपनाने का नाटक किया।

ब्रिटिश कासल ने मानो सच्चे दिल से मैत्री की भावना प्रदर्शित करते हुए सोवियता के प्रति पहले की शत्रुतापूण एव विरोधी भावना त्यागन तथा सम्योनोव का साथ देने की बात स्वीकार की। ग्रब चूकि सावियत न ग्रपन ग्रस्तित्व का कायम रखने के बारे मे ग्रपने ग्रधिकार को प्रमाणित कर दिया है, इसलिए ब्रिटेन उसे ग्रपनी सहायता प्रदान करेगा। ग्रग्रेज प्रारम्भ म मशीना के ग्रायात मे सहयोग करेंगे। इसके पश्चात शुक्रवार—२८ जून १९१८—को तीसरे पहर दो मिलनसार ग्रधिकारी वहा सुखानोव से मिलने ग्रौर उनके प्रति ग्रपनी सम्मान की भावना प्रकट करन ग्राये तथा यह सूचना दी कि क्रूजर 'सफफोल्क' द्वारा प्राप्त खबरे प्रति दिन सोवियत समाचारपत्रा म प्रकाशनाथ सोवियत का भेज दी जाया करगी।

सम्पादकगण ग्रौर विशेष रूप से जेरोम लीफ्शित्स बहुत प्रसन्न हुए। वे रूसी द्वीप म मेरे पास ग्राये ग्रौर मुझसे मित्रराष्ट्रा के ग्रात्म समपण को समारोहपूवक मनान का ग्राग्रह किया। उनका यह ग्रानदातिरेक बहुत

उचित भी था। अभी तक उनका काय धुधलके और रात के अधेरे म
पहाड पर चारो ओर चढने के समान रहा था। अब अचानक बादल छ
गये और नीला आकाश दिखाई देने लगा था।

दूसरे दिन सुबह साढे आठ बजे ऐसा लगा, जैसे नीले आसमा
स बिजली गिर पडी हो। अपन सोवियत कार्यालय मे बैठे हुए सुखानाव
सबमे पहले यह वज्रपात हुआ—चेका की ओर से एक अल्टीमेटम भेजा गया
था। इसम बिना शत सोवियत के आत्म समपण की माग की गई थी
सभी कायालया से सोवियत कमचारी बाहर निकल जायें, सभी सोवि
सैनिक हाई स्कूल के मैदान म जाकर अपने हथियार जमा कर दे
इस काय के लिए आध घटे का समय दिया गया था।

सुखानोव दौडे हुए चेको के सदर मुकाम गये और उन्होंने सावि
की बैठक बुलाने की अनुमति प्रदान करने का आग्रह किया।

चेक कमाडर ने रुखाई से कहा, हा, यदि आप आध घटे म
कर सके।

जब सुखानोव वहा से चलने के लिए मुडे तो उन्ह गिरफ्तार
लिया गया।

ये घटनाए पर्दे के पीछे हो रही थी। नगरवासिया को इन बा
कोई जानकारी नही थी। केवल एक या दो कमिसारो को इन दु खद
का कुछ आभास मिल गया था, जो तत्काल घटनेवाली थी। स्वेत्ल
राजपथ पर लाल नौसैनिक भवन के पास प्रोमिस्की स मेरी भेंट
जो अपने जूतो पर पालिश करवा रहा था।

मैंने कहा, "सुबह ही सुबह बहुत राज धज रहे ह।
उन्होने सिगरेट जलाते हुए असमान्य भाव स उत्तर दिया
हो सकता है कि कुछ ही मिनट म मुझे किसी लम्प पोस्ट पर ल
जाये और म चाहता हू कि मेरी लाश यथासभव अच्छी दिखाई
आश्चय म पडकर उनकी ओर घूरने लगा और सोचने लगा कि
क्या है।

अब भी अनुत्तेजित एव मुस्कराते हुए उन्होंने अपने
स्पष्ट किया, " ... शासन के लिए खतरनाक हो गये। चेक
... कर रही है।'

वे अभी मुझसे बात कर ही रहे थे कि मैंने सडक के छोर पर फौज पहुंचती देखी और गलियां भी सैनिकों से भर गई। नावों से खाडी पार कर तथा युद्धपोतों की बडी नावों से तट पर पहुचकर सैनिक नगर के सभी इलाकों में फैलते जा रहे थे। ऊपर पहाडियों से और नीचे पुल से होते हुए हस्तक्षेपकारियों की फौजे घने कुहरे की भांति नगर पर छा गई। सभी खाली जगहों पर सैनिक भरे हुए थे, वे हथियारों से अच्छी तरह लैस और हथगोले लिये हुए थे। यह दृश्य बहुत अनिष्टकारी प्रतीत हुआ। सारे नगर को ध्वस्त कर देने के लिए उनके पास पर्याप्त विस्फोटक पदार्थ थे।

योजना के अनुसार नगर पर अधिकार स्थापित करने का कार्य तेजी से यंत्रवत चल रहा था।

जापानियों ने बारूदखाने पर और ब्रिटिश सैनिकों ने रेलवे स्टेशन पर कब्जा जमा लिया। अमरीकी सैनिकों ने कौंसल कार्यालय के इर्द गिर्द घेरा डाल दिया। चीनियों एवं अन्य देशों के सैनिकों ने अपेक्षाकृत कम महत्व की जगहों पर अपना कब्जा जमाया। चेक सैनिकों ने सोवियत भवन के पास जमा होकर इसे चारों ओर से घेर लिया। जोरों से जयध्वनि करते हुए वे आगे बढे और धमाके की आवाज के साथ दरवाजों को तोडते हुए अन्दर घुस गये। सोवियत जनतंत्र के लाल झण्डे को नीचे गिरा दिया गया और उसकी जगह निरंकुश जारशाही का लाल, सफेद व नील रंग का झंडा फहरा दिया गया। व्लादीवोस्तोक पर साम्राज्यवादियों का अधिकार कायम हो गया।

सडक पर जोरों से यह स्वर गूंज उठा, 'सोवियत का पतन हो गया!' और दावाग्नि की भांति यह बात सारे शहर में फैल गई। 'ओलिम्प्या काफे' के शौकीन खुशी से पागल होकर सडक पर निकल आये और हवा में अपने हैट उछाल उछालकर चेक सैनिकों का हर्षध्वनि से स्वागत करने लगे। सोवियत और इसके सारे कामों को वे अभिशाप मानते थे। अब सोवियत का पतन हो गया। मगर यही पर्याप्त नहीं था। वे इसका प्रत्येक चिन्ह मिटा डालना चाहते थे।

उनके सम्मुख फूलों की क्यारियां थीं, जिनके किनारों पर पत्थर लगे हुए थे। वहां **"मजदूरों के प्रतिनिधियों की सोवियत"** अंकित था। लोहे के घर को फांदकर उन्होंने पत्थरों को ठोकरें मार मारकर इधर उधर बिखरा दिया,

फूलों को पैरों से रौंद डाला और इस अभिशप्त प्रतीक की अंतिम जड़ को समूल नष्ट कर देने के लिए फूलों के पौधे उखाड़ डाले।

अब उनका खून उबल पड़ा था। प्रतिशोध की भावना उत्तेजित हो गई थी। अब वे अपनी आग ठंडी करने के लिये किसी इनसान के खून में हाथ रंगना चाहते थे।

पूँजीपतियों द्वारा प्रतिशोध की माँग

मुझे भीड़ में देखकर उन्होंने बड़ा शोरगुल मचाया, "उत्प्रवासी! अमरीकी बदमाश!" वे आवेश में जोरों से चिल्ला पड़े, 'इसे खत्म कर दो, इसका गला घोंट दो, इसे फाँसी पर लटका दो!' मुक्के ताने और गालियाँ देते हुए सट्टेबाजों की भीड़ मेरे इर्द गिर्द जमा होने लगी।

परन्तु मेरे पास ही जिन लोगों का दूसरा घेरा बन गया, उन्होंने मुझ पर प्रहार करने की कोई कोशिश नहीं की। मैं आश्चर्य में था कि आखिर ऐसा क्यों है? वे सोवियत के समर्थक थे। मुझे बचाने के लिये उन्होंने मेरे और मुझ पर चोट करनेवालों के बीच घेरा डाल दिया।

धीरे से एक आवाज सुनाई पड़ी, 'लाल नौसैनिक भवन की ओर बढ़ो। दौड़ना नहीं, सामान्य रूप से चलना!' पीछे की भीड़ से धक्के खाते हुए मैं जैसे तैसे लाल नौसैनिक भवन की ओर अग्रसर हुआ। इसके दरवाजे के सामने मेरे कानों में यह शब्द सुनाई पड़ा—'दौड़ो!" मैं भागता हुआ अन्दर घुस गया और इसके चक्करदार गलियारों में जाकर छिप गया। मेरा पीछा करनेवाले नीचे रह गये और वहाँ चेक सैनिकों से उलझते रहे।

इस भवन की तीसरी मंजिल पर सामने की ओर मैंने एक ऐसी खिड़की देखी, जहाँ से शहर दिखाई पड़ता था। इस सुविधाजनक स्थान से मैं बाहर होनेवाली सभी घटनाओं को देख सकता था और स्वयं लोगों की नजर से बचा रह सकता था। स्वेत्लान्स्काया राजपथ के ऊपरी और निचले भाग में उत्तेजित लोगों की बड़ी भीड़ जमा हो गई थी। केवल बीस मिनट पूर्व सुबह की चमकती धूप में इस सड़क पर बिल्कुल शान्ति थी, मगर अब शोरगुल करते और तरह-तरह की रंग बिरंगी पोशाकें पहने हुए

लोगो की भीड जमा हो गई थी। नीले रग की जैकेट और सफेद मोजे पहले जापानी सनिक, यूनियन जैक लिये हुए अग्रेज नामनिक और खाकी वर्दी धारण किये तथा हरे व श्वेत रग का अपना ध्वज लिये हुए चेक सनिक सडक पर उमडती हुई भीड के बीच से इधर से उधर चक्कर काट रहे थे। लोगो की भीड प्रतिक्षण बढती ही जा रही थी।

पूजीपतियो के क्षेत्रो म यह खुशखबरी कि "मानियत का पतन हो गया" बडी तेजी से फैल रही थी। अच्छी पोशाके पहन, मस्कराते हुए पूजीपति इस घटना की खुशी मनाने के लिये कहवाघरो और बठकखानो से बाहर निकलते आ रहे थे। स्वेतलास्काया राजपथ अब भव्यविहार स्थल बन गया था, भीड मे चटकीले रग बिरगे फ्राक, आभूषण और महिलाओ की छतरिया अपनी बहार दिखा रही थी। कुछ महिलाए बहुत ही सज धज कर निकली और बहुत ही खुश थी। पूवसूचना होने के कारण उन्हे सजने धजने का पूरा समय मिल गया था। अफसर भी पूरे ठाठ बाट से सडक पर निकल पडे—सुनहरे रिबन एव स्कधाभरण मे अलकृत तथा बडे जोश के साथ फौजी सलामी देते हुए वे या तो महिलाओ के साथ अथवा छोटी टोलियो के रूप म सडक पर चल रहे थे। उनकी सख्या सैकडो म थी। यह सोचकर आश्चय होता था कि व्लादीवास्तोक म इतने सारे अफसर कहा से जमा हो गये।

और यहा पूजीपति भी तो कितने अधिक थे! बढिया पोशाको म, गोलमटोल तादल, जो देखने मे स्वय कार्टून की भाति प्रतीत हो रहे थे। वे एक दूसरे का अभिवादन कर रहे थे, उनके चेहरे खुशी स चमक रहे थे, बडे उत्साह से एक दूसरे से हाथ मिला रहे थे, एक दूसरे को अपनी बाहो म भर रहे थे, चूम रहे थे और इस प्रकार उछल उछलकर जोरो से "सोवियत का पतन हो गया" कह रहे थे, मानो ईस्टर का अभिवादन कर रहे हो! दो बहुत ही मोटे पुराने नौकरशाहो ने जो खुशी से प्राय पागल हो रहे थे, एक दूसरे का आलिगन पाश म बाध लेना चाहा मगर उनकी तोदें आडे आ गईं। आलिगन के प्रयास म उन्होने एक दूसरे की तोद को बहुत जोर से दबाया। ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी तोदे फट जायगी।

सर्वहारा वग के इस नगर का स्वरूप अविश्वसनीय तर्जो म बदल गया।

फूलो को पैरा से रौद डाला और इस अभिशप्त प्रतीक की अंतिम जड को समूल नष्ट कर देने के लिए फूला के पौधे उखाड डाले।

अब उनका खून उबल पडा था। प्रतिशोध की भावना उत्तेजित हो गई थी। अब वे अपनी आग ठडी करने के लिये किसी इनसान के खून स हाथ रगना चाहते थे।

पूजीपतियो द्वारा प्रतिशोध की माग

मुझे भीड मे देखकर उन्होने बडा शोरगुल मचाया, "उत्प्रवासी! अमरीकी बदमाश!' वे आवेश म जोरो से चिल्ला पडे, "इसे खत्म कर दो, इसका गला घोट दो, इसे फासी पर लटका दो!" मुझे ताने और गालिया देते हुए सट्टेबाजो की भीड मेरे इर्द गिर्द जमा होने लगी।

परन्तु मेरे पास ही जिन लागो का दूसरा घेरा बन गया, उन्होने मुझ पर प्रहार करने की कोई कोशिश नही की। मैं आश्चर्य म था कि आखिर ऐसा क्या है? वे सोवियत के समर्थक थे। मुझे बचाने के लिये उन्होने मेरे और मुझ पर चोट करनेवाला के बीच घेरा डाल दिया।

धीरे से एक आवाज सुनाई पडी, "लाल नौसैनिक भवन की ओर बढो। दौडना नही, सामान्य रूप स चलना!" पीछे की भीड से धक्का खाते हुए मैं जैसे-तैसे लाल नौसैनिक भवन की ओर अग्रसर हुआ। इसके दरवाजे के सामने मेरे काना मे यह शब्द सुनाई पडा—"दौडो!' म भागता हुआ अन्दर घुस गया और इसके चक्करदार गलियारा म जाकर छिप गया। मेरा पीछा करनेवाले नीचे रह गये और वहा चेक सैनिका से उलझते रहे।

इस भवन की तीसरी मजिल पर सामने की ओर मैने एक ऐसी खिडकी देखी, जहा से शहर दिखाई पडता था। इस सुविधाजनक स्थान से मैं बाहर होनेवाली सभी घटनाओ को देख सकता था और स्वय लोगा की नजर से बचा रह सकता था। स्वेतलान्स्काया राजपथ के ऊपरी और निचले भाग म उत्तेजित लोगो की बडी भीड जमा हो गई थी। केवल बीस मिनट पूर्व सुबह की चमकती धूप म इस सडक पर बिल्कुल शान्ति थी, मगर अब शोरगुल करते और तरह-तरह की रग बिरगी पोशाके पहने हुए

लोगो की भीड जमा हो गई थी। नीले रग की जैकेटे और सफेद मोजे पहले जापानी सैनिक, यूनियन जैक लिये हुए अग्रेज नौसैनिक और खाकी वर्दी धारण किये तथा हरे व श्वेत रग का अपना ध्वज लिये हुए चेक सैनिक सडक पर उमडती हुई भीड के बीच से इधर से उधर चक्कर काट रहे थे। लोगो की भीड प्रतिक्षण बढती ही जा रही थी।

पूजीपतियो के क्षेत्रो मे यह खुशखबरी कि "सोवियत का पतन हो गया" बडी तेजी से फैल रही थी। अच्छी पोशाकें पहने, मुस्कराते हुए पूजीपति इस घटना की खुशी मनाने के लिये कहवाघरो और बैठकखानो से बाहर निकलते आ रहे थे। स्वेतलान्स्काया राजपथ अब भ्रमणविहार-स्थल बन गया था, भीड मे चटकीले रग बिरगे फाक, आभूषण और महिलाओ की छतरियाँ अपनी बहार दिखा रही थी। कुछ महिलाए बहुत ही सज धज कर निकली और बहुत ही खुश थी। पूर्वसूचना होने के कारण उन्हे सजने धजने का पूरा समय मिल गया था। अफसर भी पूरे ठाठ-बाट से सडक पर निकल पडे—सुनहरे रिबन एव स्कधाभरण से अलकृत तथा बडे जोश के साथ फौजी सलामी देते हुए वे या तो महिलाओ के साथ अथवा छोटी टोलियो के रूप मे सडक पर चल रहे थे। उनकी सख्या सकडो मे थी। यह सोचकर आश्चर्य होता था कि व्लादीवोस्तोक मे इतने सारे अफसर कहा से जमा हो गये।

और यहा पूजीपति भी तो कितने अधिक थे! बढिया पोशाको मे, गोलमटोल, तोदल, जो देखने मे स्वय कार्टून की भाति प्रतीत हो रहे थे। वे एक दूसरे का अभिवादन कर रहे थे उनके चेहरे खुशी से चमक रहे थे, बडे उत्साह से एक दूसरे से हाथ मिला रहे थे, एक दूसरे को अपनी बाहो मे भर रहे थे, चूम रहे थे और इस प्रकार उछल-उछलकर जोरो से "सोवियत का पतन हो गया" कह रहे थे, मानो ईस्टर का अभिवादन कर रहे हो! दो बहुत ही मोटे पुराने नौकरशाहो ने, जो खुशी से प्राय पागल हो रहे थे, एक दूसरे को आलिगन पाश मे बाध लेना चाहा, मगर उनकी तोदें आडे आ गईं। आलिगन के प्रयास मे उन्होंने एक दूसरे की तोद को बहुत जोर से दबाया। ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी तोदें फट जायगी।

सर्वहारा वर्ग के इस नगर का स्वरूप अविश्वसनीय तेजी से बदल गया।

यह अचानक अच्छे खाते पीते और बढिया पहनने ओढनेवालो का नगर बन गया। उनके चमकते हुए चेहरे जयाल्लासपूर्ण थे, व एक दूसरे को बधाई दे रहे थे, ईश्वर एव मित्रराष्ट्रो की सराहना और चेक सनिको का जयजयकार कर रहे थे।

बेचारे चेक सैनिक! इस हृषध्वनि से वे व्यग्र एव लज्जित प्रतीत हो रहे थे। किसी रूसी मजदूर से भेंट होते ही उनके सिर शर्म से झुक जाते थे। कुछ चेक सैनिको ने मजदूर वर्ग की सरकार का गला घोटने के इस कुत्सित कार्य में भाग लेने से साफ साफ इनकार कर दिया। उनमें से किसी को भी स्वय उन्ही जैसे मजदूरो को कुचलने और पूंजीपति वर्ग को खुशी मनाने का यह अवसर देने का कार्य पसन्द नही था। और पूंजीपति केवल गाजे बाजे एव फरहरो के साथ जुलूस के रूप में सडको पर निकलकर सामान्य ढग से रंग रेलिया मनाने से ही सतुष्ट नही थे। वे रोम के मनिको की भांति बलि चढाकर और खून में होली खेलकर खुशी मनाना चाहते थे। वे उन मजदूरो से बदला लेना चाहते थे, जो यह भूल गये थे कि समाज में उनका क्या स्थान है।

पूंजीपति जोर जोर से चिल्ला रहे थे, हम अब उन्हे उनकी ठीक जगह पर पहुंचा देंगे! हम उन्हे प्रकाश खम्भो पर लटकाकर सूली देंगे। ये लाल रंग पसन्द करते हैं न? तो ठीक है हम उनकी नसो से उनका लाल खून निकालकर सब कुछ उनके प्रिय रंग में रंग देंगे।'

उन्होने चेक सैनिको से हिंसात्मक काण्ड करने का आग्रह किया। उन्होने स्वय हत्याकाण्ड में भाग लेना चाहा। वे प्रमुख मजदूरो के नाम लेकर उन्हे फासने थे और उनके विरुद्ध मुखबिरी करने को तयार थे। वे जानते थे कि कमिसार कहा मिलेंगे और राह दिखाते हुए कार्यालयो एव कारखानो में जा रहे थे।

नीचतापूर्ण काले कारनामे करनेवाले पुराने शासन के गुप्तचर, उत्तेजना फैलानेवाले और दस्यु दल भी बहुत सक्रिय हो गये। अपनी मांदो से बाहर निकलकर वे पुन अपने कुत्सित कार्यों में सलग्न हो गये। बाल्शेविको के विरुद्ध अपने नृशस कृत्यो से वे पूंजीपति वर्ग का कृपापात्र बनाना चाहते थे। वे लकडबग्घो की भांति सर्वत्र घुस रहे थे, यहा तक कि जिस इमारत में मैं छिपा हुआ था, वे वहा भी आ घुसे।

अचानक ऊपर की सीढ़ियों से चीखने चिल्लाने, गालियां देने और ठोकर मारने की आवाजें सुनाई पड़ी। ऊपर की मंजिल में पार्टी कार्यालय पर हमला करनेवाले चार व्यक्तियों ने जाया को पकड़ लिया था। वह अकेली उनका प्रतिरोध कर रही थी और हर कदम पर उनके पंजे से मुक्ति पाने का प्रयास कर रही थी। उसके हाथ मरोड़ते, मुक्कों से पीटते और धक्के देते हुए वे उसे बाहर सड़क पर खींच ले गये और वहां से जेल ले गये। सारे नगर में इसी प्रकार की घटनाएं हो रही थी। कमिसार और मजदूर कार्यालयों, कारखानों और बैंकों में अपना अपना काम कर रहे थे। अचानक दरवाजे खोल दिये जाते, उन पर आक्रमणकारी टूट पड़ते और उन्हें बाहर खींच लाते।

राजपथ के बीचोबीच एक संकरी गली सी बन गयी। वहीं से गिरफ्तार करनेवाले बंदियों को हथकड़िया-बेड़ियों में जकड़े अथवा पकड़े हुए तथा उनकी ओर पिस्तौल एवं संगीन ताने हुए ले जा रहे थे। लोग उन पर आवाजें कस रहे थे, ताने मार रहे थे और उपहास करते हुए सीटियां बजा रहे थे। उनके चेहरों पर कसकस कर मुक्कों के प्रहार हो रहे थे। भीड़ इस तंग मार्ग में घुसकर और पकड़े गये व्यक्तियों का रास्ता रोककर कुछ के मुंह पर थूकती और कुछ को मारती पीटती।

बैंकों के कमिसार पर तो वे सबसे अधिक क्रोधोन्मत्त होकर टूट पड़े। उसके कार्य का प्रत्यक्ष रूप से उनके सबसे महत्वपूर्ण केंद्र – वित्तीय स्रोत – पर प्रभाव पड़ा था। वे गुस्से से चिल्ला रहे थे, उसे अपमानित कर रहे थे और ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वे उसके टुकड़े टुकड़े कर देंगे। सफेद पोशाक पहने हुए एक महाशय, जिसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था, पिस्तौल हिलाता हुआ चेक रक्षकों के बीच से आगे बढ़ गया तथा अपने हाथों से कमिसार को पकड़कर और एक जंगली की भांति चीखता चिल्लाता हुआ उसकी बगल में ऐंठकर चलने लगा।

वे एक एक करके कमिसारों को धक्के देते एवं ढकेलते हुए इस गलियारे से ले जा रहे थे, जहां क्रोध से टेढ़ी भौंहें किए, उपहासपूर्ण मुद्रा और घृणा से विकृत चेहरे वाले लोग इस दृश्य को देखने के लिए जमा थे। इस भीड़ के प्रतिकूल उनकी मुखाकृति आश्चर्यजनक रूप से सौम्य एवं शांत थी। कुछ के चेहरे पीले पड़ गये थे, मगर सामान्यतः वे साहसपूर्ण

ग्रार प्राय निडर दिखाइ पड रह थ। वे सजग थे ग्रौर हर चीज को बहुत ही दिलचम्पी स दख रह थे। इन व्यक्तिया ने जीवन म कठिनाइया झेली थी ग्रौर सघप किय थे। उहान जीवन के सब उतार चढाव देखे थे – जेल की काल कोठरिया के कप्ट उठाने के साथ वे राज्य के उच्च कार्यों का दायित्व भी ग्रहण कर चुके थ। उह ग्रनक सकटा एव ग्रप्रत्याशित परिस्थितिया का सामना करना पडा था। घटनाक्रम के इस मोड पर ग्रब कान-सी नयी ग्राश्चयजनक बात हानवाली थी? सर्वाधिक भयानक ग्रौर शायद ग्रतिम घटना। यदि ऐसा ही है, ता यह घटना भी घट जाय। उह मत्यु स बहुत कम भय था। बहुत पहले जब उहाने क्रान्ति के लिए ग्रपन का समर्पित कर दिया था, तभी मौत के डर से निजात पा ली थी। उहान उसी समय ग्रपना सवस्व, यहा तक कि ग्रपना जीवन भी, क्रान्ति की रक्षा के लिए न्योछावर कर दिया था।

व क्रांति के सैनिक थे। जब उसन उनका ग्राह्वान किया, वे सिर पर कफन बाधे निकल पडे। क्रान्ति के लिए जहा उनकी ग्रावश्यकता हुई, वे वहा चले गय। उहाने ग्रनुशासित ढग से बिना किसी चू चपड के क्रान्ति के लिए कठिन-से-कठिन काम पूरा किया। जार के शासनकाल म उन्हाने क्रान्ति के लिए ग्रादोलनकारियो की भूमिका ग्रदा की। उहाने सोवियत का शासन कायम होने पर कमिसारा के पद सम्भाले। उहान क्रान्ति के ग्राह्वान पर विश्राम, ग्राराम ग्रौर स्वास्थ्य की चिता किये बिना नवनिर्माण के लिए कठार परिश्रम किया ग्रौर इसी म सुख पाया। ग्रब क्रान्ति के लिए प्राणात्सग करन का समय ग्रा गया था। क्या इस सर्वोच्च त्याग मे उह सबसे ग्रधिक प्रसनता प्राप्त न होगी?

मेल्निकाव के चेहर से ये सारी भावनाए बहुत ग्रच्छी तरह प्रकट हा रही थी। शत्रुग्रा की धिक्कार, गुराहट ग्रौर क्रोध भरी ग्रनाप शनाप बकवास क इस वज्र झझावात के बीच से सूय की चमकती किरण की भाति व मुस्करात हुए ग्राये। स्वेत्लास्काया का ग्रथ है "प्रकाशमान पथ"। मेर मन मे यह पथ सदा के लिए इसी रूप म – इस मजदूर की मुस्कान स ग्रालोकित – रहेगा। उनके मुख पर ता कुछ ऐसी दिव्य-सी ग्राभा थी जिस शब्दा म व्यक्त करना सम्भव नही। मुक्के सहन करते, उपहासजनक बात सुनते, शत्रुग्रा के थूकन पर हमत ग्रौर पहाडी पर चढत हुए व उसी

महनतवश जनता के प्रतीक दिखाई पड रहे थे, जो बहुत पुराने समय से ऐसी ही अग्नि परीक्षाओं के बीच से गुजरती हुई आगे बढती रही है। यह कोई "करण पथ" नही, बल्कि "विजय पथ" था, जहा से मेल्निकोव एव विजता के रूप म जा रहे थे। उनके चेहरे पर मुस्कान की छटा थी, उनकी चमकीली आखो मे और चमक आ गई थी तथा उनका रग रूप और अधिक दीप्तिमान हो गया था। कर्कश स्वर मे एक व्यक्ति चिल्ला उठा, 'बदमाश! इसे फासी दे दो!' मेरिनकोव केवल मुस्करा दिये। एक ने उनके गाल पर जोरा से घूसा मारा। वे फिर मुस्करा पडे। यह उस व्यक्ति की मुस्कान थी, जो भीड की हेय भावनाओ स बहुत ऊपर था और जिसकी श्रेष्ठ भावनाओं को यह प्रहार एव उपहास के शब्द स्पश भी नहा कर सकते थ। यह घणा करनेवाला के लिए दया की मुस्कान थी। क्या मेल्निकोव को स्वय अपनी उस मुस्कान की शक्ति का आभास था? क्या उन्हें इस बात का अनुभव हो सका था कि उन्होंने उस दिन अपनी ओर देखनवाला पर मौन विजय प्राप्त कर ली थी? उनकी मुस्कान चुम्बक के समान थी, जो सशयशील एव दोलायमान व्यक्तियो को क्रान्ति के शिविर की ओर आकृष्ट कर रही थी। इसके साथ ही वह न्याय की तलवार के समान थी, जिसने प्रतिक्रान्तिवादियो के शिविर म हड्कम्प मचा दिया था।

वे मेरिनकाव की इस मुस्कान और सुखानाव की हसी का बर्दाश्त न कर सके। व खीज उठे और उन पर यह मुस्कान एव हसी हावी हो गयी। पूजीपति वग की यही इच्छा थी कि सडको पर इन दोना युवकों का मार पीट कर खत्म कर दिया जाय। परन्तु फिर भी इन्हे मार डालन की उनकी हिम्मत न हुई। इन दोना कमिसारो की हत्या नही की गई, बल्कि उन्हे जेल मे डाल दिया गया।

सोवियत का गला घोट दिया गया

मित्रराष्ट्र उस समय मजदूरा की सामूहिक हत्या के विरुद्ध थ। वे इस बात के लिए आतुर थे कि यह हस्तक्षेप लोकशाही के लिए धमयुद्ध प्रतीत हो और सब लोग इसका स्वागत करे। इसलिए इन फौजी हस्तक्षेप

कारिया ने अभी तक इस बात पर पर्दा डाले रखने की कोशिश की थी कि वे *जारशाही के समर्थक और घोर प्रतिक्रियावादी हैं। मित्रराष्ट्रों की योजना के* अंतर्गत साइबेरिया पर टूट पड़ने के लिए व्लादीवोस्तोक को आधार बनाना था। वे नहीं चाहते थे कि यह आधार रक्तपात से फिसलाऊ हो जाय। तट से दूर के प्रदेशों में साइबेरिया के अंदरूनी भागों में किसानों एवं मजदूरों के खून की चाहे धारा बह उठे, परन्तु समुद्री बन्दरगाह वाले इस नगर में ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि दुनिया के लोगों से यह बात छिपी नहीं रह सकेगी। कुछ लाल गार्ड एवं मजदूर जहां थे, वहीं गोलियों से भून डाले गये। परन्तु सामान्य रूप से इस नगर में खून की नदी नहीं बही। अचानक हमला करने और फौजों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण सोवियत को कुचल दिया गया।

केवल एक ही स्थान पर, खाड़ी के तट पर, सोवियत शक्तियों को *जमा होकर शत्रुओं से मोर्चा लेने का अवसर मिला। उस जगह* भारी सामान लादनेवाले, जहाजी कुली, कोयला निकालनेवाले और अन्य मजदूर इकट्ठे थे। वे मूलतः किसान थे—लम्बे बालोंवाले और कठिन काम के कारण हट्टे-कट्टे। राज्य एवं राजनीति की जटिल समस्याएं उनकी समझ के परे थीं। मगर वे इस एक साधारण तथ्य को अच्छी तरह समझते थे कि पहले वे गुलाम थे और अब स्वतंत्र हैं! पशु के दर्जे से उठाकर उन्हें मनुष्य के दर्जे पर पहुंचा दिया गया है। और वे जानते थे कि सोवियत ने ही यह सब कुछ किया है।

वे अब यह देख रहे थे कि सोवियत का अस्तित्व खतरे में है। वे तेजी से पड़ोस के लाल सदर मुकाम के भवन में प्रविष्ट हो गये, उन्होंने भीतर से दरवाजे बन्द कर लिये, पीछे से रोक भी लगा दी, ताकि वे खुलने न पायें, बचाव के लिए खिड़कियों के पास अवरोध खड़े कर दिये और हाथों में बन्दूकें लिए शत्रुओं पर प्रहार करने के लिए अपनी-अपनी जगह पर मुस्तैदी से डट गये। उन्होंने निर्णय कर लिया कि हर कीमत पर सोवियत के लिए वे इस स्थान को अपने कब्जे में बनाये रखेंगे।

परिस्थिति हर दृष्टि से उनके प्रतिकूल थी। केवल दो सौ मजदूर और दूसरी ओर बीस हजार अनुभवी सैनिक। पिस्तौल मशीनगनों के खिलाफ, राइफलें तोपों के खिलाफ। परन्तु मजदूरों की इस गढ़-सेना में

क्रान्ति की आग भभक रही थी। नाति न न्न कोयना ढानेवाला के मन म जो बाहर से देखन म जड भद्दे एव निश्चेष्ट प्रतीत हाने थ, जोश एव वीरता की भावना जगा दी थी। वे निडर चस्त और साहसी हा गये थे। तीसरे पहर तक व शत्रुआ की फौजो के फौलादी घेरे म आ गय और यह घेरा घनतर एव निकटतर होता जा रहा था। उन्होन आत्म समपण कर देने की हर माग निर्भीकता के साथ ठुकरा दी। जब रात हो गयी, तो भी खिडकिया से उनकी बन्दूका के महनाल चमक रहे थ।

एक चेक सैनिक अधेरे म ज़मीन पर रेगता हुआ इमारत के निकट पहुच गया और उसने भवन की एक खिडकी म आगलगाऊ बम फक दिया, जिससे इमारत म आग लग गई। बन्दरगाह के मजदूरा का यह गढ अब उनकी चिता बन जानेवाला था। चारा ओर से आग की लपटा और धुए के बादल म घिर जाने पर वे अधेरे म टटोलत, ठाकर खाते हुए और आत्म समपण के लिए हाथ उठाये सडक पर आ गये। आत्म समपण के बावजूद कुछ मजदूरा की वही हत्या कर दी गई कुछ का इतन बबर ढग से बन्दूक के कुन्दा से पीटा गया कि व अचेत हा गये। शेप व्यक्ति जेल भेज दिये गये।

प्रतिरोध कुचल दिया गया। सोवियत नष्ट कर दी गई। इस पडयन्त्र की सफलता पर मित्रराष्ट्र स्वय अपन का बधाई द रहे थ। पूजीपति बहुत ही प्रमुदित थे। धनिका के घरा और जलपान गहो की खिडकिया म राशनी चमक रही थी। वहवाघरो स गीत और आर्केस्टा की धुनें सुनाई पड रही थी। आनन्द मनानेवाले हस और नाच रह थे और मित्रराष्ट्रो के सैनिका का हषध्वनि से एव तालिया बजाकर अभिनन्दन कर रहे थे। गिरजाघरा के घण्टे टनटना उठे घण्टियो की सुरीली ध्वनि तथा घण्टा की घनघनाहट स वातावरण गूज उठा—पादरी ज़ार के लिए प्रायनाए करन लगे। खाडी के पार युद्धपोता के डेका से बिगुल बज उठे। प्रतिक्रान्तिवादी नगर भर म रग रेलिया और खुशी मनाने लगे।

मगर मजदूरा के इलाका म उदासी छायी हुई थी। वहा नीरवता व्याप्त थी, जिसे सिफ स्त्रियो की रोने की आवाजे भग कर रही थी। पर्दो के पीछे वे मौत के घाट उतार दिये गय अपन सगे सम्बन्धिया की लाश दफनान के लिए तैयार कर रही थी। पास ही के ओसारे स हथाटे म

ठोकने पीटने की आवाज सुनाई पड रही थी। वहा पुरुष लकडी के खुरदरे तख्तो को कीलो से जोडकर अपने मत साथियो के लिए ताबूत तैयार कर रहे थे।

अठारहवा अध्याय

लाल मातमी जुलूस

वह चार जुलाई का दिन था। मैं कितायस्काया सडक पर खडे होकर व्लादीवोस्तोक की खाडी मे समारोही ढग पर झण्डो से सजे सजाये अमरीकी युद्धपोत 'ब्रुकलिन' को देख रहा था। तभी अचानक मुझे बहुत दूर से आवाज सुनाई पडी। कान लगाकर मैं इस आवाज को सुनने लगा और क्रान्तिकारी शोक गीत की पक्तिया मेरे कानो तक पहुची

> हम उदास और दुखी मन से
> अपने उन मत साथियो की
> लाशें दफनाने जा रहे हैं,
> जिन्होने स्वतन्त्रता के सघर्ष मे
> अपना रक्त-दान दिया है।

ऊपर पहाडी की चोटी की ओर देखने पर एक बडे जुलूस की अगली कतार के लोग मुझे दिखाई पडे। यह लाल सदर मुकाम के भवन के घेरे मे चार रोज पूर्व शहीद हुए बन्दरगाह के मजदूरो का लाल मातमी जुलूस था।

लोग शोक एव आतक की भावना से ऊपर उठकर आज नष्ट सोवियत के इन रक्षको की लाशें दफनाने के लिए विशाल जुलूस के रूप मे चले आ रहे थे। मजदूरो के इलाको से समूह के समूह बाहर निकल आये थे और उनसे सडक खचाखच भर गयी थी। लहरो की भाति हजारो की सख्या मे वे पहाडी के शिखर पर पहुच गये थे और पूरी लम्बी ढलान उनसे ढक गई थी। क्रान्तिकारी शोक सगीत की शोकपूर्ण ध्वनि के साथ भीड बहुत धीरे धीरे आगे बढ रही थी।

स्त्रिया एव पुरुषा क भूर और काले रग के समूह के बीच सफेद पाशाक पहन हुए बोल्शेविक नौसनिक बेडे के नाविक दो पक्तिया म चल रहे थे। रुपहली डारिया और झालरा वाले लाल यण्डो के वादन उनके सिरा के ऊपर तरगित हा रहे थे। सबस आगे चार व्यक्ति एक बडे लाल यण्डे को लिये हुए चल रहे थे, जिस पर य शब्द अकित थे, "मजदूरा और किसाना के प्रतिनिधिया की सोवियत जिन्दाबाद! महनतकशा की अन्तर्राष्ट्रीय भाईबन्दी की जय!

नगर की चवान्नीस यूनियना की ग्रार से ताजा पुष्पमालाए लिये श्वेत परिधान म एक सौ लडकिया मृत मजदूरा के गिद सम्मान गारद के रूप म चल रही थी। ताबूता का लाल रग अभी गीला ही था, मतको के साथी उन्ह अपन कन्धो पर लिये चल रहे थ। लाल नौसेना का बैण्ड शोकपूण धुनें बजा रहा था जो तीस हजार व्यक्तियो द्वारा गाये जानेवाल शोक-गीता के स्वर म डूब जाती थी।

यह शवयात्रा विभिन्न रगा, ध्वनि एव गति का सम्मिश्रण थी। परन्तु इसके अतिरिक्त भी कुछ था और उसी कुछ स भय एव श्रद्धायुक्त विस्मय की भावना पदा हाती थी। म पत्रोग्राद और मास्को म बीसिया बडे बडे जुलूस देख चुका था, म शान्ति एव विजय दमन विरोधी एव श्रद्धाजलि अपित करन के निमित्त आयाजित नागरिका के विराट प्रदशन तथा फौजी परड भी देख चुका था और वे बहुत प्रभावकारी होते थे। केवल रूसी ही ऐसे हृदयस्पर्शी प्रदशना का आयोजन कर सकते हैं।

परन्तु यह सबसे भिन्न था।

नीचे बन्दरगाह म मित्रराष्ट्रो के नौसैनिक बेडे के युद्धपाता पर लगी गारह इची नाल वाली तोपो की तुलना म शस्त्र रहित, अपने मृत साथिया के ताबूत कन्धा पर लिये एव शोकपूण गीत गाते हुए कब्रिस्तान जानेवाले इन अरक्षितो का जुलूस बहुत अधिक भयावह प्रतीत होता था। इसे अनुभव किये विना रहा ही नही जा सकता था। कारण कि यह जुलूस बहुत सहज, बहुत स्वत स्फूत और स्वाभाविक था। इस जुलूस म लोग अपनी ही हार्दिक इच्छा से शामिल हुए थे। अपन नेताओ से वचित, बुरी तरह कुचला गया सामान्य जन समुदाय अब अपने साधनो के सहारे था, मगर शोक एव

व्लादीवास्तोक में प्रतिक्रान्तिवादियों के विद्रोह के शहीदों का
मातमी जुलूस

दुःख के बावजूद बड़े शानदार ढंग से स्वयं अपनी कमान सभालने निकल पड़ा था।

सोवियत के भंग हो जाने से लोग गहरे शोक में डूबकर निष्क्रिय नहीं हो गये और अपनी शक्तियों को छिन्न भिन्न करने की जगह उनमें आश्चर्यजनक एकता की भावना पैदा हुई। तीस हजार व्यक्ति एकता के सूत्र में आबद्ध थे। तीस हजार लोग एक ही स्वर में गा रहे थे और एक ही ढंग से सोच रहे थे। उन्होंने अपने वर्गीय दृष्टिकोण – क्रान्तिकारी सर्वहारा वर्ग के दृढ़ दृष्टिकोण के अनुसार सामान्य जन संकल्प और जन चेतना से व्यवस्थित रूप में अपने निर्णय किये थे।

चेक फौजी अधिकारियों ने सम्मान गारद की व्यवस्था करने का सुझाव प्रस्तुत किया। लोगों ने उन्हें उत्तर दिया, 'इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। आप लोगों ने हमारे साथियों की हत्या की। एक के विरुद्ध चालीस के अनुपात में जमा होकर उनके विरुद्ध लड़ाई लड़ी। उन्होंने सोवियत के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया और हम उन पर गर्व है। हम आपकी

धयवाद देते है, मगर जिन सनिको न उनकी हत्या की है, उन्हे उनक तावूतो के साथ चलन की इजाजत हम नही दे सकते।"

इस पर चेको ने कहा, 'मगर इस नगर मे ग्राप लोगो के लिए खतरा हो सकता है।"

उन्होने उत्तर दिया, इसकी चिन्ता मत कीजिये। हम भी मौत से नही डरते। ग्रौर हमे ग्रपन साथियो की ताशो की बगल म मरन से बेहतर मौत कहा मिल सक्ती है?"

कुछ पूजीवादी सगठनो की ग्रोर से पुष्पाजलि ग्रर्पित करन के लिए फूलो की मालाए लाई गयी।

लागो ने उत्तर दिया, "इसकी कोई जरूरत नही है। हमारे साथियो न पूजीपति वग के खिलाफ सघप म ग्रपन प्राण होम दिये। वे ईमानदारी से लडते हुए खेत रहे। हम उनकी पुण्य स्मति की पवित्रता कायम रखेगे। हम ग्रापको धयवाद देते ह, मगर ग्रापकी पुष्पमालाग्रो को उनके तावूतो पर नही रख सकते।

जुलूस ग्रलेऊत्स्की पहाडी के नीचे तलहटी की खाली जगह म जाकर रुक गया। सभी ब्रिटिश कासल कार्यालय की ग्रोर देखने लगे। वहा बायी ग्रोर मरम्मती मोटर-गाडी खडी थी, उस पर बिजली के तारो की मरम्मत के लिए बुज लगा हुग्रा था। मुझे मालूम नही कि वह जानबूझकर ग्रथवा सयोग से वहा खडी कर दी गई थी। परन्तु इस समय उससे भापण मच का काम लिया जानवाला था।

वण्ड ने मद स्वर मे शोकपूण धुन बजाई। पुरुषो न सिरो स टोपिया उतार ली। स्त्रियो ने सिर झुकाकर ग्रपनी मौन श्रद्धाजलि ग्रपित की। बैण्ड का बजना वद हो गया ग्रौर वहा गम्भीर शान्ति छा गई। वण्ड ने दूसरी बार शोकपूण धुन बजाई। पुरुषो न पुन टोपिया उतार ली ग्रौर स्त्रियो न फिर सिर झुकाये। पुन काफी दर तक नीरवता व्याप्त रही। फिर भी कोई वक्ता बोलने के लिए मच पर नही ग्राया। मुझे मुक्त ग्राकाश के नीचे होनेवाली 'सोसायटी ग्राफ फ्रेण्डस की सभा का स्मरण हो ग्राया। जिस प्रकार रूसी सावजनिक प्राथना म प्रवचन नही कहे जाते उसी प्रकार लोक श्रद्धाजलि के इस काय म भापण ग्रावश्यक नही था। किन्तु यदि इस विशाल जन समुदाय म किसी के मन म भापण दन की

भावना पदा हो जाती, तो वहा मन जगा हुआ था और उसे वक्ता की प्रतीक्षा थी। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे जनता इस कुछ देर के विराम मे अपनी आवाज को बोलने की शक्ति प्रदान कर रही थी।

भीड म से आखिर एक व्यक्ति बोलने के लिए आगे आ गया और ऊचे मच पर चढ गया। वह भाषण देने की कला म पटु नही था, मगर उसने अपने भाषण मे अक्सर यह दुहराया कि "उन्होने हमारे लिए प्राणोत्सर्ग कर दिये' और इस ममस्पर्शी सहज कथन से प्रभावित होकर दूसरे वक्ता भी मच पर आने लगे।

पहले कृपक वेप भूषा म दाढीवाला एक सवलाया हुआ किसान मच पर आया। उसने कहा, "म जीवन भर कठिन परिश्रम करता रहा और भयग्रस्त रहा। जार के निरकुश एव अत्याचारपूर्ण शासनकाल म हम लगातार क्लेश एव उत्पीडन वर्दाश्त करते तथा मरते रहे। शान्ति के अरुणोदय के साथ य आतक और अत्याचार समाप्त हुए। मजदूर एव किसान बहुत खुश थे और मै भी बहुत प्रसन्न था। परन्तु अचानक हमारी खुशियो के बीच हम पर यह प्रहार हुआ। एक बार पुन हमारे चारो ओर अधकार छा गया है। हम विश्वास नही होता, मगर यहा हमारी आखो के सामने ही हमारे उन भाइयो और साथियो की लाशें पडी हुई है, जिन्होने सोवियत के लिए सघर्ष किया। उत्तर में हमारे अन्य साथियो को बदूको से भूना जा रहा है। हम कान लगाये हुए यह सुनने को आतुर हैं कि दूसरे देशो के किसान और मजदूर हमारी रक्षा के लिए आ रहे है। किन्तु ऐसा नही होता। हम तो केवल यही सुनते है कि उत्तर म हमारे साथियो पर गोली वर्षा हो रही है।"

ज्यो ही इस किसान ने अपना भाषण समाप्त किया, त्यो ही सफेद पोशाक म एक आकृति नीले आकाश की पृष्ठभूमि मे दिखाई पडी। एक महिला मच पर भाषण देने के लिए चढ गई थी। लोगो की भावनाओ को व्यक्त करते हुए उसने कहा

"अतीत मे हम स्त्रियो को अपने पुरुषो को जबरन युद्धो मे लडने के लिए भेजना पडता था और फिर हम घरो मे विलाप किया करती थी। जो हम पर शासन करते थे, वे हमसे कहा करते थे कि यही ठीक है और हमारे गौरव के लिए यह आवश्यक है। हमसे बहुत दूर वे युद्ध हुआ करते

ये और हम सारी बाते समझ नही पाती थी। परन्तु यहा तो हमारी आखो के सामने ही हमारे पुरुष मारे गये। हम इसे समझ सकती हैं और हमारा यह मत है कि यह न तो उचित है और न इसमे कोई गौरव ही है। यही नही, बल्कि यह तो निमम एव निष्ठुर अ याय है और मजदूर वग की माताओ के गभ से पैदा होनेवाले प्रत्येक बच्चे के कानो तक इस अ याय की कहानी पहुचेगी।"

युवा समाजवादी सघ के मत्री, एक सत्रह वर्षीय युवक का भाषण बहुत जोरदार एव प्रभावशाली रहा। उसन कहा हमारे सगठन म छात्र, कलाकार और इसी प्रकार के लोग शामिल थे। हमने सोवियत से अपन को दूर रखा। हमे ऐसा प्रतीत होता था कि मजदूरो के लिए प्रगतिशील व्यक्तियो की समय-बूझ के बिना शासन करना मूखता की बात है। किन्तु अब हम समझ गये हैं कि आप सही रास्ते पर थे और हम गलती कर रहे थे। अब आगे हम आपके साथ रहगे। जो आप करेंगे, वही हम करगे। हम आज यह शपथ ग्रहण करते हैं कि अपनी वाणी एव लेखनी से सारे रूस तथा विश्व भर के लोगो को यह बतायेंगे कि आपके साथ कितना बडा अ याय हुआ है।"

अचानक भीड मे यह बात फैल गई कि कोस्तातीन सुखानाव को पाच बजे तक के लिए परोल पर छोड दिया गया है और वे शाति एव सयम से व्यवहार करने की सलाह देने आ रह ह।

जबकि कुछ लोग उनके आन की पुष्टि और कुछ उसका खण्डन कर रहे थे, तभी वे स्वय वहा उपस्थित हो गये। नाविको न तत्काल उन्ह अपने कधो पर उठा लिया। वे तुमुल हषध्वनि के बीच सीढियो पर चढ और मुस्कराते हुए मच पर पहुचे

उन्होने दो बार अपनी आखे उठाकर मदान मे खडे लोगो की ओर देखा, जो विश्वास एव स्नेह की भावना से अपन चेहरे उनकी ओर किए अपने युवा नता के शब्दो को उत्सुकता के साथ सुनने की प्रतीक्षा कर रह थे।

गहरे शोक और मनोवेदना की बाढ के थपेडो से बचने के लिए उन्होन अपना मुह दूसरी ओर कर लिया। उनकी दृष्टि पहली बार मत साथियो के लाल ताबूतो पर पडी, जिन्हे सोवियत की रक्षा करत समय मौत के

घाट उतार दिया गया था। यह दर्दनाक दृश्य असहनीय था। उनके सारे शरीर में कपकपी दौड़ गई, वे शोक में डूब गये, उन्होंने अपने हाथ फैला दिये लड़खड़ाये और यदि एक दोस्त ने उन्हें सम्भाल न लिया होता, तो वे मंच पर से सीधे भीड़ में नीचे गिर गये होते। दोनों हथेलियों से मुँह ढाँप हुए सुखानोव साथियों की बाहों में बच्चे की भाँति बिलख बिलखकर रोने लगे। वे दीर्घ निःश्वास ले रहे थे और उनके गालों पर अश्रु धारा बहती दिखाई दे रही थी। सामान्यतः रूसियों की आँखों से कम ही आँसू निकलते हैं, परन्तु उस दिन व्लादीवोस्तोक के सार्वजनिक चौक में तीस हजार रूसी अपने युवक नेता के साथ रो पड़े।

मृत साथियों के नाम पर शपथ

सुखानोव जानते थे कि यह रोने धोने का समय नहीं है, यह समझते थे कि उन्हें बड़ा एवं गंभीर कार्य करना है। उनके पीछे पचास फुट की दूरी पर ब्रिटिश कौंसर कार्यालय था और सामने दो सौ मीटर की दूरी पर ज़ोलोतोय रोग खाडी में मित्रराष्ट्रों के नौसैनिक बेड़े तैयार खड़े थे, जिनके युद्धपोतों पर गोले उगलने के लिए तोपें लगी हुई थी। उन्होंने अपनी वेदना एवं व्यथा पर काबू पाकर तथा साहस व धैर्य बटोरते हुए भाषण देना शुरू किया। उनका हर शब्द दिल की गहराई से आ रहा था और उसमें ईमानदारी, आन्तरिकता और जोश झलक रहा था। जिन शब्दों के साथ उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया, वे निश्चय ही व्लादीवोस्तोक और सारे सुदूर पूर्व के श्रमिकों को संघर्ष के लिए पुनः एकत्र करने का नारा बन गये

'यहाँ लाल सदर मुकाम के भवन के सामने, जहाँ हमारे साथियों का वध किया गया, हम उन लाल ताबूतों के नाम पर, जिनमें वे चिरनिद्रा में सो रहे हैं, उनकी स्त्रियों और बच्चों के नाम पर, जो उनके लिए विलाप कर रहे हैं उन लाल फरहरों के नाम पर जो उनके ऊपर फहरा रहे हैं आज यह शपथ ग्रहण करते हैं कि जिस सोवियत के लिए उन्होंने अपने प्राणों की बलि दी, हम उसकी मर्यादा की रक्षा करेंगे अथवा यदि आवश्यकता हुई, तो उन्हीं की भाँति अपने जीवन न्योछावर कर देंगे। अब

आगे हमारे सभी त्याग बलिदान एव निष्ठा का एकमात्र लक्ष्य पुन सोवियत को सत्तारूढ बनाना होगा। इस उद्देश्य की सफलता के लिए हम प्रत्येक साधन जुटाकर सघष करेंगे। हमारे हाथो से बन्दूके छीन ली गई ह किन्तु सघष का समय आन पर हम लाठिया एव डण्डा से लडगे आग जब य भी हमारे पास न होगे, ता केवल मुक्का एव लाता से शत्रुआ पर प्रहार करगे। अब इस समय हम केवल अपन विवक एव भावनाआ के बल पर शत्रुआ से लडना है। इसलिए हमे उन्ह दढ और स्थिर बनाना चाहिए। सोवियत जिन्दाबाद।"

भीड न भाषण के अन्तिम शब्दा का अधिकाधिक जार स कई बार दोहराया और फिर 'इटरनशनल गूज उठा। उसके बाद क्रान्ति के मातमी जुलूस सम्बन्धी गीत की निम्न पक्तिया सुनाई दन लगी जा शाकपूण होन के साथ साथ ही विजय की सूचक भी थी

> तुमन जन-स्वातन्त्र्य के लिए जन-सम्मान क लिए
> प्राणघाती युद्ध म अपने प्राणा की आहुति दी
> तुमन अपना जीवन बलिदान किया
> और अपना सब कुछ हाम कर दिया।
> समय आयगा, जब तुम्हारा अर्पित जीवन रग लायगा,
> वह समय आन ही वाला है,
> अत्याचार ढहगा और जनता उठेगी—स्वतन्त्र और महान।
> अलविदा, भाइयो! तुमन अपन लिए महान पथ चुना।
> हम तुम्हारी समाधि पर शपथ उठात ह
> हम सघष करेंगे, आज़ादी के लिय और जनता की खुशी क लिए

एक प्रस्ताव पढकर सुनाया गया, जिसम यह घाषणा की गई थी कि सुदूर पूव के क्रान्तिकारी सवहारा वग और किसाना के सभी भावी सघर्षो का मुख्य लक्ष्य सोवियता को पुन स्थापित करना होगा। ऊपर उठे हुए तीस हजार हाथा न इसका अनुमादन किया। ये वही हाथ थे, जिन्हाने मोटर गाडिया तयार की थी, सडक बनाई थी लाह का ढाला था, खेत जातन के लिए हल चलाया था और कारखाना म हथौडा स काम किया था। उनम

सभी प्रकार के हाथ थे पुराने जहाजी कुलिया के बडे एव कडे हाथ, शिल्पकारो के निपुण एव पुष्ट हाथ, कठोर परिश्रम करने के कारण खुरदरे और गाठदार हुए किसानो के हाथ और श्रमिक महिलाओ के हजारो हाथ। इन्ही हाथो के परिश्रम से सुदूर पूर्व की सारी सम्पदा अर्जित हुई थी। घावो के निशानो वाले और गन्दे मन्दे ये हाथ वसे ही थे, जसे कि दुनिया के किसी भी हिस्से के मजदूरो के हो सकते ह। यदि कोई अन्तर था, तो यही कि कुछ समय के लिए उन्होने सत्ता पर अपना अधिकार कायम कर लिया था। कुछ समय पहले सरकार उनके नियन्त्रण मे थी। चार दिन पूर्व उनके हाथ से सत्ता छीन ली गई थी, पर उसकी अनुभूति अभी भी बाकी थी। अब उसी सत्ता पर पुन अधिकार स्थापित करने के लिए इन्ही हाथो को ऊपर उठाकर पवित्र व्रत ग्रहण किया गया था।

"अमरीकी हमे समझते ह"

एक नाविक पहाडी की चोटी से जल्दी-जल्दी नीचे उतरकर भीड को धकियाता हुआ मच पर जा चढा।

बहुत ही प्रसन्न मुद्रा म उसने चिल्लाकर कहा, 'साथियो, हम अकेले नही हैं। मैं आप लोगो से उधर अमरीकी युद्धपोत पर फहराते हुए झण्डा की ओर देखने का अनुरोध करता हू। आप जिस जगह खडे है, वहा से उन्ह नही देख सकते। किन्तु वे झण्डे वहा फहरा रहे ह। साथियो, आज अपने शोक के समय हम अकेले नही हैं। अमरीकी हमे समझते ह और वे हमारे साथ ह!"

यह निश्चय ही गलती थी। यह चार जुलाई का दिन था। अमरीकी स्वाधीनता दिवस समारोह के उपलक्ष्य मे ये झण्डे लहरा रहे थे। मगर भीड को इस बात की जानकारी नही थी। जसे किसी अजनबी देश म कोई अकेला यात्री अचानक किसी मित्र के मिल जाने पर खिल उठता है, वसे ही यह भीड भी खुश हो उठी।

बडे उत्साह के साथ उन्होने नाविक के इस नारे को अपना लिया, "अमरीकी हमारे साथ ह!" श्रमिको का विशाल समुदाय सभा स्थल से अपने मत साथियो के ताबूतो, पुष्पमालाओ और फरहरो को लिये हुए

पुन वहा से गतिमान हुआ। वे कब्रिस्तान की ओर बढ़े, परन्तु सीधे ही नही। यद्यपि बहुत दर तक धूप म खडे रहन के कारण वे थक गये थे, फिर भी उस माग पर पहुचन के लिए, जो खडी ढालू वाली पहाडी से होते हुए अमरीकी कोसल कार्यालय तक जाता था, चक्करदार रास्ते से चल पडे। गद-गुवार का सामना करते और अभी भी गात हुए उन्होने यह कष्टप्रद माग तय किया और उस ध्वज-स्तम्भ के सामने पहुच गये, जिस पर अमरीकी झण्डा लहरा रहा था। वही वे रुक गये और उन्होंने अमरीकी झण्डे के नीचे अपने मत साथियो के तावूत रख दिये।

उन्होंने अपने हाथ फैलाकर अनुरोधपूवक कहा हम कुछ तो कहिये!" उन्होंने अमरीकी कोसल कार्यालय के अधिकारियो से भाषण देन का अनुरोध करन के लिए अपन प्रतिनिधि अन्दर भेजें। जिस दिन पश्चिम का महान गणराज्य अपने स्वाधीनता दिवस का समारोह मना रहा था उसी दिन रूस के गरीब और अभागे लोग अपने मुक्ति-संघष म अमरीका की महानुभूति प्राप्त करने एव समझदारी का दष्टिकोण अपनाने का आग्रह करन वहा गये थे।

मन बाद मे एक बोल्शेविक नेता के मुख से "क्रान्तिकारी सम्मान एव ईमानदारी के साथ समझौता' करने के इस रवये की कडी आलोचना सुनी।

उन्होने कहा, 'यह उनकी कितनी बडी मखता थी! यह बहुत ही विवेकशून्य काय था! क्या हमने उन्हे यह नही बताया था कि सभी साम्राज्यवादी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे ह? क्या उनके नेताओ ने कई बार उन्हे यह बात नही बताई थी?'

यह तो सच है, परन्तु चार जुलाई के इस प्रदशन के आयोजन म नेताओ का कोई हाथ नही था। वे जेल म थे। सभी कुछ स्वय जनता के हाथ म था। और नेता अमरीका की घोषणाओ एव दावा के बारे मे चाहे जितने भी सन्देहशील रह हो, परन्तु जनता का ख्याल ऐसा नही था। सरल, दूसरो के कथन मे विश्वास करनवाले, पूव मे नये समाजवादी जनतन्त्र के ये संस्थापक अपनी मुसीबत के समय पश्चिम के पुरातन राजनीतिक जनतन्त्र से सहायता प्राप्त करने की भावना से वहा गये थे। व जानते

थे कि राष्ट्रपति विलसन ने "रूसी जनता" को सहायता प्रदान करने एव उसके प्रति वफादार रहने का आश्वासन दिया है। उन्होने तब किया हम मजदूर और किसान, जिनका व्लादीवोस्तोक म भारी बहुमत है, क्या हम जनता नही ह ? आज सकट के समय हम वही सहायता प्राप्त करन आये है, जिसका हम आश्वासन दिया गया है। हमारे शत्रुओ ने हमारी सोवियत को खत्म कर दिया है। उन्होने हमारे साथियो का वध किया है। हम इस समय अकेले और कष्ट म है और विश्व के सभी राष्ट्रो म अकले आप ही हमारी स्थिति को अच्छी तरह समझ सकते ह।" वे अमरीका क प्रति इससे और अधिक श्रद्धा क्या प्रकट कर सकते थे? वे अपने मृत साथियो के ताबूत लेकर वहा आये थे और उनका विश्वास था कि अमरीका उनक प्रति सहानुभूति एव समझदारी का दृष्टिकोण अपनायेगा, वही अमरीका, जो उनका एकमात्र मित्र और आसरा है।

परतु अमरीका ने उन्हे नही समझा। अमरीकी जनता ने इस बारे म एक शब्द भी नही सुना। इस रूसी जनता को यह ज्ञात नही था कि अमरीकी जन साधारण ने कभी भी इस बारे म कुछ नही सुना था। उन्हे केवल इतना ही मालूम था कि इस अपील के कुछ सप्ताह बाद समुद्र पार कर अमरीकी फौजें यहा उतरी। अमरीकी सनिक जापानी फौजो के साथ मिलकर साइबेरिया म घुसते हुए किसानो और मजदूरो को अपनी गोलियों से भूनने लगे।

और अब ये रूसी लोग एक दूसरे स कहते है, "भिखारियो की भाति उस धूप और धूल मे हाथ फलाय खडे रहकर हमने कितनी बडी मूर्खता की थी!'

उन्नीसवा अध्याय

प्रस्थान

जब मित्रराष्ट्रो की फौजो ने साइबेरिया म अपनी हस्तक्षेपमूलक सनिक कारवाई शुरू की, तो "विनजना" ने कहा, 'बोलशेविक अडे के छिलको की भाति पीस दिये जायेगे।' सख्त सोवियत प्रतिरोध के विचार का मजाक उडाया गया। जार की सरकार और उसके बाद केरेन्स्की की सरकार घरौंदे

की भांति भहराकर गिर पडी थी। सोवियत सरकार का भी ऐसा ही हाल क्या न होगा?

अमरीकी मेजर थैचर ने इस सिलसिले में यह कहा जार की शक्ति उसकी फौजों पर आधारित थी, यह शक्ति समाप्त करने के लिए केवल इन फौजों का वियोजन काफी था और ऐसा होते ही जार का पतन हो गया। केरेंस्की की सरकार मन्त्रिमण्डल के सहारे थी और उसे खत्म करने के लिए केवल उतना ही जरूरी था कि इसके मन्त्रियों को शिशिर प्रासाद में गिरफ्तार कर लिया जाये और ऐसा होते ही केरेन्स्की की सरकार खत्म हो गयी। मगर सोवियत सरकार की जड हजारों स्थानीय सोवियतों में जमी हुई थी। यह एक ऐसा विशाल सगठन था जो असंख्य छोटे सगठनों से बना हुआ था। सोवियत सरकार को मिटाने के लिए इन पृथक सगठनों में से प्रत्येक को खत्म करना जरूरी था। और यह सम्भव नहीं था क्योंकि उन्हें नष्ट होना पसन्द नहीं था।

सुदूर पूर्व से खतरे की घंटी बजते ही किसान और मजदूर आक्रमणकारियों के खिलाफ संयुक्त रूप से मोर्चा लेने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने घमासान लडाई की। चप्पा चप्पा जमीन के लिए घोर युद्ध हुआ। ब्लादीवोस्तोक के उत्तर में स्थित दो नगरों में एक व्यक्ति का भी खून बहाये बिना सोवियतों की स्थापना हो गई थी। मगर इन सोवियतों को खत्म करने के लिए हजारों व्यक्तियों की हत्याएं की गई और घायलों से केवल अस्पताल ही नहीं, बल्कि सारे शेड एवं गोदाम भी भर गये थे। सोवियतों में "सर सपाटा" करने की जगह हस्तक्षेपकारियों को प्रचंड खूनी संघर्ष का सामना करना पडा।

ब्लादीवोस्तोक का पूंजीपति वर्ग यह कडा प्रतिरोध देखकर आश्चर्यचकित रह गया। क्षुभित वह आग बबूला होकर सोवियतों के सभी समर्थकों पर टूट पडा।

मुझे भी जरा गिरफ्तार कर लिया गया

मेरे मन में शहीद होने की तनिक भी अभिलाषा नहीं थी। मैं इसीलिए मुख्य सडक पर जाने से बचता था और छिपकर सकरी गली के रास्ते से बाहर निकलता था। परन्तु इससे मुझे कोई सन्तोष नहीं हुआ। मैं इस

के बारे म अपनी पुस्तक की पाण्डुलिपि के लिए चिन्तित था। वह सोवियत भवन म थी जो अब नयी प्रतिक्रान्तिवादी सरकार का सदर मुकाम बन गया था।

मैंने निश्चय किया कि इसे प्राप्त करने का एकमात्र तरीका यही है कि म खुले रूप मे शत्रु शिविर म जाकर उसे माग लू। मने यही कदम उठाया और सीधे नयी गुप्तचर सेवा के प्रधान के हाथो मे पड गया।

उसने उपहासजनक मुस्कान के साथ कहा, "म तो खुद आपकी तलाश मे था। आप स्वय ही यहा चल आय, इसके लिए धयवाद। अब आप यही रहेंगे।' इस तरह मैं प्रतिक्रान्तिवादियो द्वारा बदी बना लिया गया।

सौभाग्य से अमरीकियो म मेरा एक पुराना सहपाठी फ्रेड गुडसल भी वहा उपस्थित था। उसने मेरी ओर से बातचीत करके मुझे रिहा करा दिया, परन्तु मेरी पाण्डुलिपि मुझे नही दी गई।

रिहाई के बाद मैं अपने निवास स्थान पहुचा। मगर जरूर किसी गुप्तचर ने मुझे देखकर सफेद गार्डो को टेलीफोन पर इसकी सूचना द दी होगी। म जब अपने कागज पत्र ठीक करने म व्यस्त था तभी एक मोटर गाडी के रुकने की आवाज सुनाई पडी। ६ सफेद गार्ड मोटर-गाडी से उछलकर बाहर निकले, मेरे कमरे मे तेजी से घुस आये और मेरे मुह की ओर अपनी पिस्तौल ताने हुए चीखने लगे "आखिर हमारे हत्थे चढ ही गये! अब बचकर न जा सकोगे।"

मैंने विरोध करते हुए कहा, 'परन्तु म तो गिरफ्तारी के बाद रिहा भी कर दिया गया हू।'

उन्होंने चिल्लाकर कहा, "कमीने कुत्ते, हम तुम्हे बदी बनाने नहीं जा रहे हैं। हम तुम्हे यही मार डालेंगे।"

फिर बाहर कुछ शोर हुआ। एक दूसरी मोटर-गाडी आकर वहा रुकी। फिर स दरवाजे को ठोकर मारी गई फिर वह फटाक की आवाज के साथ खुल गया। एक कप्तान और चार राइफलधारी सैनिक कमरे म घुसे। वे चेक फौजी थे। उन्होंने कहा कि हम आपको गिरफ्तार करने का आदेश दिया गया है।

सफेद गार्डों ने उनसे कहा किन्तु हम तो इसे पहले ही बंदी बना चुके हैं।'

चेक सनिको ने जोर देकर कहा, नहीं हम इसे गिरफ्तार करके अपने साथ ले जायेंगे।"

सफेद गार्डों ने हठ करते हुए कहा, "किन्तु हमने इसे पहले पकड़ा है।"

मेरे लिए यह सचमुच ही बहुत मनोरंजक दृश्य था क्योंकि मुझे इतना खतरनाक और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति माना जा रहा था। मगर संगीना की उपस्थिति के कारण मेरे इस मनोरंजन का मजा जरा किरकिरा हो गया। उनकी संख्या काफी थी और वे उन्हें इस्तमाल करने को भी बहुत आतुर थे। चुनांचे मैं बंदी की जगह लाश में भी बदल सकता था। संयोग से चेक कप्तान विनोदप्रिय व्यक्ति था।

उसने अपना सिर झुकाकर मुझसे पूछा इस सम्बन्ध में आपकी इच्छा क्या है? आप किसका बंदी होना पसंद करेंगे?

मैंने उत्तर दिया, "आपका चेरो का।

कप्तान ने बड़े ही बांकपन के अन्दाज में सफेद गार्डों की ओर मुड़कर कहा, 'महाशयो, यह आपका बंदी है।'

उसने अपने सैनिको को मेरे कागजों की छान-बीन करने की छूट दे दी। (बाद में वे कागज पत्र अमरीकी कांसल को भेज दिये गये)।

सफेद गार्डों ने मुझे पकड़कर अपनी मोटर-गाड़ी में ठूस लिया और कुछ दिन पहले जिस नगर में मैं सोवियत के अतिथि के रूप में गुजर चुका था, वहीं अब सफेद गार्डों के बंदी के रूप में तनी हुई संगीनों से घिरा हुआ जा रहा था और दो पिस्तौल मेरी पसलियों के साथ सटी हुई थीं।

सफेदों का सदर मुकाम उत्तेजित पूंजीपतियों और उनके समर्थकों की भीड़ से घिरा हुआ था। वे वहां लालों की गिरफ्तारियों का दृश्य देख रहे थे और प्रत्येक बन्दी का मजाक उड़ाते थे तथा उन्हें देखते ही यह नारा लगाते थे, 'इसे फांसी पर लटका दो!' सी-सी, हू-हू करनेवाली, उपहासजनक सीटियां बजाने एवं अपमानजनक बातें कहनेवाली इस भीड़ के बीच में मुझे इमारत के अन्दर पहुंचाया गया और वहां मुझे अपने पुराने परिचित स्वीर्स्की के हाथों में सौंप दिया गया। उसा

मुझे सकत किया कि म यह प्रकट न कर्‍ कि मैं उसे पहचान रहा हू और उपयुक्त समय पर मुझे रिहा करा दिया। इस बार रिहाई के समय मुझे एक कागज दिया गया जिस पर लिखा था, "नागरिको, आप लागा स प्राथना है कि अमरीकी नागरिक विलियम्स को गिरफ्तार न करे।"

स्वदेश की ओर

मगर इस कागज से रक्षा की कम ही आशा थी, क्योकि दिन प्रतिदिन सावियत के विरुद्ध घृणा की भावना इतनी उग्र होती जा रही थी कि कुछ भी हा सकता था। म अपन को हर समय शिकारिया के घेरे म अनुभव करता था और दस दिन म मेरा दस पौण्ड वजन कम हो गया। अमरीकी वाइस कोसल ने मुझसे कहा, आप किसी भी क्षण अपने जीवन से हाथ धा सकते ह। दा दला न आपको देखते ही गोली मार देने की प्रतिज्ञा की है।'

मैंने उन्हे बताया "म स्वय यहा से जान को आतुर हू, परन्तु मरे पास जाने का खच नही है।" उन्होन मेरी कठिनाई और उलझन तो समझी परन्तु यह महसूस नही किया कि इससे उनका भी कोई सम्बन्ध है।

मजदूरा न मेरी दुदशा की बात सुनी और सहायता की। वे स्वय कठिन स्थिति म थे, परन्तु फिर भी उन्हान मेरे लिए एक हजार रूबल जमा किए। जो लोग जेल मे थे, उन्होने भी गुप्त रूप स एक हजार रूबल और मेरे पास भिजवा दिए। म अब जाने के लिए तैयार था। परन्तु जापानी कोसल ने मुझे वीजा देने से इनकार कर दिया। उन्होने मरे सम्मुख मेरे अपराधो की सूची प्रस्तुत कर दी जिनमे से मुख्य अपराध यह था कि मन सोवियत पत्रो म फौजी हस्तक्षेप के खिलाफ लेख लिखे थे। जापानी विदश मत्रालय को ये लेख पसन्द नही आए थे। उसने तार द्वारा जापानी कोसल कार्यालय को सूचित कर दिया था कि किसी भी दशा म मरी उपस्थिति से जापान की पवित्र भूमि को दूषित करन की अनुमति प्रदान न की जाये। किन्तु चीनियो न मुझे वीजा दे दिया और मन शघाई जानवाले एक तटपोत का टिकट खरीद लिया।

मन व्लादीवास्तोक के एक गुप्त स्थान म साथिया क बीच अपना अन्तिम रात व्यतीत की। सोवियत का अन्त नहीं हुआ था। वह गुप्त रूप से काय कर रही थी। जो सोवियत नेता अभी नहा ... गये ... व इस गुप्त स्थान म आन्दोलन की योजना तयार ... ... के लिए जमा हुए थे। उन्हाने मुझे विदाई देते हुए मेरे ... म अग्रेज परिवहन मजदूरा का गीत गाया, जिसे जेराम न उन्ह ... था

वीरो, मोर्चे पर डटे रहो
हम तुम्हारी सहायता के लिए आ रहे ...!
यूनियन के सदस्यो, मुड ... ना
हम भी सघष करते हुए गतिमान ...
निश्चय ही विजय हमारी होगा!

११ जुलाई को मित्रराष्ट्रा के युद्धपाता को पीछे छोडते हुए जब मैं अपनी यात्रा पर रवाना हुआ और मेरा जहाज प्रशान्त महासागर म ... लगा तो उस समय भी उक्त गीत के शब्द मेरे काना म गूज रहे थे। अमरीका जाने के लिए यात्रा की सम्भावना प्राप्त होने क पूव मुझे शघाइ म एक माह रुकना पडा। अन्तत यह सम्भव हुआ और जिस दिन मैं व्लादीवोस्तोक के जालोताय रोग (गोल्डन हान) खाडी से रवाना हुआ था उसके आठ सप्ताह बाद मन कलिफानिया के गाल्डेन गेट का दशन किया।

हमारे जहाज ने ज्यो ही सान फ्रांसिस्का क बन्दरगाह म ... डाला त्यो ही एक बडी नाव उसके पास आकर रुक गई और नौसनिक वर्दी म अफ्सर जहाज पर आ गए। वे अमरीकी नौसनिक गुप्तचर सेवा क सदस्य थे और स्वदेश वापसी पर मेरा उचित स्वागत करने के उद्देश्य से वहा आये थे। एक दूर देश मे दीघकाल तक तूफानी घटनाओ म भाग लेनवाले घुमक्कड का स्वदेश वापस आने पर इससे अधिक 'उत्साहपूर्ण' स्वागत और क्या हो सकता था! मेरे कुशल-क्षेम क प्रति उनकी अत्याधिक चिता से मुझे बहुत परेशानी हुई। मेरी देख भाल के लिए उनकी दौड धूप ने तो मुझे मुग्ध ही कर लिया। उन्होंने मुझे अपने क्वाटर ले जाने का आग्रह किया और मेरा सामान ले जाने का प्रबन्ध भी किया। उन्होंने सभी सोवियत मामला म अपनी गहरी अभिरुचि प्रकट की और इस सिद्ध करने के लिए

उन्होंने मेरी सभी पुस्तिकाएं, कागज-पत्र और नोट बुक अपने पास स्मरणार्थ रख लिए। सोवियत साहित्य के लिए तो उनकी भूख तृप्त ही नहीं होती थी। कहीं कोई कागज उनकी दृष्टि से बच न जाय, इसलिए उन्होंने मेरे थैले, जूते, हैट की पट्टी और यहां तक कि कोट के अस्तर को भी अच्छी तरह से देखा-भाला। उन्होंने इसी प्रकार मेरे वंश विवरण और मेरे अतीत के कार्य कलाप पर दृष्टिपात किया तथा यह भी पूछा कि मैं आगे क्या करने का विचार कर रहा हूं। इसके बाद उन्होंने मुझे अन्य अधिकारियों के हवाले कर दिया, जिन्होंने मेरे विचारों के बारे में पूछताछ की। छानबीन करनेवाले एक अधिकारी ने कहा, 'तो श्री विलियम्स, आप समाजवादी हैं। इतना ही नहीं, अराजकतावादी भी हैं, ठीक है न?"

मैंने इस अभियोग का खण्डन किया।

'अच्छा आप और किन सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं?"

'परमार्थवाद, आशावाद और उपयोगवाद में,' मैंने उत्तर दिया।

उसने अपनी नोट बुक में मेरा जवाब लिख लिया। अमरीका में अजीब एवं खतरनाक रूसी सिद्धान्तों का प्रचार होने जा रहा था!

तीन दिन के इस विलक्षण सौहार्द के बाद मुझे वाशिंगटन भेज दिया गया।

बीसवां अध्याय

सिंहावलोकन

क्रान्तिकारियों ने रूसी क्रान्ति नहीं की, यद्यपि उनमें से अनेकों ने इसे करने की पूरी कोशिश की। रूस के प्रतिभासम्पन्न पुरुष स्त्रियां एक शताब्दी से आम जनता के निर्मम उत्पीडन से व्यथित एवं क्षुभित थे। इस कारण वे आन्दोलनकारी बन गये। वे गांवों, कारखानों और झोपड़ों में यह नारा लगाते हुए लोगों को जगाने लगे

> गफलत में तुम जंजीरों में कस गये,
> अब ओस कणों की भांति इन्हें तुम ध्वस्त करो।
> उनकी संख्या कम है, परन्तु तुम्हारा भारी बहुमत है।

परन्तु जनता की नींद नहीं टूटी। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे लोगों ने एकान्त त्याग कर जाग जाने की यह आवाज सुनी ही नहीं। तभी सबसे अधिक आदानकारी भूख ने अपनी कार्यक्षमता प्रकट की। घोर आर्थिक संकट एवं युद्ध के फलस्वरूप भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई थी और इससे निश्चेष्ट जन-समुदाय भी संघर्ष के लिए उद्यत हो गया। इसने विगलित पुरातन सामाजिक ढांचे के विरुद्ध संघर्ष करके इसे ध्वस्त कर दिया। जिस कार्य को मानवीय चेतना सम्पन्न नहीं कर पायी उसे स्वतःस्फूर्त शक्तियों ने पूरा कर दिखाया।

फिर भी इस क्रान्ति में क्रान्तिकारियों ने भी अपनी भूमिका अदा की। क्रांति तो उन्होंने नहीं की, पर इसे सफल अवश्य बनाया। उन्होंने अपने प्रयास में पुरुषों एवं स्त्रियों के संगठित दल तैयार किए, जिन्हें उनकी शिक्षा से तथ्यों की गहराई में जाने की क्षमता प्राप्त हुई वस्तुस्थिति के अनुरूप संघर्ष का कार्यक्रम निर्धारित किया और इसे सफल बनाने के लिए उनकी संघर्ष शक्ति को जगाया। उनकी संख्या दस लाख थी—संभवतः इससे अधिक और शायद इससे कम। महत्त्व उनकी संख्या का नहीं, बल्कि इस बात का था कि वे दिवालिया पुरातन व्यवस्था के स्थान पर नूतन व्यवस्था कायम करने के लिए संगठित एवं क्रान्ति के उन्नायक तथा उद्धारक थे।

इसके केन्द्र बिन्दु कम्युनिस्ट थे इस क्रांति में उनकी मुख्य भूमिका थी। एच० जी० वेल्स ने लिखा है भारी अव्यवस्था के बीच कम्युनिस्ट पार्टी के संभवतः १,५०,००० अनुशासित अनुगामियों से समर्थित संकटकालीन सरकार ने देश की शासन व्यवस्था संभाल ली इसने चोरी डकैती समाप्त की, परित्यक्त नगरों में एक प्रकार से अमन-कानून एवं सुरक्षा कायम की और कठोर राशनिंग प्रणाली लागू की रूस में इस समय यही एकमात्र सरकार संभव थी एकमात्र युक्ति थी, एकमात्र संगठित शक्ति थी।"

चार वर्षों से रूस पर कम्युनिस्टों का नियंत्रण कायम है। उनके शासन प्रबन्ध के क्या नतीजे हैं?

'दमन, नृशंस, अत्याचार, हिंसा शत्रु चीखते चिल्लाते हैं। 'उन्होंने भाषण समाचारपत्रों और संगठन की स्वतंत्रता समाप्त कर दी है।

उन्होंने सख्त अनिवार्य फौजी भर्ती एवं अनिवार्य श्रम की व्यवस्था लागू की है। वे सरकार चलाने में अयोग्य और उद्योग धंधों के प्रबंध में असमर्थ साबित हुए हैं। उन्होंने सोवियतों को कम्युनिस्ट पार्टी के अधीन कर दिया है। वे अपने कम्युनिस्ट आदर्शों से गिर गये हैं, उन्होंने अपने कार्यक्रम में परिवर्तन करके दूसरा कार्यक्रम अपना लिया है और पूंजीपतियों के साथ समझौता कर लिया है।"

इनमें से कुछ आरोप अतिशयोक्तिपूर्ण हैं। कई आरोपों के बारे में सफाई दी जा सकती है। मगर ऐसे भी हैं, जिनके सम्बन्ध में स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना संभव नहीं है। सोवियत के दोस्तों को इन आरोपों से बहुत दुःख होता है। उनके शत्रु इस प्रकार के आरोपों से विश्व में सोवियतों की प्रतिष्ठा कम करने और लोगों को इनके खिलाफ भड़काने की कोशिश करते हैं।

जब मुझे रोने पीटने तथा कीचड़ उछालनेवालों का साथ देने के लिए कहा जाता है, तो जून १९१८ में व्लादीवोस्तोक के बंदरगाह में हुई बातचीत याद आ जाती है। अमरीकी रेड क्रास के कर्नल रोबिंस सोवियत के अध्यक्ष कोन्स्तान्तीन सुखानोव से बातचीत कर रहे थे।

'यदि मित्रराष्ट्रों की ओर से कोई सहायता न मिली, तो सोवियत कितने दिनों तक कायम रह सकेगी?"

सुखानोव ने अनिश्चितता का भाव दिखाते हुए कंधे झटक दिये।

रोबिंस ने फिर पूछा, 'छः सप्ताह?"

सुखानोव ने कहा, "और अधिक समय तक अस्तित्व बनाये रखना कठिन होगा।"

रोबिंस ने मुझसे यही प्रश्न पूछा। मैं भी इसके बारे में विश्वास के साथ कुछ नहीं कह सकता था।

सोवियतों के साथ हमारी सहानुभूति थी। हम सोवियत की शक्ति और जीवट को जानते थे। परन्तु इसके सम्मुख जो बड़ी कठिनाइयां थीं, उन्हें भी हम अच्छी तरह अनुभव करते थे। और सभी कुछ इसके विरुद्ध प्रतीत होता था।

सर्वप्रथम सोवियतों को भी इन्हीं स्थितियों का सामना करना पड़ा, जिनसे आक्रान्त होकर ज़ार और केरेन्स्की की सरकारों का पतन हुआ था अर्थात उद्योग धंधों में अव्यवस्था की स्थिति, परिवहन व्यवस्था का पंगु हो जाना और जन समुदाय में भूख एवं दरिद्रता।

इनके अलावा सोवियतों को सैकड़ों अन्य प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जैसे बुद्धिजीवियों का विश्वासघात, पुराने अधिकारियों की हड़ताल, प्रविधिज्ञों की तोड़फोड़ सम्बन्धी कारवाइयां, धार्मिक बहिष्कार और मित्रराष्ट्रों द्वारा की गयी नाकेबन्दी। उक्रइना के गल्ला पैदा करनेवाले इलाकों, बाकू के तेल क्षेत्रों, दोनेत्स इलाके की कोयला खानों, तुर्किस्तान के रूई पैदा करनेवाले क्षेत्रों से इनका सम्बन्ध काट दिया गया था और इस प्रकार वे इंधन और खाद्य सामग्री के स्रोतों से वंचित हो गयी थीं। उनके शत्रुओं ने कहा, "अब भूख का हड़ीला हाथ लोगों का गला दबोच लेगा और तब उन्हें होश आयेगी। साम्राज्यवादियों के दलालों ने शहरों में गल्ला लेकर आनेवाली गाड़ियों को बीच में ही रोक देने के लिए डाइनेमाइट से रेलवे पुल उड़ा दिये और रेल इंजिनों की बेयरिंगों में रेत डाल दी।

इतनी अधिक परेशानियां थीं कि उनमें बहुत ही दृढ़ व्यक्तियों की हिम्मत भी टूट जाती। परन्तु वे तो अभी और बढ़ती जा रही थीं। विश्व पूंजीवादी समाचारपत्र बड़े ज़ोर शोर से बोल्शेविकों के विरुद्ध धुआंधार प्रचार कर रहे थे। उन्हें "कैसर के भाड़े के टट्टुओं", "मदमत्त कट्टरपंथियों", "नृशंस हत्यारों", "दिन में उन्मत्त होकर मारकाट करनेवाले और रात को क्रेमलिन में खूब मौज करनेवाले लम्बे दढ़ियल बदमाशों", "कला एवं संस्कृति के नाशकों", "महिलाओं के साथ बलात्कार करनेवालों" के रूप में चित्रित किया जाता था। बोल्शेविकों को सर्वाधिक बदनाम करने के घृणित विचार से "महिलाओं के राष्ट्रीयकरण का फरमान" अपने मन से गढ़ लिया गया और सारे संसार में इस जाली फरमान का ढिंढोरा पीटा गया। लोगों से जमने के बजाय अब बोल्शेविकों से घृणा करने की अपील की गई।

जिस समय सभ्यता के नाम पर रूस में विदेशों में बोल्शेविकों के प्रति निरंतर घृणा फैलायी जा रही थी, उसी समय यहाँ वास्तविक रूप में समाज का पुनः निर्माण के कार्य के लिए बड़ी भारी ताकत लगायी गयी थी। रैगस ने बोल्शेविकों की इन निष्ठा और सच्चाई तथा ईमानदारी भावनाओं का पक्षपोषण करते हुए लिखा :

'आज भी यह कहा नहीं जा सकता कि वास्तविक परिस्थिति है। मैं केवल यही अनुरोध करता हूँ कि उनके खिलाफ धारणाओं का जो तूफान खड़ा हुआ है उससे अलग हटकर लोग वास्तविक वस्तुस्थिति और उनके उस प्रयत्न को देखें, जिसे पूरा करने के लिए वे युवावस्था से उसी ढंग से संघर्षरत हैं, जिस ढंग से यह सम्भव है। यदि वे सफल होते हैं, तो वे एक ऐसे मानव का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करने के प्रयास में, जो उनके बाद भी जीवित रहेगा, सच्चे दिल और स्वच्छ भावना से काम करते हुए संलग्न होंगे। यदि वे अपने प्रयास में विफल भी हो गये तो भी, जहाँ तक मुझे मानवजाति के इतिहास का स्मरण है, वे उसमें सबसे अधिक उज्ज्वल पृष्ठ जोड़ जायेंगे। वर्षों बाद जब लोग उस पृष्ठ को पढ़ेंगे, तो वे मानव-जाति और मेरे देश का मूल्यांकन इस दृष्टि से करेंगे कि इस उज्ज्वल पृष्ठ के प्रणयन में हमारे द्वारा कितनी सहायता दी गयी अथवा कठिनाइयाँ पैदा की गयीं।'

यह अपील निष्फल रही।

जिस प्रकार यूरोप के राजतन्त्रवादी फ्रांसीसी क्रान्ति द्वारा विश्व में प्रचारित विचारों को दबा देने के लिए एकजुट हो गये थे, उसी प्रकार यूरोप और अमरीका के पूँजीपति रूसी क्रान्ति के फलस्वरूप दुनिया में फैलनेवाले विचारों को कुचलने के लिए एक हो गये। भूखे शीत से ठिठुरते एवं सन्निपात ज्वर से पीड़ित रूसियों के प्रति सद्भावना प्रकट करने के लिये पुस्तकों, औजारों, शिक्षकों एवं इंजीनियरों से भरे जहाज नहीं, बल्कि सैनिकों, अफसरों, बन्दूकों, तोपों और जहरीली गैसों से भरे हुए भयानक युद्धपोत रूसी बन्दरगाहों में पहुँचे। रूस के समुद्री तट पर फौजी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थलों पर ये फौजें उतारी गईं। राजतन्त्रवादी जमींदार और यमदूतसभाई इन केन्द्रों में आकर जमा हो गये। नयी सफेद फौजें संगठित की गयीं, उन्हें सैनिक प्रशिक्षण दिया गया और करोड़ों डालरों

के साज-सामान से इन्हे सुसज्जित किया गया। हस्तक्षेपकारियो ने मास्को की ओर अपना फौजी अभियान शुरू किया। वे इस प्रकार क्रान्ति के हृदय में अपनी तलवार भोक देना चाहते थे।

कोल्चाक के गिरोह साइबेरिया में चेक फौजो का अनुसरण करते हुए पूर्व की ओर से बढे। पश्चिम की ओर से फिनलैण्ड, लाटविया और लिथुआनिया की फौजो ने चढाई शुरू की। ब्रिटिश, फ्रासीसी और अमरीकी फौजें उत्तर के जगलो और बर्फीले मैदानो को लाघती हुई बढी। दक्षिण के समुद्री बन्दरगाहो से देनीकिन की साघातिक बटालियनें टको एव विमानो के साथ अग्रसर थी। एस्तोनिया के दलदली क्षेत्रो से युदेनिच की फौजें गतिमान थी। पोलैण्ड से पिल्सूदस्की का रण कुशल लशकर आ रहा था। क्रीमिया से बैरन व्रागेल की अश्वारोही सेना चली आ रही थी।

क्रान्ति के गिर्द लाखो सगीनो का इस्पाती घेरा डाल दिया गया। क्रान्ति के पर भीषण प्रहारो से लडखडा उठे, मगर इसका हृदय निडर बना रहा। यदि क्रान्ति को मरना ही है तो वह शत्रु से लोहा लेते हुए मरेगी।

जीवन के लिए क्रान्ति का सघर्ष

एक बार पुन युद्ध परिवलात गावो और भूखे नगरो में क्रान्ति की रक्षा के निमित्त हथियारबन्द होने के दमामे बज उठे। एक बार फिर पुरानी और खस्ताहाल कर्मशालाओ एव कर्घाघरो को राइफल और फौजी वर्दियां तैयार करने का आदेश दिया गया। एक बार पुन जर्जर रेलगाडियां फौजो और तोपो से खचाखच भरी जाने लगी। क्रान्ति ने रूस के बहुत ही सीमित और बचे-बचाये साधनो से ५०,०० ००० सैनिको को हथियारबन्द किया, वर्दियां दी, अफसरो की व्यवस्था की और लाल फौजें युद्ध-क्षेत्र में डट गई।

मास्को से केवल ४०० मील की दूरी पर वे कोल्चाक की फौजो पर टूट पडी और उन्होने उसके आतक ग्रस्त सैनिको को, जो ४ हजार मील तक साइबेरिया में से होकर आये थे, उतना ही पीछे धकेल दिया। सफेद वर्दियां पहन और बर्फ पर स्कीइंग के सहारे चलते हुए उन्होने उत्तर के देवदार के जगलो में मित्रराष्ट्रो की फौजो में नाका किया और उन्हे

आर्खागेल्स्क तक खदेड दिया और जहाजों द्वारा श्वेत सागर से होते हुए स्वदेश जाने को विवश कर दिया। उन्होंने रूस की लोहशाला तूला में, 'जिसकी लाल लपटों में अजेय लाल सेना के लिए लाल इस्पात से संगीनें ढाली जाती थीं', देनीकिन की फौजों का बढ़ाव रोका। काले सागर के तट तक खदेड दिये जाने के बाद देनीकिन एक ब्रिटिश युद्धपोत पर अपनी जान लेकर भागा।

बुद्योन्नी की अश्वारोही फौज उक्रइनी स्तेपी में दिन रात ताबडतोड बढ़ती हुई पोलिश लश्कर के पार्श्व भागों पर अचानक टूट पड़ी, उसके विजयी अभियान को दारुण भगदड में परिवर्तित कर दिया और वारसा के द्वार तक उसका पीछा किया। व्रांगेल के क्रीमिया में छक्के छुडाकर उसे वहीं घेर लिया गया और जब तक तूफानी सोवियत दस्तों ने उसके दृढ़ दुर्गों पर धावे बोले, उसी बीच मुख्य लाल सेना जमे हुए अज़ोव सागर को पारकर आगे बढ़ी और वरन तुर्की भाग गया। पेत्रोग्राद की बाहरी सीमा पर, उसकी दीवारों के साये में ही युदेनिच के दांत खट्टे किये गये, बाल्टिक राज्यों की फौजों को उनकी सीमाओं के भीतर तक खदेड दिया गया और साइबेरिया में सफेद फौजों का सफाया कर दिया गया। क्रांति की चतुर्दिक विजय हुई।

शक्तिशाली सोवियत बटालियनों ने ही नहीं, बल्कि उस आदर्श ने भी प्रतिक्रांतिवादियों को पराजित किया जिससे क्रांति की ये सेनायें अनुप्राणित थीं।

लाल फौजों के झण्डों पर नयी दुनिया के नारे अंकित थे। सैनिक न्याय एवं बंधुत्व के गीत गाते हुए युद्ध क्षेत्र में बढ़ते थे। उन्होंने युद्धबंदियों को गुमराह भाई समझकर उनके साथ मानवोचित व्यवहार किया। उन्होंने उन्हें भोजन दिया, उनके घावों की मरहम पट्टी की और उन्हें अपने फौजी साथियों को बाल्शेविकों के अच्छे व्यवहार की कहानी बताने के लिए मुक्त कर दिया। लाल सैनिकों ने मित्रराष्ट्रों के फौजी शिविर पर प्रश्नों की बौछार कर दी : 'मित्रराष्ट्रों के सैनिकों! आप लोग किसलिए रूस पर हमला करने आये हैं? फ्रांस और इंगलैण्ड के मजदूर अपने रूसी मजदूर साथियों की हत्या क्यों कर रहे हैं? क्या आप मजदूरों के इस जनतंत्र को नष्ट करना चाहते हैं? क्या आप रूस में पुनः जारशाही स्थापित करना

चाहते है? आप फ्रांसीसी बैंकपतियों, अंग्रेज लुटेरों और अमरीकी साम्राज्यवादियों के लिए लड रहे है। आप उनके लिए क्या अपना खून बहा रहे हैं? आप स्वदेश वापस क्यों नही जाते?"

लाल सैनिकों ने खाइयों से बाहर निकल निकलकर तथा जोर जोर से चिल्लाकर ये प्रश्न शत्रुओं की ओर से लडनेवाली फौजों से पूछे। लाल प्रहरी अपने हाथ ऊपर उठाये हुए आगे बढते और चिल्ला चिल्लाकर इन प्रश्नों को दोहराते। लाल फौज के हवाई जहाजों ने शत्रुओं की खन्दकों पर इश्तिहार फेंके, जिनमे यही प्रश्न पूछे गये थे।

मित्रराष्ट्रों के सैनिकों ने इन प्रश्नों पर गौर किया और वे डावाडोल हो उठे। उनका मनोबल टूट गया। उनमे लडने की इच्छा न रही और वे विद्रोह करने लगे। सफेद फौजो के हजारो सैनिक—फौजी अस्पताली व्यवस्था सहित पूरी की पूरी बटालियनें—क्रान्ति के पक्ष मे हो गये। जिस प्रकार रूसी वसंत ऋतु मे बर्फ पिघलती है, उसी प्रकार प्रतिक्रान्तिवादियों की एक के बाद एक फौज उनका साथ छोडती गई। क्रान्ति के इर्द गिर्द जो इस्पाती घेरा डाल दिया गया था, वह खण्ड-खण्ड होकर रह गया।

क्रान्ति विजयी हुई। सोवियतों की रक्षा हो गई। परन्तु कितनी अधिक कीमत चुकानी पडी इस विजय के लिए!

भयानक तबाही—हस्तक्षेप का नतीजा

लेनिन ने कहा, तीन साल तक हमारी पूरी शक्ति युद्ध कार्यों मे लगी रही। राष्ट्र की सारी सम्पदा फौज मे झोंक दी गई। खेतों को जोता नही गया, कारखानो की मशीनों की देखभाल नही की गयी। ईंधन की कमी के कारण कारखाने बन्द करने पडे। बायलरों मे गीली लकडी डालने के कारण रेल के इंजन खराब हो गये। पीछे भागती हुई फौजो ने रेल की लाइनें उखाड दी, पुलो और गोदामों को बारूद से उडा दिया और खेतो तथा गावों मे आग लगा दी। पोलिश सैनिकों ने तो कीयेव की जल व्यवस्था एवं बिजलीघर को ही नष्ट नही किया, बल्कि केवल अपने गुस्से की आग ठंडी करने के लिये सेंट व्लादीमिर के गिरजाघर को भी डाइनेमाइट लगाकर ध्वस्त कर दिया।

प्रतिक्रान्तिवादियो ने मैदान छोडकर भागते हुए बडी ही भयानक तबाही की। उन्होने मशालो और डाइनमाइट से देश को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला और अपने पीछे ध्वंसावशेष तथा राख के ढेर छोड गये।

युद्ध के फलस्वरूप दूसरी अनेक बुराइया पैदा हुई — सख्त सेंसरशिप, मनमानी गिरफ्तारिया, अंधाधुंध सैनिक दण्ड। कम्युनिस्टो पर जिन निर्मम कारवाइयो के अभियोग लगाये गये, वे मुख्यत युद्धमूलक कारवाइया था, फिर भी इनसे क्रान्ति के आदर्शो को क्षति अवश्य पहुची।

फिर कितनी बडी सख्या मे लोगो की जाने गई! मोर्चे पर बडी सख्या मे सैनिक मारे गये। अस्पतालो मे और भी अधिक सख्या मे लोग मरे। नाकेबन्दी के कारण औषधिया, पट्टिया एव शल्यचिकित्सा के औजार सुलभ नही थे। इस कारण रोगियो को बेहोश किये बिना ही अग काट डाले जाते थे। पट्टियो की जगह घावो पर अखबार चिपकाये जाते थे। फौजो मे गैग्रीन एव रुधिर विषायण, टाइफस ज्वर और हैजा बेरोक टोक फैले हुए थे।

क्रान्ति जन शक्ति की यह भारी क्षति भी बर्दाश्त कर सकती थी, क्योकि रूस एक विशाल देश है। किन्तु वह उनकी और अधिक क्षति सहन नही कर सकती थी, जो इसका दिल दिमाग थे, इसकी निर्देशक और प्रेरणा शक्ति थे — अर्थात् कम्युनिस्टो का वध सहन नही कर सकती थी। ये कम्युनिस्ट ही थे, जिन्होने लडाई का अधिकतर बोझ सहन किया। उन्ही मे से तूफानी बटालियने सगठित की गयी थी। उन्हे ही सबसे कठिन मोर्चो पर और वहा भेजा जाता था, जहा दोलायमान सैनिक होते थे, ताकि विजय सुनिश्चित हो सके। यदि वे पकडे जाते थे तो शत्रु उन्हे सदा गोली से उडा देते थे। तीन साल के इस युद्ध मे रूस के आधे युवा कम्युनिस्ट खेत रहे थे।

हताहतो की सख्या का उल्लेख करना ही पर्याप्त नही, क्योकि आकडे तो एकमात्र भावनाशून्य प्रतीक है। बेहतर यही होगा कि पाठक उन युवको को याद कर ले जिनके बारे मे वह इस पुस्तक मे पढ चुका है। वे एक साथ स्वप्नदर्शी एव कडा परिश्रम करनेवाले आदर्शवादी एव कठोर यथार्थवादी — क्रान्ति के कुसुम और गतिशील आत्मा के जीवित प्रतीक थे। उनके बिना क्रान्ति जारी रह सकती थी, यह कल्पना करना भी असम्भव प्रतीत होता है। मगर क्रान्ति जारी रही यद्यपि वे जीवित नही रहे। इस

पुस्तक म जिनकी चर्चा हुई है वे प्राय सभी मर चुके ह। उनम से कुछ की मृत्यु इस प्रकार हुई

वोलोदार्स्की—सभी सोवियत नेताओ को मार डालने के व्यापक षडयत्र म इनकी हत्या की गई।

नबुत—कोल्चाक मार्चे पर फासी पर लटका दिय गय।

यानिशेव—ग्रागेल मोर्चे पर एक सफेद गाड न सगीन भोककर इनकी हत्या कर दी।

बोस्कोव—देनीकिन मार्चे पर टाइफस ज्वर से काल-कवलित हो गये।

ताकोनोगी—सफेद गार्डो ने उन्ह उस समय गोली मार दी, जब वे मेज पर बैठे काम कर रहे थे।

ऊल्किन—मोटरकार से इन्ह बाहर खीचकर गोली मार दी गई।

सुखानोव—सुबह ही जगल म ले जाकर राइफल के कुदे मार मारकर उन्ह मौत के घाट उतार दिया गया।

मेल्निकोव—जेल से बाहर निकालकर उन पर गोली मार दी गई और फिर डण्डा से पीट पीटकर काम तमाम कर दिया गया।

"उन्ह अमानुषिक यातनाए दी गइ उन्ह पत्थरा स घायल किया गया, उन्ह जीवित चीरकर उनके टुकडे-टुकडे कर दिय गये, उन्ह जगला एव पहाडा म भटकने के लिए छोड दिया गया और उन्हे खोहा तथा कन्दराओ म छिपन के लिये विवश किया गया।

निमम ढग से चुन चुनकर क्राति क प्रमुख व्यक्तियो का वध किया गया, इसके भावी निर्माताओ की हत्याए की गइ। रूस के लिए यह अपार क्षति थी—क्योकि ये ही वे व्यक्ति थे, जो पदलोलुपता के फेर और अधिकार मद से दूर रह सकते थे। वे ऐसे व्यक्ति थे, जो उतनी ही दिलेरी क साथ जिन्दा रहते, जितनी दिलेरी के साथ उन्हाने मत्यु को गले लगाया।

उन्हाने अपने प्राण न्योछावर कर दिये ताकि क्राति जीवित रह। और क्रान्ति जीवित है। यद्यपि वह घायल है, उसे कुछ समझौते करन पडे ह, तथापि वह अकाल, महामारी, नाकेबन्दी और युद्ध की अग्नि परीक्षाओ मे से विजयी होकर निकली है।

क्या यह क्राति इतने बलिदान क उपयुक्त है? इसकी निम्नाकित सुनिश्चित उपलब्धिया ह

एक – इसने जारशाही की राजकीय व्यवस्था का मूलोच्छेदन कर दिया है।

दो – इसने जार, जमीदारो और मठो की बडी जागीरो एव भू-सम्पत्ति को जनता के नियत्रण म हस्तातरित कर दिया है।

तीन – इसने बुनियादी उद्योगो का राष्ट्रीयकरण करके रूस का वैद्युतीकरण शुरू कर दिया है। इसने लुटेरे पूजीपतियो के अन्तहीन शोषण से रूस को सुरक्षित कर दिया है।

चार – इसने १० ००,००० मजदूरो और किसानो को सोवियतो म शामिल करके उन्ह प्रशासन का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया है। इसने ८०,००,००० मजदूरो को ट्रेड यूनियनो म सगठित किया है। इसने ४,००,००,००० किसानो को पढने लिखने का ज्ञान प्रदान किया है। इसने हजारो नये स्कूलो, पुस्तकालयो और थियेटरो के द्वार उन्मुक्त कर दिये है और जनता मे विज्ञान एव कला के चमत्कारो की जानकारी प्राप्त करने की भावना पैदा की है।

पाच – इसने अधिकाश लोगो के दिमाग से अतीत का मोह दूर कर दिया है। उनकी निगूढ शक्तिया गतिमान हो गई ह। उनका यह भाग्य वादी दृष्टिकोण कि 'यह ऐसा ही था और ऐसा ही बना रहेगा" बदलकर अब यह बन गया है कि "यह ऐसा था, किन्तु यह ऐसा ही नही रहेगा।'

छ – इसने बीसियो गुलाम जातियो को, जो पहिले रूसी साम्राज्य की अधीनता म थी, आत्म निर्णय का अधिकार दिया है। इसने उन्ह अपनी भाषा, अपना साहित्य और सस्थाओ का विकास करने की पूरी छूट दी है। इसने ईरान, चीन, अफगानिस्तान और अन्य पिछडे हुए देशो अर्थात "प्रचुर प्राकृतिक साधनो और अल्प नौशक्ति वाले देशो' के साथ समानता का व्यवहार किया है।

सात – इसने "खुली अतर्राज्य नीति' का केवल दिखावा ही नही किया, बल्कि इसे ठोस रूप दिया है। "उसने गुप्त सधियो को इतिहास के कूडेखाने म फेंक दिया है।"

आठ – इसने नये समाज का पथ प्रशस्त किया है और विशाल पैमाने पर समाजवाद के सम्बन्ध म अनमोल प्रयोग किये है। इसने नूतन सामाजिक व्यवस्था के सघर्ष म विश्व के मजदूर वर्ग का विश्वास सुदृढ किया है और उसका साहस बढाया है।

ऐसे बुद्धिमाना की भी कमी नही ह जो यह कहत ह कि किसी बेहतर तरीके से यही कुछ हासिल किया जा सकता था। इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि शायद धम-सुधार अमरीका की स्वाधीनता और दास प्रथा का अत जसी समस्यायें भी किसी बेहतर ढग स अल्पतर हिसात्मक विधि स हल की जा सकती थी। परन्तु इतिहास तो सदा अपन ही रास्ते स आगे बढता है। और केवल नादान ही उससे विवाद करते ह।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है

प्रगति प्रकाशन,
२१ ज़ूबोव्स्की बुलवार
मास्को सोवियत संघ